

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

प्राप्तान्यत अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनो विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

कृत्तहंसिह, एम ए., डी. लिट्.

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर



ग्रन्थाङ्क ११४

सांख्यायनमुनिप्रणीतं

सांख्यायनतन्त्रम्

प्रकाशक

राजस्थान-राज्याज्ञानसंस्थान

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९७० ई०

वि० सं० २०२६

भारतराष्ट्रीय दशकान्द १९६१

मुद्रक—हरिप्रसाद पारीक, छावना प्रेस, जोधपुर

प्रधानसम्पादकीय वक्तव्य

प्रस्तुत ग्रन्थ का सम्पादन श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी ने ५ हस्तलेखों के आधार पर किया है और पाठान्तरो को पाद-टिप्पणियों में दे दिया है। विद्वान् सम्पादक ने पुस्तक के पाठ को शुद्धतम रूप में प्रस्तुत करने के अतिरिक्त न केवल विद्वानों के लिए अपितु साधकों के लिए भी उपयोगी एवं आवश्यक सामग्री को भूमिका तथा परिशिष्टों के रूप में दे दिया है। यह ग्रन्थ यद्यपि आकार में छोटा है, परन्तु 'वगला' की साधना के लिए यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सम्पादक ने मन्त्रोद्धार को स्पष्ट करने का जो प्रयत्न किया है वह स्तुत्य है और इससे प्रकट है कि श्रीगोस्वामीजी को तन्त्र के व्यवहारपक्ष का कितना ज्ञान अपनी पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिला है। इसीप्रकार पुस्तक की भूमिका के अन्तर्गत सम्पादक ने आगम निगमादि के विषय में जो सामग्री प्रस्तुत की है वह भी बड़ी उपयोगी है और मैं इस सबके लिए विद्वान् सम्पादक को बधाई देता हूँ। तन्त्रशास्त्र के अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं, परन्तु व्यवहारपक्ष की उपेक्षा करने से वे प्रायः दुर्बोध बन गए हैं। मेरी इच्छा थी कि वह कमी इस ग्रन्थ में नहीं रहती। श्रीगोस्वामीजी तन्त्र-व्यवहार में भी पारङ्गत हैं, अतः इस कमी को दूर करना उनके लिए कठिन नहीं था और उन्होंने किसी सीमा तक इसको दूर किया भी है। परन्तु फिर भी ग्रन्थ के आकार के बढ़ने के भय से बहुत सी सामग्री नहीं दी गई। आशा है वह सब दूसरे रूप में तन्त्रशास्त्र के व्यवहारपक्ष को उपस्थित करते हुए अन्यत्र दी जा सकेगी।

ग्रन्थ का मुद्रण प्रारम्भ हो गया था, परन्तु सम्पादक महोदय की अनेक व्यवहितगत कठिनाइयों अथवा प्रतिष्ठान या प्रसंग में उपस्थित अनेक विघ्न-बाधाओं के कारण, ग्रन्थ के प्रकाशन में आशातीत विलम्ब हुआ जिसके लिए मैं प्रतिष्ठान की ओर से क्षमाप्रार्थी हूँ।

अन्त में, मैं प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष म० विनयसागर तथा साधना प्रेस के व्यवस्थापक श्रीहरिप्रसाद पारीक को धन्यवाद अर्पित करता हूँ जिन्होंने रुचि एवं लगन के साथ इस ग्रन्थ को प्रकाशित करने में सहयोग दिया है।

— फतहसिंह

भूमिका

भारतवर्ष एक धर्मप्रधान देश है। यहाँ अनादिकाल से निगम एव आगम-सम्मत धर्म की ही स्थिति प्रधान रूप में प्रचलित रही है। मन्त्रब्राह्मणात्मक वेदों को निगम अथवा छन्द नाम से वामन, भट्टोजी दीक्षित आदि महापण्डितों ने अभिहित किया है—नितरामत्यन्त निश्चयेन वा गच्छन्ति अवगच्छन्ति (जानन्ति) धर्ममनेनेति निगमश्छन्द' अर्थात् 'रिन्तर अथवा निश्चयपूर्वक जिसके द्वारा धर्म को जानते हैं उसे निगम अर्थात् छन्द कहते हैं। परा और अपरा-नामक विद्याओं की स्थिति भी इसी में निहित है अतः इसी निगम को धर्मशास्त्र के आचार्य मनु ने विद्या एव धर्म का स्थान माना है 'वेदप्रणिहितो धर्मो ह्यधर्मस्तद्विपर्यय' अर्थात् 'वदविहित कार्य ही धर्म एव तदितर कार्य अधर्म है। याज्ञवल्क्य ने भी पुराण, न्याय, मीमांसा एव धर्मशास्त्रस्वरूप अङ्गों से युक्त वद को धर्म एव चौदह विद्याओं का स्थान बतलाया है—

'पुर णन्यायमीमांसाधर्मशास्त्राङ्गमिश्रिता ।

वेदा स्थानानि विद्याना धर्मस्य च चतुदश ।'

त्रिकालदर्शी महर्षिपण्डितों ने सम्पूर्ण शब्दराशि को आगम-निगम-भेद से दो भागों में विभक्त किया है। वयो कि प्रकृतिसिद्ध नित्यशब्दब्रह्म इन्हीं दो भागों में विभक्त है। यद्यपि अथो वागेवेद सर्वम'^१ वाचीमा विश्वा भुवनान्यपिता'^२ आदि श्रौतसिद्धान्तों के अनुसार वाकत्व से प्रादुर्भूत होने वाले शब्दप्रपञ्च से कोई स्थान खाली नहीं है तथापि स्वर्गनाम से प्रसिद्ध १४ प्रकार के भूतसर्ग के साथ प्रधानरूप से अग्निवाक् और इन्द्रवाक् का ही सम्बन्ध है। पृथिवी अग्निमयी है और चुलोकोपलक्षित सूर्य इन्द्रमय है^३। पार्थिव एव सौर अग्नि अघ्राद (अन्न खानेवाले) हैं और मध्यपतित चान्द्र सीम इन अग्नियों का अन्न बन रहा है^४। अन्न जब अघ्राद के उदर में चला जाता है तो केवल अघ्राद-सत्ता ही

१ 'द्वे विद्ये वदितये परा चंवापरा च । (१) परा—उत्तमपद्धिया । (२) अपरा—शुभवेदादि ।

२ ऐतरेयारण्यक० ३।१।६ ।

३ तैत्तिरीय ब्राह्मण २।८।५।४ ।

४ यथानिगमो पृथिवी तथा सौरिन्द्रेण गभिलो नतपयब्राह्मण १४।६।७।२०

५ 'एष वै सोमो राजा देवानामन्न यच्चन्द्रमा' ॥ १।६।५।४

रह जाती है, अन्न की स्वतन्त्रता हट जाती है' । इसीलिये 'त्रैलोक्य के लिये छायापृथिवी' का व्यवहार ही होता है । अन्न प्रधानतः पृथिवीलोक एव सूर्य-लोक ही रह जाते हैं । दोनो अग्निमय हैं । पार्थिवाग्नि गायत्राग्नि है और सौर अग्नि सावित्राग्नि है । ये दोनो अग्नियाँ 'वाक्' कहलाती हैं' । वैज्ञानिक परिभाषा के अनुसार पृथिवी की वाक् अनुष्टुप् और सूर्य की वाक् बृहती कहलाती है । अनुष्टुप् वाक् से वचतप आदिरूपा वर्णवाक् का तथा बृहती-वाक् से अ आ इ आदिरूपा स्वरवाक् का प्रादुर्भाव होता है । 'स्वरोष्णरम्' के अनुसार स्वर अक्षर है, अविनाशी है । वर्ण क्षर' है, विनाशशील है । जिस प्रकार अर्थसृष्टि में भौतिक क्षरकूट की प्रतिष्ठा अक्षरतत्त्व है उसी प्रकार 'शाब्दे ब्रह्मणि निष्णात पर ब्रह्माधिगच्छति' के अनुसार अर्थब्रह्म की समान धारा में प्रवाहित होने वाले शब्दब्रह्म में भी क्षररूप वर्ण की प्रतिष्ठा अक्षररूप स्वरतत्त्व ही है । अर्थब्रह्म में जैसे अक्षररूप सूर्यसत्ता को छोड़कर क्षररूपा पृथिवी अपने रूप में प्रतिष्ठित नहीं रह सकती है इसी प्रकार सूर्यवाङ्मूलक स्वरतत्त्व के बिना पृथिवीमूलक वर्णशाशि भी स्व-स्वरूप में प्रतिष्ठित नहीं रह सकती है । स्वरमूलक इस सूर्यविद्या का ही नाम त्रयीविद्या' है । सूर्य नहीं तप रहा है, त्रयीविद्या तप रही है, 'संपात्रय्येव विद्या तपति' और त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः' का भी यही रहस्य है । यह वेदतत्त्व नित्यतत्त्व है, स्वयं प्रादुर्भूत है, स्वयं ब्रह्म के मुख से उद्गीर्ण है । इसीलिये महर्षियो ने इसे निगम' एव श्रुति की सजा दी है ।

शक्ति, मङ्गल, शुक्र, बुध, पृथिवी आदि सूर्य के उपग्रह हैं । सूर्य का ही प्रवर्ग्यभाग शक्ति आदिरूप में परिणत हो कर सूर्य के चारों ओर घूम रहा है । सूर्यविद्या का अक्षरभूत पृथिवीलोक सूर्य के चारों ओर घूम रहा है । पृथिवी-विद्या सूर्यविद्या से आई है । इसी रहस्य को समझने के लिये महर्षियों ने पृथिवीविद्या का नाम 'आगम' रखा है । सूर्यविद्या की तरह पृथिवीविद्या स्वयं निर्गत नहीं है अपितु निगम से आई है 'निगमादागत आगम' । ऊपर कहा जा चुका है कि पृथिवी की वाक् वर्णवाक् स्वर से भिन्न है । अन्न आगमशास्त्रोक्त प्रयोगों का उदात्तादिस्वरो से विशेष सम्बन्ध नहीं माना जाता है । वहाँ केवल

- १ 'द्वय वा इदम - अन्ता खंवाचक्षु । तद्यदोभय समागच्छति अन्तैवाहयायते नाद्यम् ।
सर्वं य सोऽस्ताग्निरेव स ।' शतपथब्राह्मण १०।६।३।१
- २ 'तस्य वा एतस्यान्नेवगिबोपनिषत् । , १०।१।१।१
- ३ शतपथब्राह्मणम् १०।१।२।२ ।

आदेश' को 'आगम' कहते हैं जिस प्रकार चारो वेदो मे प्रकट आदेश निगम कहल जाता है। आगमवादी इस ऊर्ध्वमुख को परमेश्वर अर्थात् शिव का पञ्चममुख कहते हैं और वह ऊर्ध्वस्रोत द्वारा ब्रह्मविद्या चार वेदो म ही समाप्त नही होती परन्तु देश, काल और निमित्तो के परिवर्तन से युगानुसार सिद्धजनों द्वारा प्रकट होती है। इसीलिये माण्डूक्योपनिषद् को आगमप्रकरण ही कहते हैं।

आगम का लक्षण वाचस्पतिमिश्र ने इस प्रकार किया है कि जिससे भोग और मोक्ष दोनो का स्वरूप समझा जा सके वह आगम है। प्राचीन वेद-साहित्य कर्मकाण्ड द्वारा केवल स्वर्गादि योगसाधनो का स्वरूप समझाता है अथवा ज्ञानकाण्ड द्वारा केवल मोक्ष का स्वरूप और उसके साधन बतलाता है, परन्तु पञ्चम आगम साहित्य भोग और मोक्ष को एकवाक्यता करके क्रमपूर्वक ध्यवहारसुख और परमार्थसुख दोनो दे सकता है।

तन्त्र-आगम

तन्त्र वह विज्ञान है जो ऐसे साधनो और योगो का निर्देश करता है जिनके द्वारा मनोबल की उन्नति की जा सकती है। इन साधनो एव प्रयोगो का उद्देश्य निस्सदेह मोक्ष की प्राप्ति है। परन्तु एक जन्म मे सब लोग इस स्थिति पर नही पहुँच सकते, अभ्यास करते-करते उनके अन्दर कुछ विशिष्ट शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं जिन्हें सिद्धि कहते हैं। सिद्धियाँ कुछ अलौकिक शक्तियाँ हैं जिनका प्रयोग वे ही कर सकते हैं जिन्होंने इन्हें प्राप्त किया है। अन्य कोई भी व्यक्ति इनका उपयोग नही कर सकता। पातञ्जल योगसूत्र में अग्निमा, गरिमा, लघिमा आदि आठ सिद्धियाँ मानी हैं। परन्तु उसके पीछे के ग्रन्थो ने चौतीस सिद्धियाँ मानी हैं। हिन्दू और बौद्ध तन्त्रों के विभिन्न आगमो के द्वारा निर्दिष्ट विधि एव साधनो का अनुसरण करने से इनमे से कुछ अथवा अधिक सिद्धियो का प्राप्त कर लेना सम्भव है। तन्त्रों का यह उद्देश्य है कि जगत् के भौतिक साधनो की उन्नति द्वारा जो कुछ सम्भव हो सकता है, उसे एक ही व्यक्ति अपनी मानसिक शक्ति के विकास द्वारा सिद्ध कर सकता है।

तन्त्रो के प्रति सामान्यतया यह भ्रान्ति फैली हुई है कि तन्त्र वेदो से भिन्न हैं और इनमे अनार्यों के से आचरण एव व्यवहारो का दर्शन होना है। वस्तुत यह भ्रान्तिमात्र है। तन्त्र वेदवाह्य न होकर वेद-सम्मत है। हाँ, इतना अवश्य है कि तन्त्र वेदो की तरह किसी भी धर्म के लिये अग्राह्य नही है। तन्त्रो मे सर्वसाधारणजनों के लिये साधन का मार्ग प्रस्तुत किया गया है। वेद की क्रियाएँ सामान्यजनों के लिये अधिक परिश्रमसाध्य, व्ययसाध्य एव प्रतिबन्ध-

साध्य होने से उन क्रियाओं को यथाविधि सम्पन्न करना सहजसाध्य नहीं है । इसीलिये परमकारुणिक भगवान् शिव ने सहजसाधनगम्य तन्त्रों का प्रकटीकरण 'आगम' नाम से किया है ।

तन्त्र की व्युत्पत्ति एवं परिभाषा

भारतीय कोशकारों के अनुसार 'तन्त्र' शब्द का प्रयोग आगम, सिद्धान्त, शिवमुखोक्तशास्त्र आदि के अर्थों में हुआ है, वामन, भट्टोजी दोक्षित आदि महावैयाकरण पण्डितों ने 'तन्त्र' शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार की है—'तनोति सर्वशास्त्राणां सिद्धान्तान् यत्तत्तन्त्रम्' अर्थात् जो समस्त शास्त्रों के सिद्धान्त अथवा निर्णयों का विस्तार करे उसे 'तन्त्र' कहते हैं ।

प्राचीन शास्त्रों में यद्यपि तन्त्र-शब्द का प्रयोग अनेक विषयों के शास्त्रों के लिये हुआ है जैसे—'कपिलतन्त्र, वासिष्ठतन्त्र, जैमिनितन्त्र, पूर्वतन्त्र, उत्तरतन्त्र आदि' । तथापि इस शब्द का अधिकतर प्रचलन आगमशास्त्र, निगमशास्त्र अथवा शिवमुखोद्गीर्ण शास्त्र के लिये ही हुआ है—

आगतं शिववक्त्रेभ्यो मतञ्च गिरिजामुखम् ।

मतञ्च वासुदेवस्य तस्मादागममुच्यते ॥

(सिंहसिद्धान्तसिन्धु पृ०-४२६)

×

×

×

आगतं शिववक्त्राच्च मतञ्च गिरिजामुखे ।

तेनागमानि तन्त्राणि कथितानि वरानने ॥१२७॥

यानि कानि च शास्त्राणि कथितान्यागमस्य च ।

तानि तानि प्रकथ्यन्ते श्रीलाचरणहेतवे ॥१२८॥

(समपाचारतन्त्र)

निर्गतं गिरिजावक्त्राद् मतं च गिरिजामूर्ती ।

मतं च वासुदेवस्य तस्मादागम उच्यते ॥

आज्ञावस्तु समन्ताच्च गम्यत इत्यागमः स्मृतः ।

तनुते प्रापते नित्यं तन्त्रमित्यं विदुर्बुधाः ॥

[श्रीसत्कारिशर्मालिखित भूमिका (दुर्गासप्तशती चौ० खम्बासंस्कृत सीरीजी वाराणसी)]

तन्त्र की परिभाषा शास्त्रों में इस प्रकार प्राप्त है—

अस्य वामस्य सूक्तं तु जपेच्चान्यत्र वा जते ।
ब्रह्महत्यादिकं दग्ध्वा विष्णुलोकं स गच्छति ॥

अर्थात् इस वामसूक्त के पाठमात्र से ही विष्णुलोक की प्राप्ति अर्थात् 'तद्विष्णोः परम पदम्' के अनुसार विष्णुपदप्राप्तिरूपी मोक्ष की प्राप्ति होती है ।

निरुक्त (निघण्टु) में वामशब्द का अर्थ 'प्रशस्य' लिखा है—

'अस्ते मा. अनेमाः, अनेद्यः, अनवद्यः, अनभिशस्ताः, उक्थ्यः, सुनीयः, पाकः, वामः, वयुनमिति दश प्रशस्यनामानि ।

यहाँ वामनाम प्रशस्य का चोतक है और प्रशस्य प्रज्ञावान् ही होते हैं—य एव हि प्रज्ञावन्तस्त एव हि प्रशस्या भवन्ति'। इससे स्पष्ट है कि प्रज्ञावान् प्रशस्य योगी का नाम ही 'वाम' है और उस योगी के मार्ग का ही नाम 'वाम-मार्ग' है । इस मार्ग में जितेन्द्रिय के लिये ही अधिकार की व्यवस्था है, न कि इन्द्रियलोलुप प्राणियों के लिये जैसा कि भगवान् शङ्कर का कथन है—

परद्रव्येषु योज्यश्च परस्त्रीषु नपुंसकः ।
परापवादे यो मूकः सर्वदा विजितेन्द्रियः ।
तस्यैव शाह्यणस्यात्र वामे स्यादधिकारिता ।

(मेरुतन्त्र)

अर्थात् परद्रव्य, परदारा और परापवाद से विमुक्त, सयमी ब्राह्मण ही वाममार्ग का अधिकारी होता है ।

अथ सर्वोत्तमो धर्मः शिवोक्तः सर्वसिद्धिदः ।
जितेन्द्रियस्य मुक्तभो नान्यस्यानन्तजन्तुनिः ।

(पुराणव्याख्यान)

इसी प्रकार मेरुतन्त्र आदि आगमग्रन्थों में पञ्चमकारों की व्याख्या इस प्रकार की गई है—

मद्य मसञ्च मीनञ्च मुद्रा मैथुनमेव च ।
मकारपञ्चकं प्राहुर्योगिनां मुक्तिदायकम् ॥

अर्थात्—मद्य, मास, मीन, मुद्रा और मैथुन ये पांच आध्यात्मिक मकार ही योगियों को मोक्ष देने वाले हैं ।

ध्योमपद्भुजनिध्यन्दसुधापानरतो नवेत् ।
मद्यपानमिदं प्रोक्तमितरे मद्यपायिनः ॥

प्रहारन्ध्र-सहस्रदल से जो लवित होता है उसे मुधा (अमृत) कहते हैं जिसे

कुलकुण्डलिनो द्वारा योगिजन प्राप्त करते हैं इसी का नाम मद्यपान है । इसके अतिरिक्त पीने वाला मद्यप कहलाता है ।

अर्थात्—ब्रह्मरन्ध्र के सहस्रारकमलरूपी पात्र से जो ब्रह्माण्ड को तृप्त करने वाली सुधा-धारा बहती है वही पीने योग्य मद्य (मदिरा) है ।

पुण्यापुण्यपशु हत्या ज्ञानखङ्गेन योगयित् ।
परे तप नवेच्छित्त मासाशी स निगद्यते ॥

अर्थात्—पुण्य-पापरूपी पशु को ज्ञानरूपी खड्ग से मार कर जो योगी मन को ब्रह्म में लीन करता है, वही मासाशी (मासाहारी) है ।

और भी—

कामक्रोधी पशू तुल्यो बलि दत्त्वा जप चरेत् ।

× × ×

कामक्रोधसुलोभमोहपशुकोऽह्यत्वा विवेकासिना ।
मांस निर्विषय परात्मसुखव भुञ्जन्ति तेषा बुधा ॥

अर्थात्—विवेकी पुरुष काम, क्रोध, लोभ और मोहरूपी पशुओं को विवेकरूपी तलवार से काट कर दूसरे प्राणियों को भी सुख देने वाले निर्विषयरूप भास का भक्षण करते हैं ।

मानसादीन्द्रियगण सयम्यात्मनि योजयेत् ।
स भीमाशी भवेद्देवि इतरे प्राणिहंसका ॥

मन आदि सारी इन्द्रियो को बश में करके आत्मा में लगाने वालो को ही भीमाशी (मत्स्याहारी) कहते हैं इससे इतर जीवहंसक हैं ।

आशातृष्णाजुगुप्साभयविषयवृणामानसज्जाप्रकोपा
ब्रह्माम्नावष्टमुद्रा परसुहृत्तिजन पश्यमान समन्तात् ।
नित्य सभ्भावयेत्तानवहितमनसा दिव्यभावानुरागी,
योऽसौ ब्रह्माण्डनाष्टे पशुहतिविमुखो रुद्रतुल्यो महात्मा ॥

अर्थात्—आशा-तृष्णादि आठ मुद्राओं को ब्रह्मरूपी अग्नि में अच्छी तरह पकाता हुआ दिव्य भाव का अनुरागी जो योगी पशु-हिंसा से पराङ्मुख होकर सावधान मन से भक्षण करे, वह महात्मा पुरुष ससार में रुद्रतुल्य होता है ।

या नाडी सूक्ष्मरूपा परमपद्मता सेवनीया सुवृष्णा,
सा कास्ताऽऽलिङ्गनार्हा न मनुजरमणी सुन्दरी बारदायित् ।

कुर्याच्चन्द्रार्कयोगे युगपवनगते मंथुन नैव योनौ,
योगीन्द्रो विश्वबन्धः सुखमयभवने तां परिष्वज्य नित्यम् ॥

अर्थात्—परमानन्द को प्राप्त हुई सूक्ष्मरूपवाली सुषुम्णा नाडी है, वही आलिङ्गन करने योग्य उपभोग्या कान्ता है, न कि मनुष्यरूपा सुन्दरी वेश्या । सुषुम्णा का सहस्रचक्रान्तर्गत परब्रह्म के साथ संयोग का ही नाम मंथुन है, स्त्री-सम्भोग का नहीं ।

धीर भी—

ध्यान देव्याः पदान्मोजे पञ्चम परिकीर्तितम् ।

अर्थात्—श्रीदेवी के श्रीचरणों का चिन्तन ही पञ्चम अर्थात् मंथुन है ।

सारयायनतन्त्र

प्रस्तुत 'सारयायनतन्त्र' तन्त्रशास्त्र का ही सारयायनमुनिप्रोक्त^१ एक लघुग्रन्थ है । यद्यपि इसकी परिगणना शिवमुखोद्गीर्णं नानागमो म वर्णित ६४ तन्त्रों में तो नहीं की गई है, फिर भी यह मुनिप्रणीत होने के कारण उपतन्त्रों में अवश्य ही परिगणनीय है जैसा कि वाराहीतन्त्र^२ के निम्न पद्यों से स्पष्ट है—

बौद्धोक्ता-युपतन्त्राणि कापिलोक्तानि यानि च ।
ब्रह्मुक्तानि च एतानि जैमिन्मुक्तानि यानि च ॥
वसिष्ठ ऋषिश्शैव नारदो गण एव च ।
पुलह्यो नारद तिष्ठो याज्ञवल्क्यो भृगुस्तथा ॥
शुनो बृहस्पतिश्शैव शंखे जे मुनिसत्तमा ।
एनि प्रणीताभ्यन्यानि उपतन्त्राणि यानि च ॥
न सख्याताणि तान्यत्र धर्मविद्वान्प्रात्मनि ।
सारात्सारतराप्येव सख्यातानि त्रयोपत ॥

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि 'जगत् के भौतिक साधनों की उन्नति के द्वारा जो कुछ संभव हो सकता है उसे एक ही ध्यमित अपनी मानसिक शक्ति के विकास द्वारा सिद्ध कर सकता है । इस मानसिक शक्ति को बढ़ाने का उत्तम साधन है—वाणी द्वारा अथवा मन ही मन मन्त्रों का उच्चारण करना । प्रागम-ग्रन्थों में ऋषि महर्षिषो द्वारा गुदीर्णराज

१. पपत्रो नारदो विद्यां सात्स्यायनमुनिं प्रति ।
उपदेशयमेर्णव उक्तवानेच्छन्दरे ॥१५॥
तत्र देवीकटाक्षेण तृत्वतागमं भुवि ।
[सांख्यतन्त्र प्रथम पटल]
२. सारयायनतन्त्र—त्रिगोपपाठ, पृष्ठ - ५८५ ।

तक अनुभूत एव सुपरीक्षित कुछ ऐसे शब्दो एव शब्दसमूहो का निर्देश किया गया है जिन्हें 'वोजमन्त्र', 'हृदयमन्त्र' अथवा 'मालामन्त्र' कहा गया है' । इन मन्त्रो का निश्चित सख्या मे जप करने से (उच्चारण करने से) निश्चित ही अपने उद्देश्यो (मनोरथो) की प्राप्ति होती है जैसा कि निम्नोक्ति से स्पष्ट है—
'एक. शब्द. सुप्रयुक्त स्वर्गे लोके च कामधुग्भवति' ।

प्रस्तुत ग्रन्थ इसी का एक उबलन्त उदाहरण है जिसमे नारदोपासिता श्री-वगलामुखीदेवी की पञ्चाङ्गोपासना-विधि के साथ ऐसे विशिष्ट १५ मन्त्रो के प्रयोग-विधान बतलाये गये हैं जिनके द्वारा साधक (उपासक) मनुष्य अत्यन्त विस्मयोत्पादक अलौकिक शक्तियो (सिद्धियो) को अर्जित कर अपनी समस्त अभिलाषाओ को प्राप्त कर सकता है ।

श्रीवगलामुखी

श्रीवगलामुखी आगमग्रन्थो मे वर्णित दश महाविद्याओ मे अन्यतम है जिसे इस तन्त्र मे गह्यास्त्रस्तम्भिनीविद्या, स्तब्धमाया, प्रवृत्तिरोधिनी, वगला, मन्त्रजीवनविद्या, प्राणिप्राणापहारिका एव षट्कर्मधारविद्या के नाम से अभिहित किया गया है—

गह्यास्त्रस्तम्भिनी विद्या स्तब्धमायामनुस्तथा ।

प्रवृत्तिरोधिनी विद्या वगला च कुमारक ॥६॥

मन्त्रजीवनविद्या च प्राणिप्राणापहारिका ।

षट्कर्मधारविद्या च ये ते पर्यायशाचका ॥१०॥

(प्रथम पटल)

ऐसा प्रतीत होता है कि निगमशास्त्रोक्त बल्गा^२ ही आगमशास्त्रो की वगलामुखी है क्योंकि संस्कृतभाषा मे जैसे 'हिंस' शब्द वर्णव्यत्यय होने के कारण 'सिंह' और लौकिक भाषा मे 'मतलब' मतबल बन जाता है वैसे ही निगम की

१. विश्वत्यर्णाधिका मन्त्रा मालामन्त्रा इति स्मृताः ।
दशाक्षराधिका मन्त्रास्तद्वर्णाभिजसजिताः । (सिंहसिद्धान्तसिन्धु पृष्ठ २६५)
२. कालो तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी ।
मैरवी धिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा ॥
वगला सिद्धविद्या च मातङ्गी कमलात्मिका ।
एता दश महाविद्याः सिद्धविद्याः प्रकीर्त्ताः ॥ (प्राणतोषिणी, पृष्ठ-७१७)
३. यथा वै कृत्यामुत्खनन्ति अथ सालसा मोषा भवति । तथो एवैव एतच्चयस्मा अत्र वरिचद् द्विपन् भ्रातृव्यः कृत्या बल्गा निखनति तानेवैतदुत्स्करति ॥ (शतपथब्राह्मण-३।५।४।३)

ख. ग्रन्थाङ्क-५५८५; लिपिकाल-१६वीं शताब्दी (विजयम), पत्र-संख्या ५१; माप-३४'५ + १३' से. मी; पवित्र-६, अक्षर ३६; दशा-सुन्दर, सुवाच्य एव अपेक्षाकृत शुद्ध प्रति ।

ग. ग्रन्थाङ्क-१८३६५; लिपिकाल-सं० १७६६ (विजयम) पत्रसंख्या ४२; माप-२३' × १२'५ से. मी., पवित्र-१२; अक्षर ३३, दशा-कुछ जीर्ण, सुवाच्य किन्तु अनुद्ध ।

घ. ग्रन्थाङ्क-१८३६३, लिपिकाल-१६वीं शताब्दी (विजयम) पत्र संख्या-१२४, पवित्र-६, अक्षर-१६, दशा-ठीक-ठीक है, सुवाच्य किन्तु अनुद्ध प्रति है ।

रा० श्रीरामकृपालु शर्मासंग्रह ग्रन्थाङ्क-माप-२३' × १०'८, लिपिकाल-१० १६२६ (विजयम) पत्रसंख्या-४६, पवित्र-२ अक्षर-४२, दशा-जीर्ण, सुवाच्य एव अनुद्ध प्रति है ।

आनार-प्रदर्शन

मैं राजस्वान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के निदेशक समादरणीय डॉ० फतहसिंहजी का विशेष आभारी हूँ जिनके सत्परामर्श एव सत्प्रेरणा से इस अतिविलम्बित ग्रन्थ का संपादन-कार्य पूर्ण कर सका । जयपुर-निवासी प० श्रीरामकृपालुजी शर्मा का भी मैं विशेष आभार मानता हूँ जिन्होंने अग्रम संग्रह में से टूट कर इस ग्रन्थ की प्रति हम प्रेषित की । साथ ही मैं प्रतिष्ठान के सहयोगी विद्वत्पुस्तकालय-सहायक श्रीमती गणेशी धारव एव प्रति-लिपिकर्ता श्रीमजेशकुमारसिंह जी भी साधुवादों से सत्कृत करता हूँ जिन्होंने पद्यानुक्रम बना कर मुझे सहयोग दिया । अग्रम में साधक विद्वानों से सतत प्रार्थना व ना हूँ कि इस ग्रन्थ में दृष्टि-दोष एव चित्तचाञ्चल्यवश वही कोई त्रुटि रह गई हो उसका वे समाधान करते दृष्टे 'समादधतु सञ्जना.' के अनुसार, मुझे क्षमा कर ।

कार्तिक शुक्ल एकादशी
विश्वम संवत् २०२६

विदुषामाश्रयो
गोस्वामी लक्ष्मीनारायणदीक्षित

विषयानुक्रमः

क्रमः	विषय	पृष्ठ	श्लोक
१	प्रथमः पटलः	पृष्ठ १-३	
(१)	पीताम्बरादेवोप्यानम्	१	१
(२)	मायावि-राक्षसाञ्जेतुकामस्य कार्तिकेयस्य शिवप्रति जयोपायजिज्ञासा	१	२-६
(३)	कार्तिकेय प्रति जपार्थं शिवनिगदित ब्रह्मास्त्रविद्या- वगलामनुप्रशंसनम्	१-२	७-१४
(४)	नारदस्य सांख्यायनभुनये ब्रह्मास्त्रविद्योपदेशः, तद्विद्यायां भूमौ प्रकाशक्रमश्च	२	१५-१५
(५)	ब्रह्मास्त्रविद्यामन्त्रोपासनाफल, मन्त्रलव्यये कुलगुरुमुखाद् दीक्षाग्रहणावश्यकत्वञ्च	२-३	१७-१८
२.	द्वितीयः पटलः	पृष्ठ ३-५	
(१)	द्विभुजापीताम्बराध्यानम्	३	१
(२)	दीक्षाविधिजिज्ञासा	४	२
(३)	पुस्तकलिखितमन्त्रजपे हानिसम्भवात् कुलगुरुमुखाद्दीक्षाग्रहणप्रतिपादनम्	४	३-६
(४)	सद्गुरुलक्षणानि	४	७-११
(५)	कारणत्रयेण विद्योपलब्धिः, विद्याया राजसादिभेदत्रयञ्च	५	१२-१७
(६)	शिष्यलक्षणानि	५	१८-२२
३.	तृतीयः पटलः	पृष्ठ ६-८	
(१)	वाङ्मुखस्तम्भिनीवगलामुखोप्यानम्	६	१
(२)	अभियेकविधिजिज्ञासा	६	२
(३)	मन्त्रमिषेचने कालनिर्णयः	६	३-६
(४)	शिष्यस्नापन, मायत्रीजपस्यावश्यकत्वञ्च	६	६-७
(५)	कलशमवकस्थायनविधिः	७	८-१७
(६)	ऋत्विग्वरणविधिः कलशमार्जनविधिश्च	७-८	१८-२४
(७)	विद्यामन्त्रोपदेशविधिः	८	२५-२८

प्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
----------	------	-------	-------

४. चतुर्थः पटलः -११

(१)	प्रेतासनावगलामुखीध्यानम्	६	१
(२)	ब्रह्मास्त्रमन्त्रसन्ध्याजिज्ञासा	६	२
(३)	मन्त्रसन्ध्याविधिः	६-१०	३-१६
(४)	त्रिकालोपस्थानम्	१०-११	१७-२५
(५)	मन्त्रसन्ध्याोपस्थानयोरनिवार्यत्वम्	११	२६-२६

५ पञ्चमः पटलः पृष्ठ ११-१३

(१)	श्रीवगलादेवीध्यानम्	११	१
(२)	एकाक्षरीमहामन्त्रजिज्ञासा	११	२
(३)	एकाक्षरीबीजमन्त्रोद्धार	१२	३-६
(४)	श्रद्ध्यादिकरपङ्क्त्यासविधिः	१२	७-१०
(५)	पञ्जरन्यासविधिः	१२-१३	११-१५
(६)	मातृकान्यासविधिः	१३	१६-१८
(७)	वगलामुखीध्यान तञ्जपविधिश्च	१३	१६-२५

६ षष्ठः पटलः पृष्ठ १४-१६

(१)	स्तम्भनकारिणीवगलामुखीध्यानम्	१४	१
(२)	एकाक्षरीमहामन्त्रप्रयोगजिज्ञासा	१४	२
(३)	होमे कामनाभेदेन कुण्डभेदा	१४	३-६
(४)	होमे कामनाभेदेन स्थण्डिलभेदा	१४	१०-११
(५)	होम सहायाभेदेन कुण्ड-स्थण्डिलमानानि	१५	१२-१५
(६)	ज्ञान्यादिषट्कर्माणि तत्फलक्षणानि च	१५	१६-२०
(७)	कर्मभेदेन होमद्रव्याणि तत्सख्यादृतिनिर्धारण च	१६	२०-२७

७ सप्तमः पटलः पृष्ठ १६-१८

(१)	श्रीवगलाध्यानम् (पीताम्बरधरादेवीध्यानम्)	१६	१
(२)	षट्त्रिंशदक्षरीवगलाविद्यामन्त्रजिज्ञासा	१६	२
(३)	षट्त्रिंशदक्षरीविद्यामन्त्रोद्धार	१६-१७	३-७
(४)	न्यासविद्याश्रम	१७	८-६
(५)	वगलामुखीध्यान तदावश्यश्च	१७	१०-१२
(६)	श्रद्ध्यादिकपनम्	१७	१३-१५

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(७)	सङ्कल्पपूर्वकं जपसंहयानिर्धारः	१७	१५
(८)	तर्पण-होमद्रव्याणि तत्प्रकारश्च	१७	१६-१७
(९)	पुरश्चरणलक्षणं तत्रकरणेऽसिद्धिश्च	१७-	१८-१९
(१०)	कर्मभेदेन सख्यायुतहोमद्रव्याणि	१८	२०-२६

८. अष्टमः पटलः पृष्ठ १८-२१

(१)	शिवा (वगलादेवी) ध्यानम्	१८	१
(२)	वगलामन्त्रराजप्रयोगजिज्ञासा	१८	२
(३)	कर्मभेदेन होमद्रव्ययोगा, नानाद्रव्ययोजन- प्रकारा मन्त्रयोजनाविधिश्च	१८-२०	३-२६
(४)	द्रव्यतर्पणेन परकृतकर्मनिरास.	२०-२१	२७-२९

९. नवमः पटलः पृष्ठ २१-२३

(१)	वगलामुखीध्यानम्	२१	१
(२)	वगलामनोः प्रयोगमूलमन्त्रजिज्ञासा	२१	२
(३)	यन्त्रोद्धारा	२१	३-६
(४)	यन्त्रे मन्त्रलेखनविधिः	२१-२२	६-९
(५)	कर्मभेदेन नानापुष्पैर्यन्त्रपूजाविधिः	२२-२३	९-२७

१०. दशमः पटलः पृष्ठ २३-२६

(१)	पीताम्बरावगलाध्यानम्	२३	१
(२)	मन्त्रलेपनप्रयोगजिज्ञासा	२४	२
(३)	लेपने कर्मभेदेन चन्दनादिद्रव्यनिरूपणम्	२४-२६	३-२८

११. एकादशः पटलः पृष्ठ २६-२९

(१)	वगलादेवीध्यानम्	२६	१
(२)	यन्त्रराजतर्पणप्रयोगजिज्ञासा	२६	२
(३)	कर्मभेदेन गुडादितर्पणद्रव्यनिरूपणम्	२६-२९	३-२८

१२. द्वादशः पटलः पृष्ठ २९-३१

(१)	चिन्मयीवगलाध्यानम्	२९	१
(२)	वगलागायत्रीजिज्ञासा	२९	२

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(३)	गायत्रीमन्त्रोद्धारः	२६	३-५
(४)	ऋष्यादिक्रमनान्ते पुरदक्षर्या-न्यास-ध्यानादिनिरूपणम्	२६	६-६
(५)	कर्मभेदेन गायत्रीमन्त्रप्रयोगाः	३०-३१	१०-२६

१३. प्रयोदशः पटलः पृष्ठ ३१-३४

(१)	वगताम्बाध्यानम्	३१	१
(२)	यन्त्रपूजाविज्ञानम्	३१	२
(३)	यन्त्रपूजाविधिः	३२	३-१३
(४)	शास्त्रपामादौ पूजाविचारः	३३	१४-१६
(५)	पूजा-कारणद्वयविचारः	३३	१७-१८
(६)	मन्त्रसिद्धिफलकथनम्	३३-३४	१९-२७

१४. चतुर्दशः पटलः पृष्ठ ३४-३७

(१)	वगताध्यानम्	३४	१
(२)	वगतार्चाविधिज्ञानम्	३४	२
(३)	देवभेदान् मूर्तिव्यतिरेकहारपूजाकथनम्	३४	३-५
(४)	सृष्टिप्रभेदेन सौभाग्याधनविधिः	३५-३६	६-१७
(५)	प्रयोगादौ सर्वधानी सौभाग्याधनं द्विना शीरसा'रामनम्	३६	१८-२४
(६)	सौभाग्याधने स्वपत्न्या'रपूजा'द्वयकथानि सांख्यायन मृत्तुदुर्गाया मन्त्रानु नमना १	३६-३७	२६-३१

१५. पञ्चदशः पटलः पृष्ठ ३७-६०

(१)	सप्तमनाशयवर्षाविधिज्ञानम्	३७	१
(२)	पञ्चवार्षविधिज्ञानम्	३७	२
(३)	पञ्चवार्षविधिप्रथमम्	३७	३-६
(४)	वद १ १२'वर्षा'द्वारात् १२ म वर्षा'ध	३८	७-१६
(५)	१२'वर्षा'द्वारात् १२ म वर्षा'ध	३८-६०	१७-३३

१६. षोडशः पटलः पृष्ठ ४०-४३

(१)	सप्तमनाशयवर्षाविधिज्ञानम्	४०	१
(२)	षोडशवार्षविधिज्ञानम्	४०	२
(३)	१२'वर्षा'द्वारात् १२ म वर्षा'ध	४०-४१	३-१३
(४)	१२'वर्षा'द्वारात् १२ म वर्षा'ध	४१-४३	१४-२४

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(५)	बृहद्भानुसुह्यस्त्रविद्योद्धारस्तत्प्रयोगविधिश्च	४२-४३	२५-३७
(६)	प्रयोगान्ते सौभाग्यार्चाऽऽवश्यकत्वम्	४३	३८-४०
१७. सप्तदशः पटलः पृष्ठ ४३-४६			
(१)	वगलाम्बिकाध्यानम्	४३	१
(२)	शताक्षरीमहामन्त्रजिज्ञासा	४३	२
(३)	शताक्षरीमन्त्रोद्धारः	४४	३-१०
(४)	ऋष्यादि-न्यासविद्या-ध्यानानि	४४-४५	११-१५
(५)	जपसह्या-त्तर्पणद्रव्यादिकथनम्	४५	१६-१७
(६)	कर्मभेदाद्बनद्रव्याणि तदाहुतिसह्या-समय-कथनञ्च	४५-४६	१८-२८
१८. अष्टादशः पटलः पृष्ठ ४६-४९			
(१)	जिह्वास्तमनकारिणोवगलाध्यानम्	४६	१
(२)	शताक्षरीहवनप्रयोगजिज्ञासा	४६	२
(३)	विषमञ्चरादिविधिरोगविनाशनाथं नानाद्रव्याहुति- प्रयोगाः	४६-४७	३-८
(४)	यशीकरणाद्यमोप्सितकामनाभेदावनेकविधद्रव्याहुति- प्रयोगा	४७	९-१६
(५)	बहुमूत्रादिरोगशमनप्रयोगा.	४७-४८	१७-१९
(६)	वश्याकर्षणप्रयोगाः	४८	२०-२५
(७)	शत्रुरोगकृत्प्रयोगाः	४८	२५-२७
(८)	मारणप्रयोगाः	४९	२८-३४
१९. एकोनविंशः पटलः पृष्ठ ४९-५३			
(१)	चतुर्भुजावगलाध्यानम्	४९	१
(२)	शताक्षरीमन्त्रप्रयोगोपसंहारजिज्ञासा	४९	२
(३)	रिपुमारणादिप्रसङ्गे गुलिकादिविधप्रयोगा- स्तद्विधविधिश्च	४९-५०	३-१५
(४)	पुस्तिकाद्यभिचारिप्रयोगा	५१-५३	१६-३४
(५)	प्रयोगोपसंहारविधि	५३	३५-४३
२०. विंशः पटलः पृष्ठ ५४-५७			
(१)	वगलादेवीध्यानम्	५४	१

श्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(२)	परविद्याभेदतोपायप्रश्न	५४	२
(३)	परविद्याभेदिनीमन्त्रोद्धारस्तवृथ्यादिकथनञ्च	५४	३-११
(४)	तन्व्यास ध्यान-पुरश्चर्याकथनम्	५५	१२-१८
(५)	परविद्याभेदिनीमन्त्रस्य नानाप्रयोगा	५५-५६	१९-२६
(६)	सिद्ध मन्त्र माहात्म्यवर्णनम्	५६-५७	२६-३४

२१. एकविंश पटल. पृष्ठ ५७-५९

(१)	परविद्यामक्षिणीवगलाध्यानम्	५७	१
(२)	परविद्याकथनादिमहदाश्चर्यकरा नानाप्रयोगा	५७-५९	२-२४
(३)	प्रयोगोपसंहारा	५९	२४

२२. द्वाविंश पटल पृष्ठ ५९-६१

(१)	वगलामुखीध्यानम्	५९	१
(२)	वगलास्त्रविद्याप्रश्न	५९	२
(३)	वगलास्त्रविद्याया क्रम	५९	३-४
(४)	वगलास्त्रविद्यामन्त्रोद्धार	५९-६०	४-८
(५)	तद्वृथादि-न्यास-ध्यान पुरश्चर्याविधि	६०	९-१८
(६)	शत्रुक्षयकृदादिनानाप्रयोगा	६१	१८-३०

२३. त्रयोविंश पटल पृष्ठ ६२-६४

(१)	श्रीवारादेवीध्यानम्	६२	१
(२)	वगलास्त्रमहामन्त्रप्रयोगजिज्ञासा	६२	२
(३)	वाक्तिद्धिप्रवप्रयोग	६२	३-४
(४)	व्याधिनाशनप्रयोग	६२	५
(५)	जिह्वा श्रोत्र प्राण पाद जठराग्नि गात्रस्तम्भन प्रयोगा	६२	६-११
(६)	शत्रुभार्याया गमस्रावप्रयोग	६२-६३	१२-१३
(७)	रिपुस्त्रीणा बन्ध्याकरणप्रयोगस्तप्राशनप्रयोगश्च	६३	१४-१६
(८)	रिपुलक्ष्मीविनाशकायनेके प्रयोगा	६३-६४	१७-२७

२४. चतुर्विंश पटल पृष्ठ ६४-६६

(१)	सस्तम्भरूपावगलाम्बाध्यानम्	६४	१
(२)	वगलामन्त्रमातृकालक्षणजिज्ञासा	६४	२

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(४)	हरिद्रामालानिर्माणविधि.	६४-६५	३-६
(४)	मालासंस्कारविधि.	६५	१०-१४
(५)	मालाया भूमौ पतने पुनस्तत्संस्कारः	६५	१५-१६
(६)	शान्त्यादिकर्मभेदान् मालालक्षणानि	६५-६६	१७-१९
(७)	पुस्तकानिर्माणविधिः	६६	२०-२३
(८)	प्राणप्रतिष्ठाचर्चनविधिः	६६	२४-२७

२५. पञ्चविंशः पटलः पृष्ठ ६६-७१

(१)	वगलादेवीध्यानम्	६७	१
(२)	चतुरक्षरीमहामन्त्रजिज्ञासा	६७	२
(३)	चतुरक्षरीमहामन्त्रोद्धारः	६७	३-७
(४)	चतुराक्षरी-न्यासविद्याकथनम्	६७	७-१०
(५)	चतुरक्षरी-श्रद्ध्यादिकथनम्	६७	११
(६)	वगलाचतुरक्षरीमन्त्रध्यान पुरश्चर्याविधानञ्च	६८-६९	१२-२१
(७)	योगिनीलक्षणम्	६८	२२
(८)	लौकिक्यादिविधिविधपूजा तत्लक्षणानि च	६८	२३-२६
(९)	योगिनी मता निगुंशा चतुर्थी पूजा	६९	२७
(१०)	चतुर्विधचर्याया गौडादिदेशभेदात् सूष्ट्यादिनामसङ्केत- स्तदर्चाविधिस्तत्फलानि च	६९-७०	२८-४४
(११)	भारीनिर्वाहिकरणे हानिः	७०-७१	४५ ४६

२६. षड्विंशः पटलः पृष्ठ ७१-७३

(१)	वगलादेवीध्यानम्	७१	१
(२)	वगलाचतुरक्षरीमन्त्रप्रयोगजिज्ञासा	७१	२
(३)	नानाद्रव्ययोगेन तर्पणप्रयोगविधिः	७१-७३	३-३०

२७. सप्तविंशः पटलः पृष्ठ ७३-७६

(१)	परब्रह्माधिदेवतावगलाध्यानम्	७३	१
(२)	वगलाचतुरक्षरीमन्त्रहोमप्रयोगजिज्ञासा	७३	२
(३)	कर्मभेदात् कुण्डभेदा. स्थानभेदा होमद्रव्ययोगाश्च	७४-७६	३-२६

२८. अष्टाविंशः पटलः पृष्ठ ७६-७८

(१)	स्तम्भनाम्नस्त्रैवरूपिणीवगलाध्यानम्	७६	१
-----	-------------------------------------	----	---

वमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(२)	स्तम्भविद्यायाः प्रयोगजिज्ञासा	७६	२
(३)	वगलाहृदयमन्त्रप्रशस्तिवर्णनम्	७६-७७	३-११
(४)	वगलाहृदयमन्त्रोद्धारस्तज्जपेन यन्ध्यादोष- कृत्रिमरोगादिनाशनफलञ्च	७७-७८	१४-२४

२९. ऊनत्रिंशः पटलः पृष्ठ ७८-८०

(१)	वगलाध्यानम्	७८	१
(२)	वगलाहृदयमन्त्र-प्रयोगजिज्ञासा	७८	२
(३)	वगलाहृदय-मन्त्रोद्धार	७८	३
(४)	स्वर्णादिनिमित्ते यन्त्रे वगलाहृदयमन्त्रलेखनक्रमः	७९	४-७
(५)	यन्त्रपूजाविधि	७९	८-९
(६)	यन्त्रपूजाया कर्मभेदानानाकुमुमप्रयोगा	७९-८०	९-२२

३०. त्रिंशः पटलः पृष्ठ ८१-८३

(१)	वगलाध्यानम्	८१	१
(२)	वगलाष्टाक्षरमन्त्रजिज्ञासा	८१	२
(३)	वगलाष्टाक्षरमन्त्रोद्धारस्तवृष्यादिग्यासविद्याकथनञ्च	८१	३-६
(४)	मन्त्रभेदेन वगलाध्यान तन्मन्त्रपुरद्वयार्था च	८१-८२	७-१२
(५)	कर्मभेदाद् विष्वादिविधिवृक्षमूलेषु जपविधानेन नानाकार्यसिद्धयः.	८२-८३	१३-१९

३१. एकत्रिंशः पटलः पृष्ठ ८३-८६

(१)	भक्तचित्तामणिवगलाध्यानम्	८३	१
(२)	वगलाष्टाक्षरोमन्त्रप्रयोगजिज्ञासा	८३	२
(३)	पुत्तलीप्रयोग	८४	३-१
(४)	नानाद्रव्ययोगेन जिह्वास्तम्भादिदृते भस्मचूर्ण- भक्षणायनेके प्रयोगाः.	८४	६-१
(५)	पशुपद्याद्यज्ञाव्यवाना स्थानविशेषेषु निक्षेपाद्- रिपुमारणादिप्रयोगाः.	८४-८५	१२-१
(६)	नानावस्तुसयोगजधूपवासनादिप्रयोगाः.	८५-८६	१८-३

३२. द्वित्रिंशः पटलः पृष्ठ ८७-९०

(१)	प्रेतासनस्थावगलाध्यानम्	८७	१
-----	-------------------------	----	---

क्रमांक	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(२)	वगलास्त्रोपसंहारविद्याजिज्ञासा	८७	२
(३)	ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनीकालीविद्यामन्त्रोद्धार	८७	३-६
(४)	विद्यामन्त्रपुरदत्तव्याविधि	८७-८८	१०-१६
(५)	वगलास्त्रोपसंहारक्रम (जिह्वास्तम्भनाद्यभिचार- शान्तिप्रयोगा)	८८-९०	१७-४०

३३. त्रयस्त्रिंश. पटल पृष्ठ ९०-९४

(१)	श्रीवगलादेवोध्ययनम्	९०	१
(२)	वगलास्त्रोपसंहारयन्त्रजिज्ञासा	९०	२
(३)	कपिलानवनीतेनोपलिप्ते कदनीपत्रे तमत्रयन्त्र- लेखनक्रम	९१	३-५
(४)	यन्त्रस्याष्टदलेषु साक्ष्यमालामनोलेखननिर्देश	९१	५
(५)	साक्ष्यमालामनोश्छ्दार	९१	६-९
(६)	यन्त्रप्राणप्रतिष्ठा पूजाविधि	९२	१०-१२
(७)	अभिचारशान्तिकरो यन्त्रधारणप्रयोग	९२	१३-१७
(८)	विविधव्याधिविनाशनकरस्ताम्बूलचवणप्रयोग	९२	१८-२१
(९)	मार्जनं तोषयानादभिचारशान्ति	९३	२२
(१०)	धारणयन्त्रस्योद्धारस्तत्प्राणप्रतिष्ठापूजाविधीच	९३	२३-२८
(११)	विविधकृत्त्रिमरोपाविनाशनार्थं तद्यन्त्रधारण- मार्जनं प्राशनं पानप्रयोगा	९३-९४	२९-३८

३४. चतुस्त्रिंश पटल पृष्ठ ९४-९८

(१)	वगलाध्ययनम्	९४	१
(२)	समस्तक्रम सर्वोपद्रवादिनाशनजिज्ञासायां कृत्वावेज्ञा, वश्य)स्तम्भनप्रयोगकथनम्	९४-९५	२-१०
(३)	तत्र ज्वालामुख्यादिपञ्चास्त्रप्रयोगविधि , त्रैलोक्यविजयास्त्रप्रयोगस्तत्फलकथनञ्च	९५-९७	११-३३
(४)	तद्वचन तपणप्रयोगा	९७-९८	३४-३८

३५. पञ्चत्रिंश पटल पृष्ठ ९८-१००

(१)	वगलाध्ययनम्	९८	१
(२)	योजभेदजिज्ञासा (वगलामन्त्रनिर्णयजिज्ञासा)	९८	२
(३)	पट्त्रिंशदक्षरीविद्याया ऋष्याविविचारे साक्ष्याथेन ब्रह्मयामल जयद्रव्ययामल हारिद्रसहितामतानि	९८	३-८

प्रमाण	विषयः	पृष्ठ	स्तोत्र
(४)	फलो सांख्यायनमतस्यैव प्राधान्यम्	६८	८
(५)	विद्यामन्त्रजपात्पूर्व मृत्युञ्जयमन्त्रजप- स्तदकरणेऽसिद्धिश्च	६८	९
(६)	सांख्यायनोक्तबीजसप्तमायां स्थिरमायाबीजोद्धारः	६९	१०-११
(७)	पीतवासायते स्थिरबीजलक्षण तदुद्धारश्च	६९	१३-१५
(८)	रेफयुक्ताया स्थिरमायाविद्याया जपेनैव सर्वसिद्धि	६९	१६-१७
(९)	लघुयोडा-महायोडादिन्यासात् एव विद्याजप प्रतिपादनम्	६९	१८-१९
(१०)	पीतवासायते बगलाध्याननिरूपणम्	१००	२०-२१
(११)	सांख्यायनमते पश्चिमायानयोत्तरायणभेदेन बगलापूजननिर्देश	१००	२२

३६. षट्त्रिंश. पटल. पृष्ठ १००-१०२

(१)	बगलाध्यानम्	१००	१
(२)	साररूपा सर्वकामंणनाशनोपायजिज्ञासा	१००	२
(३)	मन्त्र-कवच-मन्त्रात्मक सर्वकामंणनिर्णयिनो नाम प्रथमो योग	१००	३-६
(४)	धृष्टकामंणनिर्णयिनो नाम द्वितीयो योग	१००-१०१	६-८
(५)	कवच-स्तोत्र-मन्त्रात्मक धूरकामणनिर्णयो नाम योग	१०१	९-१०
(६)	गायत्री-कवच-मन्त्र-स्तोत्रात्मक सर्वकामंण- नाशनो नाम योग	१०१	११-१२
(७)	तारा-काली-धृष्टमस्तामन्त्रात्मक सर्वदोष- निवारणो नाम योग	१०१	१२-१३
(४)	कवच-ब्राणात्मक सर्वदोषनिवारणो नाम योग	१०१	१४-१५
(६)	रपास्तम्भ-प्राणरक्षा-दिव्यरक्षाकारक शताक्षरीमन्त्र-कवच-हृदयारामको योग	१०१	१६-१७
(७)	कवच-चतुरक्षरीमन्त्रात्मक कवचचन्द्रवर्णात्मको योग	१०२	१८
(८)	एकाक्षरी-वेदाक्षरी षट्त्रिंशदक्षरी कवचात्मको- महाब्रह्मास्त्रयोग	१०२	१९-२४

३५. पञ्चत्रिंश पटल पृष्ठ १०२-१०५

(१)	पीताम्बराध्यानम्	१०२	१
-----	------------------	-----	---

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ	श्लोक
(२)	रहस्यजिज्ञासा	१०२	२
(३)	ब्रह्मास्त्रयोगफलप्रशंसनम्	१०३	३-१६
(४)	होमयोग-प्रयोगकथनम् (प्रयोगोपसंहार)	१०४-१०५	१७-३४
(क)	परिशिष्टम्	पृष्ठ १०५-११६	
	शुद्ध्यादिन्यासध्यानादियुताः साध्यायनतन्त्रगता मन्त्राः	१०५-११६	
(ख)	परिशिष्टम्	पृष्ठ ११६-११८	
	ब्रह्मपञ्जरकवचस्तोत्रम्	११६-११८	
(ग)	परिशिष्टम्	पृष्ठ ११८-१२२	
	बगलामुखीत्रं लोख्यविजय नाम कवचम्	११८-१२२	
(घ)	परिशिष्टम्	पृष्ठ १२२-१२८	
	धोषोत्ताम्बरास्त्रावलीस्तोत्रम् साध्यायनतन्त्रस्थानाम्पद्यानामनुक्रमः	१२२-१२८ १-१८	



शुद्धिपत्रम्

पृष्ठ	पङ्क्ति	प्रशुद्धम्	शुद्धम्
१६-	१२	चान्य	चान्ये
१८	११	तलतंलेन	तिलतंलेन
२१	७	शालोदरी	शालोदरी
२१	२६	विविखेत्	विलिखेत्
२४	१३	०वाक्पतिस्तुवा	०वाक्पतिस्तु वा
२७	२८	श्रुपिसस्यया	श्रुपिसस्यया
२७	२६	सक्ष्मीवान्	सक्ष्मीवान्
३१	१७	दाभिघातेन	गदाभिघातेन
३५	१७	सस्मरेत् १६'	सस्मरेत् १६' १७
३८	६	लकार	लकार
३८	७	ह्र	ह्र
३८	१६	गदा	गदा
४१	२०	मनुः ५५	मनुः ५५
४३	३	तन्त्रराज०	मन्त्रराज०
४५	१	०जिह्वाभेदानार्थं	०जिह्वाभेदानार्थं
५०	२०	जिह्वास्तम्भ	जिह्वास्तम्भ
५२	५	सदाहः	स दाहः
५२	७	०मूर्धनि	०मूर्धनि
५२	२३	३. घ. पुस्तके	३. घ. पुस्तके
६१	३	जिह्वास्तम्भन०	जिह्वास्तम्भन०
६४	१५	सक्षरा	सक्षरा
६४	२५	विशेषो	विशेषो
६४	२६	तु	तु
६७	२१	वन्धस्यता	विन्धस्यता
६७	२६	छन्दो ऋ	छन्दोऽऽ
६८	१३	द्रावरुणदेवताम्	हृरिद्रावरुणदेवताम्
६८	२४	॥२॥	॥२२॥
७२	२	भयुत	भयुत
७४	२	॥६॥	॥३॥
७५	१६	ध्यानपूर्वकम्	ध्यानपूर्वकम्
७६	१३	सतर्पणम्	स तर्पणम्
८३	२५	सतत्फल०	सतत्फल०
८४	२	मण्डलात् ३०	मण्डलात् ३०

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धम्	शुद्धम्
८५	२२	॥२२॥	॥२३॥
८७	३०	२२. ०तद्दशाशय च	२२. रा० ०तद्दशाश च
८८	१६	॥१७॥	॥१८॥
८८	३१	१६. रा. तु यण्मास	१६. रा. श्लोकाद्धमिद नास्ति
८९	२५	८. रा. यद्यद्गण०	८. रा. यद्यद्गण०
९१	२३	परम	परम्
९२	१२	कृत्विमं:	कृत्विमं:
९२	१६	निश्चतम्	निश्चितम्
९२	२९	विशोपोऽय	विशोपोऽय
९३	१०	शवि लिखेद्	श विलिखेद्
९३	१०	चययाक्रमम्	च ययाक्रमम्
९३	२१	नाजंयेद्	नाचंयेद्
९३	२९-३०	१५ १६. १७	१५. १५. १६.
९६	१६	योगो य	योगोऽय
९७	शीपं	त्रयस्त्रिंशः	चतुस्त्रिंशः
९९	"	"	पञ्चदशः
१००	९	पट्त्रिंशः	पट्त्रिंशः
१०१	शीपं	द्वात्रिंशः	पट्त्रिंशः
१०३	"	चतुस्त्रिंशः.	पञ्चदशः
१०४	५	मध्यभागे	मध्यभागे
१०७	२०	ॐ बीज	ॐ बीज
११०	७	ज्वालामुख्यस्र०	ज्वालामुख्यस्र०
११०	१०	ऋष्यादि०	ऋष्यादि०
११०	१६	श्रीबहद्भानुमुख्यस्र०	श्रीबृहद्भानुमुख्यस्र०
११०	२६	प्राह्याणि	प्राह्याणि
११०	२९	ह्रीं ह्रीं ह्रीं वगला०	ह्रीं ह्रीं ह्रीं वगला०
११२	७	ह्रौं फट् स्वाहा	ह्रौं फट् स्वाहा
११२	९	परविद्याभक्षिणी	परविद्याभक्षिणी
११३	२६	कीलकाय	कीलकाय
११५	९	०वगलास्त्रोपसहार०	वगलास्त्रोपसहार०
११५	१८	ॐ शिखार्यं	ॐ शिखार्यं
११७	१९	विघ्नैर्ना०	विघ्नैर्ना०
११८	२१	मन्त्ररूप	मन्त्ररूपं
११८	२२	ज्ञेय	ज्ञेय

शुद्धिपत्रम्

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धम्	शुद्धम्
१२०	१	फ वं	फ व
१२२	१४	नगात्मने	नगात्मजे
१२३	७	बीज	बीज
१२३	२४	०स्थितिध्वसने	स्थितिध्वसने
१२४	१५	०सस्तम्भन	सस्तम्भनम्
१२५	८	वान्त	वात
१२५	१०	०सुदुर्लभ	सुदुर्लभ
१२५	२५	०मतीन्द्रिय	मतीन्द्रिय
१२५	२६	१ त्वपि पाठ.	इत्यपि पाठ.
१२६	७	द्वय	द्वय
१२६	८	गोप्यतम	गोप्यतम



सांख्यायनतन्त्रम्

॥ धीः ॥

सांख्यायनतन्त्रम्

—००००—

॥ अथ प्रथमः पटलः ॥

धीश्रिषाय नमः ॥^१ पीतांबरार्थं नमः ॥^२

मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेद्या

सिंहासनोपरिगता परिपीतवर्णाम् ।

पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गी^३

देवी भजामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ॥१॥

क्रीञ्चभेद उवाच—^४

कैलाश (स) शिखरासीन गौरीवामाङ्गसस्थितम्^५ ।

भारतोपतिवःत्मीकि-^६शेषसयुतमीश्वरम् ॥२॥

अष्टदिक्पालकोशाष्ट-^७विघ्नेशाष्टकसेवितम् ।

भैरवाष्टवृत्^८ देव मातृमण्डलवेष्टितम् ॥३॥

महापाशुपताक्रान्त^९ प्रमथैरावृत प्रभुम् ।

नत्वा स्तुत्वा कुमारश्च^{१०} इद वचनमन्नवीत् ॥४॥

चापचर्यासुनिपुर्णयुं^{११} द्वचर्याभयङ्करैः ।

नानामायाविना चैव^{१२} जेतुमिच्छामि^{१३} रक्षसाम्^{१४} ॥५॥

तस्योपाय च तद्विद्या वद मे करुणाकर ।

पुत्रोऽह तव शिष्योऽह कृपापात्रोऽहमेव च ॥६॥

इश्वर उवाच—^{१५}

साधु साधु महाप्राज्ञ क्रीञ्चभेदन^{१६}कोविद ।

ब्रह्मास्त्रेण विना शत्रुसंहारो^{१७} न भवेत्कलो ॥७॥

१ ख ष धीगणेशाय नमः ; ग. धीशवो जयत. । २ क. पीतांबरार्थं नमः ; घ. नास्ति । ३ ग. ०विभूषितागी । ४ ख ष क्रीञ्चभेदन उवाच : ग. क्रीञ्चभेदनोवाच । ५ घ. ०वामाङ्गसस्थितम् । ६ ख. ०वात्मीकी० ; ग. ०वात्मीकी ; घ. वात्मीक । ७ ख.घ. अष्टदिक्पालकोशाष्ट० । ८ ख.ग. भैरवाष्टकवृत् ; घ. भैरवाष्टयुत । ९ ग. महापशुपताक्रान्तम् ; घ. महापाशुपताक्रान्त । १० घ. कुमारोपि । ११ ख नानामाया-विनश्चैव ; घ नानामायाविन जेतु । १२ घ. जेतुमिच्छामि । १३ ख घ राक्षसाम् ; १४ राक्षसा । १५ ग इश्वरोवाच । १६ घ. भेदन । १७ क.ग घ शत्रुसंहार ।

तद्विद्यां च प्रवक्ष्यामि त्रिषु लोकेषु दुर्लभाम् ।
 पुत्रो देयः शिरो देयं न देया यस्य कस्यचित् ॥८॥
 ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनी विद्या स्तब्धमायामनुस्तथा ।
 प्रवृत्तिरोधिनी विद्या बगला च कुमारक ॥९॥
 मन्त्रजीवनविद्या च प्राणिप्राणापहारिका ।
 पट्कर्माधारविद्या^१ च ये ते^२ पर्यायवाचकाः ॥१०॥
 पट्प्रयोगास्त्रयो विद्या ये विद्यागमभूयिताः ।^३
 तिरस्कृताखिला विद्या त्रिशक्तिमयमेव^४ च ॥११॥
 स्तम्भनेन विना शान्तिर्वश्यञ्चैव तु तद्विना ।
 मोहनाकर्षणञ्चैव विद्वेषोच्चाटनन्तया^५ ॥१२॥
 मारण भ्रान्तिरुद्वेगकारण^६ च कुमारक ।
 विद्या च बगलानाम्नी मुनिगुह्य सुपावनम् ॥१३॥
 विना च स्तम्भिनीविद्या "न विद्या च प्रभासते ।
 तस्मादेव" महाविद्या^७ कमलासनजीवनम्^८ ॥१४॥
 पद्मजो नारदो विद्या" साक्ष्यायनमुनिं प्रति ।
 उपदेशक्रमेणैव उक्तवान्मेरुकन्दरे ॥१५॥
 तेन देवीकटाक्षेण कृतवानागम भुवि ।
 मूलमंत्रोपविद्याश्च^९ श्रद्धामन्त्राश्च विस्तरात् ॥१६॥
 प्रयोग चोपसंहार^{१०} तदाराधनतद्गुणम्^{११} ।
 विस्तरेणोक्तवानस्मि वक्ष्ये तत्सर्वमादरात् ॥१७॥
 स्वमन्त्राक्षरणी^{१२} विद्या स्वमन्त्रफलदायका^{१३} ।
 स्वकीर्तिरक्षिणी विद्या शत्रुसंहारकारिका^{१४} ॥१८॥
 परविद्याद्वेदन^{१५} च परमन्त्रविदारणम्^{१६} ।
 परमन्त्रप्रयोगेषु सदा विध्वंसकारकम्^{१७} ॥१९॥

१. ग. पट्कर्माधार० । २. ख.प एते । ३. ख. पट्प्रयोगाध्या विद्या पट्प्रयोगम-
 भूयिताः । ४. ग. त्रिरात्रिमयमेव । घ. त्रिशक्ति खसु मेव । ५. ग. तद्वेषोच्चाटन० ।
 ६. घ. भ्रान्तिमु० । " - " चिह्नान्तर्गतोऽन्धः घ. पुस्तके नास्ति । ७. ख. तस्मादेता । ८.
 ख. ०विद्या । ९. ०ख जीवनी । १०. ग. घ. ०विद्या च । ११. ग. चोपहार । १२. घ.
 ०लक्षणम् । १३. ख. स्वमन्त्ररक्षणी, घ. स्वविचाररक्षणी । १४. ख. ०दायिका ।
 ग. ०दायका । घ. ०दायिनी । १५. ग. ०कारक ; घ. ०कारिणी । १६. ख.
 घ. ०द्वेदनी । १७. ख. घ. ०विदारिणी । १८. ख. ०कारिका ; घ. ०कारिणी ।

परानुष्ठानहरण^१ परकीर्त्तिविनाशनम्^२ ।

परापजयकृद्^३ विद्या परेषा भ्रमकारणम्^४ ॥२०॥

ये वा विजयमिच्छन्ति^५ ये वा जेतु क्षय^६ क्लो ।

ये वा क्रूरमृगेन्द्राणां^७ क्षयमिच्छन्ति भानवाः ॥२१॥

ये(य इ)च्छन्त्याकर्षशान्त्यादि^८ वश्य सम्मोहनादिकम् ।

विद्वेषोच्चाटन प्रीति तेनोपास्यस्त्वय मनु^९ ॥२२॥

सत्सम्प्रदायविधिना^{१०} सद्गुरोर्मुखतस्तथा ।

उपदेशक्रमेणैव गृहीत्वा साधयेन्मनुम् ॥२३॥

कुलाचारसमायुक्तः^{११} कुलमार्गेण पुत्रक ।

दीक्षा कुलगुरोर्योगात् गृहीतव्या सुबुद्धिना^{१२} ॥२४॥

साधयेत्कुलमार्गेण तेन मन्त्र प्रयोजयेत् ।

उपसंहारण^{१३} तेन कर्त्तव्य कुलयोगिना ॥२५॥

सौभाग्यचर्यासमायुक्त^{१४} सदा तर्पणपूर्वकम् ।

सदा पूजासमायुक्त^{१५} चिन्तित भवति ध्रुवम् ॥२६॥

ऋषिसिद्धामरैदंश्च विद्याधरमहोरगैः ।

यक्षगन्धर्वनागैश्च पिशाचब्रह्मराक्षसैः^{१६} ॥२७॥

पञ्चैन्द्रियैश्च सञ्चार सद्यो नाशकरो^{१७} मनु^{१८} ।

पिण्डजाण्डजजीवैश्च किम्पुनः श्रौञ्चभेदन^{१९} ॥२८॥

इति षड्विद्यागमे साहस्रायतन्त्रे प्रथम पटलम्^{२०} ॥१॥

॥ अथ द्वितीयः पटलः ॥

जिह्वाग्रमादाय करेण देवी वामेन शनून् परिपीडयन्तीम्^{२१} ।

गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्या द्विभुजा नमामि ॥१॥

१. ख. ०हारिणी । २. ख. ०विनाशनी । ३. घ परापजयिनी । ४. ख. ०कारणी ;
 म घ ०कारकम् । ५. ग विलय० । ६. ख. ग. जेतुक्षय । ७. घ. क्रूरमृगदर्वव ।
 ८. ख घ. इच्छन्ति शान्तिकर्माणि ; ग येच्छन्ति शान्तिकर्माणि । ९. क ग. ०मिद मनु ;
 घ. मिद मनु । १०. घ. तत्संप्रदाय० । ११. क. ख. समायुक्तो ; १२ घ. सुबुद्धिमान् ।
 १३. घ. उपसंहारण । १४ ग ०समायुक्तो । १५. ग समायुक्तः । १६. ग पीशाचा० ।
 १७. क. ग. घ. नाशकर । १८. ग मुनिः ; घ. मनु । १९. ग. ०भेदन. ; घ भेदेन ।
 २०. ख. ग. प्रथमपटलम् ; घ. मन्त्रवर्णन नाम प्रथमः पटलः । २१. ग. परिपीडयति ।

श्रीचभेद उवाच^१—

नमस्ते पावंतीनाथ नमः पद्मगकङ्कण ।

वद दीक्षाविधिं तात तत्सर्वं स्तम्भनादयः^२ ॥२॥

ईश्वर उवाच^३—

पुस्तके लिखितान्मन्त्रानवलोक्य जपेत्तु यः^४ ।

स जीवन्नेव चण्डालो मृतः^५ श्वानो भविष्यति ॥३॥

दीक्षामार्गं विना मन्त्रं शिवं शाक्तञ्च^६ वैष्णवम् ।

यो जपेत्त दहत्याशु देवता च जुगुप्सति ॥४॥

दीक्षाविधिं विना मन्त्रं यो जपेत्कोटिकोटय ।

न स सिद्धिमवाप्नोति सिन्धुसंकतवर्षवत्^७ ॥५॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन दीक्षा कुलगुरोर्मुखत्वात् ।

उपदेशक्रमणैव मन्त्रसङ्ग्रहणं चरेत् ॥६॥

वेदवेदाङ्गपारज्ञं वेदान्तार्थमुनिश्चितम् ।

वैदिकाचारसमुक्तं कुर्याद् गुरुमतन्द्रित ॥७॥

गर्भकोलागमासक्तं^८ नानाकोलपरायणम् ।

षष्टपाशविनिर्मुक्तं कुर्याद् गुरुमतन्द्रित^९ ॥८॥^{१०}

पुरश्चरणकृत्सिद्धमन्त्रागमविद्यारदम् ।

उद्धतुं चैव सहितं^{११} समर्थं सत्यवादिनम् ॥९॥

प्रस्थानज्ञानपारीषत्^{१२} नीतिशास्त्रार्थकोविदम् ।

श्रीविद्यामथयन्त्रज्ञं कुर्याद् गुरुमतन्द्रित^{१३} ॥१०॥

चक्रनूजासमायुक्तं (वतो) व्यासविद्याविद्यारदम् (द) ।

गुरुसंज्ञाच्च^{१४} वक्तव्यं^{१५} सततं सिद्धिकाशिमिः^{१६} ॥११॥

१. स प. श्रीचभेदना०, ग श्रीचभेदनावाच । २. छ. स्तम्भनादिकम्, व स्तम्भनादिकरो । ३. घ इश्वरोवाच । ४. छ जपेच्च य, ग जपन्ति ये, घ जपति य । ५. ग प मृत । ६. घ वा शाक्त । ७. प सि यो० । ८. घ गुरुवेदासमासक्त । ९. ग मन्त्रन्द्रित । १०. दशोहीऽयं स पुस्तक नास्ति, घ पुस्तके विद्येवो-
द्वलोकयतेऽन श्लोक — 'पराशर्या भय लज्जा जुगुप्सा चेति पञ्चकम् । कुल घीन च मान च
षष्टपाशा[न]विषयवत्' ॥ ११. छ. प्रास्थान० ; घ स्वस्थान० । १२. ग. मन्त्र
न्द्रितम् । १३. क प गुरु०, ग गुरु० । १४. ग कृतव्या ; क प कृतव्या । १५.
घ सिद्धिकाशिमि ।

गुरुशुश्रूषया विद्या पुष्कलेन धनेन वा ।
 अथवा विद्यया विद्या चतुर्थं नोपलभ्यते ॥१२॥
 शुश्रूषया गुरु सम्यक् तोपयेच्छिष्य अन्वहम्^१ ।
 प्रसन्नचेतसा दत्त मन्त्रमुत्तममर्भक^२ ॥१३॥
 स्वल्पं वा बहुलं चाप शिष्यद्रव्य गुरुः स्वयम् ।
 गृहीत्वा मन्त्रमादत्ते विक्रीत तदुदाहृतम् ॥१४॥
 राजस चैव तद्विद्याद्^३ भोगद भुवि पुत्रक ।
 विद्याप्रतिनिधि विद्या[द्] यद्दत्त^४ तामस भतम्^५ ॥१५॥
 मोक्षार्थो च गुरुं यत्नात् शुश्रूषेणैव तोपयेत् ।
 शुश्रूषेणैव यत्त्वव्य^६ तद्विद्यात्^७ सर्वसिद्धिदम्^८ ॥१६॥
 नो देयं (या)^९ विद्यया विद्या वित्तकाक्षी तथैव च ।
 सच्छिष्याय प्रदातव्य^{१०} धनदेहाद्यवञ्चकैः ॥१७॥
 दुरालापसमायुक्त दुर्गुणेन समन्वितम् ।
 सर्वथा वज्जयेच्छिष्य स्वगुरोर्वाभिमानिनम्^{११} ॥१८॥
 अष्टपाशसमायुक्त अष्टाचारसमन्वितम् ।
 सर्वदा वज्जयेच्छिष्य गुरुसेवाविवर्जितम्^{१२} ॥१९॥^{१३}
 निर्मत्सर निरालम्ब नोत्तिशास्त्रविशारदम् ।
 नित्यानित्यविवेक च शिष्यत्वेनोपकल्पयेत् ॥२०॥
 श्रद्धाभक्तिसमोपेत धनदेहाद्यवञ्चितम्^{१४} ।
 अष्टपाशविनिर्मुक्त शिष्यत्वेनोपकल्पयेत् ॥२१॥
 गुरुशिष्याबुभो मोहादपरीक्ष्य^{१५} परस्परम् ।
 उपदेश ददन् गृह्णन् प्राप्नुयात्तो पिशाचताम् ॥२२॥
 इति षड्विद्यागमे साह्यापनतन्त्रे द्वितीय पटलम्^{१६} ॥

१. ख. तोपयच्छ षमन्वहम्; ग तोपयेच्छिष्यमन्वहम्; घ सतोष्याभीष्ट-
 सिद्धिदम् । २. ख. ०मर्भकः । ३. क.ख.ग. तद्विद्या । ४. घ. तद्वत् । ५. घ. रमृतम् ।
 ६. ग. यत्त्वव्य; घ. य लब्ध्वा । ७. क. ग. तद्विद्या; घ सा विद्या । ८. घ.
 सर्वसिद्धिदा । ९. ग. नोपदेय । १०. घ. प्रदातव्या । ११. घ गुरुसेवाभिमानिनम् ।
 १२. ग. घ. गुरुसेवाभिमानिनम् । १३. घ पुस्तके विशेषोऽय इत्येकः—

‘कामुक काञ्चनासक्त कर्णालयवर्जितम् ।

सर्वदा वज्जयेच्छिष्य गुरुसेवाभिमानिनम् ॥

१४. ख. घ. ०वञ्चकम् । १५. ख. ०दपरोदय; ग. ०दपरास । १६. ख. घ.
 द्वितीयः पटल ।

॥ अथ तृतीयः पटलः ॥

• चलत्कनककुण्डलोल्लसितचारुगण्डस्थला^१

ससत्कनकचम्पकद्युतिमदिन्दुविम्बाननाम् ॥

गदाहतविपक्षका कलितलोलजिह्वाञ्चला^२

स्मरामि बगलामुखी विमुखवाङ्मुखस्तम्भिनोम्^३ ॥१॥

श्रीञ्चभेद उवाच—^४

पूजाधारण्यन्त्रज्ञ^५ सर्वमन्त्रविशारद ।

अभिपेकविधिं तात वद मे करुणाकर ॥२॥

ईश्वर उवाच^६—

आश्विने कार्तिके चैव^७ चैत्रमासे^८ कुमारक ।

कुयुस्तमभिपेक^९ च मानवाः^{१०} सिद्धिकाक्षिणः^{११} ॥३॥

रवी गुरो भृगावब्जवासरे^{१२} च कुमारक ।

मन्त्राभिपेक कर्त्तव्यं सततं सिद्धिकाक्षिभिः ॥४॥

रोहिणोश्रवणे चैव पुष्ये^{१३} चैव विशाखयोः ।

मन्त्राभिपेक कर्त्तव्यं सद्यः^{१४} सिद्धिकरं भुवि ॥५॥

एव शुद्धदिने^{१५} सम्यक् पूर्वोह्नि^{१६} समुपोषितम् ।

स्नापयेत्पञ्चगव्येन ततश्चामलकेन तु ॥६॥

ततः शिष्यं समानीय^{१७} देवतासन्निधौ पुनः ।

अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं गायत्रीजपमाचरेत्^{१८} ॥७॥

देवस्येदानभागे तु गोमयनोपलेपितम्^{१९} ।

रङ्गवल्या लिखेद्यन्त्रं रक्तपीतसितासितं ॥८॥

१ ग. पुस्तके 'चलत्कनककुण्डलो' इत्यस्मादप्रेतनपदाशो नास्ति । घ चलत्कनक-
कुण्डला ससत्० । २ घ. कलितवैरि० । ३ ख. घ. विमुखवाङ्मन । ४ ख. घ.
श्रीञ्चभेदन उवाच, ग. श्रीञ्चभेदनोवाच । ५ क पुस्तके 'पूजा' स्थाने 'पूज्य' एव
च ख पुस्तके 'यन्त्रज्ञ' स्थाने 'यन्त्रज्ञ' इति शब्दो स्तः । ६ ग. पुस्तके 'श्रीञ्चभेदनोवाच'
तथा च 'ईश्वरोवाच' इत्येवाप्यप्रयोग सर्वत्र दृश्यते; अतोऽप्रे एतच्छब्दयोरेव एव पाठान्तर
कहनोयो विद्वद्भिरिति ७ ख. चैत्रे । ८ ख. चैत्राखे तु । ९ ख. घ. कर्त्तव्यमभिपेक,
घ कर्त्तव्यं चाभिपेक । १० ख. ग. मानवः । ११ ख. ग. सिद्धिकाक्षिभिः । १२
ग. भृगा[वि]दी०; घ. भृगो इदु० । १३ ग. स्वासी । घ. सार्प । १४ ग. सर्वं ।
१५ ग. सिद्धदिने । १६ ग. पूर्वोह्नि, घ. पूर्वोह्नि । १७ ग. घ. समानीत्वा ।
१८ घ. गायत्री वदमातरम् । १९ व. ग. लेपितान्, ख. लेपयेत् ।

षोडशाङ्गुलमान^१ तु लिखेद् विन्दुमनन्यधी ।
 ततो(तदु)परि लिखेद् वृत्त^२मष्टपत्र तु शोभनम् ॥६॥
 प्रियङ्गुशालिगोधूमचरणकाटकमाषकं^३ ।
 कुलत्थमुद्गनीवारं^४ क्रमान्मध्यादि विन्यसेत् ॥१०॥
 प्रस्थ चैव चतुर्विंश प्रत्येक धान्यमेव च ।
 अन्नं स्थूलकलश मध्ये सस्थाप्य बुद्धिमान् ॥११॥
 अष्टपत्र^५ न्यसेत्पुत्र कलशाष्टकमादरात् ।
 क्षालित^६वासित^७ शुद्ध कलश च समर्पयत्^८ ॥१२॥
 षोडशैरुपचारैश्च धूपाद्यनव^९विन्यसेत् ।
 आपोवानेन पूर्येत नदीजलमकल्मषम् ॥१३॥
 नि क्षिपेन्नवभाण्डेषु नवरत्नान् कुमारक ।
 कस्तूरीचन्दनोपेतान्^{१०}नवभाण्डेषु नि क्षिपेत् ॥१४॥
 मध्ये देवी समावाह्य चिन्मयी बगलामुखीम ।
 प्राणस्थापनमार्गेण केरलोक्तविधानत ॥१५॥
 वाणी चैव रमा गौरी शची स्वाहा रतिस्तथा ।
 दुर्गा छाया^{११} समभ्यर्च्य पूर्वाष्टकपत्रयो^{१२} ॥१६॥
 अर्चयेत्पूवत्पुत्र केरलोक्तविधानत ।
 नवीननवसख्याकवस्त्रणव तु वेष्टयत् ॥१७॥
 सुगन्धपत्रपुष्पादीन्^{१३} विन्यसेत्कल्शान्तरे ।
 तत्र शिष्य^{१४} समानीत्वा(य)ऋत्विग्भरणमाचरेत् ॥१८॥
 वेदवेदागपारीणमष्टौ^{१५} ब्राह्मणमादरात् ।
 प्रार्थयन्सुगन्धसयुक्त^{१६}मचयद्वस्त्रभूषणं ॥१९॥
 शाकुनादिषु मन्त्रेषु प्रथम कलशमाजनम्^{१७} ।
 लक्ष्मीसूक्तेन श्रीयुक्त^{१८} द्वितीय कलशन्तथा^{१९} ॥२०॥

१ छ ०माने । २ छ ०पद्य । ३ ग घ षण्काटकमाषको । ४ घ
 ०नीवारा । ५ छ भत्र पत्र । ६ क चासित । ७ छ ग घ समचयत् । ८ घ
 धूपाष्टं परि । ९ घ ०चन्दनोपेत । १० घ पुस्तके वाण्यादिशब्दा द्वितीया ता दृश्य ते ।
 ११ घ पूर्वाष्टकसिद्धय । सुगन्धि पुत्र० , घ सुगन्ध पुत्र पुष्पादि । १२
 ग शिष्या । १४ घ ०पारीणानष्टौ । १५ घ ०दभ्यसयुक्त० १६ घ कुम्भ
 मार्जनम् । १७ घ धीयुक्तं । १८ घ कुम्भमाजनम् ।

पौरुषेणैव सूक्तेन तृतीय कलश तथा^१ ।
 नारायणानुवाकेन^२ चतुर्थं ह्रद्रसूक्तकं^३ ॥२१॥
 पञ्चब्रह्ममयंमंत्रैः^४ पञ्चम कलश तथा ।
 षष्ठ चाम्भस्यवारेण^५ ब्रह्मपत्न्या च^६ सप्तमम् ॥२२॥
 अष्टम कठवत्पत्न्या^७ च मार्जयेन्मन्त्रकोविदः^८ ।
 मध्यम^९ पूर्वंकलश^{१०} मूलमन्त्रेण^{११} मार्जयेत् ॥२३॥
 एवञ्च मार्जनं कृत्वा नवीनैर्वस्त्रभूषणैः ।
 अलकृत्वा तु शिष्य^{१२} तमानीय^{१३} मण्डपान्तरे ॥२४॥
 वामोरूपरि विन्यस्य मूर्द्ध्नि चाग्राय सादरात् ।
 एकैकं च पुरश्चर्यामूलमन्त्र कुमारक ॥२५॥
 स हिरण्योदके पूर्वं दद्याच्छिष्याय पुत्रक ।
 स्वहृत्कमलमध्यस्था विद्या ज्योतिर्मयी पुनः ॥२६॥
 शिष्यस्य हृदयं चैव प्रविशन्तीति भावयेत् ।^{१४}
 तद्वच्छिष्यस्तु^{१५} सभाध्य गुरु यत्नेन तीपयेत् ॥२७॥
 एव मन्त्राभिषेकञ्च^{१६} कुर्याद् ब्रह्मास्त्रविद्यया ।
 सद्यः^{१७} सिद्धिर्भवेत्पुत्र पुरश्चर्या विना^{१८} भुवि ॥२८॥
 इति ब्रह्मविद्यापमे^{१९} साध्यापनतन्त्रे तृतीय पटलम्^{२०} ॥३॥

१. घ कुम्भमार्जनम् । २. ख. अनुवाक्येन; ग. अनुवाकेन, घ. पाशागो नामित ।
 ३. ह. ग. कलश तथा; घ. कुम्भमार्जनम् । ४. घ. ब्रह्ममयी० । ५. ख. चाम्भस्य
 वारेण; घ. चाम्भस्य वारेण । ६. ख. ग. ब्रह्मवत्पत्न्या च; घ. ब्रह्मवत्पत्न्या तु । ७.
 ख. ग. कठवत्पत्न्या; घ. नुगुवत्पत्न्या । ८. घ. पशुवा कठनेन च । ९. घ. मध्यस्थ ।
 १०. ग. घ. पूर्णैकमर्तः । ११. घ. मूलमन्त्रेण । १२. घ. तद्विद्युत् । १३. घ.
 यानीत्या । १४. घ. पुस्तकेऽयं विनाप पाठ —

‘उत्प्रेयोग उत्र ज्ञत्वा त मन्त्राणा पदे’पदे ।

कठवत्पत्न्या कृत्वा प्रत्येकं च विभावयत् ॥

विद्यारूपे मयेत् पुत्र साम्नाय परिवर्षयेत् ।^१

१५. घ. तद्वच्छिष्यस्तु । १६. घ. मन्त्राभिषेकञ्च । १७. घ. सर्वं । १८. घ.
 पुरश्चर्यादिना । १९. ख. अमरहस्य । २०. घ. शीघ्रं विधिर्तृतीयपटल ।

॥ अथ चतुर्थः पटलः ॥

पीयूषोदधिमध्येचारुविलसद्रत्नोज्ज्वले मण्डपे,

श्रीसिंहासनमौलिपातितरिपुप्रेतासनाध्यासिनीम् ।

स्वर्णाभा करपोडितारिरसना भ्राम्यद्गदा बिभ्रती,

स्वप्ने^१ पश्यति तस्य याति विलय सद्योऽम्ब^२ सर्वापदः ॥१

कौञ्चनेव(दन) उवाच—

‘गङ्गाधर नमस्तेऽस्तु गीरोपति^३ नमो नमः ।

ब्रह्मास्त्रमन्त्रसध्या च वद मे करुणाकर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

मन्त्रमध्यापयेत्^४ सम्यक् शिष्यस्य गुरुरादरात् ।

तदारब्ध^५ तु तन्मन्त्र^६ मन्त्रसन्ध्या समाचरेत्^७ ॥३॥

तन्मन्त्रसध्या वक्ष्यामि शरजन्मन् समासतः ।

मन्त्रसन्ध्याविहीनस्य सर्वं तन्निष्फल भवेत् ॥४॥

पञ्चाङ्गविधिना स्नात्वा मन्त्रस्नानमनन्तरम्^८ ।

ततः स्नात्वा दङ्गमन्त्रं^९ मूलेनैव तु मार्जयेत् ॥५॥

धीतवस्त्र परीधाय स्वगृहोक्तविधानतः ।

नित्यकर्म समाप्याथ मन्त्रसध्या समाचरेत् ॥६॥

अङ्कुशेनैव मुद्रायाः^{१०} सूर्यमण्डलग जलम् ।

आनयेत्तोयमध्ये तु ध्यानयोगेन बुद्धिमान् ॥७॥

आवाहिनी स्यापनी च सन्निधानमतः^{११} परम् ।

सन्निरोधनमुद्रा च सम्मुखी प्रार्थनी तथा ॥८॥

एता मुद्राश्च ततो^{१२} दर्शयेत्साधकोत्तमः ।

शोधयेदङ्कुशेनादौ^{१३} चामूतीकरण^{१४} ततः^{१५} ॥९॥

तज्जल वामचुलुके गृहीत्वा साधकोत्तमः ।

मूलेनैव त्रिधामन्त्र्य अष्टपत्राम्बुज लिखेत् ॥१०॥

१. घ. यस्त्वा । २. ग. सद्योप । ३. ख. ग. घ. गीरोप्रिय । ४. घ. मन्त्रसध्यापयेत् ।

५. ख. घ. तदारभ्य । ६. ख. घ. तन्मन्त्रः । ७. घ. समाचर । ८. घ. मन्त्रः परम् । ९. ख. मुद्रायाः अङ्कुशेनैव । १०. क. सन्निध्यानमतः । ग. सन्निधापनीतः ।

११. ख. सतत । घ. ततोये । १२. घ. नादा । १३. घ. वामूती० । १४. घ. तथा ।

मध्ये एकाक्षरीमन्त्रं वगलानाम्नि पुत्रक ।
 वेदसस्यामन्त्रवर्णान्^१ सप्तपत्रं^२ क्रमात्लिखेत् ॥११॥
 अन्त्यपत्रे चाष्टवर्णा^३ लिखेन्मू १ मनु तथा ।
 पुनरेकाक्षरं मन्त्रं त्रिसप्तमभिमन्त्रयेत्^४ ॥१२॥
 तेन मूलेन सम्मार्ज्यं मार्जनक्रमतोऽर्भक ।
 तन्मार्जनविधिं वक्ष्ये ऐहिकामुष्मिकेषु च^५ ॥१३॥
 त्रिधा मूर्द्धनि द्विधा बाह्योस्त्रिधा हृत्त्राभिदेशयोः ।
 द्विधा पादेषु सम्मार्ज्यं सौम्यकर्मस्वयं^६ क्रमः^७ ॥१४॥^८
 एवञ्च मार्जनं कृत्वा गायत्र्या वगलाह्वया ।
 अर्घ्यत्रयञ्च निष्कष्य हृदि सभाव्य देवताम् ॥१५॥
 मूलेन मन्त्रित तोय त्रिवारञ्च त्रिधा क्षिपेत्^९ ।
 एवमेव त्रिकालञ्च मन्त्रसन्ध्या समाचरेत् ॥१६॥
 उपस्थान त्रिकालस्य वक्ष्येऽहं क्रीञ्चभदन ।
 उपस्थानं विना सन्ध्या निष्फला^{१०} नात्र सशयः ॥१७॥
 गम्भीरा च मदोन्मत्ता स्वर्णकान्तिसमप्रभाम् ।
 चतुर्भुजा त्रिनयना कमलासनसंस्थिताम् ॥१८॥
 मुद्गर दक्षिणे पाश वामे जिह्वा च विभ्रतीम्^{११} ।
 पीताम्बरधरा सौम्या दृढपीनपयोधराम् ॥१९॥
 हेमकुण्डलभूपाङ्गी पीतचन्द्राब्जशराम् ।
 पीतभूषणभूपाङ्गी स्वर्णसिंहासने स्थिताम् ॥२०॥^{१२}
 एव ध्यात्वा तु देवेशी^{१३} प्रातः सन्ध्या समाचरेत् ।
 उपस्थानं प्रवक्ष्यामि मध्याह्नस्य^{१४} कुमारक ॥२१॥

दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमन दारिद्र्यविद्रावणम्,

भूभृत्स्तम्भनकारण मृगदृशा चेत समाकर्षणम् ।

१. घ. देवसध्या । २. क घ सप्तपत्रैः ३. घ अन्त्यपत्रे षष्ठाणी । ४. ख. त्रि-
 सप्त० । ५. ख. वा । ६. ख. ग. ० कर्मपत्र । घ. मार्गपत्र । ७. घ. क्रमात् । ८. घ
 पुस्तके विशेषः पाठः

“पादादिमूर्द्धनिपयन्त क्रूरकर्मेषु मार्जयेत्” ।

९. ख. घ पिवेत् । ग. पुनः । १०. घ निष्कष्य । ११. क. विभ्रकम् । ग.
 घ. वज्रकम् । १२. घ. पुस्तकेऽयमशो विशेषः—

“रत्नसिंहासना वग्दे दधीं त्रैलोक्यसुन्दरीम्” ।

१३. ग. देवेशि । घ. देवेश । १४. घ. मध्याह्ने च ।

सौभाग्यैकनिकेतन मम दृशोः कारुण्यपूर्वेषण^१ ,

विघ्नोघ वगले हर प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥२२॥

एव मध्यदिनोपास्थि^२ कुरु^३ कर्म सुपुत्रक^४ ।

'उपस्थान प्रवक्ष्यामि'^५ सायाह्नस्य कुमारक ॥२३॥

मातर्भञ्जय मद्द्विपक्षवदन जिह्वाञ्चलां कीलय

ब्राह्मी मुद्रय^६ मुद्रयाशु धिपणामघ्नचोर्गति स्तम्भय ।

शत्रूश्चूर्णय चूर्णयाशु गदया गौराङ्गि पीताम्बरे^७,

विघ्नोघ वगले हर प्रतिदिन कल्याणि तुभ्यं नमः ॥२४॥

सायमोपास्थि^८ कर्तव्यमेवमेव^९ कुमारक ।

विघ्नग्रहविनाशाय^{१०} एव ध्यायेज्जगन्मयीम्^{११} ॥२५॥

मन्त्रसन्ध्या विना मन्त्र कोटिकोटि जपन्ति ये^{१२} ।

न भवेन्मौनसिद्धार्थं^{१३} मन्त्रसिद्धि कुमारक ॥२६॥

त्रिकालमाचरेत्सन्ध्यामुपस्थान तथैव च ।

रहस्य च जपेन्निरय सिद्धिः पणमासतो भवेत् ॥२७॥

पूर्वोक्तविधिवत्सन्ध्या कृत्वा चाष्टोत्तर जपेत् ।

य य वापि स्मरन्^{१४} पुत्र त त प्राप्नोति निश्चितम् ॥२८॥

सन्ध्यामन्त्रेषु सर्वेषु^{१५} अङ्गमेव कुमारक ।

न प्रसिद्धचतस्रङ्गहीन^{१६} तस्मात्सन्ध्या समाचरेत् ॥२९॥

इति पञ्चविद्यागमे साध्यायनतन्त्रे चतुर्थं पटलम्^{१७} ॥४॥

॥ अथ पञ्चमः पटलः ॥

पीतवर्णा मदाघूर्णा समपीनपयोधराम् ।

चिन्तयेद् वगलां देवी स्तभनास्त्राधिदेवताम् ॥१॥

कौचभेदन उवाच—

नमस्तेस्तु जगन्नाथ भस्मोद्भूलितविग्रह ।

एकाक्षरीमहामन्त्र वगलाख्य महाप्रभो^{१८} ॥२॥

१. ख. कारुण्यपूर्वेषण । २. घ. ०पास्ति । ३. घ. कूर । ४. घ. पुस्तके विधेयः पाठ —

"उपस्थान चैवमेतत्कर्तव्य विधिवन्नर." ।

५. '—' चिह्न नगतोऽसौ नैवास्ति घ. पुस्तके ।

६. ग. पुस्तके नास्ति । ७. घ. पीताम्बरो । ८. घ. ०मोपास्ति । ९. घ. ०मन्त्री मेव । १०. घ. ०विनाशो च । ११. घ. ध्याये० । १२. घ. जपेन तु । १३. घ. ०मौनसिद्धार्थं । १४. घ. स्मरेत् । १५. घ. पूर्वेषु । १६. ख. न च सिद्धार्थस्य ग-हीना । १७. घ. ०सन्ध्याविधिर्नाम चतुर्थं पटलः । १८. घ. वद प्रभो ।

ईश्वर उवाच—

तत्तदेकाक्षरीबीज तत्तन्मन्त्रेषु जीवनम् ।
 उत्तम बीजमुक्त^१ च मन्त्रसर्वार्थसाधनम्^२ ॥३॥
 नानामन्त्रेषु मन्त्र वा बीजाढ्य^३ सर्वसिद्धिदम् ।
 निर्बीजमेव निर्वीर्यं शिवस्य वचनं यथा^४ ॥४॥^५
 तद्वीजोद्धारमनघ^६ सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।
 पूजनं च प्रयोग च वक्ष्येऽहं तव पुत्रक ॥५॥
 सान्तं रान्तसमायुक्तं चतुर्थस्वरसयुतम् ।
 रेफाक्रान्तं बिन्दुयुक्तं ब्रह्मास्त्रैकाक्षर(रो) मनु^७ ॥६॥
 ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोय (न्दोऽस्य) गायत्री समुदाहृतम् ।
 देवता बगला नाम^८ शक्तिश्चिन्मयरूपिणी ॥७॥
 लं बीजं ह्रीं च शक्तिश्च ईं कोलकमुदाहृतम् ।
 न्यासविद्यां प्रवक्ष्यामि मन्त्रसिद्धिकरं^९ नृणाम् ॥८॥
 भूशुद्धिं भूतशुद्धिञ्च मातृकाद्वितयं न्यसेत् ।
 पञ्चाक्षरेण^{१०} विन्यस्य तद्विधिं शृणु पुत्रक ॥९॥
 नेत्रबाणं पुनः पञ्च नव पञ्चदशाक्षरम् ।
 विन्यसेदगुलीभिश्च पङ्क्त्येषु तथैव च ॥१०॥
 वक्ष्येऽहं पञ्जरं न्यासं मन्त्रसिद्धिकरं नृणाम् ।
 बगला पूर्वतो रधादाग्नेय्या च गदाधरो ॥११॥
 पीताम्बरा^{११} दक्षिणे च स्तम्भिनो चैव नैर्ऋते^{१२} ।
 जिह्वाकीलिन्यतो रक्षेत्^{१३} पश्चिमे सर्वतोमयी^{१४} ॥१२॥
 वायव्ये च मदोन्मत्ता कौबेरे^{१५} च त्रिशूलिनी ।
 ब्रह्मास्त्रदेवतैर्दान्ये^{१६} पाताले स्तभमातरः^{१७} ॥१३॥

१. प. बीजयुक्त । २. घ. मन्त्र सर्वार्थसाधकम् । ३. प. बीजाज्य । ४. घ. तथा
 ५. प. अथमशो विशेषेण — 'एकाक्षरी बगला उद्धारः' । ६. ख. मनघ । ७. ग. योजन ।
 ८. ख. मनुम् । ९. ख. प. नाम्नी । १०. ख. सिद्धिकरी । ११. ख. घ. मन्त्र-
 क्षरेण । १२. घ. पीताम्बरी । १३. घ. नैर्ऋतो । १४. घ. जिह्वा कीलिन्यतो रक्षो ।
 १५. ख. सबचिन्मयी । १६. घ. सबतामयि । १७. घ. सबतोमयि । १८. घ. कौबेरी । १९
 ख. घ. देवतैर्दान्ये । २०. घ. पाताले स्तभमातृकः ।

ऊर्ध्वं रक्षेन्महादेवी जिह्वास्तम्भनकारिणी ।
 एव दश दिशो रक्षेद् बगला सर्वसिद्धिदा ॥१४॥
 एव न्यासविधिं कृत्वा यत्किञ्चिज्जपमाचरेत् ।
 तस्य सस्मरणादेव^१ शत्रूणां स्तम्भन भवेत् ॥१५॥
 सर्वं^२ न्यासविधिं कृत्वा बगलामातृका न्यसेत् ।
 तन्मातृकाविधिं वक्ष्ये सारात्सारतर तथा ॥१६॥
 तारञ्च मातृकावर्णं^३ बगलाबीजमेव च ।
 नमोज्जतेन च विन्यस्य मातृकास्थानतोऽनघ ॥१७॥
 ध्यानेन^४ मन्त्रसिद्धिः स्याद् ध्यान सर्वार्थसाधनम्^५ ।
 ध्यान विना भवेन्मूक. सिद्धमन्त्रोऽपि पुत्रक ॥१८॥

वादी मूकति रङ्कति क्षितिपतिर्वेश्वानर. शीतति,
 क्रोधो शातति दुर्जन. सुजनति क्षिप्रानुग. खञ्जति ॥
 गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यत्रिणा^६ यन्त्रित^७,
 श्रीनित्ये बगलामुक्ति प्रतिदिन कल्याणि तुभ्य नम ॥१९॥

एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं^८ तत्त्वलक्ष सुबुद्धिमान् ।
 गुडोदकेन सन्तप्यं तद्दशाश कुमारक ॥२०॥
 त्रिकोणकुण्डे जुहुयाद्दस्तनिम्नोन्नते शुभे ।
 ह्यारिकुसुमेनेव सरक्तेनाज्यसयुतम्^९ ॥२१॥
 ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चात् तत्त्वसख्या तु युगमकम् ।
 मन्त्रसिद्धिर्भवेत्पुत्र नान्यथा शिवभाषितम्^{१०} ॥२२॥
 वाममार्गक्रमेणैव वामामभ्यर्च्यं पुष्पिणीम् ।
 मन्त्रसिद्धिकर चैतत्^{११} सर्वदा रिपुनाशनम् ॥२३॥
 परमन्त्रप्रयोगेषु नानाकृत्स्त्रिमचेटकैः ।
 सद्यः स्तम्भनविद्या च^{१२} बगला च न सशयः ॥२४॥

इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे पञ्चम पटलम्^{१३} ॥४॥

१. घ. ०द्देव । २. ग. घ. सर्वं । ३. ख मातृकावर्णः । ४. घ. मातृकावर्णः । ५. घ. न्यासेन । ६. घ. ०साधकम् । ७. ग. त्वद्यत्रिणा । ८. घ. त्वद्यत्रिणा । ९. घ यन्त्रितो । १०. घ. जपे-मूलम् । ११. ख सरक्तेन्याज्य० । १२. घ. सरक्तेनाह० । १३. घ. शिव-भाषणम् । १४. घ. चैव । १५. ख. स्वभनकृद्विद्या । घ. स्वभनविद्यादि । १६. ग. ०एकाक्षरमन्त्रकथन नाम पञ्चमः पटलः ।

॥ अथ षष्ठः पटलः ॥

पाठीननेत्रां^१ परिपूर्णवथा^२ पञ्चेन्द्रियस्तम्भनचित्तरूपाम् ।
पीताम्बराढ्यां पिशितासना^३ सदा भजामि सस्तम्भनकारिणी सदा ॥१॥
श्रीञ्चभेदन उवाच—

नमस्ते योगिससेव्य नमः कारुणिकोत्तम ।
एकाक्षरीमहामन्त्रप्रयोग^४ वद शङ्कर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

उत्तमं कुण्डहोमञ्च स्थण्डिलञ्चैव मध्यमम्^५ ।
स्थण्डिलेन विना होम निष्फल भवति ध्रुवम् ॥३॥
पट्कोण चाष्टकोणञ्च चतुष्कोण कुमारक ।
त्रिविध स्थण्डिल चैव वक्ष्येऽहं कुरु धादरात् ॥४॥
लक्ष्मी (.) शान्तिस्तया पुष्टिधिघ्नाविघ्ननिवारणः^६ ।
चतुरस्रे हुनेत्कुण्डे तन्त्रवित् परिशोधिते ॥५॥
वशीकरणसम्मोहे वाणिज्ये द्रव्यसंग्रहे ।
कीर्तिकामस्तु जुहुयाद्भ्रुगाकारे च कुण्डके^७ ॥६॥
दशेन्द्रियस्तम्भने तु दिव्यगन्धस्तथैव च ।
त्रिकोणकुण्डे जुहुयाद् गुरुमार्गेण बुद्धिमान् ॥७॥
विद्वेषणे तु जुहुयाद्वत्तुले कुण्डमध्यमे^८ ।
उच्चाटने तु जुहुयात् पट्कोणास्ये तु^९ कुण्डके ॥८॥
मारणे चाष्टकोणे तु कतत्तत्कर्मानुसारत^{१०} ।
तत्तद्द्रव्येण जुहुयात्तत्तद्ग्रन्थोक्तमेव च ॥९॥
वक्ष्येऽहं स्थण्डिलहोम^{११} पट्कर्मसु^{१२} कुमारक ।
जुहुयाच्छान्तिवश्यपु स्थण्डिले चतुरस्रके ॥१०॥
विद्वेषणे स्तम्भने च जुहुयादष्टकोणके ।
मारणोच्चाटने पुत्र पट्कोणेषु विधीयते ॥११॥

१ ग. पाठिन नेत्रां । घ. भालेन नेत्रां । २. घ. ०गात्रा । ३. ख. ग. पिशितासनां । घ. पिशिनी । ४. ग घ. ०महामन्त्र० । ५. घ. स्थण्डिल मध्यमं तथा । ६. ग. क. विद्या विघ्न० । ७. क. कुण्डले । ८. घ. कुण्डमध्यमे । ९. घ. च । १०. ग. तत्तत्कामा^{११} । ११. ख. घ. स्थण्डिले होम । १२. ख. ग. पट्कर्मसु ।

प्रादेश शतहोमे च^१ अरत्तिश्च सहस्रके ।
 हस्त चायुतहोमेपु^२ द्विहस्त लक्षहोमके ॥१२॥
 गुणहस्त कोटिहोमे^३ कुण्ड निम्नोन्नत सुत^४ ।
 स्थण्डिलस्य च^५ वक्ष्यामि तान्त्रिकोक्तस्य लक्षणम् ॥१३॥
 अरत्तिर्हस्तमात्र च द्विरत्तिश्च द्विहस्तयोः^६ ।
 दत्तं सहस्रमयुतं लक्षहोमेष्वय क्रमः ॥१४॥
 सर्वत्रैवोन्नतं पुत्र प्रादेश स्थण्डिलक्रमम्^७ ।
 लक्षणं^८ स्थण्डिलैः^९ कुण्डै^{१०} नं ज्ञात्वा निष्फलं हुतम् ॥१५॥
 शान्तिवश्यस्तम्भनानि विद्वेषोच्चाटन तथा ।
 मारणान्तानि शसन्ति पट्कर्माणि मनीषिणः ॥१६॥
 नानारोगैः कृत्त्रिमैश्च नानाचेटकमेव च ।
 विषभूतप्रयोगेषु निरासः^{११} शान्तिरुच्यते^{१२} ॥१७॥
 वश्य जनाना सर्वेषा वात्सल्य हृद्गत स्मृतम् ।
 स्तम्भन रोधन पुत्र सर्वकर्मसु निष्फलम्^{१३} ॥१८॥
 मंत्रस्य^{१४} कलहोत्पत्तिविद्वेषणमुदाहृतम्^{१५} ।
 चलबुद्धिभ्रमेणोक्तमुच्चाटनमिदम्भुवि ॥१९॥
 प्राणिनां प्राणहरण मारण समुदाहृतम् ।
 प्रत्येकमेवा वक्ष्यामि होमयोग सुनिश्चितम् ॥२०॥
 दूर्वाहोम त्रिमध्वक्तं जुहुयादयुतत्रयम् ।
 रोगहन्ता^{१६} ग्रहादिभ्यः सद्यः शान्तिकर भवेत् ॥२१॥
 सुमन्त-^{१७} कुसुमंराज्य^{१८} कृत बाणायुत तथा ।
 जुहुयान्निशि काले च वश्य सम्मोहन^{१९} भवेत् ॥२२॥
 विभीतकसमिद्धिर्वा करञ्जंबीजमेव च ।
 नेत्रायुत हुनेत्पुत्र स्तम्भन परम मतम्^{२०} ॥२३॥

१. व. तु । २. प. चायुतहोमे तु । ३. घ. कोटिहोमं । ४. घ. तथा । ५. घ. प्र । ६. ख. द्विहस्तकम् । ७. प. स्थण्डिल क्रमात् । ८. ख. लक्षणैः । ९. ख. स्थण्डिल । १०. ख. स्थण्डिले । ११. ख. कुण्ड । १२. क. घ. निरासः । १३. क. ऽमुच्यते । १४. घ. निश्चितम् । १५. ख. मित्रस्य । १६. ख. ऽविद्वेष च मुदा० । १७. ख. रोगकृत्वा । १८. ख. स्वमन्त । १९. घ. सामत । २०. घ. राज्यैः । २१. घ. मोहनक । २२. घ. परम् ।

निम्बार्कपत्रहोमेन निम्बतैलेन मिश्रितम् ।
 नेत्रायुतेन विद्वेष भवेत्पापाणयोरपि ॥२४॥
 उलूककाकयोः पत्रैर्वाणायुतमस्रण्डिभिः ।
 जुहुयाच्च ततो रात्रौ भवेदुच्चाटनं सुत ॥२५॥
 तिलतैलसमायुक्त^१ शात्मलीकुसुम^२ तथा ।
 लक्ष्मेक हुनेद्रात्रौ प्रेताग्नौ प्रेतकानने ॥२६॥
 नग्नः प्रेतमुखे^३ भीम^४ प्रेतकाष्ठेन^५ बुद्धिमान् ।
 मृकण्डुसदृश^६ चैव मारणं भवति ध्रुवम् ॥२७॥
 इति पद्मविद्यागमे साध्यायनतन्त्रे पठ्य पटलम्* ॥६॥

॥ अथ सप्तमः पटलः ॥

पीताम्बरधरा देवी पूर्णचन्द्रनिभाननाम् ।
 वामे जिह्वा गदा चान्य धारयन्ती भजाम्यहम् ॥१॥
 श्रीऋषभेदेन उवाच—

महापाशुपताक्रान्तं नमः पन्नगभूषणम् ।
 पट्टप्रिणदक्षरीं विद्यां^७ बगलापाशमेव च^८ ॥२॥

ईश्वर उवाच—

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि पुरश्चरणलक्षणम् ।
 प्रयोगं चोपसंहारं शान्तिं तच्छृणु पुत्रक^९ ॥३॥
 तारं च बगलात्रीजं बगलापदमुच्चरेत् ।
 मुखीति पदमुच्चार्यं सर्वशब्दं ततोच्चरेत् ॥४॥
 दुष्टानां पदमुच्चार्यं वाचं^{१०} मुखं पदं^{११} वदेत् ।
 स्तम्भयेति पदं चोक्त्वा जिह्वां कीलय उच्चरेत्^{१२} ॥५॥
 बुद्धिशब्दं ततोच्चार्यं विनाशय^{१३} ततो^{१४} वदेत् ।
 स्थिरमायां^{१५} ततोच्चार्यं प्रणवं च ततोच्चरेत् ॥६॥

१. घ. तिलतैलेन समुक्त । २. ग. शात्मली० । ३. घ. प्रेतमुख । ४. क. भीमे ।
 घ. भीमेः । ५. घ. प्रेतकाष्ठे च । ६. ख. मृकण्ड० । ७. घ. मृकण्डसदृशे । ७ घ.
 ०एकाक्षरीपट्टप्रयोगकथनं नाम पठ्यः पटलः ॥ ८. ख. ०भूषणम् । ९. ख. ग. पट्टप्रिणदक्षरी-
 विद्या । १०. ख. बगला ता च मे वद । ग. बगलायाश्च मे वद । घ. बगलायाश्च
 देवता । ११. घ. साम्प्रतं शृणु पुत्रक । १२. ख. वाचे । १३. ग. पदे । १४. घ.
 कीलयमुच्चरेत् । १५. ग. विनाशयेति । घ. विनाशाय । १६. घ. पद । १७. घ.
 स्तम्भमायां ।

वह्निजाया समुच्चाय्यं एव मन्त्रं समुद्धरेत् ।
 पट्त्रिंशदक्षरं मन्त्रं मन्त्रराजमिदं भुवि ॥७॥
 न्यासविद्या प्रवक्ष्यामि सदा सिद्धिकरी पराम् ।
 बगलामातृका चादौ कामतार्तीयवाग्भवम् ॥८॥
 श्रीमायामातृका चैव बगलापञ्जरं न्यसेत् ।
 लघुषोढा च विन्यस्य सर्वमन्त्रष्वयं क्रमः ॥९॥
 ध्यानं यत्नात्प्रवक्ष्यामि ध्यानं सर्वार्थसिद्धिदम्^१ ।
 आदौ मध्ये तथा चान्ते ध्यानं सर्वार्थसिद्धिदम् ॥१०॥
 चतुर्भुजा त्रिनयना कमलासनसंस्थिताम् ।
 त्रिशूलपानपात्रं च गदा जिह्वा च बिभ्रतीम् ॥११॥
 बिम्बोष्ठी कम्बुकण्ठी च समपीनपयोधराम् ।
 पीताम्बरा मदाधूर्णा ध्यायेद् ब्रह्मास्त्रदेवताम् ॥१२॥
 नारदो ऋषिरेवात्र बृहतीच्छत्रं एव च ।
 देवता बगला नाम स्तम्भनास्तम्बचिन्मयीम्^२ ॥१३॥
 सौ बीजं चैव ह्यं शक्तिं, इ^३ कौलकमुदाहृतम् ।
 शत्रूणां स्तम्भनार्थञ्च जपेऽह^४ विधिपूर्वकम् ॥१४॥
 सङ्कल्पपूर्वकं मन्त्रं कौलचक्रक्रमेण च ।
 पृथ्वीलक्षं जपेन्मन्त्रं न्यासध्यानसमन्वितम् ॥१५॥
 तर्पयेत्तद्दशाशं हेतुमिश्रेण^५ वारिणा ।
 जुहुयाद्विल्वकुसुमं^६ तद्दशाशं च बुद्धिमान् ॥१६॥
 ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चात्तद्दशाशं घृतप्लुतम् ।
 तर्पयेत्^७ तर्पयामीति स्वाहान्तं होममाचरेत् ॥१७॥
 पूजां त्रिकालिकीं नित्यं जपस्तर्पणमेव^८ च ।
 होमो^९ ब्राह्मणभुक्तिश्च पुरश्चरणमुच्यते ॥१८॥
 पुरश्चर्या^{१०} विना मन्त्रं न प्रसिद्धयति^{११} भूतले ।
 एव स्वाधीनमन्त्रणं^{१२} पट्प्रयोगान् समाचरेत् ॥१९॥

१. स. सबंकामार्थसिद्धिदम् । २. स. स्तम्भनास्त्रे च चिन्मयी । ग. घ. स्तम्भनास्त्र
 च चिन्मयी । ३. ग. रं । ४. घ. जपेप । ५. घ. हेतुसमिश्र । ६. ग. विल्वकुसुमं ।
 ७. घ. तर्पणे । ८. घ. जपतर्पणं । ९. घ. होम । १०. घ. पुरश्चर्या । ११.
 घ. सा सिद्धयति । १२. घ. साधितमन्त्रणं ।

शान्त्याद्य (त्यर्थे) जुहुयाच्छालिसक्तुराज्यसमन्वितम्^१ ।

गुणायुत हुते^२ धीमान् कुण्डे पूर्वोक्तमादरात् ॥२०॥

वशीकरणकार्येषु विल्वपत्र घृतप्लुतम्^३ ।

गुणायुत चामलकप्रमाण क्रौञ्चभेदन^४ ॥२१॥

स्तम्भनेपु^५ हुनेद्धीमान् तालक घृतसम्प्लुतम् ।

वदरीफलमात्र तु गुणायुतमनन्यधीः ॥२२॥

विद्वेषणे च जुहुयात्पत्रैर्निम्बाकंसयुते^६ ।

राश्री वेदायुत धीमान् सद्यो विद्वेषण परम्^७ ॥२३॥

राजीलवणसयुक्तं बाणायुतमनन्यधीः ।

तस्य^८ चोच्चाटन^९ शीघ्र ध्रुवकूर्मादियोरपि^{१०} ॥२४॥

तलतलेन सयुक्तं मापहोम गुणायुतम् ।

प्रेताग्नौ प्रेतकाष्ठ^{११} च जुहुयात्प्रेतकानने ॥२५॥

भीमवारे निशा^{१२} नग्नो जुहुयात्प्रेत उल्मुके^{१३} ।

सद्यो मारणमाप्नोति मृकण्डुसदृशोऽपि च^{१४} ॥२६॥

॥ इति षड्विद्यागमे साख्यायनतन्त्रे सप्तम पटलम्^{१५} ॥

॥ अथाष्टमः पटलः ॥

विम्बोष्ठी चारुवदना समपीनपयोधराम् ।

पानपात्र वैरिजिह्वां धारयन्तो शिवां भजे ॥१॥

क्रौञ्चभेदन उवाच—

तमः कौलागमाचार्यं वेदवेदाङ्गपारग ।

वगलामन्तराजस्य प्रयोग वद शङ्कर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

राजीलवणमादाय मूलमन्त्रेण पुत्रक ।

ग्रस्तं कृत्वा साध्यनाम जुहुयादयुत निशि ॥३॥

१. ख. ०सक्तुराज्य० । २. ख. ग घ हुनेद् । ३. ख. घृतप्लुते । ४ घ
पुस्तके पद्यमिदं नास्ति । ५. ख. स्तम्भने तु । घ. स्तम्भने तु । ६. ख. घ ०निम्बाकं
सभवं । ७ ख. ग. घ. भवेत् । ८. घ. सद्य । ९. ग उच्चाटन । घ. मुच्चाटन ।
१० ख ध्रुव कूर्मा० । घ. ध्रुवकर्मा० । ११. ख. प्रेतकाष्ठे । १२. ख. निशा ।
ग. घ निशा । १३. ख. गोल्मुके । घ. दिह्मुके । १४. घ. वा । १५. घ. मन्त्र
राजकथन नाम सप्तम. पटलः ।

नानारोगहर चैव नानाभूतनिकृन्तनम् ।
 नानाकृत्त्रिमनाशञ्च भवेत्सत्य न सशयः ॥४॥
 हरिद्राखण्डहोमेन ध्युतेन कुमारक ।
 वशीकरणसम्मोह भवेच्छङ्करभाषणम् ॥५॥
 तालकेन हुनेद्रात्री नेत्रायुतमनन्यघोः ।
 नानास्तम्भनमार्गेषु सत्यमेतन्न सशयः ॥६॥
 खरस्य^१ रक्तमादाय जातिकर्मविरोधिनाम् ।
 निम्बाकंपत्रमादाय प्रत्येक नाम चालिखेत् ॥७॥
 प्रंताग्नौ प्रेतकाण्डे च नग्ने च^२ प्रेतदिङ्मुखे^३ ।
 हुनेत्प्रेतवने धीमानयुत द्वेषकारकम् ॥८॥
 अनाथस्य चितौ रात्रौ शत्रुप्रकृति लिखेत् ।
 हृदये नाम ग्रालिख्य^४ मारयेति ललाटके ॥९॥
 दहयुग्म लिखेद् वाहो ऊर्वोस्तस्य^५ कुरुद्वयम् ।
 एव च विलिखेत्सम्यक् सशत्रोर्वर्णमादरात्^६ ॥१०॥
 ताडयेद् हृदये^७ मन्त्री शतमष्टोत्तर जपेत् ।
 तद्भस्म सग्रहे^८ धीमान् गोपयेन्नगराद्बहि^९ ॥११॥
 पुनर्भो^{१०} मनिशाकाले मन्त्रयेन्मूलमन्त्रतः ।
 अष्टोत्तरसहस्रं च शत्रुमूर्द्धनि^{११} विनि क्षिपेत्^{१२} ॥१२॥
 स शत्रुः सप्तरात्रेण अत्रियते नात्र सशयः ।
 उष्ट्राखण्ड रिपुं ध्यात्वाग्रस्य दण्डेन^{१३} मन्त्रयेत्^{१४} ॥१३॥
 नि.क्षिपेत्सप्तरात्रं तु सप्तधा मन्त्रित^{१५} तथा ।
 उच्चाटन भवेत्सत्य शिवस्य वचन यथा^{१६} ॥१४॥
 प्रेतभस्म रवी^{१७} ग्राह्यं वगलामन्त्रराजतः ।
 सहस्रं मन्त्रयेच्छत्रो^{१८} रात्रौ^{१९} नग्ने न^{२०} भोमके ॥१५॥

१. ग. घ. वाराह । २. ख. नग्नश्च । घ. नग्नो वा । ३. ख. घ. प्रेत-
 दिङ्मुख । ४. घ. घ. मालिख्य । ५. ख. ऊर्वोर्भस्म । घ. ऊर्वोर्भस्म । ६. ख.
 स्वशत्रोः । घ. शत्रोर्वर्णसमादरात् । ७. ग. घ. गदया । ८. ख. ग. घ. सग्रहेद् ।
 ९. घ. रोपयेत् । १०. घ. शत्रोन्मूर्धनि । ११. घ. निक्षिपेत् । १२. ख. ग्रस्त-
 दण्डेन । घ. ग्रस्त कृत्वा तु । १३. घ. मन्त्रित् । १४. ख. मन्त्रिते । १५. घ.
 तथा । १६. क. वशी । १७. ख. भस्म । घ. रात्रौ । १८. घ. मन्त्रो । १९.
 ख. नग्नेऽपि । ग. घ. नग्नेन ।

शत सहस्रमयुत कार्यलाघवगौरवात् ।
 तत्तर्पणासव^१ पीत्वा^२ प्रयोग शान्तिमाप्नुयात् ॥२८॥
 न कर्तव्य मुमुक्षुश्च^३ परपीडा कदाचन ।
 प्राणं कण्ठगतं कुर्यात् पश्चात् सस्कारमाचरेत् ॥२९॥
 इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे अष्टम पटलम्^४ ॥८॥

॥ अथ नवम पटल. ॥

पीताम्बरालङ्कृतपीतवर्णां शातोदरी^५ शवंमुखामृताचिताम्^६ ।
 पीनस्तनालङ्कृतपीतपुष्पा सदा स्मरेय बगलामुखी हृदि ॥१॥

कौचभेदन उवाच—

नमोऽस्तु मन्त्रागमकोविदाय धीनीलकण्ठाय नमो नमस्ते ।
 एतन्मनोर्यन्त्रमखण्डतेजसे^७ प्रयोगमूल वद चन्द्रचूड ॥२॥

ईश्वर उवाच—

यन्त्रप्रयोग यमशासने^८ कलो यन्त्रप्रयोग यमिना च दुर्लभम् ।
 यन्त्रप्रयोग यतयस्तु कुर्वता^९ यज्ञादि^{१०} गोविप्रयत्श्च^{११} रक्षणे ॥३॥

बिन्दु^{१२} त्रिकोण वृत्त च अष्टकोण ततोपरि ।
 ततोपरि लिखेत्पुत्र पट्कोण वृत्तमादरात् ॥४॥
 ततोपरि लिखेत्सम्यक् भूपुरद्वयमादरात्^{१३} ।
 बिन्दुमध्ये लिखे^{१४} त्रिकोणत्रितये^{१५} त्रितय^{१६} त्रिधा ॥५॥
 अष्टकोणेपु^{१७} विलिखेद गायत्री बगलाङ्गयाम् ।
 पट्कोणेपु^{१८} सुसलिल्य^{१९} विद्या पट्त्रिंशदशरीम् ॥६॥
 वृत्तेपु^{२०} विलिखेत्पुत्र पञ्चाशद्वर्णमादरात् ।
 भूपुरेषु च सलिल्य प्राणस्थापनक मनुम्^{२१} ॥७॥

१ ख तत्तर्पणासव । २ ख सपीत्वा । ३ ख मुमुक्षुश्च ✓ ० अष्टम पटलः ।
 ५ ख शा तोदरी । ६ ख श वं मुखामरा० । ७ क, ख ग येतन्मनोर्यन्त्रमखण्ड-
 तेज । ८ घ यमशासन । ९ घ कुर्वन् । १० ख घ यज्ञादि । ११ घ ० यत्श्च ।
 १२ ख घ बिन्दु । ग बिन्दुः । १३ ख, ग घ पुस्तकेष्वयमशो विशेष—

“बिन्दुमध्ये लिखेद्वीज बगलायाश्च पुनक ।

साध्य तद्वीजगर्भे (मध्य घ) स्थ कुर्यात् सम्यक् सुबुद्धिमान् ॥

१४ क ख, ग तद्वीज विविखेत् । १५ घ त्रितयेपु । १६ घ त्रिधा । १७ घ, अष्ट-
 पत्रेषु । १८ घ, पट्कोणेके । १९ ख घ, च सलिल्य । २० घ वृत्ते तु । २१ घ मनु ।

रजते स्वर्णपट्टे वा प्रादेश चतुरस्रके ।
 लेखिन्या स्वर्णमय्या^१ च लिखेद्भार्गववासरे ॥८॥
 पूजायत्रमिदं पुत्र पूजनात् सर्वसिद्धिदम् ।
 पूजाविधिं प्रवक्ष्यामि मुनिगुह्य सुपावनम् ॥९॥
 मूलमन्त्रेण सम्पूज्य उपचारंश्च पोडशं ।
 शुद्धप्रदेशजा दूर्वा निर्मला च सुकोमलाम् ॥१०॥
 सग्रहेत्क्षालयेत् सम्यक् मन्त्रराजेन पुत्रक ।
 मन्त्रान्ते च नम^२ पूर्व^३ नि क्षिपेद् दूर्वमादरात्^४ ॥११॥
 एव भूतसहस्रं च पूजयेच्च दिने दिने ।
 मण्डलाद्वचाधय^५ सर्वे^६ मुच्यन्ते कृत्विमादय ॥१२॥
 भूतप्रतपिशाचाद्या कूरा खेचरभूचरा ।
 पूजनात्नाशमाप्नोति शिवस्य वचनं यथा ॥१३॥
 अचयेत्पूर्ववद्यन्त्रमुपचारंश्च पोडशं ।
 सग्रहेद्द्रक्कुसुम^७ ह्यारिं च सुनिर्मलम् ॥१४॥
 तेन पूजा प्रकर्त्तव्या^८ पूवव-मण्डल सुधौ ।
 सम्मोहनं च वश्यञ्च द्रव्यलाभं भवेद्घुवम् ॥१५॥
 बिभीतकोद्भव पुष्पमाहरेद्भूमिवासरे ।
 पूजयेत्पूर्ववत्पुत्रं नानास्तम्भनकर्मणि ॥१६॥
 निम्बार्ककुसुमेनाथ^९ यत्र वापि^{१०} कुमारक ।
 पूर्ववत्पूजयेन्मन्त्री^{११} सद्यो विद्वपणं भवेत् ॥१७॥
 घत्तूरकुसुमेनैव पूर्ववत्पूजयेत्सुत ।
 उच्चाटनं भवेत्सत्यं नान्यथा शिवभाषणम् ॥१८॥
 विपतिदुकपुष्पेण पूर्ववत्सम्यगचयेत् ।
 सद्यो विनाशमाप्नोति^{१२} मूकण्डुसहस्रो^{१३} रिपु ॥१९॥

१. स स्वर्णमय्या । २. य पुन । ३. स पूर्वा । ४. य क्षिपेद् दूर्वा समाद-
 रात् । ५. य ऽदामया । ६. स सर्वा । ७. क. सग्रहे प्रकुसुम । ८. य
 प्रकर्त्तव्य । ९. य ऽचाय । १०. य पुत्रणाय । ११. य. पूजयन् । १२. स
 विनाशमायाति । १३. य मूकण्डुः ।

शमन्तकुसुमेनैव^१ पूर्ववत्पूजयेन्नरः ।
 पूर्ववज्जायते^२ लोके वेदशास्त्रार्थकोविदः ॥२०॥
 पलाशकुसुमेनैव पूर्ववत्पूजयेन्नरः ।
 सद्यो मन्दो भवेद्भागमी लभेत्सर्वज्ञतां सुत ॥२१॥
 पूर्ववत्पूजयेत् पुत्र भ्रशोककुसुमेन च ।
 ईप्सिता^३ लभते^४ कन्या सा तु पुत्रवती भवेत् ॥२२॥
 तुलसीमञ्जरीभिश्च पूर्ववत्पूजयेन्नरः ।
 ज्ञानभक्तिश्च वैराग्य लभते^५ तरलैरपि^६ ॥२३॥
 नन्दावर्त्तेन^७ सम्पूज्य वातरोग व्यपोहति ।
 मल्लिकाकुसुमेनैव पूजयेज्ज्वरशान्तये ॥२४॥
 कुसुमैश्चम्पकैश्च^८ शीतज्वरनिवारणम् ।
 अर्चयेज्जातिकुमुमैर्महोरोग^९ विनश्यति ॥२५॥
 वन्यैश्च मल्लिकापुष्पैर्नि क्षोप^{१०} लभते ध्रुवम् ।
 केतकीकुसुमेनार्च्यं द्रव्यवान् जायते ध्रुवम् ॥२६॥
 एव च पूजयेद्यन्त्र न जपेत् च होमतः ।
 प्रयोगसिद्धिर्भवति बगलायाः प्रसादतः ॥२७॥

इति षड्विंशत्यध्यायस्य सांख्यानतन्त्रे नवमः पटलः ॥६॥

॥ अथ दशमः पटलः ॥

कम्बुकण्ठीसुताग्नोष्ठी^१ मदविह्वललोचनाम् ।
 भजेऽहं बगला देवी पीताम्बरधरा शुभाम् ॥१॥

क्रीञ्चभेदन उवाच—

अष्टमूर्त्तौ महामूर्त्तौ नमस्ते चन्द्रशेखर ।
 वद प्रयोग मन्त्रस्य^२ लेपनक्रममादरात्^३ ॥२॥

ईश्वर उवाच—

पूर्वावत्त यन्त्रमालिख्य^४ प्राणस्थापनपूर्वकम् ।
 अर्चयेदुपचारेण^५ चन्दनेन विलेपयेत् ॥३॥

१. घ स्वमन्त । २. ग. पुत्रवाद् ० । घ. पुत्र वा० । ३. घ. ईप्सितां च । ४. घ. लभते । ५. ग. लभ्यते । ६. घ. च परैरपि । ७. ख नन्दावर्त्तेन । नन्दावर्त्तेन । घ. नन्दावर्त्तेन । ८. घ. ०र्चेत् । ९. ग. महारोग । १०. घ. निक्षिप्त । ११. घ. ०यत्रप्रयोग नाम नवमः पटलः । १२. ख ग. कम्बुकण्ठी ० । १३. घ. यन्त्रस्य । १४. घ. लेपन ० । १५. घ. ०मालिख्य । १६. घ. ०दुपचारैश्च ।

बाणायुत जपेद्धीमान् नित्यपूजासमन्वितम् ।
 राज्यसिद्धिर्भवेत्सत्यमयत्नेन^१ कुमारक ॥४॥
 कस्तूरीलेपनं कुर्यात्सम्यगचितयन्त्रके ।
 नित्यं बाणसहस्रं च^२ न्यासध्यानसमन्वितम् ॥५॥
 मण्डलद्वययोगेन रोगकृत्याग्रहादयः ।
 तत्क्षणान्नाशमायान्ति^३ तमः सूर्योदये^४ यथा^५ ॥६॥
 पूर्तिं चाद्धंपल^६ नित्यं लेपयेद्यन्त्रमादरात् ।
 जपं कुर्यात्पूर्वं च मासं वा मण्डलं तु वा ॥७॥
 वशीकरं तु सम्मोहं द्रव्यसंग्रहमेव च ।
 भवत्येव न सन्देहो नात्र कार्या विचारणा ॥८॥
 हरिद्रातालकं चैव अर्कक्षीरेण मर्दितम्* ।
 त्रिकालं लेपयेन्नित्यं त्रिसहस्रं जपेद्दिने ॥९॥
 महास्तभनमाप्नोति^७ कर्णाक्षिवावपतिस्तुवा^८ ।
 मण्डलान्नगर^९ ग्रामं रणसम्मोहमेव च^{१०} ॥१०॥
 सर्पपास्त्रिकदूर्बेक्ष^{११} दुग्धैर्वज्रार्कसम्भवंः ।
 क्षारेण^{१२} मर्दयेत्सम्यक् यन्त्रलेपनमाचरेत् ॥११॥
 कृत्वाधंमण्डलं चैव षट्सहस्रं दिने दिने ।
 विद्वेषणं भवेत्सिद्धं शिवस्य वचनं यथा ॥१२॥
 घसूरं त्रिदुक^{१३} बीजं तालकेन समन्वितम् ।
 निम्बपत्रद्वयेनैव मर्दयेत्लेपयेत्त्रिधा ॥१३॥
 एव मासप्रयोगेण नगरं ग्राममेव च ।
 रणे^{१४} वा राजगेहे^{१५} वा शीघ्रमुच्चाटनं भवेत् ॥१४॥
 प्रेतान्नं प्रेतभस्म^{१६} च प्रेतान्धारं समं समम् ।
 अर्कवज्रमय^{१७} क्षीरं खल्वेनैव^{१८} तु मर्दयेत् ॥१५॥

१. क. ०मयनेन । २. घ. तु । ३. घ. ०माप्नोति । ४. घ. सूर्योदयः । ५. घ. तथा । ६. ख. भूचिन्तार्यं फल । ७. घ. मर्दयेत् । ८. घ. पक्ष्यात् । ९. ख. कर्णाक्षिवाक्पुतिस्तु । घ. कर्णाक्षी वाडमतिस्तु । १०. घ. नगरे । ११. घ. वा । १२. ख. सर्पपास्त्रिकदूर्बेक्ष । ग. सर्पपास्त्रिकदूर्बेक्षा । घ. सर्पपास्त्रिकदूर्बेक्ष । १३. ग. क्षीरेण । घ. खल्वेन । १४. घ. निरिदुबक । १५. घ. रणं । १६. घ. राजगेह । १७. ख. प्रेतभूति । १८. ग. अर्कवज्रमयो । घ. अर्कवज्रमय । १९. क. खल्वेनैव ।

त्रिकालं लेपनं कुर्यात् प्रीतये होमयुक्तिना^१ ।
 नित्यं^२ ऋतुसहस्रं^३ तु मन्त्रराजमिमं^४ जपेत् ॥१६॥
 पक्षान्मारणमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ।
 अथवा निम्बतैलेन तद्वत्कृत्वा तु मारणम् ॥१७॥
 तिलतैलेन संयुक्तं मर्दयेद् गरमादरात्^५ ।
 यन्त्रस्य लेपनं कुर्यात् त्रिकालं मूलविद्यया ॥१८॥
 सन्तपेद्दीपशिक्षया पक्षमेकं कुमारक ।
 मारणं च भवेन्नित्यं नात्र कार्या विचारणा ॥१९॥
 वज्रीक्षीरं^६ त्रिकालं तु पूर्ववत्लेखनेषु^७ च ।
 तापज्वरस्य पीडाया पण्मासाद्रिपुमारणम् ॥२०॥
 पूर्ववत्लेपनं चैव जपसन्तर्पणं^८ तथा ।
 त्रिसप्तदिनमात्रेण मारणं चोरगौरगः^९ ॥२१॥
 घृतूरद्रवसयुक्तं मर्दयेत्सर्पं तथा ।
 जपलेपनयोः^{१०} पुत्र गुल्मरोगी भवेद्विपुः ॥२२॥
 निम्बपत्रद्रवं चैव विपकण्टकजं^{११} तथा ।
 विपतिन्दुकजं चैव त्रिविधं च समं समम् ॥२३॥
 त्रिकाललेपनं^{१२} कुर्यात् षट्सहस्रं^{१३} मनुं जपेत् ।
 पक्षेण^{१४} द्वादशाहेन^{१५} मारणं च समं समम्^{१६} ॥२४॥
 त्रिकाल लेपनं कुर्यात् षट्सहस्रं मनुं जपेत्^{१७} ।
 मर्दयेदारनालेन मारिच त्रिफलां तथा ॥२५॥
 त्रिकालं लेपनं कुर्यात्^{१८} त्रिकालं जपमाचरेत् ।
 करपादादिदाहेन^{१९} मण्डलाच्छत्रुमारणम्^{२०} ॥२६॥

१. घ. सन्तपेद्दीपवहिना । २. घ. नित्यं । ३. घ. ऋतु० । ४. घ. ०मिद ।
 ५. घ. ०रतवमा० । ६. घ. वज्रीक्षीरं । ७. घ. ०लेपनेन च । ८. ग. जपः० । ९.
 घ. वैरिकैर्गृहः । घ. चोरगौरजैः । १०. ख. यत्रलेपनयोः । घ. जपलेपनया । ११. ग.
 ०कण्टकके । १२. ख. घ. त्रिकाले० । १३. क. सहस्रं । १४. घ. पक्षाद्वा । १५. घ.
 द्वादशाहे वा । १६. ख. ग. घ. न समयः । १७. पादद्वये पुस्तकान्तरेषु नास्ति । १८.
 घ. कृत्वा । १९. क. करपादावि० । ग. करपादावि । घ. करपादवहेनैव । २०. क.
 ०मारणम् ।

गोमयैर्लेपन^१ दत्त्वा गुल्मरोगी भवेद्विपुः ।
 गोमूत्रं छागमूत्रं च मिश्रितं पूर्ववत्तथा ॥२७॥
 पित्तरोगी^२ भवेच्छत्रुरर्द्धमण्डलमात्रतः ।
 लेपनं छागरक्तेन भ्रान्तान्पति^३ भवेद् ध्रुवम् ॥२८॥
 मत्कुणस्य च रक्तेन उन्मादी जायते रिपुः ॥

॥ इतिषट्त्रिंशत्तमोऽध्यायः साध्यायनतन्त्रे दशमः पटलम् ॥१०॥

॥ अर्थकादशः पटलः ॥

नमस्ते वगलादेवीमासवप्रियभामिनीम्^४ ।
 भे(भ)जेऽहं स्तम्भनाथं च गदा जिह्वा च बिभ्रतीम्^५ ॥१॥

श्रीऋचभेदेन उवाच—

नमस्ते मौलिसत्तेव्य^६ नमः पद्मगभूषण^७ ।
 तर्पणेन^८ प्रयोगं च वद मे करुणाकर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

पूजयेद्यन्धराजं च उपचारंश्च षोडशैः ।
 तद्यन्त्रोपरि सन्तर्प्यं तर्पणस्य विधिं शृणु ॥३॥
 गुडोदकैस्तर्पणं च कुर्यात्पचायुतं तथा ।
 शान्तिवृत्त्यं भवेच्छीघ्रं नात्र कार्या विचारणा ॥४॥

द्रवेण^९ तर्पणं कुर्यात् पूर्वसस्यासु पुत्रक ।
 यस्य सम्मोहनं चैव भवेत्तर्पणयोगतः ॥५॥
 मोहिनीद्वयसमिध^{१०} जलेनेव तु तर्पणम् ।
 नेत्रायुतप्रमाणेन जिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ॥६॥
 गतिगर्भं^{११} च वाक्पाणि^{१२} गान् श्रोत्रं तथादिक्कम् ।
 क्षुधा तृष्णा च निद्रा^{१३} च स्तम्भनं च भवेद् ध्रुवम् ॥७॥
 निम्बार्कपत्रजद्रावैर्मिश्रितं जूषवारिणा ।
 पञ्चायुतं तर्पणेन सद्यो विद्वेषणं भवेत् ॥८॥

१. ग गोमये० । २. प पित्तरोगी । ३. छ. भ्रा तचित्ती । ग. भ्रान्तान्पति ।
 च भ्रान्तिरोगी । ४. प. ०त्रि(वि)लेपनं नाम दशमः पटलः । ५. ग वगला० । ६.
 वगलादेवी वामवर्षाप्रियमोहिनी । ७. प. बिभ्रती । ८. प. मोनि० । ९. प. ०भूषणै ।
 ८. प. तर्पणस्य । १०. छ. ग प. द्रवेण । ११. प. मोहिनीद्वयस्युच्छ । १२. ग.
 गतिस्तर्भं । १३. प. गति गर्भं । १४. प. प. वाक्पाणि । १५. प. तृष्णा क्षुधा च निद्रा ।

वज्रार्कक्षीरमिश्र च 'कान्ता च'^१ तर्पणेन च ।
 उच्चाटन^२ भवेच्छत्रोरयुतप्रयमादरात् ॥१६॥
 प्रेतान्नं प्रेतभस्म^३ च प्रेताङ्गारं च पुत्रक ।
 समं समं गरं^४ ग्राह्यं जीवेनेव^५ तु मिश्रितम् ॥१७॥
 नेत्रायुतं तर्पणेन साक्षाद् रिपुविनाशनम् ।
 ह्यारिपत्रजद्रावैमिश्रित^६ मारणं भवेत् ॥१८॥
 कर्पूरमिश्रित तोय^७ पचाशच्छतमादरात् ।
 नित्यं च तर्पयेद् धीमान् मासमेकमतन्द्रितः ॥१९॥
 पुराणञ्चरमृत्युघ्नं^८ पित्तरोगं विनश्यति ।
 चन्दनाम्भस्तर्पणेन तापं कुत्रिमज्ज हरेत् ॥२०॥
 कस्तूरीमिश्रित तोये राज्यलाभो भवेद् ध्रुवम् ।^९
 यैस्तु^{१०} तर्पणमन्त्रेषु^{११} अयुतं रविसख्यया^{१२} ॥२१॥
 कुबेरसदृशः श्रीमान् जायते नात्र सशयः ।
 माण्डवीद्रव्येण सम्मिश्र^{१३} पूजितं^{१४} शुद्धवारिणा ॥२२॥
 रत्नायुत^{१५} तर्पणेन लक्ष्मीर्वा^{१६} जायते ध्रुवम् ।
 गोक्षीरतर्पणेनेव ईप्सिता सिद्धिमाप्नुयात् ॥२३॥
 तन्त्रेण तर्पणं चैव^{१७} पित्तरोगं व्यपोहति ।
 आरनालेन संतप्यं जलदोषं च^{१८} शाम्यति ॥२४॥
 हृन्दिद्राम्भस्तर्पणेन स्त्रीणामाकर्षणं भवेत् ।
 शमतकुसुमेनेव^{१९} मिश्रितं जलतर्पणम् ॥२५॥
 पुत्रवान् जायते मर्त्यो^{२०} अयुतेन न सशयः ।
 कदलीफलगोक्षीरं शर्करा च समं समम् ॥२६॥

१. '—' ख. करामः । घ. कोलाभः । २. क. उच्चाटनो । ३. ख. प्रेतभूमि ।
 ४. घ. च स० । ५. ख. मानेनेव । ६. घ. मयूरपत्रजै द्वारैः० । ७. क. तोये । ८.
 ग. घ. ०मृत्युघ्न । ९. घ. पुस्तकेऽप्य विशेषः पाठः—

“गौडीद्रव्यस्तर्पणेन द्रव्यलाभो भवेद् ध्रुवम् ।”

१०. ख. ग. पैष्ट्या । घ. पैष्टी । ११. ख. तर्पणमन्त्रेण । ग. तर्पणमन्त्रेषु । घ. तर्पण-
 मन्त्रेण । १२. घ. ऋषिसख्यया । १३. घ. सम्मिश्र । १४. घ. पूरित । १५. ख.
 तन्नायुत । घ. तत्त्वायुत । १६. ख. ग. घ. लक्ष्मीवान् । १७. ख. घ. तर्पणेनेव । १८.
 ख. प्र । १९. घ. स्यमन्त० । २०. घ. मृत्यो ।

पलाष्टक च प्रत्येक मिश्रित जलतर्पणम् ।
 मनसिद्धिर्विना^१ सिद्धिर्भक्तिवैराग्यमेव च ॥२०॥
 भ्रमज्ञानं व्यपोहति नान्यथा शिवभाषणम् ।
 द्यागरक्तेन समिश्र चाचित तैलतर्पणात्^२ ॥२१॥
 मूकाश्च कुरुते प्राज्ञान्^३ रिपुसघाननेकशः^४ ।
 जलेन मिश्रित पुत्र द्योणित विड्वराहजम्^५ ॥२२॥
 वेदायुत तर्पणेन उन्मादी जायते रिपुः ।
 काकरक्तेन सम्मिश्र तर्पण शुद्धवारिणा^६ ॥२३॥
 जातिभ्रष्टो भवेच्छत्रुः स भवेन्निन्दको^७ भुवि ।
 उलूकरक्तसमिश्र वारिणा तर्पण तथा ॥२४॥^८
 ब्रणेन म्रियते शत्रुरयुतद्वयसमततः^९ ।^{१०}
 श्वानरक्तेन समिश्र वारिणा तर्पणं तथा ॥२५॥
 श्वानवज्ज्वलते^{११} शत्रुम्रियते नात्र सशयः ।
 मार्जाररक्तसम्मिश्र^{१२} तर्पण वारिणा तथा ॥२६॥
 क्षयरोगी भवेच्छत्रुः पम्मासंम्रियते रिपुः ।^{१३}
 उष्टरोद्योणित^{१४} मिश्र तोये^{१५} सन्तर्पयेत् सह^{१६} ॥२७॥

१. घ. ०ज्ञान । २. घ. तेन तर्पणम् । ३. घ. यस्माद् । ४. घ. ०सघाननेकशः ।
 ५. घ. विड्वराहजम् । ६. घ. मिष्टवारिणा । ७. घ. सन्ततिनिन्दिता । ८. ग घ
 पुस्तकद्वये विशेषोऽयं पाठः—

‘नेत्रायुत’ भवेच्छत्रुर्नेत्ररोगी^१ न सशयः ।

स्तररक्तेन समिश्र वारिणा तर्पणं तथा ॥

९ ख. ०द्वयमस्ततः । ग. ०द्वययोगतः ।

१०. घ. पुस्तके पादद्वयस्यानेऽयमघो दृश्यते—

तूलावज्ज्वलते शत्रुरयुत ज्वरयोगतः ।^१

११. ख. जायते । घ. घ. जल्पते । १२. घ. ०समुषत । १३. ख. पुस्तकेऽस्मात्परमघो
 विशेष —

‘भुजगघोणितेनैव तर्पयेद्द्वारात्रके ।

निनि सहस्रमानेन सिद्ध रिपुविनाशनम्’ ॥

१४. घ. उष्ट्रस्य द्योणित । १५. घ. तोयः । घ. तोयः । १६. घ. सतर्प्यं बुद्धिमान् ।

१ घ. नेत्रायुताद् । २ घ. नेत्रनाशो ।

मासेन शत्रुमरणं मूकदुसदृशोऽपि वा ।
जपसख्या यत्र नोक्ता लक्षमेक कुमारक ॥२८॥
दिनसख्या यत्र नोक्ता पक्षमेव^१ न सशयः ॥

इति पद्यविद्यायमे सांख्यायनतन्त्रे एकावश पटलम्^२ ॥११॥

॥ अथ द्वादशः पटलः ॥

कौलागमं कसवेद्या सदा कौलागमाम्बिकाम् ।
भजेऽह सर्वसिद्धघर्षं बगला चिन्मयी हृदि^३ ॥१॥

श्रीवभेदन उवाच—

नमस्ते सर्वसर्वेश गवितासुरभञ्जन ।
गायत्री बगलाख्या च वद मे करुणाकर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

मन्त्रोद्धार प्रवक्ष्यामि मन्त्रमाहात्म्यमेव च ।
पुरश्चर्याप्रयोग च वक्ष्येऽह तव पुत्रक ॥३॥
ब्रह्मास्त्रायपदं चोक्त्वा 'विद्यहेति पद ततः'^४ ।
स्तम्भनेति पद चोक्त्वा बाणाय तदनन्तरम् ॥४॥
धीमहीति पदं चोक्त्वा तप्तः^५ शब्द ततो(दो)च्यते* ।
बगलापदमुच्चार्य उद्वरेच्च प्रचोदयात् ॥५॥
गायत्री बगलानाम्नी सर्वसिद्धिप्रदा भुवि ।
ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोय(स्य) गायत्री समुदाहृतम्^६ ॥६॥
देवता बगलानाम्नी चिन्मयी^७ शक्तिरूपिणी ।
ॐ बीज 'चैव शक्तिह्री'^८ कीलक विद्यहे पदम् ॥७॥
चतुर्लक्ष पुरश्चर्या तद्दशाश च तर्पणम् ।
तद्दशाश हुनेदाज्य तावद्ब्राह्मणभोजनम् ॥८॥
न्यासध्यानादिक सर्वं कुर्यात् 'तन्मन्त्रतो जपेत्'^९ ।
प्रयोगानथ वक्ष्यामि गायत्रीबगलाह्वये^{१०} ॥९॥

१. घ. पक्षसख्या । २. घ. ०एकादश. पटलः । ३. ग. बगलाक्ष्य करुणाकरम् । ४. क. पुन । ५. '—' ख. विद्यहेति पद तथा । घ. विद्यहेति तत; पदम् । ६. ग. ततः । घ. तप्तो । ७. ग. घ. ततोच्चरेत् । ८. ख. समुदाहृतम् । ख. बगला । ९. '—' म. शक्तिहृत्सी चैव । ११. '—' घ. तन्मन्त्रराजवत् । १२. ख. ०बगलाह्वया । घ. गायत्र्या बगलाह्वया ।

तारादि प्रजपेन्मन्त्र मोक्षार्थी^१ च कुमारक ।
 शान्त्यर्थं च^२ जपेत्पुत्र कारदाबीजपूर्वकम्^३ ॥१०॥
 सम्मोहनार्थं प्रजपेत् कामराजपुरस्सरम् ।
 स्तम्भनार्थं प्रजपेच्छक्तिदाहकपूर्वकम्^४ ॥११॥
 वाराह शक्तिवाराह स्तब्धमायापुरस्सरम् ।
 प्रजपेन्मन्त्रमेतद्धि मारण भवति ध्रुवम् ॥१२॥
 वाग्भवादि जपेन्मन्त्र विद्यासिद्धिर्भविष्यति ।
 बालादि प्रजपेन्मन्त्र 'कन्यका क्षिप्रमाप्नुयात्'^५ ॥१३॥
 वाराहीबीजमध्यस्था^६ गायत्री लक्षजापनात् ।
 भूलाभ(भो) जायते तस्य अनायासेन^७ पुत्रक ॥१४॥
 श्रीबीजादि जपेत् पुत्र गायत्री^८ बगलाह्वयाम्^९ ।
 कुवेरसदृश श्रीमान् जायते नात्र सशयः ॥१५॥
 ताक्ष्यंबीजादि मन्त्र प्रजपेद् ध्यानपूर्वकम् ।
 नानाविषप्रयोगाश्च ग्रहरोगादिनाशनम्^{१०} ॥१६॥
 भैरवी^{११} बीजमाद्य च प्रजपेच्च कुमारक ।
 भूतप्रेतपिशाचाद्यास्तत्प्रयोगाद् व्यपोहति ॥१७॥
 जपेदमृतबीजानि^{१२} गायत्री बगलाह्वयाम् ।
 तापञ्जरमहातार्प^{१३} शमयेत्^{१४} क्रीञ्चभेदन ॥१८॥
 जपेच्च वायुबीजादि गायत्री बगलाह्वयाम् ।
 क्षिप्रमुच्चाटन चैव भवेच्छङ्करभाषणम् ॥१९॥
 अग्निबीजादिगायत्री प्रजपेद् बगलाह्वयाम् ।
 महता(दा)तापसयुक्तः^{१५} पक्षाच्छत्रमृ^{१६}तो भवेत् ॥२०॥

१. घ. मोक्षार्थं । २. घ प्र । ३. घ. तारावाराहपूर्वकम् । ४. ख. ग घ.

पुस्तकेष्वेव पाठ —

स्तम्भनार्थं जपेत्पुत्र बगलाबीजपूर्वकम् ॥

विद्वेषणार्थं प्रजपेद् कारद्वयपूर्वकम् ।

उच्चाटनार्थं (घ. उच्चाटने) जपेत्पुत्र शक्तिवाराहपूर्वकम् ।

५ घ. कन्याकाशी मवाप्नुयात् । ६ घ. वाराहीमध्यबीजस्था । ७ ग. अनायासेन ।
 ८ क. ग. घ. गायत्री । ९ ख. बगलाह्वया । १० घ. गलरोगादि० । ११ ख. घ.
 भैरव । १२ ख. घ. बीजादि । १३ ख. तापञ्जर महातार्प । घ. महाताप । १४
 घ. नाशयेत् । १५ घ. सयुक्त ।

मायादि प्रजपेत् पुत्र गायत्री बगलाह्वयाम् ।^१
 इष्टसिद्धिर्भवेत् क्षिप्र शिवस्य वचन यथा^२ ॥२१॥
 मन्त्रराजस्य गायत्री पादाद्यवयव^३ तथा ।^४
 गायत्री च विना मन्त्र न सिद्धयति कलो युगे ॥२२॥
 पुरश्चरणकाले तु गायत्री प्रजपेन्नरः ।
 मूलविद्या^५ दशांश च मन्त्रसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ॥२३॥
 त्यक्त्वा तन्मन्त्रगायत्री यो जपेन्मन्त्रमादरात् ।
 कोटिकोटिजपेनैव 'तस्य सिद्धिर्न जायते'^६ ॥२४॥
 जपसंख्या यत्र नोक्ता लक्षमेक कुमारक ।
 दिनसंख्या यत्र नोक्ता पक्षमेक न सशयः ॥२५॥
 गायत्री बगलानाम्नी बगलायाश्च जीवनम् ।
 मन्त्रादौ चाथ मन्त्रान्ते जपेद्^७ ध्यानपुरस्सरम् ॥२६॥
 इति पञ्चविद्यायामे सांख्यायनतन्त्रे द्वादश पटलम्^८ ॥१२॥

॥ अथ त्रयोदशः पटलः ॥

निधाय पाद हृदि, गमपाणिना,
 जिह्वा समुत्पाटमकोपसयुताम् ।
 गदाभिघातेन च फालदेशे^९,
 अम्बां भजेऽहं बगला हृदब्जे ॥

कीञ्चमेव उवाच—

श्रीकण्ठ श्रीगराधार^{१०} शार्दूलाम्बरभूषण^{११} ।
 शान्तवद्^{१२} वद मे पूजां बगलायाश्च शङ्कर ॥२॥

१. अतः पर ख. ग. घ. पुस्तकेषु विशेषः पाठः—

“राजा वा राजपुत्रो वा मरणान्तं वशीभवेत् ।

महामाया (य. मायामाया) दिगायत्रीं प्रजपेद् बगलाह्वयाम् ।”

२. घ. तथा । ३. घ. पादाद्यवयव । ४. घ. पुस्तकेभ्य विशेषः—

मन्त्रसिद्धिर्भवेत् क्षिप्र शिवस्य वचन यथा

५. ख. घ. मूलविद्या । ६. ‘-’ घ. न च सिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् । ७. ख. ग. जपे । घ. जप ।

८. घ. ०द्वादशः पटलः । ९. ख. फालदेशे । घ. फालदेशं । १०. घ. धीषराधार ।

११. घ. ०भूषणम् । १२. घ. शान्तवद् ।

ईश्वर उवाच-

विन्दुमध्ये च सम्पूज्य स्वर्णतिहासनोपरि ।

चिन्मयी वगलादेवी सर्वसिद्धिप्रदायिकाम् ॥३॥

चतुर्भुजां च द्विभुजां गदां जिह्वां च विभ्रतीम् ।

पीतवर्णां महापूर्णां च चैत्ये मूलविद्यया ॥४॥

त्रिकोणे पूजयेत् पुत्र 'वाणीं गौरीं रमां'^१ क्रमात् ।

तत्तद्वीजेन सम्पूज्य तदावाहनपूर्वकम्^२ ॥५॥

पञ्चास्र^३ पञ्चकोणेषु वक्ष्ये तत्पूजनं क्रमात् ।

पूर्वकोणे तु सम्पूज्य अस्त्र च वगलामुखीम् ॥६॥

द्वितीयकोणे संपूज्य अस्त्रराज कुमारकं ।

उत्कामुखीति विख्यात तन्मन्त्रेणैव पूजयेत् ॥७॥

तृतीयकोणे सम्पूज्य अस्त्रराजं कुमारकं ।

'नाम्नी ज्वालामुखी चैव तन्मन्त्रेणैव पूजयेत्'^४ ॥८॥

'चतुर्थकोणे सम्पूज्य अस्त्रराज कुमारक'^५ ।

जातवेदमुखीनाम्नी तन्मन्त्रेणैव पूजयेत् ॥९॥

पञ्चमेषु च कोणेषु अस्त्रराजं कुमारकं ।

बृहद्भानुमुखी स्याता त्रिषु लोकेषु दुर्लभा ॥१०॥^६

पञ्चकोणेष्वेवमेतत्पञ्चास्र^७ सम्यगर्चयेत् ।

मूलमन्त्रेण तेनैव पूजायन्त्रं कुमारकं ॥११॥

तदुपरि सभभ्यर्च्यं दिवपालाष्टकमादरात् ।

तद्वाहनं च तच्छक्तिदशायुतपुरस्सरम्^८ ॥१२॥

तदुपरि सभभ्यर्च्यं मातृकाष्टकमेव च ।^९

तदुपरि सभभ्यर्च्यं विघ्नेशाष्टकमेव च ॥१३॥

१. ख. घ. महापूर्णा । ग. महापूर्णा । २. घ. वाणीगौरीरमाः । ३. घ. तदा-
वाहनपूर्वकम् । ४. घ. पञ्चास्रान् । ५. '—' चिह्ननगोऽशो घ. पुस्तके नास्ति । ६.
'—' चिह्नना-तर्गतोऽशो नावलोक्यते घ. पुस्तके । ७. घ. पश्चिमिद नास्ति । ८. घ. पञ्च-
मेषु च कोणेष्वेवमेव पञ्चास्र । ९. ख. तच्छक्तिदशायुच० । घ. तच्छक्तिस्तदायुच० ।
१०. घ. पुस्तके विशेषः—

“तदुपरि सभभ्यर्च्यं भैरवाष्टकमेव च ।”

‘पूजायत्र क्रमेणैव’^१ एवमेव कुमारक ।
 शालग्रामशिलाया वा वह्निमण्डलमध्यमे ॥१४॥
 कन्यका^२ चाथवा पुत्र पूजयेद् बगलाम्बिकाम्^३ ।
 उत्तम^४ युवतोपूजा मध्यम^५ वह्निमण्डले^६ ॥१५॥
 अथम^७ च शिलापूजा क्रम एष^८ शिवोदितः^९ ।
 नमोऽस्तेनैव नाम्ना च पूजयेच्च कुमारक ॥१६॥
 एव च पूजयेत् सम्यक् पुरदचरणके विधौ ।
 द्रव्य यत्त्रिविध^{१०} प्रोक्तं पूजार्थां च विशेषतः ॥१७॥
 गौडी माध्वी च पैष्टी च गौडी चैवोत्तमोत्तमा^{११} ।
 छागकुक्कुटमत्स्य^{१२} च बगलाप्रीतिकारकम् ॥१८॥
 त्रिकाल पूजयेद्देवीं त्रिकाल च^{१३} जपेन्मनुम् ।
 यस्य दर्शनमात्रेण पण्डितैर्वाग्विदा वरैः ॥१९॥
 तस्य^{१४} प्रज्ञा पलानीय^{१५} तम सूर्योदये^{१६} यथा^{१७} ।
 तेजोभेदमनेक च सर्वेशत्रो^{१८} कुमारक ॥२०॥
 वह्नी यद्वत् प्रविशति^{१९} तद्वद्वादय^{२०} चातुरी^{२१} ।
 बगला मन्त्रसिद्धस्य^{२२} हृदये च प्रविशति^{२३} ॥२१॥
 प्रतिवादि^{२४} भवेत्स्तम्भो^{२५} बृहस्पतिसमोऽपि च ।
 प्रज्ञाकर्षणशक्तिश्च बगला भूतले स्मरेत्^{२६} ॥२२॥
 विद्यामाकर्षणार्थं^{२७} च स एव च^{२८} न सशयः^{२९} ।
 ब्रह्मचारी गृही वापि वानप्रस्थोऽथवा यतिः ॥२३॥

१. ‘—’ पूजायत्रक्रमेणैव । २. स्त्र. कन्याया । ३. य बगलामुखीम् । ४. य
 उत्तमा । ५. य मध्यमा । ६. य. वह्निमण्डलम् । ७. य. अथवा । ८. य एष ।
 ९. य. एव । १०. य. त्रय । ११. क. ग. शिवोदिता । १२. य. त्रिविध । १३. क. ग. उत्तमा ।
 १४. मांस । १५. य. प्र । १६. य. तस्य । १७. य. पलायते । १८. य. सूर्योदयः ।
 १९. य. तथा । २०. य. शत्रो । २१. य. प्रशस्यति । २२. य. तद्वद्वादकपद ।
 २३. य. चातुरम् । २४. य. मन्त्रसिद्धिः स्याद् । २५. ‘—’ य. दूरादेव प्रदशनात् ।
 २६. य. प्रतिवादी । २७. य. भवेत् स्तम्भो । २८. य. स्मृता । २९. य. यज्ञानाकर्षणार्थः ।
 २८. य. तु । २९. य. पुस्तकद्वयेऽपि कोऽयमशो दृश्यते—

‘उल्लस्य बगलामन्त्रमुपवास (य. मुपासक)मनन्यधी.’

यत्किञ्चित् कुरते (य. क्रियते) कर्म पृथ्वी (य. शिला)बोजमिवाङ्कुरं. (य. वाङ्कुर)”

बगलामन्त्रसिद्धस्तु^१ सैव पूज्यो यतीश्वर^२ ।
 बगलामन्त्रसिद्धश्च^३ यत्र तिष्ठति भूतले ॥२४॥
 पञ्चक्रोशप्रमाणेन विद्वानेव च भासते ।
 न भासत चान्यविद्या न स्मरन्न परामुखी^४ ॥२५॥
 प्रयोग चैव न भवेद् बगलार्चापरै^५ पुरा^६ ।
 ग्रसने^७ सर्वविद्याना बगला यैव^८ भूतले ॥२६॥
 बगलाया विना मन्त्र त्रिपु लोकेषु दुर्लभम् ।
 तत्सम्प्रदायविधिना^९ साधयेद् बगलामुखीम् ॥२७॥
 एव च बगलामन्त्र मन्त्रराजमिद भुवि ॥

इति षड्विद्यायाम साक्ष्यायनतन्त्रे त्रयोदश पटलम्^{१०} ॥१३॥

॥ अथः चतुर्दशः पटल ॥

सुधाब्धौ रत्नपर्यङ्क मूले कल्पतरोस्तथा ।
 ब्रह्मादिभि परिवृता बगला भावयद्^{११} हृदि ॥१॥

कीञ्चनवन उवाच—

वीर^{१२} विद्रूप विश्वश चिदानन्दस्वरूपिणे^{१३} ।
 बगलार्चाविधि चैव वद मे कृष्णाकर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

'सृष्टि स्थिति च सहार'^{१४} पूजा च त्रिविधा कली ।
 केरले सृष्टिरूपा च गर्भकौलायमक्रमात् ॥३॥
 अर्चनं गोडदेशे^{१५} च^{१६} स्थितिमार्गं^{१७} कुमारक ।
 साक्षात् ग्रहदेशे तु^{१८} सहाराचनमेव^{१९} च ॥४॥
 गुप्त कौलायम नाम^{२०} गोडदेशार्चनादिभि^{२१} ।
 कामरूपायम नाम सहारकमपूजनम् ॥५॥

१ प ०सिद्धिस्तु । २ '—' घ सर्वे पूज्यो मुनीश्वरः । ३ प ०सिद्धिश्च ।
 ४ घ तस्य वक्ष्यात् पराङ्मुखी । ५ प ०र्चयः । ६ प परा । ७ घ प्रस्ते ।
 ८ प एव । ९ ख प तत्सम्प्रदाय० । १० प ०त्रयोदश पटल । ११ प
 चिन्तयद् । १२ प चिद । १३ प स्वरूपक । १४ '—' घ सृष्टिस्थितिश्च सहार ।
 १५ प गोडदेशे । १६ प स्य । १७ ख स्थितिमार्गं । १८ '—' घ प
 कामरूपायमदेशे तु । १९ प सहारकममेव । २० प नाम्ना । २१ घ गाडदेशाच्चन
 विधि ।

लाटाचर्चनं^१ चावलम्ब्य सांख्यायनमुनिस्तथा ।
 उक्तवानागमं^२ चैव सृष्टघर्षं^३ ऋणु पुत्रक ॥६॥
 सर्वाङ्गसुन्दरी श्यामा सर्वावयवसोभिनीम् ।
 नवोढा पुष्पिणी चैव प्रार्थयेद्विप्रकन्यकाम् ॥७॥
 कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्या पीठंमास्या कुमारक ।
 अथवा भौमवारे च निशा^४ भृगुजवासरे^५ ॥८॥
 'सुवासिनी च'^६ तंलेन कुर्यादिभ्यगनं^७ तथा ।
 तूलिकातल्पमानीत्वा^८ आस्तीर्योदङ्मुखेपु^९ च ॥९॥
 तस्योपरि ततस्तीर्यं^{१०} शमन्तैर्जातिचम्पकैः ।
 कपूर्^{११} र चैव कस्तूरीमिश्रित चन्दन तथा ॥१०॥
 सर्वाङ्गे लेपन कुर्यात्लक्ष्मीसूक्तेन बुद्धिमान् ।
 पर्यङ्कोपरि तत्कन्या चन्दनेन विलेपिताम् ॥११॥
 ध्रुवाद्यैरिति^{१२} मन्त्रेण कुर्याद्विषणतोमुखीम् ।
 उन्मुखेत्यर्चनं^{१३} कुर्यात् श्रीसूक्तेन कुमारक ॥१२॥
 पादौ प्रसार्यं^{१४} तत्कन्या^{१५} गुप्तेनार्चनमाचरेत् ।
 न्यस्त्वा षोढाद्वय चादौ बगलापञ्जर न्यसेत् ॥१३॥
 कन्या चैव न्यसेदेव तत्तदङ्गानि^{१६} सस्मरेत्^{१७} ।
 गन्धद्वारेति^{१८} मन्त्रेण कुर्यात् कस्तूरिलेपनम् ॥१४॥
 मूलमन्त्रेण चाभ्यर्च्यं^{१९} पुष्पमाला समर्चयेत्^{२०} ।
 निवेदयेद् द्रव्यशुद्धि तत्रैव जपमाचरेत् ॥१५॥
 शत वाऽथ सहस्रं वा मन्त्रराजमिदं सुत ।
 पुरश्चरणमध्ये तु प्रतिभार्गववासरे ॥१६॥

१. ग. लाजाचर्चन । घ. शोभाचर्चन । २. घ. उक्तमार्गमन्त्रे । ३. घ. सृष्टघर्ष ।
 ४. ख. ग. घ. निशाया । ५. ख. ग. घ. भृगुवासरे । ६. घ. सुवासितेन । ७. ग.
 ०दभ्यगना । ८. घ. ०दम्पक । ९. घ. ०मानीय । १०. घ. ०मुखेन । ११. ख.
 घ. समास्तीर्यं । १२. घ. ध्रुवाद्यैरिति । १३. घ. उन्मुखे छयन । १४. घ.
 प्रस्तार्यं । १५. ख. शो कन्या । १६. घ. तत्र चांगानि । १७. ख. घ. सस्पृशेत् ।
 १८. ख. घ. पुस्तकद्वये विशेषः पाठः—

घनजपपुरं चैव प्रर्चयेन् (घ. मार्जयेन्) मूलविधया ।

१९. घ. गन्धद्वारेण । २०. घ. तस्यैव । २१. ख. घ. समर्चयेत् ।

अथवा षोडशमास्या वा सोभाग्यार्चनमाचरेत् ।
 प्रयोगसिद्धिद शस्त^१ मन्त्रसिद्धिकर परम् ॥१७॥
 एतत्पूजा विना पुत्र प्रयोग न भवेत् कलौ ।
 तस्मात् सर्वप्रयत्नेन प्रयोगादि च भूतले ॥१८॥
 सोभाग्यार्चा विना पुत्र न भवेज्जपकोटिभिः ।
 अभिमानाष्टक त्यक्त्वा त्यक्त्वा चैवेपणात्रयम् ॥१९॥
 त्यक्त्वा पञ्चेन्द्रियासक्तिं सोभाग्यार्चनमाचरेत् ।
 सुखदुःख समे^२ कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ॥२०॥
 शीतोष्णे^३ समता कृत्वा सोभाग्यार्चनमाचरेत् ।
 षोडशद्वयं च न ज्ञात्वा य^४ करोत्यर्चनं भुवि ॥२१॥
 स पतितो भवेत् पुंसां रौरव नरकं व्रजेत् ।
 बाह्याभ्यन्तरत^५ पुत्र अभेदज्ञानयोविना ॥२२॥
 सोभाग्यार्चनकर्तृणां मनन्तं^६ शापमाप्नुयात् ।
 सकल्पं च विकल्पं च त्यक्त्वा विश्रान्तमानस^७ ॥२३॥
 कुर्यात् सोभाग्यसम्पूजां च नो चेद् भ्रष्टो भवेन्नरः ।
 जितेन्द्रिय^८ सुखं त्यक्त्वा कुर्यात् सोभाग्यपूजनम् ॥२४॥
 सुखापेक्षणं यत् कुर्याद् देवताशापमाप्नुयात् ।
 स्वस्यादेशविधिं^९ चैव न ज्ञात्वा कौञ्चभेदन ॥२५॥
 यः करोत्यर्चनं चैव स विप्रः पतितो भवेत् ।^६
 स्वपत्नी भ्रातृपत्नी वा गुह्यभार्यामिथापि वा ॥२६॥
 अचयत पद्मसोपेता^{१०} साख्यायनमतं त्विदम ।
 दीक्षालयस्था रजकी कुलालगृहकन्यकाम् ॥२७॥

१. ष पुंसां । २. ष समौ । ३. ष शीतोष्ण । ४. न ब्रह्माभ्यन्तरत । ५. ष बाह्याभ्यन्तरयो । ६. ष कर्तृणां देवता । ७. ष विश्रान्तमानस । ८. ष जितेन्द्रिय । ९. ष स्वस्वदेशविधि । १०. अत पर स ष पुस्तकद्वय विज्ञाप —

“कल्पते (करोति ष) चित्तसक्षोभं ततः (ष. त्वत्) कथायाः कुमारकः ।

ज्ञातचित्तो भवेत् सद्यो (ष सोपि) वाचस्पतिसमोऽपि वा” ॥

ष पुस्तकेऽस्मादप्यधिकोऽयमगो दूरयते—

‘नोत्पादयत् कामनया वेदनं च शरीरयोः ।

वेदना जनयद्यस्तु स नरः पतितो भवेत् ॥

१०. ष योवनोपेता ।

पुलिनन्दकन्यकां चैव मुकण्डभूतमादिशेत् ।
 अर्चयेद् ऋषिपत्नी^१ च पूर्वोक्तां लक्षणान्विताम् ॥२८॥
 अर्चयेद्^२ विधिमाग्रेण पूजा दूर्वाससम्भता^३ ।
 सर्वलक्षणसम्पन्नां पुष्पिणीमर्चयेत्ततः^४ ॥ २९॥
 मतङ्गमुनिनोक्तं^५ च सद्यः सिद्धिकरं भुवि ।
 इति^६ मागंमतं^७ पुत्र नास्ति सिद्धिर्गुरोर्विना ॥३०॥
 तस्मात् सर्वप्रयत्नेनार्चयेद्^८ गुर्वनुज्ञया ॥३१॥

॥ इति पद्मविद्यागणे सांख्यापनतन्त्रे चतुर्विंशः पटलः ॥१४॥

॥ अथ पञ्चदशः पटलः ॥

पीतवर्णा मदाधूर्णा दृढपीनपयोधराम् ।
 वन्देऽहं वगलां देवी स्तम्भनास्त्रस्वरूपिणीम् ।

कौञ्चभवन उवाच—

राजराज स वै^९ श्रीमान् रजताद्विनिकेतन ।
 पञ्चास्त्रविद्यां वद मे स्तंभनाख्यान्सुपावनान्^{१०} ॥३॥

ईश्वर उवाच—

आद्यास्त्रं वगलानाम्नी रणस्तम्भनकारणम्^{११} ।
 उल्कामुखी द्वितीय^{१२} च स्तम्भनं भुवनत्रये ॥३॥
 ज्वालामुखी तृतीयास्त्रं स्तम्भनं त्रिषु^{१३} दैवतैः ।
 जातवेदमुखी चैव चतुर्थास्त्रं कुमारक ॥४॥
 ब्रह्मविष्णुमहेशानां स्तंभनं नात्र संशयः ।
 बृहद्भ्रानुमुखी चास्त्रं पञ्चमं तु कुमारक ॥५॥
 पट्पञ्चकोटिचामुष्ठा कालिकादिशतं^{१४} सुत ।
 सपादकोटि त्रिपुरा स्तंभनास्त्रं च उत्तमम्^{१५} ॥६॥

१. घ. वैश्यपत्नी । २. घ. अर्चन । ३. घ. दुर्वाससमता । ४. घ. पुष्पिता० ।
 ५. घ. मातङ्गमुनिना चोक्तं । ६. ख. ग. घ. सिद्धि । ७. घ. मागंमत । ८. ख.
 ० प्रयत्नेन वा० । ग. घ. प्रयत्नेन अर्चयेद् । ९. ख. सुख । ग. स चे । घ. सख ।
 १०. ख. स्तम्भनाख्य सुपावनी । घ. स्तम्भनाख्यां सुपावनी । ११. घ. ० कारणीम् ।
 १२. घ. द्वितीया । १३. घ. ऋषि । १४. घ. कालिकोटिषत । १५. घ. पञ्चमम् ।

सस्कारेण विना मन्त्र साधकस्य प्रमादकृत् ।
 लोकालोकस्तभन च नाम्ना उत्कामुखी^१ तथा ॥१६॥
 मन्त्रोद्धार प्रवक्ष्यामि धरज-मन् सभासत ।
 तार च स्तब्धमाया च शक्तिवाराहमेव च ॥२०॥
 वगलामुखीपद चोक्त्वा बीजत्रय तु सर्वं च ।
 दुष्टाना पदमुच्चार्य पूर्वबीजत्रय वदेत् ॥२१॥
 वाच मुख पद चोक्त्वा पूर्वबीजत्रय^२ वदेत् ।
 स्तम्भयद्वितय चोक्त्वा 'बीजत्रय ततो'^३ वदेत् ॥२२॥
 जिह्वा कीलय उच्चार्य पुनर्बीजत्रय वदेत् ।
 वृद्धि विनाशयोच्चार्य पूर्वबीजत्रय^४ वदेत् ॥२३॥
 प्रणव वह्निजाया च उत्कामुख्या अय मनु ।^५
 पञ्चाशदूर्ध्व चंवाष्टबीजबद्ध^६ सुपावनम् ॥२४॥
 ऋषिश्चाप्यग्निवाराहश्छन्दः^७ ककुभमव च ।
 उत्कामुखी देवता च जगत्स्तम्भनकारिणी ॥२५॥
 बीज च वगलाबीज शक्तिः^८ स्वाहासमन्वितम् ।
 कीलक शक्तिवाराह न्यास पूर्ववदाचरेत् ॥२६॥
 ध्यान यत्नात् प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदे^९ कुमारक ।
 विलयानलसकाशा^{१०} वीरवेशेण^{११} सस्थिताम् ॥२७॥
 वीराम्नायमहादेवी^{१२} स्तम्भनार्थं भजाम्यहम् ।
 एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्र मनुलक्ष कुमारक ॥२८॥
 प्रपञ्चस्तम्भन कृत्वा स्वविद्या च प्रकाशयेत् ।
 तालकेन हुनेत् पुत्र लक्षमेक हृताशने^{१३} ॥२९॥
 मन्त्रसिद्धिर्भवेत् पुत्र त्रैलोक्ये कीर्त्तिमान् भवेत् ।
 तस्याज्ञया जगत्सर्वं स्थावर जङ्गमात्मकम् ॥३०॥
 कुमारक प्रवर्त्तन्ते^{१४} सर्वाश्चर्यंकर भुवि ।
 'सिद्धि चतुर्विधा'^{१५} चैव एतन्मन्त्रस्य जापके ॥३१॥

१. घ. चोल्का मुखी । २ घ. पुनर्बीजत्रय । ३ घ. पुनर्बीजत्रय । ४ घ. पुनर्बीज ।
 ५. घ. स्तब्धमाया ध्रुव वह्निजायातोल्कामुखीमनुः । ६ घ. ०बीजमुक्त । ७ घ. ऋषिश्च ।
 यज्ञवाराहश्छन्दः । ८ घ. शक्ति । ९. घ. मन्त्रभेद । १० घ. विनया० । ११. छ. वीरवेशेण । घ. वीरवेशेण । १२. घ. विराम्पर्यो महादेवी । १३. क. ल. ग. क्षपाद्यन ।
 १४. घ. प्रवर्त्तत । १५. छ. घ. सिद्धिश्चतुर्विधा ।

इच्छया वृत्तंते सर्वमाश्चर्यंकरमादरात् ।
 नदी नदश्च^१ रतिमान्^२ नानापादपसकुलम् ॥३२॥
 आगच्छेत्याज्ञया^३ तस्य पुनर्गच्छन्ति चादरात्^४ ।
 किन्न स्यात् पद्ययुक्तानि माहात्म्य पदग मनो^५ ॥३३॥
 कामयेन्मन्त्रमेतद्धि^६ क्रीचभेदनकोविद ॥

इति षड्विधागमे सांख्यायनतन्त्रे पञ्चदशपटलः* ॥१५॥

॥ अथ षोडशः पटलः ॥

बन्धूककुसुमाभासा^७ बुद्धिनाशनतत्पराम् ।
 वन्देऽह वगला देवी स्तम्भनास्त्राधिदेवताम् ॥१॥

बीञ्चनेवन उवाच—

नमस्ते गिरिजानाथ मन्त्रविद्यागमप्रभो ।
 अघुना चास्त्रविस्तार वद मे कक्षणाकर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

तरि च स्तब्धमायां च प्रासाद^८ च ततः परम् ।
 पुनर्लिख्य^९* स्तब्धमायां प्रणव च ततः परम् ॥३॥
 वगलामुक्तिपद चोक्त्वा सर्वदुष्टपदं वदेत् ।
 न(ल?)वार दीर्घसयुक्तं बिन्दुना भूषित तथा ॥४॥
 बीजपञ्चममुच्चार्य याच मुक्त पद वदेत् ।
 स्तम्भयद्रममुच्चार्य पञ्चबीजानि चोच्चरेत् ॥५॥
 जित्वा बीजय उच्चार्य पञ्चबीजानि चोच्चरेत् ।
 बुद्धि विनाशययुग^{१०} पञ्चबीजानि चोच्चरेत् ॥६॥
 वृत्तिजायासमायुक्त^{११}* पष्टिपञ्चमक^{१२}* मनुम्^{१३}*^{१४}
 जातवेदमुगीमन्त्र जगदादप्ययंकारकम् ॥७॥
 अरुणपञ्चवर्षेण ब्रह्मोऽय मन्त्रनायकः ।
 त्रापिः बालाग्निहृद्भरतु पश्चिदद्युः उदाहृतम् ॥८॥

१. प. नदादप । २. प. विरयो । ३. प. आगच्छेत्याज्ञया । ४. प. सादरात् ।
 ५. प. किन्न तस्यापद्ययुक्तानि० । ६. पुनर्गच्छन्ति विदेषः—

किं तद्वच अपद्युक्तानां माहात्म्य पेदुष मनो ।

वद्गोपयति पुण्यामा त्रैलोक्याकार्यंलुप्तमः ॥

७. प. गोपय-मथ० । ८. प. अत्रप्रयोग पञ्चदशपटलः । ९. प. भाषां । १०. क.
 व. प्रस.द । १०. प. पुनर्लिखेत् । ११. प. माद्यपयुक्त च । १२. क. अस्मादुक्तः ।
 १३. प. अत्ययो । १४. प. मनुः । १५. पादद्वय प. पुनर्गच्छन्ति ।

जातवेदमुखी मन्त्रदेवता^१ समुदाहृता ।
 ॐ बीज ह्रीं^२ च शक्तिश्च ह कीलकमुदाहृतम् ॥६॥
 पूर्ववन्व्यासविद्या^३ च ध्यान वक्ष्यामि पुत्रक ।
 जातवेदमुखी देवी देवता प्राणरूपिणी ॥१०॥
 भजेऽहं स्तम्भनार्थं च स्तम्भनीं^४ विश्वरूपिणीम्^५ ।
 एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं त्रिशल्लक्ष सुपावनम् ॥११॥
 चर्मधूग्वसनो भूत्वा चिन्तितार्थप्रद ध्रुवम् ।
 गन्धर्वाश्चैव यक्षाश्च गरुडोरगपन्नगान् ॥१२॥
 वेतालहाकिनीप्रेतशाकिनीब्रह्मराक्षसान् ।
 ऋषिदेवगणाश्चैव सिद्धान्न्याश्च पुत्रक ॥१३॥
 श्रधुना स्तम्भयत्येतत्^६ सत्य शङ्करभाषणम् ।
 तार च स्तब्धमाया च वह्निबीज च पंचकम् ॥१४॥
 प्रस्फुरद्वितीय चैव बीज चैव^७ त्रयोदश ।
 ज्वालामुखी 'पदं चोक्त्वा'^८ वदेद्बीजं^९ त्रयोदश ॥१५॥
 सर्वशब्द ततोच्चार्यं दुष्टानां पदमुच्चरेत् ।
 बीजं^{१०} त्रयोदशं चोक्त्वा वाच मुख पद वदेत् ॥१६॥
 स्तम्भयद्वितीय चोक्त्वा पुनर्बीजं^{११} त्रयोदश ।
 जिह्वा कीलय चोच्चार्यं^{१२} पुनर्बीजं त्रयोदश ॥१७॥
 बुद्धिं 'विनाशय चोक्त्वा'^{१३} पुनर्बीजं त्रयोदश ।
 वह्निजायासमायुक्तं ज्वालामुख्यमयं^{१४} मनुः^{१५} ॥१८॥
 शतोत्तर भवेद्विंशद्बीजबद्धो मनुस्त्वयम् ।
 अत्रिश्च ऋषिरेवात्र^{१६} गायत्रीछन्द उच्यते^{१७} ॥१९॥
 ज्वालामुखी देवता च स्तम्भनाय त्रिमूर्तिभिः ।
 ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि न्यास पूर्ववदाचरेत् ॥२०॥

१. घ. देवी देवता । २. ख. घ. ह्रीं । ३. घ. ०विद्याः । ४. घ. स्तम्भनी ।
 ५. घ. विश्वरूपिणी । ६. घ. मनुनां सभवेत्येतत् । ७. घ. न्योत । ८. घ. च उच्चार्यं ।
 ९. क. बीज । १०. घ. बीजा । ११. ०बीजा ॥ १२. घ. युग्म च । १३. घ.
 नाशयन्म च । १४. ख. ज्वालामुख्यास्त्वय । १५. घ. स्तब्धमामात्रिवृद्धिजाया
 ज्वालामुखीमनु । १६. घ. ०रेवात्स । १७. घ. एव च ।

ध्यान विना भवेन् मूकः सिद्धमन्त्रोऽपि पुत्रक ।
 ज्वालापुञ्जसटोन्मुक्ता^१ कालानलसमप्रभाम् ॥२१॥
 चिन्मयी स्तभनी देवी भजेऽह विधिपूर्वकम् ।
 एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमर्कलक्ष सुबुद्धिमान् ॥२२॥
 तर्पणं च गवा क्षीरंस्तालकेन हुनेत् सदा ।
 तर्पणं च चतुर्लक्ष लक्षमेकं हुनेत्सदा^२ ॥२३॥
 सहस्रद्वितयं चैव 'ब्राह्मणानां सुभोजयेत्'^३ ।
 त्रिमूर्तिं स्तम्भयेन्मन्त्री पञ्चतत्त्वान्यपि क्षणात् ॥२४॥
 आश्चर्यं महामन्त्रं नराणां दुर्लभं भुवि ।
 इदानीं मन्त्रराजं च बृहद्भानुमुखाह्वयम् ॥२५॥
 'भारणं स्तभवाण'^४ च आश्चर्यं च कलौ युगे ।
 तारं ह्रूँ ह्रूँ च उच्चार्यं ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ च ततः परम् ॥२६॥
 ह्रूँस्तथाप्युच्चरेत् पुत्रं ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ च ततः परम् ।
 ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँश्च ततश्चोक्त्वा^५ वगलामुखिपदं वदेत् ॥२७॥^६
 सर्वशब्दं ततोच्चार्यं दुष्टानां पदमुच्चरेत् ।
 वाचं मुखं पदं चोक्त्वा स्तम्भयद्वयमुच्चरेत् ॥२८॥
 घ्राद्यबीजं पुनश्चोक्त्वा^७ उद्धरेत् पुनराद्यवत् ।^८
 जिह्वां कौल्यं उच्चार्यं पूर्ववद् बीजमुद्धरेत् ॥२९॥
 बुद्धिं विनाशयोच्चार्यं^९ पूर्वबीजानि^{१०} चोच्चरेत्^{११} ।
 वह्निजायासमायुक्तो बृहद्भानुमुखोमनुः ॥३०॥^{१२}
 सविता च ऋषिः स्यात्^{१३} गायत्रीध्वज एव च ।
 देवता स्तम्भनायं च बृहद्भानुमुखी तथा ॥३१॥

१. प. ज्वलपुञ्जसटोमुक्ता । २. प. ०मुत् । ३. प. ब्राह्मणान् सुत भोजयेत् ।
 ४. प. रणस्तम्भनवाण । ५. प. ततस्तार । ६. पतः परममगो दुश्यते प. पुस्तके—
 "घ्राद्यबीजं मनोः सख्या उद्धरेत् पुनरादरात्"
 ७. प. मनो. सख्या । ८. प. पुनरादरात् । ९. प. नाशय उच्चार्यं । १०. प.
 पूर्वबीजं । ११. प. समुच्चरेत् । १२. प. पुस्तके स्वयमगो विद्यते—
 स्तम्भनाया तारकं च वह्निजाया-तकं सुत ।
 बृहद्भानुमुखीमत्र पदुत्तरघताणुषे" ॥
 १३. प. ऋषिरवाच ।

बीजं च बगलाबीजं शक्तिर्माया कुमारक ।
 धीलकं प्रणवं चाथ विनियोगस्ततः^१ परम्^२ ॥३२॥
 पूर्ववन्त्यासविद्यां च तन्त्रराजवदाचरेत् ।
 ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ॥३३॥
 कालानलनिभां देवीं ज्वलत्पुञ्जशिरोरुहाम् ।
 कोटिबाहुसमायुक्तां वैरिजिह्वासमन्विताम्^३ ॥३४॥
 स्तम्भनास्त्रमयीं देवीं दूढपीनपयोधराम् ।
 मदिरामदसयुक्तां^४ बृहद्भानुमुखीं भजे^५ ॥३५॥
 एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमकलक्ष कुमारक ।
 तर्पयेत्तद्दशाशं च गुडोदकसमन्वितम् ॥३६॥
 तालकेन हुनेत्तस्य दशाशं सस्कृताग्निना ।
 ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चात् तद्दशाशं कुमारक ॥३७॥
 मन्त्रान्ते च प्रकृतेर्व्यं सौभाग्याचनमादरात् ।
 सौभाग्यार्चां विना पुत्र मन्त्रसिद्धिर्न जायते ॥३८॥
 पञ्चास्त्रमन्त्रसिद्धिर्हि दिवि देवेषु दुर्लभा^६ ।
 गोपयेत् सर्वदा पुत्रं^७ 'गुप्ता वीर्यवती'^८ भवेत् ॥३९॥
 'न कर्त्तव्यः प्रयोगोऽस्य'^९ शपथादि^{१०} कदाचन ।
 यः करोति प्रयोगं च देवताशापमाप्नुयात् ॥४०॥

इति षड्विद्यागमे साक्ष्यायनतन्त्रे षोडशः पटलः ॥१६॥

॥ अथ सप्तदशः पटलः ॥

'जिह्वाग्रमादाय 'करेण देवी'^१ 'वामेन शत्रून् परिपोडयन्तीम्'^२ ।

पीताम्बरा पीनपयोधरादद्यां^३ सदा 'स्मरेऽहं बगलाम्बिका'^४ हृदि ॥१॥

षोडशभेदेन उवाच—

चन्द्रचूडं नमस्तेऽस्तु इन्दिरापतिपूजित ।

शताक्षरीमहामन्त्रं बगलायाश्च मे वद ॥२॥

१. घ. विनियोगं च । २. घ. संस्मृतम् । ३. घ. ललज्जिह्वासमन्विताम् । ४. घ. मदिरामोदसयुक्तां । ५. घ. भजेत् । ६. घ. दुर्लभम् । ७. घ. पुत्रा । ८. घ. गोप्ता वीर्यापतिर् । ९. घ. न कर्त्तव्यं प्रयोगाश्च । १०. ख. घ. शपथादि । ११. इति पूर्वमयमंशो घ. पुस्तके—'हरीहरेश्च समर्था' । १२. घ. करद्वयेन । १३. घ. श्रुत्वाटयन्तिमरिशक्तिमुक्ताम् । १४. घ. पीत० । १५. घ. स्मरेयं बगलाम्बिकां ।

ईश्वर उवाच—

मन्त्रोद्धार प्रवक्ष्यामि पुरश्चर्याविधिं तथा ।
 प्रयोगं चोपसहारं वक्ष्येऽहं तव पुत्रक ॥३॥
 स्तब्धमाया च वाग्बीजं माया मन्मथमेव च ।
 श्रीबीजं शक्तिवाराहं वगलामुखिं चोच्चरेत्^१ ॥४॥
 स्फुरद्वयं तथा चोक्त्वा सर्वशब्दं^२ ततोच्चरेत् ।
 दुष्टानां पदमुच्चार्यं वाचं मुखं पदं वदेत् ॥५॥
 स्तम्भद्वयमुच्चार्यं प्रस्फुरद्वयमुच्चरेत् ।
 विकटाङ्गीपदं चोक्त्वा घोररूपीपदं^३ वदेत् ॥६॥
 जिह्वां कीलय उच्चार्यं महाशब्दं ततोच्चरेत् ।
 पश्चाद्भ्रमकरीं चैव बुद्धिं नाशय उच्चरेत् ॥७॥
 विरामपदं^४ चोक्त्वा 'सर्वप्रज्ञामयीति च'^५ ।
 प्रज्ञां नाशय उच्चार्यं उन्मादीकुरु^६ युग्मकम् ॥८॥
 मनोपहारिणीं चोक्त्वा स्तम्भमायां^७ समुच्चरेत् ।
 शक्तिवाराहबीजं च लक्ष्मीबीजं^८ ततः परम् ॥९॥
 कामराजं च हल्लेखां वाग्भव तदनन्तरम् ।
 स्तब्धमायां ततोच्चार्यं वह्निजायासमन्वितम् ॥१०॥
 शताक्षरोमहामन्त्रं वगलानाम् पावनम् ।
 ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोभ्यं गायत्री समुदाहृता ॥११॥
 देवता वगलानाम्नी जगत्स्तम्भनकारिणी ।
 ह्रस्वी^९ बीजं शक्तिरित्येव वाग्भव कीलकं तथा ॥१२॥
 पूर्वोक्ता न्यासविद्या च वगलापञ्जरादयः ।
 न्यासानुक्तकमेणव^{१०} 'जपाद्या पच एव च'^{११} ॥१३॥
 पीताम्बरधरा सोम्या पीतभूषणभूषिताम् ।
 स्वर्णसिंहासनस्था च मूले कल्पतरोरध^{१२} ॥१४॥

१ घ रमां च । २. ह्रस्वीकार वगलामुखी । ३. घ. सर्वं शब्द । ४. घ. घोररूप पद । ५. घ. मुच्चार्यं । ६. घ. विरामपदीपदं । ७. घ. सर्वप्रज्ञामयीत्यरे । ८. घ. उन्माद कुरु । ९. घ. स्तब्धमाया । १०. घ. रमाबीज । ११. घ. न्यास-मुक्तकमेणव । १२. घ. जपादावाचरेत् तुषी । घ. जपादाचन्त्यमेव च । १३. घ. ०स्तया ।

वैरिजिह्वाभेदानार्थं^१ छुरिका^२ विभ्रती शिवाम् ।
 पानपात्रं गदां पाशं धारयन्तीं भजाम्यहम् ॥१५॥
 एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमकंलक्ष क्षपाशना ।
 तर्पयेद्वेतुमिश्रेण वारिणा वायु पुत्रक ॥१६॥
 'जातिपत्रकसमिश्रजलेन^३ च कुमारक ।
 पूजायुतं^४ च सन्तर्प्यं ह्यचितेन जलेन च ॥१७॥
 त्रिमध्वक्तं पायसेन^५ भयवा पायसाज्ययो ।
 चरुणा वा हुनेत् पुत्रं^६ सहस्रं तत्त्वसख्यया ॥१८॥
 नानादेहजरोगाश्च कृत्रिमग्रहसंभवान् ।
 यावकाश्च^७ प्रयोगाश्च^८ 'तुल्यघातुसमुद्भवान्'^९ ॥१९॥
 सद्योनाशनमाद्यानि मन्त्रहोमेन साधकः ।
 'साज्यसक्तुघृताक्त'^{१०} च शमन्तकुसुमेन वा ॥२०॥
 पट्सहस्रं हुनेत् पुत्रं स्पण्डिले वायु कुण्डके ।
 वशीकरं च समोहं कीर्त्तिं प्रज्ञां भवेद् ध्रुवम् ॥२१॥
 तालकेन हुनेत् पुत्रं सहस्रं वसुसख्यया ।
 कुण्डं चैव भगाकारे राजतान्त्रो^{११} कलौ निशा ॥२२॥
 स्तम्भेन च भवेत् पुत्रं ताप्र कार्यां विचारणा ।
 श्रवकेश्च पिचुमर्द्दश्च^{१२} समिधं^{१३} सग्रहेत्तरं ॥२३॥
 प्रत्येकं त्रिसहस्रं च प्रादेशसमिधं क्रमं^{१४} ।
 मन्त्रं सर्वं समुच्चार्यं समिधाद्वयमेव च ॥२४॥
 हुनेद् ध्यानसमायुक्तं सद्यो विद्वषणं भवेत् ।
 विभीतकस्य समिधो ग्राह्यास्तु^{१५} त्रिसहस्रकम् ॥२५॥
 पट्कोणकुण्डे जुहुयात्त्रिशायां कृष्णपक्षके ।
 स्यावरांश्च गिरीश्चैव नदीपादपसकुलान्^{१६} ॥२६॥

१ घ. ० ज्येदनार्थं । २ घ छुरिका । ३ ख ग घ जाती(ति) चपक० । ४ घ, बाष्पायुत । ५ घ पायस च । ६ घ पुस्तकेऽस्मात्परमधिकोऽसौ दृश्यते—

'पर्यायकलदायक । तपस्वन हुनेत्पुत्रं' ।

७-८ घ यावकाश्च प्रयोगाश्च ९ ख ग घ तल्प(स्य)घातु० । १० ख, शाली सक्तु० । ग साज्यसक्तु० । घ शालिपत्रकतुघृताकर्ता च । ११ घ रजकान्त्रो । १२ ख पिचुमर्द्दश्च । १३ घ समिधा । १४ ख ग प्रादेशसमिधं क्रम । घ प्रादेश-समिधाक्रमात् । १५ क ग्रहास्तु । ग ग्रहाणु । १६ घ नदीपादपसकुलान् तथा ।

क्षणादुच्चाटनं कुर्याद् होमस्यास्य प्रभावतः ।

निम्बतलेन सयुक्तं शाल्मलीकुसुमं तथा ॥२७॥^१

जुहुयाद्देवतां^२ ध्यात्वा^३ मारणं भवति ध्रुवम् ।

पट्कर्मनिर्माणमिदं^४ सुसिद्धं

शताक्षरीमन्त्रमशेषदुःखहम् ।

होमेन सस्तम्भनमाचरेद् बुधो-

विद्यासुसिद्धं मुनिगुह्यमादरात् ॥२८॥

॥ इति षट्षिष्टागमे सांख्यायनतन्त्रे सप्तदशं पटलम्^५ ॥२७॥

॥ अथ अष्टादशः पटलः ॥

नमस्ते जगतां^६ देवी जिह्वास्तम्भनकारिणीम् ।

भजेऽहं दधुनाशार्थं^७ साधकासक्तमानसाम्^८ ॥२९॥

श्रीऋचभेवन उवाच—

सम्यग्ज्ञानं^९ महेशानं नित्यनित्यस्वरूपकं^{१०} ।

चन्द्रचूडं नमस्तेऽस्तु प्रयोगं वद मे प्रभो ॥३०॥

ईश्वर उवाच—

पट्सहस्रं हुनेत् पुत्रं दूर्वाहोममतन्द्रितः ।

'सम्यग् विपज्वर'^{११} हन्ति वगलायाः प्रसादतः ॥३१॥

बुधेन जुहुयात्तस्य तापज्वरहर^{१२} परम् ।

हुनेत् तावत् द्येतदूर्वां ज्वरं चातुषिकं हरेत् ॥३२॥

त्रिमध्वक्त^{१३} द्येतदूर्वां पट्सहस्रं हुनेत् प्रमात् ।

नानाविधं गरं हन्ति नात्र कार्या विचारणा ॥३३॥

दक्षिमिथ्रं गुडूचीभिः शर्करागुडसम्भ्राम्^{१४} ।

जुहुयात् पट्सहस्रं तु नानामेहनिवारणम् ॥३४॥

१. घ. पुस्तके इतोऽस्य नास्ति । २. घ. जुहुयादपुत्र । ३. घ. ध्यायन् । ४. घ. पट्कर्मनिर्माणमिदं । ५. घ. सप्तदशम । ६. घ. सप्तदशः । ७. घ. पटलः । ८. घ. वगला । ९. घ. दधुनाशार्थं । १०. घ. साधमान । ११. घ. नित्यनित्यम् । १२. घ. सप्ततापज्वर । १३. घ. शीतज्वरः । १४. घ. त्रिमधुवक्त्रा । १५. घ. मिथ्रितम् ।

सर्पपं लवणोपेतं पूर्ववज्जुहुयात्तरः ।
 नाशयेद् गुल्मरोग^१ च श्लोषधेन विना महत् ॥७॥
 षट्सहस्रं हुनेत् पुत्र शर्कराज्यसमन्वितम् ।
 'पित्तोद्रेकादिसर्वाश्च'^२ रोगान्नाशयति^३ ध्रुवम् ॥८॥
 शालिसक्तुं^४ धृतोपेतं^५ वशीकरणमुत्तमम् ।
 लाजाहोम^६ षट्सहस्रं लभेद्वाञ्छितकन्यकाम् ॥९॥
 हरिद्राखड्गहोम^७ तु षट्सहस्रं सुबुद्धिमात् ।
 गर्भंस्तमो भवेन्नारी सापि वश्या^८ भवेद् ध्रुवम् ॥१०॥
 केतकीदलहोमेन गणिका वश्यमाप्नुयात्^९ ।
 हुनेत् पद्मदलेनैव नेत्ररोगं विनश्यति ॥११॥
 मल्लिकाकुसुमेनैव अधिका च मतिर्भवेत्^{१०} ।
 जातीफलेन जुहुयादुन्मत्तो जायते रिपुः ॥१२॥
 षट्सहस्रं देवकुसुमं^{११} शर्कराज्यसमन्वितम् ।
 बुद्धिगं^{१२} चैव चाञ्चल्पं सज्जानमुन्मत्तिस्तथा^{१३} ॥१३॥
 अन्तोकेन^{१४} क्षुद्रमतिर्दुर्बुद्धिं सिद्धिबुद्धितां^{१५} ।
 तत्क्षणात्नाशमाप्नोति तमः सूर्योदये^{१६} यथा ॥१४॥
 मासं सपुटसयुक्तं^{१७} 'द्रव्येण सममेव च'^{१८} ।
 अयुतं जुहुयाद्वात्री सद्यो धनपतिर्भवेत् ॥१५॥
 मध्वाक्तं 'घ्रागमासं च'^{१९} त्रिसहस्रं हुनेत् सुत ।
 'भूलाभं जायते'^{२०} शीघ्रं ग्रामादिपतिरेव^{२१} च ॥१६॥
 गोडोद्रव्येण जुहुयात् सहस्रं बाणसख्यया ।
 बहुमूत्रादिरोगश्च नाशयेत्तान्^{२२} न संशयः ॥१७॥

१. ग. रोगरोग । २. घ. पश्याद्भवत्तत्तत् । ३. ०. नाशयेत् । ४. ख. ग. घ. शालिसक्तु । ५. घ. सितोपेत । ६. घ. लाजाहोमात् । ७. घ. होमस्तु । ८. क. सहस्रं । ९. ख. वश्या । १०. घ. ०. मादरात् । ११. ख. याधिका धूममतिर्भवेत् । १२. घ. देवपुष्प । १३. ख. उद्वेगः । १४. उच्चाटकमतिस्तथा । १५. ख. मविवेक घ. मविवेको । १६. ख. मन्दबुद्धिता । घ. सिद्धिबुद्धिता । १७. घ. सूर्योदयो । १८. ख. तु कुङ्कुटस्यैव । घ. कुङ्कुटसमूत । १९. घ. विमयुः सहितेन । २०. घ. घ्रागपि-
 चितं । २१. घ. सुतभ य भवेत् । २२. घ. ग्रामादि० । २३. क. ग. घ. नाशयति ।

माध्वीद्रव्येण जुहुयात् षट्सहस्रं क्रमेण च ।
 ज्वरपैक्ष्यादिरोगांश्च^१ सद्यो नाशनमाप्नुयात् ॥१८॥
 पेंष्टीद्रव्येण जुहुयान्निशास्वष्टसहस्रकम् ।
 सग्रहग्रहणीरोग सद्यो नाशनमाप्नुयात् ॥१९॥
 अन्नेन 'अन्वहो हुत्वा'^२ अन्नदानपतिर्भवेत्^३ ।
 घृतेन कान्तिमान् भूत्वा^४ नारीणामात्मदो^५ भवेत् ॥२०॥
 क्षीरेण भ्रमनाशश्च दध्ना तापननाशनम्^६ ।
 पञ्चगव्येन जुहुयात् पूर्ववत् पाप नाशयेत्^७ ॥२१॥
 गोमूत्रेण हुनेन्मन्त्री^८ षट्सहस्रं क्रमेण च^९ ।
 तालीमयेन^{१०} जुहुयात् स्त्रीणामाकर्षणं भवेत् ॥२२॥
 खजूं रजेन द्रव्येण पुंसामाकर्षणं भवेत् ।
 तिलतैलेन जुहुयात् सर्वाकर्षणमाप्नुयात् ॥२३॥
 एरण्डतैलेन जुहुयाद्^{११} वाचाकर्षणमाप्नुयात्^{१२} ।
 कुसुं भतैलहोमेन^{१३} काकगृध्राननेकशः^{१४} ॥२४॥
 आकर्षणं भवेच्छीघ्रं खेचराः पक्षिजातयः^{१५} ।
 यवना^{१६} पानहोमेन अग्निमध्याद्रिपुः^{१७} स्वयम् ॥२५॥
 रोगी च जायते मासाच्छिवस्य वचनं यथा ।
 जुहुयादारनालेन पित्तरोगी भवेद्रिपुः ॥२६॥
 निम्बपत्रद्रव्येणैव वातरोगी भवेद्रिपुः ।
 मोहिनीपत्रजद्रावैः^{१८} श्लेष्मरोगी भवेद्रिपुः ॥२७॥

१. ग घ. ज्वरपैक्ष्यादि० । २. घ. हुत्वाप्रकामी । ३. घ. ०दानपरो० । ४. घ.
 हुत्वा । ५. नारीणां मन्मथो । ६ घ. तापनिवारणम् । ७. घ. पापशांतये । ८. घ.
 हुनेद्वीमान् । ९. घ. पुस्तके विरोधः—

'विदार विवशो भावाद्विपुर्भान्तो भविष्यति' ।

१०. ख. तालीमयेन । घ. तालमयेन । ११. घ. एरण्डतैलहोमेन । १२. घ. वाचाकर्षणं० ।

१३. ख. ग. घ. पुस्तकेष्वथः परमयमशो दृश्यते विरोधः—

'पूर्ववद्धोममात्रतः । जलजानां च होमेन (प. जलजादृष्यं यो भंदा) भवेदाकर्षणं सुत ।
 करजतैलहोमेन' ।

१४. घ. काकगृध्राण्यनेकशः । १५. घ. पक्षिजा यत' । १६. ख. यवना । घ.
 यावतासाप्र । १७. घ. अग्निमाद्यं रिपोः । १८ ख. मोहिपत्रजतद्रावैः ।

भर्कपत्रद्रवेणैव क्षयरोगी भवेद्विपुः ।^१

'वज्रीक्षीरेण सयुक्तमारनालेन' पुत्रक ॥२८॥

जुहुयात् पट्सहस्रं तु वगलाध्यानपूर्वकम् ।

नाडीव्रणसमायुक्तो^२ (:) पण्मासान्त्रियते रिपुः ॥२९॥

गर^३ च तिलतैल च धारनालयुतेन च ।

'श्रामे वा नगरे वाय^४ वगलाध्यानपूर्वकम् ॥३०॥

'स्फोटव्रणाश्च जायन्ते'^५ रिपोर्योजनमाश्रत,^६ ।^७

तिलतैलेन सयोज्य यावनालाश्रमेव^८ च ॥३१॥

जुहुयात् पूर्ववच्छत्रु^९ 'मण्डलाच्छिन्नशोषक.'^{१०} ।

कपर् रमिलित^{११} 'चैव तिलतैल हुनेत् सुधी.'^{१२} ॥३२॥

मारणं^{१३} मण्डलाच्छत्रो^{१४} नात्र कार्या विचारणा ॥३४॥

इति षड्विंशोऽध्यायः साध्यासननम्ने षष्ठादशःपटलः ॥१८॥

॥ अष्टौनविंशः पटलः ॥

चतुर्भुजां त्रिनयनां पीतवस्त्रधरां शुभाम्^{१५} ।

वन्देऽहं वगला देवी क्षत्रुस्तभनकारिणीम् ॥१॥

१. सप्तविंशतिपद्योत्तरादस्यार्थाविंशतिपद्यपूर्वादि^१स्य च स्थानेऽयमद्यो सम्पत्ते घ. पुस्तके-

'पत्र' विभीतकोद्भूत तस्य स्वरसहोमतः

जातिभ्रष्टो भवेच्छत्रु नृन्पिया शिवभाषितम् ॥

तत्कारिपत्रजद्रार्यः कर्मभ्रष्टो भवेद्विपुः ।

निगुण्डीपत्रजद्रावैज्वररोगी भवेद्विपुः ॥

कर्पासपत्रजद्रावैर्हमेन कुमारक ।

बद्धकोष्ठाश्च रोगस्य स्वभावेर्नैवसिद्धयति ॥

हरीतकीश्च होमेन व्रणरोगी भवेद्विपुः ।

२. घ. वज्रीक्षीरेण समिध० । ३. प. नाडीव्रणपरो भूत्वा । ४. घ. मपर । ५. घ

पुस्तके विशेषः—

नगरे वाप श्रामे वा भर्कक्षीर चारनाल पूर्ववजुहुयात् क्रमात् ।

भगवद्वरणो भूत्वा पण्मासान् त्रियते रिपुः ॥

६. घ. फोटकग्रहा रोगेन । ७. घ. रिपुर्यो० । ८. घतः परमशः ख. घ. पुस्तके विशेष

'त्रियते नात्र सन्देहः शिवस्य वचन मया ।

क. ख. यावनालाश्रमेव १०. घ. पूर्ववत्पुत्र । ११. ख. ग. द्विप्रसद्य । घ.

०क्षत्रुमारणम् । १२. घ. ०मिधित्तं । १३. घ. सुत । १४. घ. त्रियते । १५. घ.

प्यत्रु । १६. घ. शिवाम् ।

स्कन्द' उवाच—

नमस्ते योगिससेव्य नमः^१ कारुणिकोत्तम ।
प्रयोगं चोपसहारं वद मे सर्वमङ्गल ॥२॥

ईश्वर उवाच—

प्रेताङ्गारमपी^२ कृत्वा सितवस्त्रेण^३ बुद्धिमान् ।
शल्य^४ तदन्तरे भस्म वैरिनाम^५ च सलिखेत् ॥३॥
'एकाणां' वगला देवी^६ ' वेष्टयेत् सम्यगादरात् ।
'शताक्षरी च सवेष्टय ईशानादिपु^७ ' वेष्टयेत् ॥४॥
तद्वस्त्र^८ गुलिकीकृत्य^९ वेष्टयेत् प्रेतरञ्जुना ।
भीमवारे समानीय स्थापयेद् वृक्षकोटरे ॥५॥
वृक्षमूले जपेन्मन्त्रममुत्/ध्यानपूर्वकम् ।
पुत्रदारादिसंयुक्तः पक्षाच्छत्रुम्^{१०} तो भवेत् ॥६॥
भूर्जपत्रे^{११} लिखेन्नाम^{१२} वगलाबीजमध्यमम् ।
कोटरे स्थापयेत् पुत्र विभीतकतरोस्तथा ॥७॥
जिह्वास्तम्भ भवेच्छत्रोः पक्षमात्रेण पुत्रक ।
वृहस्पतिसमो वापि वाचस्पतिसमोऽपि वा ॥८॥
तालमध्ये लिखेन्नाम वगलाबीजमध्यमम्^{१३} ।
प्राणप्रतिष्ठा कृत्वाऽप्य^{१४} निर्दहेद्^{१५} दीपवह्निना ॥९॥
जपेत्तत्र सहस्रं^{१६} क शताक्षरमनुं^{१७} तथा ।
जिह्वांस्तंभं भवेच्छीघ्रं^{१८} शेषभाषापतिः स्वयम् ॥१०॥
प्रेतभाण्डे लिखेन्नाम प्रेताङ्गारेण^{१९} साधकः ।
प्राणस्थापनक कृत्वा रवी रात्रौ सुबुद्धिमान् ॥११॥
प्रेताग्नी प्रेतकाष्ठे तु^{२०} निर्दहेत् प्रेतकानने ।
नग्नः श्मशानमध्ये तु जपेद् दक्षिणदिङ्मुखः ॥१२॥

१. प. क्रौञ्चभेदन । २. प. महा । ३. ख. ०मयो । प. मति । ४. प. प्रेत-
वस्त्रे च । ५. ख. ग. घ. घर्ष्य । ६. प. परि० । ७. प. एकाक्षरी च वगला । ८. प.
मन्त्रशताक्षरीभिश्च ईशानाये दिक्षु । ९. क. प. तद्वस्त्र । १०. प. गुटिकीकृत्य । ११.
ग. घ. भूर्जपत्रे । १२. प. रिपुनाम । १३. ख. ग. घ. ०मध्यमम् । १४. प. ० गु ।
१५. ग. निर्दहो । १६. प. शताक्षरिमनु । १७. ०च्छत्रोः । १८. प्रेतामारणे
१९. प. पु ।

सहस्र ध्यानपूर्वं तु प्रातर्यामि समासत १ ।
 एव कृत्वा तु २ सप्ताह ज्वरस्थो जायते भुवि ॥१३॥
 मासान्मृत्युवशो ३ भूत्वा विनश्यति न सद्यः ।
 श्रीसूक्तमाजनेनैव तन्मन्त्रेणाभिमन्त्रितम् ॥१४॥
 शतमष्टोत्तर चैव ४ सहस्र वा कुमारक ।
 मन्त्रितोदकपानेन पुण्य सुखमवाप्नुयात् ॥१५॥
 चिताभस्म ५ चिताङ्गार चिताभ्र ६ च कुमारक ।
 मोहिनीपत्रजद्रावैर्मह्येत् सूक्ष्मतोज्ज्वल ॥१६॥
 सम सम रिपूच्छिष्ट मह्येत् कल्पयेत् पुन ।
 'चतुरङ्गुला पुत्तली' ७ कुर्यात् सर्वाङ्गसयुताम् ॥ ७॥
 हृदि तन्नाम चालिख्य ललाटे वगला लिखेत्
 सर्वाङ्गे चाग्निबीज च लिखेद् बिन्दु च निर्दहेत् ॥१८॥
 प्रेतबह्वी प्रेतकाष्ठे प्रेतमास सुपुत्रक ८ ।
 जपेत्तन्नायुत पुत्र रिपुर्गच्छेद्यमालये ९ ॥१९॥
 स्नुह्या १० क्षीरेण सयुक्त 'मह्येत् श्वेतसपपे' ११ ।
 चतुरङ्गुलपुत्तल्या लिखेत् पूर्ववदाचरेत् ॥२०॥
 'स्थापयेच्चुह्लघघोभागे' १२ यमघटकयोगत १ ।
 तत्रोपरि दिवारात्री अग्नि सस्थाप्य बुद्धिमान् ॥२१॥ १३
 वगलाबीजमध्यस्थ साध्यनाम च सलिखेत् ।
 वेष्टयेद्द्वगलामन्त्र ईशानादिशताक्षरम् १४ ॥२२॥
 प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा तु सहारक्रमतोऽर्चयेत् ।
 शताक्षर्यर्कक्षीरैस्तु स्नुहीक्षीरेण लपयेत् ॥२३॥ १५



१ घ समापयेत् । २ घ. तु । ३ क ख ग ० बशो । ४ घ वाप । ५ घ चितिभस्म ।
 ६ घ प्रेतान्न । ७ घ चतुर पुत्तली चैव । ८ घ च पुत्रक । ९ ख. ग घ
 ० यमालयम् । १० घ स्नुही । ११ घ. श्वेतसपप मह्येत् । १२ घ ० चुत्प ० ।
 १३. ख घ पुस्तकस्थोऽयमशो विशेष —

प्रयुत च दिवारात्री एकाक्षरमनु जपेत्
 मसूरिकाज्वरा-०क्षत्रु पक्षान्मरणमाप्नुयात् ।
 प्रकपत्रे लिखेन्नम भ्रकक्षीरेण बुद्धिमान् ।

१५. घ ईशान्यादि० । १५ ख ग. घ पुस्तकेषु निम्नांशो विशेष —
 सतपेद्दीपशिखया पुत्तली ता विशेषत ।
 अष्टोत्तरशतं कृत्वा शताक्षर्यादि कल्पयेत् ॥

एव कृते सप्तरात्रं स शत्रुश्च मृतो भवेत् ।
 मसूरिकाजरासक्तः पक्षाद् गच्छेद् यमालयम् ॥२४॥
 मन्त्रयेन्निम्बपत्रेण एकमेक क्रम क्रमम् ।
 चन्द्रप्रसादमन्त्रेण शीतलाविद्यया तथा ॥२५॥^१ ॥
 सपर्णा^२ क्षालयेत् क्षीरैः सदाहः शान्तिमाप्नुयात् ।^३
 तिक्तकोशातकीजातिः^४ तापिच्छी सादर तथा ॥२६॥
 घत्तूरकं च तन्मूध्नि^५ कारवेत्या फलाकृतिम्^६ ।
 'षट्मन.शिलाबीजेश्च'^७ ति पादद्वय तथा ॥२७॥
 बदरीमूलतो गत्वा प्राणस्थापनक चरेत् ।
 मन्त्रमुच्चारयेत्पुत्र तदन्तः शत्रुमुच्चरेत् ॥२८॥^८
 श्रोत्रालोगण्डभ्रूमध्ये जिह्वानासास्यशेषी^९ ।
 'दक्षिणाभिमुखो भूत्वा'^{१०} वगलासम्पुटद्वयम्^{११} ॥२९॥
 ब्रह्मस्थाने तालुदेशे कण्ठकानकंसख्यया ।
 'दक्षिणाभिमुखो भूत्वा'^{१२} रोपयेन्नतस्तथा^{१३} ॥३०॥
 पञ्च पञ्च करे रोप्य पाश्वे कुक्षौ च पृष्ठके ।
 कण्ठकान् सप्तसख्याकान् 'मन्त्रयेत् पूर्ववत् क्रमात्'^{१४} ॥३१॥
 रोपयेत् पादयुग्मे तु प्रत्येक^{१५} द्वादशं तथा ।
 'मन्त्रपूर्वं च सरोप्य'^{१६} बदरीकण्ठकास्तथा ॥३२॥
 पुताली प्रेतवस्त्रेण बद्ध्वा प्रादेशगर्भके^{१७} ।
 श्मशानाग्नी^{१८} क्षिपेद्^{१९} रात्रौ बलि दद्याच्च कुक्कुटम्^{२०} ॥३३॥

१. अतः परमयमसोऽवलोकयते प. पुस्तके—

“एकाक्षरीविद्यया च दत्ताक्षर्या च विद्यया” ।

२. सुपणान् । ३. घ. पुस्तके निम्नांसो दृश्यते
 मन्त्रित जुहुया-मन्त्रो क्षीरे वापि तथैव च ।
 सप्ताहाच्छान्तिमाप्नोति तमः सूर्योदये तथा ॥
४. घ जाती । ५. ख. कारवेत्य० । प. कारवत्या० । ६. ख. ग. षट्पिता निरबीजेश्च ।
 घ. षट्पिता निम्बपत्रेश्च । ७. घ. पुस्तके विशेषः पाठः—
 कण्ठकान्तो (गता)पयेदकंनेत्राद्यनेषु पुत्रक ।
८. घ ०शेषी । ९. क. ग. प. पुस्तकेषु नास्ति । १०. घ. पुस्तके नास्ति । ११.
 घ. दक्षिणाभिमुखं स्थित्वा । १२. घ. ०शमनतो रवौ । १३. घ. रोपयेन्मन्त्रपूर्वकम् ।
 १४. घ. द्वादश । १५. घ. मन्त्रपूर्वान् समारोप्य । १६. घ. ०पत्तंके । १७. घ. श्मशाने ।
 १८. घ. निक्षिपेद् । १९. घ. कुक्कुटम् ।

अश्मयंद' रिपोरङ्गे नाडीगूलं भवेद् ध्रुवंम् ।
 तेनैव दुःखितः शत्रुः पक्षाद् गच्छेद् यमालयम् ॥३४॥
 वक्ष्येऽहं चोपसंहारं जीवस्थोऽपि रिपुं* (पुंर) यथा* ।
 रवो रात्रौ बलिं दत्त्वा* चानीत्वा* साधकोत्तमः ॥३५॥
 उत्पाटय कण्टकान्यादो* क्षीरेण क्षालयेत् सुत ।
 तच्छलाका* च^५ संक्षाल्य निःक्षिपेत् कूपमध्यगे ॥३६॥
 निःक्षिपेत् मन्त्रपूर्वं च एकैकं चोत्तरामुखः^६ ।
 शत्वकेनैव** मन्त्रेण मन्त्रयेत् कलशोदकम् ॥३७॥
 सहस्रवारं विधिवन्^{११} मन्त्रेण^{१२} वारिभिः क्रमात् ।
 प्रयोग^{१३} पीडितं^{१४} तेन मार्जयेच्छ्याम्भवेन^{१५} तु ॥३८॥
 स्थापयेत्^{१६} तेन मन्त्रेण मन्त्रसिद्धिस्तु पुत्रक ।
 ताम्रपात्रे नदीतोये^{१७} नदीवेगाग्रवेष्टितः^{१८} ॥३९॥
 क्षस्मिश्च मन्त्रयेत् साध्यं मन्त्रेणैव शतं तथा^{१९} ।
 त्रिकालं प्राशयेत्तोय मध्याह्ने मार्जनं तथा ॥४०॥
 त्रिदिनं चाथवा पञ्च ऋषिसंख्यादिनेषु च^{२०} ^{२१} ।
 एवं कृते पीडितस्य^{२२} 'पीडां सूर्योदये यथा'^{२३} ॥४१॥
 'सहरेच्छान्तिमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा'^{२४} ।
 न ज्ञात्वा चोपसंहार यः करोति नराधमः ॥४२॥
 स जीवन्नेव चाण्डालो मृतः श्वानो भविष्यति^{२५} ।
 प्रयोगं चोपसंहारमभ्यसेच्च कुमारक ॥४३॥
 इति षड्विंश्यागमे साहस्रायनतन्त्रे एकोनविंशः^{२६} पटलः ॥६॥

१. ख. अश्मयंद । घ. अश्मयंत । २. घ. रिपु । ३. घ. यदा । ४. घ. दया ।
 ५. ख. नीत्वा सा । घ. दानीत । ६. घ. कण्टकान् सर्वा । ७-घ. घ. तलालट तु । ४.
 घ. चोत्तर मुखम् । १०. ख. घ. शाभवेनैव । घ. शालुवेशेन । ११. विधिना । १२.
 घ. मन्त्रित । १३. ख. घ. प्रयोग । १४. घ. मुदितं । १५. घ. शालुवेन । १६.
 घ. तपयेत् । १७. घ. तोय । १८. घ. नदीवेगान्निवेशितम् । १९. घ. मन्त्रयेत् शत्व-
 मन्त्रेण शतवारं सहस्रकम् । २०. घ. वा । २१. घ. पुस्तके विशेषः पाठः—

देवता शान्तिमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा

२२. घ. तस्य पीडा । २३. घ. शान्तिमाप्नोति निश्चितम् । २४. घ. पुस्तके नास्ति ।
 २६. घ. भिजायते । २६. घ. एकोनविंशतिम् ।

॥ अथः विंशः पटलः ॥

सर्वावयवशोभाढ्या^१ समपीनपयोधराम् ।

हृदि सभावये^२ देवी वगला सर्वसिद्धिदाम् ॥१॥

स्कन्द^३ उवाच—

नमस्ते पार्वतीनाथ नमः पन्नगभूषण ।

परविद्याभेदन च वगलायाश्च मे वद ॥२॥

ईश्वर उवाच

मन्त्रोद्धार प्रवक्ष्यामि मन्त्रसभेदनाविधिम् ।

प्रयोग चोपसहार शृणु सर्वं कुमारक ॥३॥

उद्धरेत्तारमादौ तु स्तब्धमार्यां ततः परम् ।

श्रीमया शक्तिवाराह 'वाग्भवं मन्मथं तथा'^४ ॥४॥

विलिखेत्ताड्यंबीज^५ च वगलामुखी^६ समुच्चरेत् ।^७

परप्रयोगमुच्चार्यं असयुग्म 'ततः परम्'^८ ॥५॥

पूर्ववन्नवबीजं च ब्रह्मास्त्रपदमुच्चरेत् ।

रूपिणीपदमुच्चार्यं परविद्यापद^९ वदेत् ॥६॥

प्रसनीति^{१०} पदं चोक्त्वा भक्षद्वितयमुच्चरेत्^{११} ।

पूर्ववन्नवबीजं च परप्रज्ञापदं वदेत् ॥७॥

हारिणीति पदं चोक्त्वा 'प्रज्ञाख्यातियुगं वदेत्'^{१२} ।

पूर्ववन्नवबीजं च स्तम्भनास्त्रपदं वदेत् ॥८॥

रूपिणीपदमुच्चार्यं बुद्धि 'वाचायुगं वदेत्'^{१३} ।

पञ्चेन्द्रियपदं चोक्त्वा ज्ञानं भक्षद्वयं वदेत् ॥९॥

पूर्ववन्नवबीजं च वगलामुखि उच्चरेत् ।

हुं फट् स्वाहासमायुक्तं वगलामत्रमुत्तमम्^{१४} ॥१०॥

शतोत्तारं मन्त्रबीजमष्टाविंशतिरेव च ।^{१५}

ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोऽस्य गायत्री समुदाहृता ॥११॥

१. घ. ०शोभाढ्या । २. क. सभावये । ३. घ. क्रीञ्चभेदन । ४. घ. वाराहं वाग्भवं स्मर । ५. घ. विलिखे० । ६. ०मुखि । ७. घ. वोच्चरेत् । ८. घ. ततोच्चरेत् । ९. घ. ०पर । १०. घ. प्रसनीति । ११. घ. भक्षद्वय० । १२. घ. प्रज्ञां अशययुग्मकम् । १३. घ. विनाशययुग्मकम् । १४. घ. स्वाक्षिचद्रवणद्विपं मन्त्रमुत्तमम् । १५. पदद्वयमिदं नास्ति घ. पुस्तके ।

परविद्याभक्षणी च वगला देवता स्वयम् ।
 मन्त्र प्रयोग वक्ष्यामि मन्त्रस्यास्य कुमारक ॥१२॥ ।
 पाशाङ्कुशेनांतरितः शक्तिबीजेन^१ विन्यसेत् ।
 'तत्तद्वागीश्वरोबीजंस्तद्वच्छ्रीबीजतो न्यसेत्'^२ ॥१३॥
 लघुषोढा च विन्यस्य क्रमादेव कुलेश्वरी ।
 ध्यान यत्नात् प्रवक्ष्यामि कौञ्चभेदनकोविद ॥१४॥
 सर्वमन्त्रमयी देवी सर्वाकर्षणकारिणीम् ।
 सर्वविद्याभक्षणी^३ च भजेऽहं विधिपूर्वकम् ॥१५॥
 एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं लक्षमेक क्षपाशनः ।
 तपयेदासवेनेव तद्दशाक्ष कुमारक ॥१६॥
 छागमासेन जुहुयान् मध्वाज्येन^४ समन्वितम् ।
 खण्डमामलकप्रस्थमयुतं^५ च कुमारक ॥१७॥
 योगिनी वीरपूजां च ह्याचरेच्च समादरात् ।
 मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तत्र नात्र कार्या विचारणा ॥१८॥
 परप्रयोगकालेषु^६ मन्त्रमेतं^७ कुमारक ।
 'सहस्रत्रितय जप्त्वा'^८ स शत्रुरवशिष्यते ॥१९॥
 क्षत्रवश्च पुरश्चर्यां यत्र कुर्वन्ति पुत्रकं^९ ।
 तत्रायुतं जप कुर्यात् तत्र विघ्न प्रजायते ॥२०॥
 यत्र कुत्रापि रिपवस्तपः कुर्वन्ति निश्चलात् ।
 तत्रायुत जपेन्मन्त्रं प्रसते^{१०} परविद्यया^{११} ॥२१॥
 ध्युत तस्य मन्त्रन्तु^{१२} अभिमन्त्र्य^{१३} फल भवेत् ।
 द्रव्याभिमानिनो ये च ये च विद्याभिमानिनः ॥२२॥
 रूपाभिमानिनो ये च 'ये च'^{१४} यौवनमानिनः ।
 यत्र कुत्रापि तिष्ठति मन्त्रमेतं कुमारक ॥२३॥

१. च शक्तिबीजं च । २. च.

ततो नागीश्वरी तद्वच्छ्रीबीजं च ततो न्यसेत् ।

१. ०. छ. प. भक्षिणीः । ४. प. माध्वाज्येन । ५. प. ०. प्रस्थमयुत । ६. प. तु ।
 ७. प. ०. मेन । ८. प. सहस्रत्रितयान् पुत्र । ९. क. ग. निपुत्रक । १०. प. प्रसते ।
 ११. प. रिपुविद्यया । १२. च. मन्त्रस्य । १३. प. धमिनमत्प । १४. प. नास्ति ।

परविद्याभक्षणारय^१ मत्र चंवायुत जपेत् ।
 श्वेतवेशान्^२ समायाति दन्तगून्यो भवद्विपु^३ ॥२४॥
 सद्यो यौवनहीन^४ तु^५ 'तम सूर्योदय यथा'^६ ।
 रूपवान व्रणयोगी च भवत्यव न सशय ॥२५॥
 जात्याभिमानिनो ये च निन्दको भवति ध्रुवम्^७ ।
 'तपोऽभिमानिनो ये च'^८ अङ्गहीनो विजायते^९ ॥२६॥
 वंदिक च परित्यज्य विपरीतकृत^{१०} भवेत् ।
 विद्याभिमानिन सर्वेऽप्ययुत^{११} जपमाचरेत्^{१२} ॥२७॥
 भवेद्विद्याविहीनोऽपि मुष्करो^{१३} भवति ध्रुवम् ।
 देहाभिमानो पुरुषो नष्टदेहो भवेद् ध्रुवम् ॥२८॥^{१४}
 दोर्भाग्यन समायुक्त^{१५} सर्वं सम्माहन भवेत् ।
 एतन्मनस्य माहात्म्य न जानन्ति ऋषीश्वरा ॥२९॥
 'सर्वे स्व'^{१६} देहज मह्य^{१७} स्वप्रभावात्^{१८} प्रकाशिनी ।
 योगाभ्यासो^{१९} योगसिद्धो^{२०} तपस्वी सत्यवादिन ॥३०॥
 मन्त्रण^{२१} सिद्धोऽसिद्धोऽपि यत्र प्रत्यति^{२२} पुत्रक ।
 परविद्याभदन च मन्त्रोपासनतत्पर ॥३१॥
 यत्र गत्वा समासीन एतन्मन्त्रायुत जपेत् ।
 योगसिद्धो मन्त्रसिद्धस्तपस्वी क्षतजीविन'(त.)^{२३} ॥३२॥
 महाक्रान्तो^{२४} भवेत्तो च्छिन्दकोऽपि भवेद् ध्रुवम् ।
 ये ये^{२५} तन्मन्त्रराज च नित्यमष्टोत्तर जपेत् ॥३३॥
 'एतद्राज्य स मासेन'^{२६} अम्बासेवापरो^{२७} भवत् ।
 न तत्समधिको^{२८} भूयान्नव द्वयकरो भवत् ॥३४॥

१ घ ०भक्षणार्यं । २ घ श्वेतकेगा । ३ घ ०हीन । ४ घ च ।
 ५ घ भवत्यव न सशय । ६ घ पुस्तके नास्ति । ७ घ नास्ति । ८ घ पि जायते ।
 ९ घ विपरीतकृतो । १० घ सर्वेऽप्ययुताज । ११ घ जपमायुत । १२ ख
 घ सूकरो । १३ ख घ पुस्तकस्थ पाठोऽय विशेष —

द्व्याभिमानो पुरुषो नष्टद्रव्यो भवेद् ध्रुवम् ।

१४ घ समायुक्त । १५ ख सबस्व । १६ घ मोह । १७ घ स्वप्रकाशात् ।
 १८ घ योगाभ्यासे । १९ घ योगसिद्धि । २० घ यत्रेण । २१ घ तिष्ठति ।
 २२ घ योगसिद्धस्तपस्वी च मन्त्रसिद्धः समीपत् । २३ ख ग मदाक्रान्तो । घ पापा-
 क्रान्तो । २४ घ ए । २५ घ तद्राज्य च जना सर्वे । २६ घ वश्या सेवा ।
 २७ घ ०समाधिको ।

नैव निन्दाकरो भूयाद् 'पदीच्छेद्ये च (च्चेत्स्व)जीवितम्' ॥

॥ इति परविद्याग्रामे साह्यापनतन्त्रे विंशतिः^१ पटलः ॥२०॥

॥ अथैकविंशः पटलः ॥

परप्रज्ञोपसहारी^२ परगवंप्रभेदिनीम्^३ ।^४

परविद्याकर्षणं^५ च प्रयोग वद शङ्कर ॥१॥

ईश्वर उवाच—

विश्वमेतद्भ्रूक्तिमयं^६ 'सा भक्तिर्वंगलामया'^७ ।

'एतच्च भासमाना'^८ तां वगलां च कुमारक ॥२॥

वाङ्मय चैव वैचित्र्य त्रिषु लोकेषु वर्तते ।

तद्गवंहरणार्थं च विद्यामेता कुमारक ॥३॥

मनसा 'त जपन्मन्त्र'^९ मुख तस्यावलोकयेत् ।

भय च विस्मृतिभ्रान्तिस्तत्क्षणाद् भवति ध्रुवम् ॥४॥

पानपात्र वैरिजिह्वां गदा शूलेन सयुताम् ।

पीतवर्णां मदाधूर्णां चिन्तयेदानन रिपो. ॥५॥

स तु भाषापतिः साक्षाद् बृहस्पतिरिव स्वयम् ।

'स तु जात्यतरो,^{१०} भूत्वा निन्दितो भवति ध्रुवम् ॥६॥

अस्त्रशस्त्रमय मन्त्र यो जानाति कुमारक ।

तत्र गत्वा महामन्त्रं जपेद्देवीमनन्यधीः^{११} ॥७॥

त्रिसहस्रं ध्यानयुक्तं तस्य विद्या कुमारक ।

विस्मृतिश्च भवेच्छीघ्र नात्र कार्या विचारणा ॥८॥

अत्यन्तैश्वर्य्यसयुक्तो^{१२} द्विपता^{१३} वर्तते^{१४} यदि ।

तस्य गेहे^{१५} भौमवारे निशि नग्नेन बुद्धिमान् ॥९॥

१. घ. यदीच्छेज्जीवनं भूवि । २. घ परविद्याप्रयोगधाम विंशति । ३. घ. प्रज्ञासहारी । ४. घ. ०प्रभेदिनी । ५. ख. य. घ. पुस्तकेषु निम्नांशो विशेषः—

परविद्याभक्षिणी तां वगलां हृदि भावयत् ।

स्कन्द (घ. श्रोत्रचमदन) उवाच ॥

नमस्ते योगिससेव्य योदिराज नमो नमः ।

६. घ. ०कर्षणी च । ७. घ. ०व्यक्तिमय । ८. घ तच्छक्तिर्वंगलाह्वया । ९. ख. एतत्प्रभासमानां । घ. एकत्र भासमानां । १०. घ. च जपेन्मन्त्रं । ११. घ. सद्यो जायतमो । १२. घ. जपेद्भूवि० । १३. घ. ०सयुक्तं । १४. ख. द्विपितो । घ. द्विपतो । १५. य. वर्तये । १६. घ. गेहं ।

प्रदक्षिणत्रयं कृत्वा दिशि कौबेरदिङ्मुखः ।
 सहस्रं सप्तराशौ^१ च नष्टद्रव्यो भवेद् ध्रुवम् ॥१०॥
 ग्राम वा नगरं वाथ नित्यं कृत्वा प्रदक्षिणम् ।
 जपेदयुतसख्या तु^२ तद्ग्राम तु^३ कुमारक ॥११॥
 सस्यादिभिर्विनश्यन्ति द्रव्यं^४ चोरेण नश्यति ।
 पशुभिर्भ्रियते पुत्र मासाद्दोर्भाग्यमाप्नुयात् ॥१२॥
 फलित पुष्पित चैव^५ शत्रोराराममाश्रितः ।
 रवौ राशौ निशाकाले नग्नो भूत्वा सुनिश्चयः^६ ॥१३॥
 प्रदक्षिणत्रयं कृत्वाप्ययुत जपमाचरेत् ।
 वृक्षो निर्मूलमाप्नोति शिवस्य वचन यथा ॥१४॥
 एकाक्षरी च बगला साध्यास्य^७ मध्यदेशतः ।
 चिन्तयेज्जाप्यकालेपु^८ सहस्रं जपमाप्नुयात्^९ ॥१५॥
 लक्षं जप्त्वा मनोरेव मृत्तिका च कुमारक ।
 प्रवाहोपरि नि.क्षिप्य नद्या उपरि बुद्धिमान् ॥१६॥
 स्तम्भयेत् नदीवेग महदाश्चर्यकारणम् ।
 महानद्यामेवमेव कुर्यात्^{१०} गुरुलाघवान्^{११} ॥१७॥
 व्यालव्याघ्रादयश्चैव ये ये क्रूरमृगादयः ।
 त्रिसप्तमन्त्रित भस्म मूर्द्धनि क्षेपणमात्रतः ॥१८॥
 वाक्पाणिवदनाक्षणा च^{१२} तत्क्षणात् स्तम्भन भवेत् ।
 मन्त्रयेत् सस्कृत भस्म मन्त्रेणानेन पुत्रक ॥१९॥
 श्रष्टोत्तरशत सम्यक् ध्यानमात्रेण^{१३} बुद्धिमान् ।
 सर्वाङ्गोद्भूलन कुर्यात् तद्भस्मना^{१४} कुमारक ॥२०॥

वनेचरास्ताभसजन्तपशु कौबेरदिङ्मुखं कृत्वा दक्षिणदिशि^{१५} ।

प्रेताश्च^{१६} भूताश्च^{१७} पिशाचभूचरा.^{१८} सिंहाश्च सस्तभयति ध्रुव च^{१९} ॥२१॥

१. घ. सप्तराश । ग सदा राशौ । २. ख. प. क । ३. घ. च । ४. घ. धन ।
 ५. घ. ०चापि । ६ घ सु निश्चितम् । ७. ख. ससाध्वं । घ. साध्यास्य । ८ घ.
 ०काल तु । ९. ख. प ०जपमाचरेत् । १०. घ. कुर्यात् । ११. घ ०लाघवात् ।
 १२. घ. घि । १३ घ. ध्यानपूर्वम् सु । १४. ख तद्भस्मेन । १५. घ. चोरादि-
 दुष्कमकरा नराश्च । १६. घ प्रेताश्च । १७. भूतानपि । १८. भूचराश्च । १९.
 क ख ग च ध्रुवम् ।

एतन्मन्त्रवर पुत्र मनसा जपमाचरेत् ।
 वादार्यं चाथ वाणिज्य सभाया राजसन्निधौ ॥२२॥
 गत्वा तु रिपवः सर्वे जिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ।
 'शत्रुमुद्दिश्य मन्त्रं च अयुतं प्रजपेत्ततः'^१ ॥२३॥
 पक्षमात्राद् भवेच्छत्रोजिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ।
 तेनेव म्रियते शत्रुमण्डलाघने^२ मानवः ॥२४॥
 दक्षिणामूर्त्तिमन्त्रेण मन्त्रित जलमादरात् ।
 त्रिकालं चैव पीत्वा तु मण्डलाच्छान्तिमाप्नुयात् ॥२५॥
 इति षड्विंशत्यग्रे सांख्यानतन्त्रे एकविंशतिः^३ पटलः ॥२१॥

॥ अथ द्वाविंशः पटलः ॥

नमस्ते देवदेवेशीं जिह्वास्तम्भनकारिणीम् ।
 पानपात्रगदायुक्ता भजेऽहं वगलामुखीम्^४ ॥१॥

स्कन्द^५ उवाच—

त्रिपुरारे त्रिलोकज्ञस्त्रिकालात्म^६स्त्रियवक ।
 वगलास्त्र वदास्माकं 'मयि वात्सल्यगोरवात्'^७ ॥२॥

शिव^८ उवाच—

वगलास्त्रमिदं पुत्र^९ सुरासुरसुपूजितम् ।
 अगस्त्यः प्रोक्तवान् पूर्वं राम दाशरथि प्रति ॥३॥
 तेनोक्तमाञ्जनेयाय तेनोक्तं चाजुंनं प्रति ।
 तद्विद्या च प्रवक्ष्यामि वगलाहृदय^{१०} मनुम्^{११} ॥४॥
 प्रथमं वगलाबीजं वाराहं तदनन्तरम्^{१२} ।
 'मम शत्रूस्ततः शबित'^{१३} वगलाबीजमुद्धरेत् ॥५॥
 वगलामुखिपदं चोक्त्वा 'वाचं मुख'^{१४} पदं वदेत् ।
 असह्य^{१५} च उच्चार्यं खाफीयुग्म^{१६} ततः परम् ॥६॥

१. घ.—'प्राप्नुयाच्छत्रुमुद्दिश्य तन्मन्त्रं प्रजपेत्ततः' ।

२. क. मण्डलाघने । ३. घ. परविद्याकपेण नाम एकविंशतिः । ४. घ. वगला-
 म्बिकाम् । ५. घ. क्रीचभेदन । ६. घ. कालज्ञ । ७. घ. मानवात्सल्यगोरवान् ।
 ८. घ. ईश्वर । ९. घ. मन्त्रं । १०. घ. वगलास्त्रमिदं । ११. घ. मनु । १२.
 घ. च ततः परम् । १३. घ. ततश्च घनिष्ठवाराह । १४. घ. मम दात्रु । १५. घ.
 सहयुग्मं । १६. घ. साहियुग्मं ।

भक्षयुग्म ततोच्चार्य शोणित पिव-युग्मकम् ।
 वगलामुक्ति^१ उच्चार्य^२ वगलाबीजमुच्चरेत्^३ ॥७॥
 'शक्ति वाराहमुच्चार्यं वर्मोस्त्र च समुद्धरेत्'^४ ।
 'त्रिचत्वारिंशद्वर्णयुक्त'^५ वगलायाः^६ सुपावनम् ॥८॥
 दुर्वासा^७ ऋषिरेवात्र^८ छन्दोऽनुष्टुप् भवेच्च्युमम्^९ ।
 देवता वगलानाम्नी^{१०} जगद्ब्यापकरूपिणी ॥९॥
 ग्नी^{११} बीज ह्री च शक्तिश्च फट्कार कीलक तथा ।
 'मन्त्रराजेन देव्याश्च'^{१२} न्यासविद्या समाचरेत् ॥१०॥
 ध्यानभेद^{१३} प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ।
 चतुर्भुजा त्रिनयना पीनोन्नतपयोधराम् ॥११॥
 जिह्वा खड्ग पानपात्रं गदा धारयन्ती पराम्^{१४} ।
 पीताम्बरधरा देवी पीतपुष्पैरलङ्किताम् ॥१२॥
 विम्बोष्ठी चारुवदना मदाघूर्णितलोचनाम् ।
 सर्वविद्याकर्षिणी च सर्वप्रज्ञापहारिणीम् ॥१३॥
 भजऽहं चास्त्रवगला सर्वाकर्षणकर्मसु ।
 एव ध्यात्वा जपेन्मन्त्र बाणलक्ष कुमारक ॥१४॥
 तर्पयेत्तद्दशाश च जपासंमिश्रवारिणा^{१५} ।
 तद्दशाश हुनेत् पुत्र तालक चाज्यसयुतम्^{१६} ॥१५॥
 भगाकारे सुकुण्डेऽस्मिन्^{१७} मुद्रया हस्त^{१८} बुद्धिमान् ।
 वदरोफलमात्र च प्राहुतीश्च कुमारक ॥१६॥
 ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चात् सहस्र शतमेव च ।
 योगिनीं पूजयेत् पुत्र द्रव्यशुद्धिसमन्विताम् ॥१७॥
 मन्त्रसिद्धिर्भवेत् सद्यो^{१९} देवता च प्रसीदति ।
 शिवालये जपेन्मन्त्रमयुतं च सुबुद्धिमान् ॥१८॥

१. घ. वगलामुक्ती । २. घ. समुच्चार्यं । ३. घ. तद्बीजं च पुनर्वदेत् । ४. 'ततश्च शक्तिवाराहं वाराहं च समुच्चरेत्' । ५. घ. त्रयस्त्रिंशद्वर्णयुक्तं । ६. घ. वगला-
 स्त्र । ७. घ. दुर्वासी । ८. घ. ऋषेवास्त्र । ९. घ. एव च । १०. घ. चास्त्रवगला
 ११. घ. ह्रीं । १२. मन्त्रराजवदेवात्र । १३. घ. ध्यान यन्तात् । १४. घ. शिवाम् ।
 १५. घ. हेतुः समिधः । १६. घ. चाल्पसयुतम् । १७. घ. तु कुण्डेः । १८. घ. स.
 हस्तीमुद्रेण । १९. घ. सत्य ।

शत्रुक्षय भवेत् सद्यो नान्यथा शिवभाषितम् ।
 षट्सहस्रं जपेन्मन्त्रं निशाया चण्डिकालये ॥१६॥
 जिह्वास्तम्भनमाप्नोति बृहस्पतिसमोऽपि वा ।
 'जपित्वा च' सहस्रं तु भंरवस्य च सन्निधौ ॥२०॥
 बुद्धिभ्रंशो भवेत् सद्यो वाणोपतिसमोऽपि वा ।
 चीरभद्रालये पुत्र अयुत जपमाचरेत् ॥२१॥
 सिद्धिदो जायते वत्स नान्यथा शिवभाषणम् ।^१
 मातृकासन्निधौ मन्त्री जपेद् दशसहस्रकम्^२ ॥२२॥
 सद्यः स्तम्भनमाप्नोति वाल्मीकिसदृशोऽपि वा ।
 ध्यानपूर्वं^३ जपेन्मन्त्रो^४ अयुतं च कुमारक ॥२३॥
 रूपयोवनवाञ्छत्रुर्ध्माधिमान्^५ भवति ध्रुवम् ।
 त्रिसहस्रं^६ जपेन्मन्त्रं^७ त्रिसहस्रं दिने दिने ॥२४॥
 मण्डलाञ्छत्रुसम्मोहं^८ कुबेरसदृशोऽपि ज्ञ ।
 ऐश्वर्यं नाशमाप्नोति कुबेरसदृशोऽपि वा ॥२५॥
 त्रिकालमयुतं जप्त्वा ध्यानपूर्वं सुबुद्धिमान् ।
 वगलाध्यानतो मन्त्रमयुतं जपमाचरेत् ॥२६॥
 सर्वाङ्ग^९ वायुना शत्रुः शीघ्रं गच्छेद् यमालयम्^{१०} ॥
 पार्वतीसन्निधौ मन्त्री जपेदयुतमादिशन्^{११} ॥२७॥
 रात्रौ पूजासमायुक्तो नग्नो दक्षिणदिङ्मुखः ।
 घन्धो भवति तच्छत्रुरवश्यं^{१२} श्रीञ्चभेदन ॥२८॥
 विघ्नराजं समभ्यर्च्यं रवौ^{१३} तु जपमाचरेत् ।
 त्रिसहस्रं जपेन्मन्त्रं कुक्षिरोगी भवेद्रिपु ॥२९॥
 मण्डलाप्लाशमायाति नात्र कार्या विचारणा ।
 प्रयोगान्ते च सस्कार पूजाकाले समाचरेत् ॥३०॥
 इति श्लोषद्विध्यापने सांस्थाप्यनतत्रे द्वाविंशतिः पटलः ॥

१. ख. जपित्वाष्ट । घ. जपेत्सप्त । २. घ. निर्वीर्यो जायते शत्रुर्ना-न्यथा शिव-
 भाषितम् । ३. घ. षट्सहस्रकम् । ४. घ. ध्यानात् पूर्वं । ५. घ. जपेन्मन्त्र । ६.
 घ. अर्धावितो । ७. ख. त्रिसहस्र । घ. त्रिसहस्रं च । ८. ख. जपते मर्त्यं । ९. क. ग.
 शत्रुसमूह । १०. ख. घ. सर्वाङ्ग । ११. घ. यमालये । १२. घ. अदयुतसंख्या । १३.
 घ. तच्छत्रोरमण्डला [व] । १४. घ. रात्रौ ।

॥ अथ त्रयोविंशः पटलः ॥

स्वर्णसिंहासनासीना सुन्दराङ्गी शुचिस्मिताम् ।
विम्बोष्ठी चारुनयना ध्यायेत् पीनपयोधराम् ॥१॥

स्कन्व^१ उवाच—

नमस्ताण्डवरुद्राय तापत्रयहराय च ।
वगलास्त्रमहामन्त्रैः प्रयोगान् वद शङ्कर ॥२॥

शिव^२ उवाच—

त्रिकाल तु समासीनो ध्यानपूर्वं^३ तु^४ साधकः ।
त्रिसप्त मन्त्रयित्वा तु जप पश्चात् समाचरेत् ॥३॥
नित्यं च त्रिसहस्रं तु यन्मासं विजितेन्द्रियः ।
वाचासिद्धिर्भवेत्तस्य शापानुग्रहकारका^५ ॥४॥
अश्वत्थमूले प्रजपेदयुतं ध्यानपूर्वकम् ।
भक्षणाद् व्याधिनाशं च भवेदेव न संशयः ॥५॥
विभीतकतरोर्मूले श्रयुतं जपमाचरेत् ।
जिह्वास्तम्भनमाप्नोति साक्षाद्वागीश्वरोऽपि वा ॥६॥
कपित्थवृक्षमूले^६ तु प्रजपेदयुतं तथा ।
श्रोत्रस्तम्भनमाप्नोति सद्यो बधिरता व्रजेत् ॥७॥
पिचुमदतरोर्मूलेऽप्ययुतं जपमाचरेत् ।
प्राणस्तम्भनमाप्नोति^७ रोगी पीनसवान् भवेत् ॥८॥
कदलीमूलमाश्रित्य श्रयुतं जपमाचरेत् ।
पादस्तम्भो भवेत् सद्यो वातरोगी भवेद् रिपुः^८ ॥९॥
करञ्जमूलमाश्रित्याप्ययुतं जपमाचरेत् ।
स्तम्भयेज्जठराग्निस्तु अन्नद्वेषो भवेद् ध्रुवम् ॥१०॥
विषतिन्दुकमूलं च समाश्रित्य मनुं जपेत् ।
श्रयुताञ्च^९ भवेत् पुत्रं गात्रस्तम्भनमाप्नुयात् ॥११॥
नद्या समुद्रगामिन्या नाभिदघ्नजले^{१०} स्थितः^{११} ।
तर्पयेद् वगलास्त्रेण प्रस्तं कृत्वारिनाम^{१२} च ॥१२॥

१. घ. क्रीञ्चभेदन । २. घ. ईश्वर । ३. घ. तु । ४. घ. त्रिसहस्रे । ५. क. ख. ग. ०कारकम् । ६. घ. कपित्थतण्डु । ७. घ. प्राणस्तम्भ । ८. घ. नरः । ९. घ. नाभिमात्रे जले । १०. घ. नरः । ११. घ. तद्वारिनाम ।

दिने दिने सहस्रं कं वगलाध्यानपूर्वकम् ।
 गर्भेस्त्रावं भवेत्तस्य भार्यायाः^१ शिवभाषितम् ॥१३॥^२
 वल्लीपलाशमूले तु जपेदयुतसंख्यया ।
 मन्त्रमध्ये रिपोर्भाषी प्रस्तं कृत्वा कुमारक ॥१४॥
 तपणं च दिवा कृत्वा रात्रौ रात्रौ^३ जपेन्मनुम् ३
 सापि वग्ध्या भवेत् सत्यं नात्र कार्या विचारणा ॥१५॥
 श्मशाने प्रजपेन्मन्त्रं प्रस्तं कृत्वा तु पूर्ववत् ।
 सद्यस्तद्भार्यानाशं च भवेदेवं न संशयः ॥१६॥
 शून्यागारे जपेदेवमयुतं^४ ध्यानपूर्वकम् ।
 लक्ष्मीर्नाशयते नूनं^५ स शत्रुरवशिष्यते ॥१७॥
 जंबीरतश्मूले तु अयुतं जपमाचरेत् ।
 'ध्रमाकुलकुलं सर्वं मण्डलाघ्राशमाप्नुयात् ॥१८॥
 शतवार मन्त्रितं च शर्करोदकमेव च^६ ।
 रिपूणां चैव दातव्यं जिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ॥१९॥
 ।। तं मन्त्रितं चैव नारिकेलफलोदकैः ।
 पाययेद्वात्रि^७ रिपुभिर्जिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ॥२०॥
 नागवल्लीदल चैव क्रमुकं चूर्णमेव च ।
 सहस्रं मन्त्रितं पुत्र दातव्यं शत्रु(शू)णां निशि ॥२१॥
 ताम्बूलचर्वणाच्छत्रुजिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ।
 चन्दन चैव कस्तूरीघणित मन्त्रयेत् सुत ॥२२॥
 पुनश्च मन्त्रयेत्ताम्रपात्रे गुणसहस्रकम् ।
 तच्चन्दनलेपनेन^८ रिपुभ्रान्तो^९ भविष्यति ॥२३॥
 दन्तघावनकाष्ठं च मन्त्रयेत् त्रिसहस्रकम् ।
 तत्काष्ठेन रिपोः^{१०} पुत्र दन्तघावनमात्रतः ॥२४॥

१. क. य. व. नार्यायाः । २. घ पुस्तकेऽय पाठो विशेषः—

ततो(तः) पलाशमूल तु प्रजपेच्च परे द्वयम् ।

३. घ. रात्रौ तु प्र । ४. घ. जपेन्मन्त्र० । ५. घ. शीघ्रं । ६. ७. घ. पुस्तके नास्ति ।
 ८. घ. प्राणयेद्वात्रि । ९. घ. विलेपेन । १०. घ. परिभ्रान्तो । ११. घ. रिपुः ।

जिह्वां वाणीं च बुद्धिं च 'मनः पादादिक'¹ तथा ।
स्तम्भनं च भवेच्छीघ्रं शिवस्य वचनं यथा ॥२५॥

प्रेतवस्त्रं रवीं ग्राह्यं चित्तिकाष्ठं च वेष्टयेत् ।²
इमशाने निखनेद् रात्रौ त्रिसहस्रं जपेत्तदा³ ॥२६॥

शेषभाषापतिः साक्षाद् बृहस्पतिरपि स्वयम् ।
जिह्वास्तम्भनमाप्नोति सद्यो मूकत्वमाप्नुयात् ॥२७॥

इति षड्विधायामे सांख्यायनतन्त्रे त्रयोविंशतिः* पटलः ॥२३॥

॥ अथ चतुर्विंशः पटलः ॥

अम्बा पीताम्बराढघामरुणकुसुमगन्धानुलेपा त्रिनेत्रा,
गम्भीरा कम्बुकण्ठी कठिनकुचयुगा चारुबिम्बाधरोष्ठीम् ।
शत्रोज्जिह्वासिपत्र⁴ शरधनुसहिता व्यक्तगर्वाधिरूढा⁵,
देवी सस्तम्भरूपा सुविरलरसनामम्बिका⁶ तां भजामि⁷ ॥१॥
स्कन्ध⁸ उवाच—

नमस्ते वृषभारूढ नमः पन्नगकङ्कणः⁹ ।
लक्षणं वद मे देव वगलामन्त्रमालिका¹⁰ ॥२॥

ईश्वर उवाच

भृगुवारे च सगृह्य¹¹ 'आरामस्यनिशां तथा'¹² ।
'ता शुष्का'¹³ सप्तरात्र तु 'कृत्वा मेतामनन्तरम्'¹⁴ ॥३॥
भूताविपरित¹⁵ चैव कपिलागोमय तथा ।
पुनरेकांतराद्ग्राह्य¹⁶ भाण्डमध्ये तु निःक्षिपेत् ॥४॥
सविद्यं जलसंयुक्तं कुर्यान्मेलनमेव च ।
हरिद्रा तत्र निःक्षिप्य पूजयेदाशु तत्त्रमात् ॥५॥
बुल्लघोपरि च तद्भाण्डं रवीं रात्रौ च निःक्षिपेत् ।
द्विगुणं जलसंयुक्तं¹⁷ कुर्यान्मेलनमेव च ॥६॥

१. घ. धुत्पिपासामल । २. घ. पुस्तकस्वोऽयं पाठो विरोधो हृदयते—

प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा तु पूजा चैव तु कारयेत् ।

३. घ. जपेन्मनुम् । ४. घ. बगलास्त्रविवरणं नाम त्रयोविंशतिः । ५. घ. ०सिपत्रां ।
६. घ. शुक्लगरवादिरूढां । ७. घ. सुविरलवसना० । ८. घ. नमामि । ९. घ.
क्रोञ्चभेदन । १०. ०भूषण । ११. ०जपमालिकाम् । १२. घ. सग्राह्य । १३. घ.
आरामस्वासिनां निधि । १४. ख. छायाशुष्कां । घ. छायाशुष्क । १५. घ. कृत्वा तु
तदनन्तरम् । १६. ख. भूमावपतितं । घ. भूमा(यो) तु पतित । १७. ख. पुनरेकां कराद्
ग्राह्यं । घ. पुनरेकांतशाद्ग्राह्यं । १८. घ. जपसंयुक्तं ।

अश्वत्थैरिन्धनैरेव ज्वाला 'कृत्वा सुबुद्धिमान्'^१ ।
 तस्या^२ मृदु भवेत्तावत्पचन सम्यगाचरेत् ॥७॥
 गोमयस्था^३ हरिद्रा च क्षालयेद्वारिणा^४ ततः ।
 छायाशुष्क च कर्त्तव्यं हरिद्रामणिमादरात् ॥८॥
 तेन कुर्यान्मालिका च अष्टोत्तरशत तथा ।
 पुण्यस्त्रीनिमित्त^५ सूत्र^६ 'मन्त्रैः सच्छेदयेत्'^७ पुनः ॥९॥
 तन्मालिकां रवौ 'वारेऽप्यमृतेनैव'^८ मार्जयेत् ।
 अर्चयेन्मूलमन्त्रेण षोडशैरुपचारकैः ॥१०॥
 निवेदयेत् पायस च शर्कराज्यसमन्वितम् ।
 सहस्रं प्रजपेदादौ^९ पञ्चाशद्वर्णमादरात् ॥११॥
 'एकाक्षरीमहामन्त्रैर्वंगलानाम्नि'^{१०} पावनैः ।
 अयुतं प्रजपेत् पुन मालिकासिद्धिमाप्नुयात् ॥१२॥
 एव च मालिका कुर्यान् मन्त्रसिद्धिमपेक्षता^{११} ।
 हरिद्रावस्त्रमाच्छ्राद्य सिद्धघर्षं जपमाचरेत् ॥१३॥
 हरिद्रामयपुष्प^{१२} च हरिद्रामयचन्दनम्^{१३} ।
 समर्पयेदलङ्कृत्य^{१४} जप रात्रौ समाचरेत् ॥१४॥
 देवी भूत्वा जपेद्देवीमर्चयेद्विधिवद्यथा^{१५} ।
 प्रमादान् मालिका भूमौ पतिता चेत् कुमारक ॥१५॥
 पुनः पूजा प्रकर्त्तव्या पूर्ववज्जपमाचरेत् ।
 अथ वक्ष्ये प्रयोगाश्च मालिकालक्षण तथा ॥१६॥
 पञ्चविंशतिभिर्मोक्ष.^{१६} 'सर्गं त्रिशतिरेव च'^{१७} ।
 वशीकरणसमोहे^{१८} कलासख्या सुमालिका^{१९} ॥१७॥^{२०}

१. घ. कृपात् प्रयत्नत. २. घ. यावन् । ३. घ. गोमय । ४. घ. लक्षोयेद्वा० ।
 ५. घ. पुनः । ६. ख. पुण्यस्त्री० । घ. स्त्रीनिमित्ते । ७ घ. सूत्रे । ८. घ.
 एकैकं ध्रुवयेत् । ९. घ. रात्रौ मूलेनैव तु । १०. घ. च जपेच्चादौ । ११. घ. एकाक्षर-
 मंहामन्त्रैर्वंगलायाश्च । १२. घ. ०मपेक्षिता । १३. घ. हरिद्रावर्णपुष्प । १४. घ
 हरिद्रावर्णचन्दनम् । १५. घ. समर्प्यं पूजनं कृत्वा । १६. घ. ०राया । १७. घ.
 मोक्षार्थी । १८. घ. धनार्थी त्रिशदेव च । १९. घ. समोह । २० क. पुस्तके
 ऽममसौ नास्ति । २१. अतः पर निम्नांशो विशेषः घ. घ. पुस्तकद्वये—

द्विपञ्चसप्तविंशद्भिः^१ रुच्चाटे चार्कसख्यया ।
 ज्वरे^२ रोगादिपीडाद्यं पच चं चतुर्दश ॥१८॥
 पञ्चाशच्छान्तिकर्मख्ये^३ बुद्धि च चतुरत्तरे ।
 पञ्चदशाभिचारे^४ च मालिकाक्रममी(ई)दृशः^५ ॥१९॥
 भृगुवारे च सगृह्य^६ द्रव्याण्येतानि पुत्रक ।
 'हरिद्रापङ्कज वस्तु कपूर मृगनाभि च'^७ ॥२०॥
 श्रीखण्डरोचनागरु-केसर^८ च समं समम् ।
 मर्दयेन्मु(दु)पसि प्रज्ञ^९ खल्वेनैव कुमारक ॥२१॥
 तेन कुर्यात् पुत्तली च चतुरङ्गुलमानतः ।
 सर्वाङ्गसुन्दरी^{१०} देवी द्विभुजा वगलामुखीम् ॥२२॥
 चित्रपीताम्बरधरा^{११} पीनोन्नतपयोधराम् ।
 पीतवर्णा मदाघूर्णामर्द्धचन्द्रा च पुत्तलीम् ॥२३॥
 प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा तु सस्नाप्य^{१२} विधिनाऽर्भकम् ।
 अखण्डतण्डुलेनैव हरिद्राक्षतमेव च ॥२४॥
 कृत्वा एकाक्षरोमन्त्रैरक्षतान्^{१३} मूर्द्धनि नि.क्षिपेत् ।
 नित्यं चायुतपूजा च कुर्याच्चैव च पुत्रक ॥२५॥
 देवी सम्पूजयेत्सम्यक् जपं कुर्यात् सुबुद्धिमान् ।^{१४}
 एव कृत्वा तत्त्वलक्ष देवी प्रत्यक्षतामियात्^{१५} ॥२६॥
 यत् परस्मै^{१६} न वक्तव्यं न वक्तव्यं कदाचन ।
 एव पूजाविधिं कृत्वा पुरा 'दुर्वाससेन च'^{१७} ॥२७॥
 तत्त्वलक्षप्रमाणेन प्राप्तं 'ग्रन्थोदित फलम्'^{१८} ।

इति पञ्चविद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे चतुर्विंशतिः^{१९} पदतः ॥२४॥

१. क. पुस्तके 'द्विपञ्च' हीनः 'सप्तविंशद्भिः' चण्ड एव दृश्यते । प. विद्वेषे सप्त-
 विंशद्भिः । २. प. ज्वर । ३. प. 'कर्मणु' । ४. प. पञ्चदशानि० । ५. प.
 'मीदृशम्' । ६. प. सगृह्य । ७. ख. प. पुस्तके निम्नोऽत्र पाठो विशेष—

हरिद्रापङ्कज वस्तु कपूरं मृगनाभि च ।

कस्तूरी चं च कपूरं 'कपूरः' मृगनाभि च^{१७} ॥

८. घ. गीरोचनमुषीर च केसर । ९. ख. 'नुपसि प्रज्ञ' । प. मर्दयेन्मदिरामुषुत । १०. घ.
 सुधा च सुन्दरी । ११. प. वगला वज्रधरा चं च । १२. प. सस्नाप्य । १३. प. एकाक्षरैर्मन्त्रैः ।
 १४. प. पादद्वयं नास्ति । १५. प. प्रत्यक्षमाप्नुयात् । १६. प. यस्मै कस्मै । १७. घ.
 दुर्वासमीनिराट् । १८. प. प्रयोक्तुं फलमाप्नुयात् । १९. प. माताप्रकरणं नाम चतुर्विंशति ।

१. प. रक्तं । २. घ. श्रीखण्ड चागरु तथा ।

॥ अथ पञ्चविंशः पटलः ॥

नमामि वगला देवी शत्रुवाक्स्तम्भरूपिणीम् ।
भजेऽहं विधिपूर्वं च जय देहि रिपून् दह ॥१॥

स्कन्व^१ उवाच—

नमः कलाशनाथाय^२ नमस्ते मुनिसेवित^३ ।
चतुरक्षरीमहामन्त्र वगलायाश्च मे वद ॥२॥

ईश्वर उवाच—

सप्तकोटिमहामन्त्रै^४ मन्त्रराजमिम^५ शृणु ।
पट्प्रयोगः स्तभन च सर्वकर्मोत्तमोत्तमम् ॥३॥

यदा शत्रुभयोत्पन्न^६ तदानीमेव पुत्रक ।
अयुत च जपेन्मन्त्र वगलाचतुरक्षरम्^७ ॥४॥

मन्त्रोद्धार प्रवक्ष्यामि न्यासध्यानादिक तथा ।
प्रयोग चोपसहार वक्ष्येऽह तव पुत्रक ॥५॥

वेदादि विलिखेत् पूर्वं पाशबीज^८ ततः परम् ।
स्तब्धमाया ततोच्चार्यं शकुश बीजमेव च ॥६॥

चतुरक्षरी च वगलां सर्वमन्त्रोत्तमोत्तमाम् ।
न्यासविद्या प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ॥७॥

पाशाङ्कुशान्तरितशक्तिरमा च तद्व-

तद्वन्यसेन्मदनबीजमथो वराहम् ।

वागोश्वरीं च वगलाह्यसुबीजराज,

वन्यस्यता करयुगे हृदयादिकेषु ॥८॥

चतुर्व्वर्णात्मिके^९ मन्त्रे^९ मातृकाबीजपूर्वकम् ।

प्रत्येकं च न्यसेत् पुत्र मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात् ॥९॥

अथवा वगलामन्त्र सर्वैरङ्गुलिभिर्न्यसेत्^{१०} ।

ततो जपेन्मन्त्रराज वगलाचतुरक्षरम्^{११} ॥१०॥

ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दो न गायत्री समुदाहृतम् ।

देवता वगलानाम्नी ध्यान वक्ष्ये कुमारक ॥११॥

१. घ. क्रीञ्चभेदन । २. घ. कलाशनाथाय । ३. घ. मुनिसेवित । ४. घ. चतुरक्षरीमहामन्त्र । ५. घ. ०मिद । ६. घ. ०भय प्राप्त । ७. घ. वगला चतुरक्षरी । ८. घ. घ. चतुर्व्वर्णात्मिक । ९. ख. घ. मन्त्र । १०. घ. षडङ्गुलीषु न्यसेत्तया । ११. घ. ०चतुरक्षरीम् ।

कुटिलालकसंयुक्ता^१ मदाघूणितलोचनाम् ।
मदिरामोदवदना प्रवालसदृशाघराम्^२ ॥१२॥

सुवर्णशैलसुप्रख्यकठिनस्तनमण्डलाम्^३ ।
दक्षिणावर्त्तसन्नाभिसूक्ष्ममध्यमसयुताम् ॥१३॥

रम्भोरुपादपद्मा तर्हि पीतवस्त्रसमावृताम् ।
एव ध्यात्वा महादेवी कुर्याज्जपमतन्द्रितः ॥१४॥

वेदलक्ष जपं कुर्यात् पर्वताग्रे कुमारक ।
'भिक्षाशिनः फलाशीनो'^४ मौनी भूत्वा समाहितः ॥१५॥

तर्पणं च दिवा कुर्याद् रात्रौ वा प्रजपेन्मनुम् ।
एव कुर्यात् पुरश्चर्यां देवी प्रत्यक्षमाप्नुयात् ॥१६॥

रात्रौ होमं च कर्त्तव्यं दिवा ब्राह्मणभोजनम् ।
हरिद्रावस्त्रसयुक्तं हरिद्रावर्णचन्दनम् ॥१७॥

'हरिद्रा चाक्षमाला च'^५ द्वावर्णदेवताम् ।
स्मरेच्च जपकाले तु सर्वसिद्धिकर नृणाम् ॥१८॥

मधूकपुष्पसमिश्रमचितेन जलेन वा ।
तर्पणं तद्दशांशं च देवतामूर्द्धनि निक्षिपेत् ॥१९॥

भ्राज्येन मिश्रितं चैव शर्करापायसं हुनेत् ।
पूर्णाहुत्यन्तमनघ^६ ब्राह्मणान् भोजयेत् ततः ॥ २०॥

योगिनी पूजयेत् पश्चाद् द्रव्यशुद्धिसमन्वितः ।
मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तस्य नात्र कार्या विचारणा ॥२१॥

म्रादो भास्वररूपिणी^७ कुरु तदा सद्दशजा^८ योगिनी,
नानालक्षणसमुता कुचभरा प्रौढा नवोढा तया ।
स्ता(स्ता)ताभ्यजनभूषणंश्च सहिता सच्चन्दनै^९ लेपिता,
पूजागारमुपानयेद्ब्रह्मि सा^{१०} द्रव्यैश्च शुद्ध्या रह^{११} ॥२॥

१. घ. कठिलालकसंयुक्ता । २. घ. ०पराम् । ३. घ. सुवर्णकुलसः । ४. घ. भिक्षाशी च फलाशी च । ५. घ. हरिद्राया क्षमा माला । ६. ख. मनप । घ. मनना । ७. ख. भास्करः । घ. भापरः । ८. घ. सञ्जातिवा । ९. ख. चन्दनै । १०. ख. ता । घ. सद् । ११. ख. प. सह ।

लौकिके^१ चैव गुप्ताय सीमाग्यार्चा कुमारक १^१
 'मन्त्रसिद्धिकरं वक्ष्ये गोपनं कुरु सर्वदा'^२ ॥२३॥
 अङ्गत्रयेण संयुक्तं लौकिकार्चनमेव च ।
 चतुरंगुलसंयुक्ता^३ गुप्तपूजा कुमारक ॥२४॥^४
 सीमाग्यार्चाविधिश्चैव^५ पञ्चाङ्गोपासनं भुवि ।
 योपिद्भुक्तिद्रव्ययुक्तं^६ लौकिकार्चनमेव च ॥२५॥^७
 योपिच्छुद्धिद्रव्यपूजा पञ्चमोयुतमादरात् ।
 एतत्सीमाग्यपूजा च मुनिगुह्यमुपासनम्^८ ॥२६॥
 विन्दुपात्रयुता पूजा निगुणा योगिनां मतम्^९ ।
 एतच्चतुर्विधा चर्चा^{१०} देशनामार्चनाविधिः^{११} ॥२७॥
 वक्ष्येऽहं^{१२} विधिवत्पुत्र न देयं यस्य कस्यचित् ।
 सृष्टिः स्थितिश्च संहारं जीवन्मुक्तिपदं^{१३} तथा ॥२८॥
 एतदर्चाविधिर्नामसकेत मुनिभिः^{१४} सह ।
 सृष्टिश्च गौडदेशेपु^{१५} स्थितिः केरलदेशके ॥२९॥
 संहारार्चा कामरूपे 'कुरुपाञ्चालयोः परम्'^{१६} ।
 पीठोपरि समावेश्य गर्भकौलागमक्रमात्^{१७} ॥३०॥
 अर्चनं^{१८} गौडदेशीयं^{१९} सृष्टिपूजाक्रमस्त्वयम् ।
 पूर्वोक्तलक्षणोपेतां मृदुपर्यङ्कके^{२०} तथा ॥३१॥
 शयनीकृत्य कन्या^{२१} च स्थित्यर्चाक्रममादरात्^{२२} ।
 केरले तु स्थितिश्चैव सिद्धयसिद्धिकरो^{२३} तथा ॥३२॥
 कौलसारं च तन्नाम सर्वमन्त्रोत्तमोत्तमम् ।
 पूर्वोक्तलक्षणोपेतास्तिष्ठन्ति कन्यका भुवि ॥३३॥

१. लौकिकी । २. अतः परं निम्नाशोऽयं घ. पुस्तक एव दृश्यते—

एव त्रिविधपूजां च मुनिगुह्यं सुपावनं ।
 एकैकस्य च पूजाया लक्षणा कथ्यते सुत ॥

३. पादयुग घ. पुस्तके नास्ति । ४. घ. चतुरङ्गसमायुक्ता । ५. एतौकोऽयं ग. पुस्तके
 नास्ति । ६. छ. घ. विधिश्चैव । ७. घ. योपित्गुद्धि । ८. अतः परं निम्नाशो घ.
 पुस्तक एवाऽवसोऽव्यते—

योपिच्छुद्धिद्रव्यपूजा सुगुप्तार्चनमादरात् ।

९. घ. मुनिगुप्त सुपावनम् । १०. घ. मता । ११. घ. चार्चनी । १२. घ. ०नामार्चनं ।
 १३. घ. हे । १४. घ. ०मुवर्तं पद । १५. घ. योगिभिः । १६. घ. देशे तु । १७. घ.
 कौलिकारवो (र्चा, चार) तत्पराम् । १८. घ. गर्भकौलागम० । १९. क. भोर्चनं । घ.
 अर्चना । २०. घ. गौडदेशीय । २१. क. मृत्यु० । २२. ग. घ. शयनीकृतकन्या ।
 २३. घ. स्थित्यर्चामर्च्य० २४. छ. घ. सद्यः सिद्धिकरी ।

कामरूपाख्यदेशे तु संहाराह्वयपूजनम् ।
 पूर्वोक्तलक्षणोपेता कृत्वाभ्यञ्जनमादरात् ॥३४॥
 बिन्दुपात्रं^१ गृहीत्वा तु कृत्वा मुक्त्यर्चनं^२ भुवि ।
 कुरुपाञ्चालदेशीयमनिशं^३ पूजनं तथा ॥३५॥
 कौलसारपरं^४ नाम चागमं भुवि^५ दुर्लभम् ।
 सम्यक् पूजाविधिश्चैव उपसंहृतमानसः^६ ॥३६॥
 पञ्चमी चैव कर्त्तव्या सीख्याथं तस्य पुत्रक ।
 'पात्रं चैव समासेन'^७ जपध्यानसमन्वितः ॥३७॥
 देवो भूत्वा स्वयं पुत्र पञ्चमी च समाचरेत् ।
 संहाराचनयोरेवमुपसंहृत्य^८ पूजनम् ॥३८॥
 सम्पूजयेत्^९ पञ्चमी चैव सौरयार्थं तस्य साधकः ।
 आदौ मध्ये तथा चागते बिन्दुपात्रार्थमेव^{१०} च ॥३९॥
 अर्चयेत् पञ्चमी कुर्याद् ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ।
 कुरुपाञ्चालदेशेऽथ^{११} निर्गुणाच्चाविधिस्तथा ॥४०॥
 एतदर्चाविधिश्चैव दुर्लभो^{१२} विधिशङ्करः^{१३} ।
 गौडदेशार्चनं पुंसां शान्तिपुष्टिकरं^{१४} सदा ॥४१॥
 एवमेव विधिः पुत्र सर्वेश्वर्यप्रदायकः ।
 कामरूपाचनं पुंसां मारणाविप्रयोगदा^{१५} ॥४२॥
 कुरुपाञ्चालदेशाच्चा सर्वसिद्धिप्रदा सदा ।^{१६}
 एतदर्चाविधि चैव यः कराति सुबुद्धिमान् ॥४३॥
 जीवन्मुक्तः स एवात्र स सिद्धो नान संशयः ।
 नारीनिन्दा न कर्त्तव्या स्वपादस्तां न^{१७} सस्पृशेत्^{१८} ॥४४॥
 नारी दृष्ट्वा मानसेन वन्दनं च समाचरेत् ।
 स्वप्रियामर्चयेत् पुनः प्रिया पञ्चमिका चरेत् ॥४५॥^{१९}

१. प. बिन्दुपात्र । २. गुप्ताचन । ३. प. ०देशे तु अनिश । ४. प. ०सारतर ।
 ५. प. भुवि । ६. ख. जपसंहृत० । प. उपसपेद्रस्यसाधकः । ७. प. न्यासं न्यस्त्वोभयोर्देशे ।
 ८. प. संहाराचनयोग च उप० । ९. पूजयत् । १०. प. बिन्दुपात्रार्थं० । ११. प.
 तु । १२. प. दुर्लभम् । १३. प. भुवि पन्मुत् । १४. प. पुष्टिकरि तथा । १५.
 ख. मारणादिप्रयोगदम् । प. मारणादिप्रयोगदम् । १६. पदग्रन्थ प. पुस्तके नास्ति ।
 १७. प. स्वपादो तां च । १८. प. स्पृशेत् । १९. इत्युक्तोय नास्ति प. पुस्तके ।

स्वप्रियाविन्दुपात्र^१ च गृहीत्वा साधकोत्तम^२ ।

असह्यनाचनं कृत्वा विन्दुपात्रं तथैव च ॥४६॥

उन्मादी च भवेत् पुत्रं मृतं श्वानो भविष्यति ।

॥ इति षड्विंशोऽध्यायः साहस्रपाद्यतन्त्रं षड्विंशति^३ पटल ॥ २५॥

॥ अथ षड्विंश पटलः ॥

जातवेदमये^४ देवि^५ जगज्जननकारिणि^६ ।

जय पीताम्बरधरे^७ बगलार्थं नमो नमः^८ ॥१॥

स्कन्ध^९ उवाच—

नमस्ते सिद्धससेव्यं सिद्धविद्याधराचित ।

वगलाचतुरक्षर्या प्रयोगं वद शङ्कर ॥२॥

शिव^{१०} उवाच—

‘प्रयोगं तर्पणं चैव’^{११} वक्ष्येऽहं तव पुत्रक ।

तर्पणं देवतावासं तर्पणं यत्रसिद्धिदम्^{१२} ॥३॥

तर्पणं मन्त्रसंस्कारं सर्वं तत्तपणात् भवेत्

तपणं द्रव्ययोगं च तत्^{१३} सिद्धिर्न संशयः ॥४॥

वृषुं कलशे चैव काशमण्डलवर्जितम्^{१४} ।

गृहीत्वा क्षालयेत् सम्यक् पूजयन्मूलमन्त्रत^{१५} ॥५॥

तज्जलं च समानीय पूजयेत् सुसमाहित ।

ध्यायो वा इति मन्त्रेण मन्त्रयेत्तज्जलं पुनः ॥६॥

उपचारं षोडशभिः पूजयेत् कुम्भमादरात् ।

तत्पवित्रणं समुक्तं तर्पणस्यायुतेन च ॥७॥

तेनोक्तविधिना सम्यक् पूजनं तदुदाहृतम् ।

काकोलूकच्छदेनैव^{१६} पवित्रं ग्रन्थिमादरात् ॥८॥

तत्पवित्रणं समुक्तं तपणस्यायुतेन^{१७} च ।

नेत्ररोगो भवेच्छत्रुर्दिवांधो जायते ध्रुवम् ॥९॥

१. घ स्वस्त्रिया० । २. ख साधकोत्तमं । ३. घ. पूजाप्रकरणं नाम० । ४. १. ५. ६. ७. घ पुस्तके द्वितीया त पाठ । ८. घ. बगलाम्बो नमाम्यहम् । ९. श्रीचन्द्रन १०. घ ईश्वर । ११. घ तपणाख्य प्रयोग च । १२. घ. मत्रसिद्धिद । १३. घ तत्त्व । १४. घ काशमण्डल० । १५. घ मूलविद्यया । १६. घ. काकोलूकच्छदाम्बो च । १७. घ तपणनायुतेन च ।

काकपत्रेण सयुक्तं^१ पवित्रग्रन्थिमादरात् ।
 तेनैव सह सन्तप्यं ग्रथ्युत साधकोत्तमः ॥१०॥
 काकवद् भ्रमते शत्रुमंहीमामरणान्तिकम्^२ ।
 काकोलूकस्य पक्षाभ्यामेकीकृत्वा^३ सूबुद्धिमान् ॥११॥
 कृत्वा पवित्रग्रन्थि च तेन सन्तप्यं चादरात्^४ ।
 ग्रथुत वगलामन्त्रैः शत्रुविद्वेषणं भवेत् ॥१२॥
 विड्वराहमजारोमैः^५ पवित्रग्रन्थिमादरात् ।
 तर्पयेद्युत तेन^६ वगलाघतुरक्षरैः ॥१३॥
 ग्रन्थद्वेषो^७ जायते च स शत्रुरवशिष्यते ।
 केश च कलशस्थ च पवित्रग्रन्थिमादरात्^८ ॥१४॥
 ग्रथुत तर्पणेनैव 'स शत्रोर्नाशन'^९ भवेत् ।
 उष्ट्ररोमेण कृत्वा तु पवित्रग्रन्थिरेव च ॥१५॥
 तेनायुत तर्पणेन मूको भवति पण्डितः ।
 पूर्ववद्वाजिरोमेण तर्पणं च कुमारक ॥१६॥
 हिववारोगो भवेत्तस्य^{१०} शीघ्र^{११} भ्रान्तो भविष्यति ।
 खररक्तेन समिश्रमर्चित जलतर्पणात्^{१२} ॥१७॥
 जिह्वास्तभो भवत्येव वाणीपतिसमोऽपि वा ।
 श्वानरक्तेन समिश्रमर्चित शुभवारिणा ॥१८॥^{१३}
 ग्रथुत^{१४} तर्पणात्पुत्र^{१५} उन्मादी जायते रिपुः ।
 काकरक्तेन सम्मिश्रमर्चित शुद्धवारिणा ॥१९॥
 ग्रथुत तर्पणात्पुत्र काकवद् भ्रमते महीम् ।
 उलूकरक्तसमिश्रमर्चित शुभवारिणा ॥२०॥
 रिपुरन्धो भवेत् पुत्र ग्रथुताञ्च न लक्ष्यः ।
 मार्जारवालरक्तेन मिश्रिताञ्जलतर्पणात्^{१६} ॥२१॥

१. घ. कृत्वा तु । २. घ. ०मातर्पणान्तिकम् । ३. घ. एकीकृत्य तु । ४. घ.
 बुद्धिमान् । ५. घ. गृध्रवाराहजैलोमैः । ६. घ. चं । ७. घ. घ-ग्रन्थद्वेषो । घ.
 ग्रन्थद्वेषो । ८. घ. ०माचरेत् । ९. घ. स्वशक्त्या० । १०. घ. भवेच्छीघ्र । ११.
 घ. रिपुर् । १२. घ. शुद्धवारिणा । १३. घ. पुस्तकेऽप्य दलोको नास्ति । १४. घ.
 ग्रथुतात् । १५. घ. तर्पेत् पुत्र । १६. घ. मिश्रित जलतर्पणम् ।

भ्रान्तचित्तो भवेच्छत्रुरयुताच्च न सशयः ।
 विड्वराहस्य^१ रक्तेन मिश्रित,जलतर्पणम् ॥२२॥
 उन्मादो च भवेच्छत्रुरयुतादेव^२ पुत्रक ।
 तुलापरकतसमिश्रजलेनैव तु तर्पणम् ॥२३॥
 'अयुतादरिगर्वं तु'^३ मूकत्व कुष्ठे नृणाम् ।
 भुजङ्गरक्तसमिश्रजलेनैव तु तर्पणम्^४ ॥२४॥
 शत्रूणां मारण पुत्र अयुताच्च न सशयः ।
 छागरक्तेन समिश्रमचितेन जलेन च ॥२५॥
 तर्पणेनायुतेनैव घ्नणरोगी भवेद्रिपुः ।
 दाशकस्य तु रक्तेन 'मिश्रितेन जलेन च'^५ ॥२६॥
 क्षयरोगी 'भवेन्मर्त्योऽप्ययुताच्च'^६ न सशयः ।
 मत्कुणस्य च 'रक्तेन मिश्रितेन जलेन च'^७ ॥२७॥
 'अयुतात्तस्य शत्राश्च भवेन्मरणमुत्तमम् ।
 मेपस्य पुच्छरक्तेन 'मिश्रितेन जलेन च'^८ ॥२८॥
 अयुताज्ज्वररोगी^९ च जायते तत्क्षणाद्रिपुः ।
 द्रव्येणैव च समिश्रमचितं जलतर्पणम्^{१०} ॥२९॥
 अयुताच्चिन्तित कार्यं भवत्येव न सशयः ।
 एतत्तर्पणयोग च सिद्धात् सिद्धतर सुत ॥३०॥
 न वक्तव्यं न वक्तव्यं न वक्तव्य कदाचन ॥

इति षड्विंशत्यमे सांख्यायनतत्रे षड्विंशः^{११} पटलः ॥२६॥

॥ अथ सप्तविंशः पटलः ॥

नानालङ्कारशोभाढ्या नरनारायणप्रियाम् ।
 वन्देऽहं बगला देवीं परब्रह्माधिदेवताम् ॥१॥

स्कन्ध^{१२} उवाच—

वन्दे पाशुपताध्यक्ष परमानन्दविग्रह ।

वद होमप्रयोगं च बगलाचतुरक्षरं ॥२॥

१. घ. विड्वराहेण । २. घ. अयुताच्चैव । ३. घ. अयुदक्षिणा पञ्च । ४. घ. तर्पणात् । ५. घ. मिश्रित जलतर्पणम् । ६. घ. भवेच्छत्रुरयुतात् । ७. घ. मिश्रित जलतर्पणम् । ८. घ. मिश्रित जलतर्पणम् । ९. घ. अयुताच्चमरोगी । १०. घ. पुस्तके पाठोऽयं विशेषः—
 नररक्तेन समिश्रमचितं जलतर्पणम् ।
 ११. घ. चतुरक्षरीतर्पणं प्रयोगं नाम षड्विंशति । १२. घ. कौञ्चभेदन ।

शिव उवाच—

वक्ष्ये होमविधिं सम्यक् सावधानेन श्रूयताम् ।
 अयुत पुत्र होम^१ च पिचुमदफलं हुनेत् ॥६॥
 अयुताच्छत्रुसंहारो भ्रान्तभीतो^२ भवेद् ध्रुवम् ।
 'करवीराणि रक्तानि'^३ अयुत चाज्यसयुतम् ॥४॥
 हुनेत् त्रिकोणकुण्डे तु अयुताद्^४ रिपुमारणम् ।
 विपतिन्दुकबीजं च सौवीरद्रवसयुतम् ॥५॥^५
 ग्राममध्ये हुनेन् मन्त्रो भगाकारे च कुण्डके ।
 तद्ग्रामे वेदशास्त्राणि सर्वं विस्मृतिमाप्नुयात् ॥६॥
 शेषभाषापतिप्रह्वयः* 'स एव जडतामियात्'^६ ।
 वटमूलं समाश्रित्य कृत्वा कुण्डं त्रिकोणकम् ॥७॥
 तत्फलेन हुनेद् रात्री अयुतं चाज्यमिश्रितं ।
 भाषापतिसमो विद्वास्तत्क्षणाद् भ्रान्तिमाप्नुयात् ॥८॥
 अश्वत्थमूलमाश्रित्य पट्कोणाकृतिकुण्डके ।
 तत्फलं च हुनेद् रात्री^७ अयुतं चाज्यमिश्रितम् ॥९॥
 स्फोटकव्रणसयुक्तो 'म्रियते यमशासनात्'^{१०} ।
 उदुम्बरस्य^{११} मूले तु पट्कोणाकृतिकुण्डके ॥१०॥
 कोमलं तत्फलं सम्यगयुतं चाज्यमिश्रितम् ।
 जुहुयाद्भ्रजस्याग्नी जुहुयाद्दक्षिणामुखं^{१२} ॥११॥
 ग्रामं वा नगरं वाथ रणं राजकुलं 'तु वा'^{१३} ।
 नाडीव्रणसमायुक्तो नानादुःखेन पुत्रक ॥१२॥
 म्रियते 'न च'^{१४} सन्देहो नात्र कार्या विचारणा ।
 राजवृक्षं समाश्रित्य तन्मूले च कुमारक ॥१३॥

१. घ. ईश्वर । २. घ. होमात् । ३. घ. भ्रान्तचित्तो । ४. घ. ह्यारिरक्त-
 कुसुमैः । ५. घ. तत्क्षणाद् । ६. ख. घ. पुस्तकद्वये विशेषोऽयं पाठ —

अयुतं जुहुयात्-मन्त्रो तत्क्षणाद्दिपुमारणम् ।

पलाशबीजमयुतं तिलतलेन सयुतम् ॥

७. घ. प्रह्वया । ८. घ. सर्वं विस्मृतिमाप्नुयात् । ९. घ. पुत्र । १०. घ. मारक
 भवति ध्रुवम् । ११. घ. औदुम्बरस्य । १२. घ. नग्नो दक्षिणदिग्मुख । १३. घ.
 तथा । १४. घ. नात्र ।

हस्तमात्रं भगाकारं कुण्डं कुर्याद् विचक्षणः ।
 तत्फलं निम्बतैलेन मिश्रितं त्रिंशि बुद्धिमान् ॥१४॥

नेत्रायुतं हुनेद् धीमान् ग्रामं-वा नगरं तथा ।
 स्फोटकघ्नसंयुक्तो हस्तपादादिभ्रन्तः ॥१५॥

पर्यायान् म्रियते चैव^१ नात्र कार्या विचारणा ।
 सयंपं लवणं चैव तिलतैलेन मिश्रितम् ॥१६॥

अयुतं जुहुयाद्भ्रन्त्री ज्वररोगी भवेद्रिपुः ।
 पिचुमदस्य^२ तैलेन मिश्रितं लवणं तथा ॥१७॥

हुनेच्च^३ पूर्ववत् कुण्डे अयुतं प्रेतपावके ।
 कुष्ठरोगी भवेच्छत्रुम्रियते तेन निश्चितम् ॥१८॥

शमीमूले हुनेत्पुत्रं शृणु वक्ष्यामि तत्फलम्^४ ।
 तिलतैलेन समिश्रं^५ तत्फलं त्रिंशि पुत्रक ॥१९॥

जुहुयात्तत्क्षणात् पुत्रं शृणु वक्ष्यामि^६ तत्फलम् ।
 वातरोगी भवेच्छत्रुम्रियते नात्र सशयः ॥२०॥

अपामार्गस्य बीजं तु तिलतैलेन मिश्रितम् ।
 शमीमूले हुनेत्पुत्रं अयुतं ध्यानपूर्वकम् ॥२१॥

तत्रस्थाः शत्रुभार्याश्च तद्गृहे तत्र योषितः ।
 वन्ध्याः स्त्रियो भवेयुश्च सत्यमेव^७ शिवोदितम् ॥२२॥

शमीमूलं समाश्रित्य शलाटुं च समासतः^८ ।
 तिलतैलेन समिश्रं जुहुयादयुतं तथा ॥२३॥

प्रेताग्नी रजकाग्नी वा पूर्वोक्ते चैव कुण्डके ।
 वैरिस्त्रीणां भवेत् सद्यः^९ स्वदक्ष^{१०} निरन्तरम्^{११} ॥२४॥

तिलतैलेन समिश्रं शलाटुं^{१२} शास्मलीभवम्^{१३} ।
 पूर्ववच्च हुनेत् पुत्रं मेहरोगी^{१४} भवेद्रिपुः ॥२५॥

१. घ. शत्रुः । २. घ. पिचुमदेन । ३. घ. हुनेत् । ४. स. ग. घ. भगाकारे
 तु कुण्डके । ५. घ. संयुक्तं । ६. घ. वक्ष्यामि शृणु । ७. घ. सत्यमेतत् । ८. घ.
 शाटुं लस्य च मासतः । ९. घ. सद्यो । १०. घ. वा यद्वत । ११. घ. मुनिश्चितम् ।
 १२. घ. शंलूप । १३. घ. भवेत् । १४. घ. महदोगी ।

एव होमप्रयोग च रात्री कुर्यात् कुमारक ।
 'प्रयोग चोपसहार सत्पुत्रायापि नो वदेत्' ॥२६॥^१

इति षड्विद्यागमे साख्यायनतन्त्रे सप्तविंशति २ पटल ॥२७॥

॥ श्रथाष्टाविंशतिः पटल ॥

वालभानुप्रतीकाशा^४ नीलकोमलकुन्तलाम्^५ ।
 वन्देऽह वगला देवी स्तम्भनास्त्रस्वरूपिणीम् ॥१॥

स्कन्द उवाच—^१

विश्वनाथ नमस्तेऽस्तु विरूपाक्ष नमो नमः ।
 सुगम^२ स्तम्भविद्याया प्रयोग वद शङ्कर ॥२॥

शिव^३ उवाच—

वगलाहृदय मत्र गुप्नगुप्ततर^६ तथा ।
 एतच्छ्रवणमात्रेण मत्रसिद्धिमवाप्नुयात् ॥३॥
 न ध्यान न च होम च न जप न चतर्पणम् ।
 सकृदुच्चारणान् मन्त्राच्चिन्तित^७ भवति ध्रुवम् ॥४॥

न चाभिपेक न च मन्त्रदोषा,

न चात्र^८ दिक्काल ऋतुश्च^९ देवता^{१०} ।

न चापि षड्चेन्द्रियनिग्रह च,

सकृत् स्मरन्वै वगलाख्यहृन्मनुम्^{११} ॥५॥

वगलाहृदय मत्र ब्रह्मादीना च दुर्लभम् ।

सकृत् स्मरणमात्रेण वाञ्छित फलमाप्नुयात् ॥६॥^{१२}

१. घ पुस्तकेऽयमशो विशेष—प्रयोगादौ प्रयोगान्ते पूजा कुर्यात् प्रयत्नत ।

२ घ पुस्तके इतोकोऽप विद्याषो लभ्यते—

एव य कुरुते पुत्र प्रयोग सिद्धिमाप्नुयात् ।

पूजा विना कृत कम प्रयोग निष्फल भवेत् ॥२७॥

३ घ चतुरक्षरीहोमकपन नाम सप्तविंशति । ४ घ. बालभावः । ५. घ ०कुण्डलाम ।

६ घ ऋञ्चभदन । ७ घ सुभग । ८ घ ईश्वर । ९ घ गुप्तातः ।

१० घ तस्य चिन्तित । ११ घ न चापि । १२ ख दिक्कालक्रमश्च । घ. दिववा-

सक । १३ घ देवताश्च । १४ घ ०हृन्मनु । १५ पद्याद्विद ख ग. पुस्त

कद्रयधिक दृश्यते—

सचारयान् भवेत् पञ्ज वादी मूकत्वमाप्नुयात् ।

दरिद्रोऽपि भवेच्छ्रीमान् स्तब्धी भवति^१ पण्डितः ।
 चतुरो मुष्करश्चैव^२ कीर्त्तिमान् निन्दको भवेत् ॥७॥
 कवीश्वरोऽपि चोन्मादी^३ भोगासक्तोऽपि रोगवान् ।
 रोगवान्^४ क्षयरोगी स्यात्^५ कुलजो^६ निन्दको भवेत् ॥८॥
 मानो लघुतरश्चैव^७ नैष्ठिको भ्रष्टता व्रजेत् ।
 एतद्विना कलौ पुत्र सुकृतकीर्त्तिकारणम्^८ ॥९॥
 गुणश्च वसन्ते पुंसां तस्योत्पन्नकारणम्^९ ।
 वगलाहृदय मत्रं सकृदावर्त्तयेत्तु यः ॥१०॥
 तस्योल्लघनमात्रेण नष्टः स्यात्पद्मजोऽपि वा ।
 वगलाहृदय मत्रमुपासनपरस्य च ॥११॥
 करोति यस्य^{१०} सन्तोष तस्य सिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ।
 येन केनाप्युपायेन हृन्मत्र येन^{११} जायते ॥१२॥
 सन्तोष जनयेत् तस्य^{१२} चिन्तित फलमाप्नुयात् ।
 तन्मन्त्रोद्धारमतुल 'तत्त्वतः स्वविधानत'^{१३} ॥१३॥
 वक्ष्येह तव सर्वञ्च^{१४} क्रीञ्चभेदन तच्छृणु ।
 पाशबीज ततोच्चार्यं^{१५} स्तब्धमाया ततोच्चरेत्^{१६} ॥१४॥
 अकुश बीजमुच्चार्यं भूव(वा) राह तथोच्चरेत् ।
 वाराहं वाग्भव चैव कामराज तत परम् ॥१५॥
 श्रीबीज भुवनेशी च 'वगलामुखिपद वदेत्'^{१७} ।
 प्रावेशयद्वय चोक्त्वा पाशबीजमतोच्चरेत् ॥१६॥
 स्तब्धमाया ततोच्चार्यं^{१८} मङ्कुश बीजमुच्चरेत् ।
 ब्रह्मास्त्ररूपिणी चोक्त्वा एहियुगं ततोच्चरेत् ॥१७॥
 पाशबीजमतोच्चार्यं^{१९} स्तब्धमाया ततोच्चरेत् ।
 अङ्कुश बीजमुच्चार्यं मम शब्द ततोच्चरेत् ॥१८॥

१. क. स्तली० । ख घ. स्तब्धी भवति । २. घ. मुष्कर० । ३. घ. उन्मादी ।
 ४. घ. रोगवान् । घ. सत्ववान् । ५. घ. च । ६. घ. कुलवान् । ७. घ. लज्जा-
 विहीनस्तु । ८. ख घ. सुकृत कीर्त्ति० । ९. ख. ग. तस्योपासन० । घ. तस्य नाशन०
 १०. घ. तस्य । ११. घ. यस्य । १२. घ. सद्यः । १३. घ. तदारामनलक्षणम् ।
 १४. घ. सर्वत्र । १५. घ. समुच्चार्यं । १६. घ. समुच्चरेत् । १७. घ. वगलामुखि
 उच्चरेत् । १८. घ. समुच्चार्यं । १९. घ. पाशबीज समुच्चार्यं ।

हृदये 'तु समुच्चार्य'¹ आवाहययुग वदेत् ।
 सान्निध्यं कुरुयुगं च पुनर्बीजत्रय वदेत् ॥१६॥
 ममैव हृदयेत्युक्त्वा चिरं तिष्ठद्वयं वदेत् ।²
 'पुनर्बीजत्रयं चोक्त्वा'³ हुं फट् स्वाहासमन्वितः ॥२०॥
 अशीतिवर्णसमुच्चो⁴ 'वगलाहृदयं मनुः'⁵ ।⁶
 वन्ध्यामुन्मार्जयेदङ्ग⁷ वगलाहृदयेन च ॥२१॥
 वन्ध्या पुत्रवती चैव पण्मासाद् भवति ध्रुवम् ।
 वगलाहृदयेनैव त्रिसप्तमभिमन्त्रितम् ॥२२॥
 'पयः पिबति वा सा स्त्री'⁸ वन्ध्या'⁹ पुत्रवती भवेत् ।
 कृत्रिमेपु च रोगेषु नानाभयसमुद्भवे'¹⁰ ॥२३॥
 त्रिसप्तमन्त्रितं तोयं सद्यो नैर्मल्यमातनोत् ।
 नित्यमष्टोत्तरशत'¹¹ वगलाहृदयं मनुम् ॥२४॥
 चिन्तितं च भवेत् पुत्रं नात्र कार्या विचारणा ।
 इति षड्विधागमे साख्यायनतन्त्रेऽष्टाविंशतिः ¹² पटलः ॥२८॥

॥ अथोर्नात्रिंशः पटलः ॥

नमस्ते देवदेवेशि नमः स्वर्णविभूषणे ।
 पानपात्रयुते देवि वगले त्वा नतोऽस्म्यहम् ॥१॥

स्कन्ध'¹³ उवाच—

अष्टमूर्त्ते नमस्तुभ्यं मानन्दगणसागर'¹⁴ ।
 वगलाहृदयं मन्त्र'¹⁵ प्रयोगं वद शङ्कर ॥२॥

ईश्वर उवाच—

विन्दुत्रिकोणपट्कोणवृत्तत्रयविभूषितम् ।
 पट्कोणं चैव वृत्तं च भूपुरद्वयसमुत्तम् ॥३॥

१. पदमुच्चार्यः । २. निम्नांशोऽयं यः पुस्तक एव दृश्यते विद्याप —
 पादबीजं ततोच्चार्य स्तम्भमायां ततोच्चरेत् ।

३. यः अङ्गुलीबीजमुच्चार्यः । ४. यः स्वाहेति उच्यते । ५. यः मन्त्रोऽयः । ६. यः
 मुनिगुह्यं सुपावनम् । ७. यः पुस्तक एवायमशो विरोध —
 पुत्रं देयं शिरो देयं न देयं हृदयं मनुः ।

८. यः वन्ध्यायां मार्जयेदेव । ९. यः पिबेदुदयकाले तु । १०. यः सापि । ११. यः
 समुच्चयः । १२. यः अष्टोत्तरं जप्त्वा । १३. यः हृदयप्रयोगं नाम अष्टाविंशतिः ।
 १४. यः क्रीञ्चनेदन । १५. मानन्दगुणसागरः । १६. यः मन्त्रः ।

मध्य लिखेन्महामन्त्र वगलाहृदय तथा ।
 त्रिकोणेपु लिखेद् बीज वगलाहृदय सृपावनम् ॥४॥
 पट्कोणे वा लिखेन्मन्त्र पट्त्रिशद्वर्णकारकम् ।
 शताक्षरीमहामन्त्रमाद्यन्त लिखेत् क्रमात् ॥५॥
 'तस्योपरि च सवेष्टध वगलाबीजमादरात्' ।
 तस्योपरि^१ विलिखेद्यन्त्र 'स्वर्णे वा रीप्यपत्रके'^२ ॥६॥^३
 लिखित्वा शुभलग्ने तु स्पष्टरेखाश्च^४ सलिखेत् ।
 स्पष्टबोजानि सलिल्य पूजयेदकंवासरे ॥७॥
 'सहस्र प्रजपेन्मन्त्र दुर्गाहृदयमादरात्'^५ ।
 योगिनी पूजयेत्तत्र धूपदीपार्चनादिभि ॥८॥
 कौलार्चनविधानेन मन्त्रसिद्धिर्भवेद्^६ ध्रुवम् ।
 सुरक्तं पूजयेद्यन्त्र 'ह्यारिकुसुमं शुभं'^७ ॥९॥
 इष्टसिद्धिर्भवेत्तस्य भ्रयुत जपमादरात् ।
 मल्लिकाकुसुमेनैव^८ ह्यष्टोत्तरशत जपेत् ॥१०॥
 वगलाहृदयनैव ह्यर्चयेज्ज्वरशान्तये ।
 'मल्लिकाकुसुमेनैव ह्यष्टोत्तरशत जपेत्'^९ ॥११॥
 वगलाहृदयनैव अष्टादशशत तथा ।
 अत्र न्त'^{१०} वेदसास्त्राणां व्याख्याता भवति ध्रुवम् ॥१२॥

१ ख घ पुस्तकद्वय पादद्वयस्थाने निम्नांशो लभ्यते—

तदुपरि च सवेष्टध पञ्चाक्षरमादरात् ।
 तस्योपरि च सवेष्टध वगलाबीजमादरात् ॥
 तस्योपरि च पटकोणे वगला चतुरक्षरी ।
 कोणे कोणे लिखेन्मन्त्र प्रत्येक च कुमारक ॥

२ ख घ एव च । ३ घ स्वणरोप्यादिताम्रके । ४ अस्याधे निम्नांशो दृश्यते-
 शिक ख घ पुस्तकयुग्मे—

'अष्टम्यां च'^१ चतुदश्यां नवम्यां भीमवासरे'^२
 उत्तराभिमुखो भूत्वा लेखित्वा स्वर्णजातया^३ ॥

५ घ स्पष्टरेखासु । ६ ए —

प्रजपेद् वगलायाश्च सहस्र हृदय मनु ।

७ घ सिद्धमन्त्रो भवेत् । ८ घ ह्यारिश्च सुबुद्धिमान् । ९ ख ० कुसुमैश्च । घ
 ० कुसुमैर्विभ्यः । १० ख घ — स्यम तकुसुमेनैव ह्यर्चयेज्ज्वरमादरात् । ११ घ अश्रुतान् ।

१. घ कृष्णाष्टम्यां । २ घ मयवा पौलिमादिने । ३ हेमवारायो ।

वकुलः पूजयेद्यत्र पुत्रवान् जायते नरः ।
 'पलाशकुसुमैरर्चयेन्नराज' कुमारक ॥१३॥
 विद्यासिद्धिर्भवेत् पुत्र पूर्वसख्याक्रमात्सुत^१ ।
 पशुपत्रेण सम्पूज्य पूर्ववद्यत्रमादरात्^२ ॥१४॥
 कुबेरसदृशो भूत्वा 'लभते भुवि सपदः'^३ ।
 नद्यावत्तैर्यन्त्रराज पूजयेत् पूर्ववत् सुत ॥१५॥
 श्रेलोक्य 'वशमाप्नोति पूजायाश्च प्रभावतः'^४ ।
 चम्पकेनैव सम्पूज्य पूर्ववद्विजितेन्द्रियः ॥१६॥
 तस्य दर्शनमात्रेण वादिना स्तम्भन भवेत् ।
 वित्त्वपत्रेण सम्पूज्य पूर्वसख्यासु बुद्धिमान् ॥१७॥
 द्रव्यलाभ^५ भवेत्तस्य तत्क्षणादेव पुत्रक ।^{*}
 अशोकपुष्पे, सम्पूज्य पूर्ववद्विजितेन्द्रियः ॥१८॥
 श्रेष्ठराज्य भवेत्पुन श्रनायासेन साधकः ।
 केतकीकुसुमेनैव पूर्ववत्पूजयेत्सुत ॥१९॥
 निधान^६ लभते तस्य शिवस्य वचन यथा ।
 पीतवर्णेन पुष्पेण 'निर्गन्धेन सुगन्धिना'^७ ॥२०॥
 अर्चयेद्युत मन्त्री षोडशैरुपचारकैः ।
 वाचा^८ सिद्धिर्भवेत्तस्य देवीरूपो न संशयः ॥२१॥
 तस्य दर्शनमात्रेण सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ।
 यजेत्तद्गमलायन्त्र^९ मुनिगुह्य सुपावनम् ॥२२॥
 प्रकाशयेन्न^{१०} कस्यापि देवताशापमाप्नुयात् ।
 इति षड्विद्यागमे साध्यायनतन्त्रे एकोनत्रिंशः^{११} पटलः ॥२३॥

१. घ. पालाशपुष्पसंपूज्य. मन्त्रराज । २. पूर्वसख्या पुत्रक । ३. घ. पूर्ववत् क्रीच-
 भेदन । ४. घ. मोदितो भुवि सपदः । ५. घ. वशमायाति यावज्जीव न संशयः ।
 ६. घ. द्रव्यलाभो । ७. घ. पुस्तक एव निम्नः श्लोको दृश्यते विशेष.—
 तुलसीमञ्जरीभिस्तु पूर्ववत्पूजयेन्नरः ।
 राजलाभो भवेत् सद्य श्रयत्नादेव पुत्रक ॥
 ८. ख. विधान । ९. घ. निर्गन्धैर्वा सुगन्धिभिः । १०. घ. वाञ्छा । ११. घ. य-
 एतद्गमलायन्त्रं । १२. घ. न देव यस्य । १३. घ. बगपायत्रप्रकाशन नाम एकोनत्रिंशः ।

• अथ त्रिंशः पटलः ॥

नमस्ते देवदेवेशि पुत्रपौत्रप्रवर्द्धिनी(नि) ।

स्तम्भनार्थं भजेऽहं त्वा पीतमाल्यानुलेपनाम् ॥१॥

स्कन्व^१ उवाच—

नमस्ते सर्वसर्वेश पुराणपुरयोत्तम ।

वगलाष्टाक्षरमन्त्रं^२ वद मे कर्षणाकर ॥२॥

शिव^३ उवाच—

वेदादि 'विलिखेत् पूर्वं'^४ पाशबीजमन्तरम् ।

स्तम्भमाया^५ ततोच्चार्यं शङ्कुश बोजमेव च^६ ॥३॥

'हुं फट् स्वाहा'^७-समायुक्त मन्त्रमष्टाक्षरं^८ तथा ।

ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोऽस्य^९ गायत्री समुदाहृता ॥४॥

'देवता वगलानाम्नी चिन्मयी विद्वरूपिणी'^{१०} ।

ॐ बीजं ह्रस्वी शक्तिश्च क्रौं कीलकमुदाहृतम् ॥५॥

न्यासविद्या च वगलामन्त्रराजवदाचरेत्^{११} ।

ध्यानं चैव प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ॥६॥

युवती च मदोद्विक्ता^{१२} पीताम्बरधरा शिवाम् ।

पीतभूषणभूषागी समपीनपयोधराम् ॥७॥

मदिरामोदवदना प्रवालसहस्राक्षराम् ।

'पानपात्रं च शुद्धिच'^{१३} बिभ्रती वगला स्मरेत् ॥८॥

एव ध्यात्वा जपेत् पुत्रं^{१४} वगलाष्टाक्षरीमनुम् ।

ध्यानेनेव^{१५} जपं कुर्याद् ध्यायेदाद्यन्तयोस्तथा^{१६} ॥९॥

'अशोकमूले निवसन् मधुरारससमुत्तम'^{१७} ।

हरिद्रामालिकाभिश्च वर्णलक्षं जपेन्मनुम् ॥१०॥

१ ष पीतमाल्यानुलेपनाम् । २ ष रा क्रौञ्चभदन । ३ छ घ रा वगलाष्टाक्षरी-
मन्त्र । ४ छ. घ रा. ईश्वर । ५ छ शक्तिराशौ तु । ६ छ. घ रा. स्तम्भमाया । ७.
रा बीजमुच्यते । ८ छ. वगला च । ९ घ मन्त्रमष्टाक्षरी । १०. रा छन्दोऽस्य ।
११. '०' प्रथमश छ. पुस्तके नास्ति । रा. ०बीजरूपिणी । १२ छ घ वगला० । १३.
छ. घ. ०मदो-मत्ता । रा योवतां च मदो-मत्ता । १४ घ. रा वैरिजिह्वा पानपात्र । १५.
घ रा. मन्त्र । १६ रा ध्यायक्षेप । १७. छ ०पराम् । १८. घ रा अशोकमूलमाधिय
हरिद्राम्बरसमुत्तमम् ।

अष्टायुत तपणं च हेतुसम्मिश्रवारिणा ।

तद्दशाश हुनेत् पुत्र अन्नेन^१ 'च सम मधु'^२ ॥११॥

योगिनी पूजयेत् पश्चाद् गर्भकौलागमरुमात् (मं:) ।

ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चाच्छत^३ 'वाष्टशत तु वा'^४ ॥१२॥५

एतन्मन्त्रस्य माहात्म्यं शिवो जानाति नान्यथा ।

वित्त्वमूले जपेन्मन्त्रमयुतं ध्यानपूर्वकम् ॥१३॥

लक्ष्मीवान् जायते पुत्र दरिद्रस्तु^५ न सशयः ।

अश्वत्थमूले प्रजपेदयुतं पूर्ववन्नरः^६ ॥१४॥

अश्रुतानां^७ च शास्त्राणां^८ व्याख्याता भवति ध्रुवम् ।

शमीमूले जपेन्मन्त्रमयुतं पूर्ववन्नरः^९ ॥१५॥

भ्रष्टराज्यं लभेत्पुत्रं^{१०} अनायासेन निश्चितम्^{११} ।

वदरीमूलमाश्रित्य अयुतं पूर्ववज्जपेत्^{१२} ॥१६॥^{१३}

वशीकरणसम्मोहो 'जाय (ये)ते नात्र सशयः'^{१४} ।

उदम्बरतरिमूले^{१५} पूर्ववज्जपमाचरेत् ॥१७॥^{१६}

कुवेरसदृशं श्रीमान् जायते नात्र सशयः ।

कदलीमूलमाश्रित्य पूर्ववज्जपमाचरेत्^{१७} ॥१८॥^{१८}

१. छ घाग्नेन । रा. उत्कल । २. रा. कुमुप मधु । ३. प. रा. पुत्र दत्त । ४. रा. वा तु तदङ्कम् । ५. छ प. रा. पुस्तकेषु विशेषः पाठो दृश्यते—

घ रा. ध्यानोक्तां बगला देवो चमन्दुर्दशनो भवेत् ।

छ. ईमदर्शने भवे देवि ना.न्यथा शिवभाषितम् ।

६. छ. प. दरिद्रोऽपि । ७. घ. ध्यानपूर्वकम् । ८. छ. प. अश्रुतानि । रा. अश्रुत ।

९. छ. प. शास्त्राणि । रा. वेदशास्त्राणां । १०. छ. प्रजपेन्नरः । ११. छ. भवेत् सशयः । १२. छ. रा. पुत्रक । १३. रा. ० अरः । १४. दलोकोऽयं नास्ति घ. पुस्तके ।

१५. रा. स्वभावेनैव जायते । १६. प. श्रीदुम्बरः । १७. प. पुस्तके दलोकोऽयं नास्ति

१८. घ. रा. अयुतं पूर्ववत् जपेत् । १९. प. पुस्तके पञ्चमदो नास्ति ।

'प्रयोगादीनि सर्वाणि सर्वसिद्धिर्भवेत्सुत'^१ ॥१६॥

॥ इति षड्विद्यागमे साध्यायनतन्त्रे त्रिंशत्पटलः^२ ॥३०॥

॥ अथ एकत्रिंशः पटलः ॥

विराट्स्वरूपिणी देवी विविधानन्ददायिनीम् ।

भजेऽहं बगला देवी भक्तचिन्तामणि शुभाम्^३ ॥१॥

कौञ्चभेदन उवाच—

चन्द्रोपेन्द्रमहेन्द्रादिसनुतः^४ सर्वमङ्गला(ल) ।

बगलाष्टाक्षरीमन्त्र(न्त्र) प्रयोगान्^५ वद शङ्कर ॥२॥

१. स. पुस्तके एतदशस्त्वानेऽयमशः समुपलभ्यते—

'प्रयोगादीनि सर्वाणि पूर्ववत्कारयेत् सुधीः ।

एतदशमेर्षुं व पुत्र बगलाष्टाक्षरीविधिः ।

सक्षेपेन मया प्रोक्तं किमप्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥

अस्याग्रे निम्नाक्षो षपुस्तक एव दृश्यते—

अयुताह्लभते भोग वाञ्छित शिवता इव ।

पुत्रीवन समाश्रित्य अयुत पूर्ववज्जपेत् ॥१६॥

निक्षेप सभते पुत्र अयुताम्मासमात्रतः ।

जंबीरतस्माश्रित्य अयुतं पूर्ववज्जपेत् ॥२०॥

राजा चैव यथो भूत्वा सर्वस्व दीयते ध्रुवम् ।

उद्यानवनमाश्रित्य अयुत पूर्ववज्जपेत् ॥२१॥

य य वापि स्मरेत् पुत्र तं प्रप्नोति निश्चितम् ।

पुष्पवाट्या जपेन्मन्त्रमयुतं पूर्ववत् सुत ॥२२॥

राजलाभो भवेत्सस्य नात्र कार्या विचारणा ।

नदीतीरे जपेन्मन्त्रमयुतं पूर्ववत्परः ॥२३॥

पुत्रवान् जायते लोके धनघाम्यादिसयुतः ।

एतन्मन्त्रो जपेन्मन्त्र तत्फलमवाप्नुयात् ॥२४॥

एतदष्टाक्षरीमन्त्र सर्वमत्रोत्तमोत्तमम् ।

प्रयोगादीनि सर्वाणि सर्वसिद्धिर्भवेत्सुत ॥२५॥

२. अष्टाक्षरीप्रयोगं नाम त्रिंशत्पटलः ।

३. रा० नमस्ते लोकजननीं(नि) व्यासवाल्मीकिवन्दिते ।

स्तम्भ(म्भ)नास्त्रस्वरूपिण्यं बगले तां नमाम्यहम् ॥

४. रा० इन्द्रोपेन्द्रमहेन्द्रादिसन्तुष्ट । ५. रा. प्रयोग ।

ईश्वर उवाच—

सर्पं सवणं चैव चिताभस्म समं समम् ।
 अकंक्षीरेण सत्त्वेन मह्येत्^१ सूक्ष्मतोज्ज्वल^२ ॥३॥
 अङ्गुष्ठमात्रा^३ कृत्वा तु पुत्तली पूर्ववत् सुत ।
 वदरीकण्टक^४ चैव सर्वाङ्गे तस्य लेपयेत्^५ ॥४॥
 आरनालस्य भाण्डे तु प्रधोमुखी^६ विनिक्षिपेत् ।
 'मङ्गारवासरे पूज्या'^७ पुनस्तत्रैव निक्षिपेत् ॥५॥
 एव मासत्रयं कृत्वा 'जिह्वास्तम्भ भवेद् रियोः'^८ ।
 रवी रात्रौ च सगृह्य^९ चिताभस्म समादरात् ॥६॥
 वगलाष्टाक्षरोमत्र 'अयुत् मत्रयेत्'^{१०} सुत ।
 खाने पाने च तद्भस्म दातव्यं वैरिणस्तथा^{११} ॥७॥
 जिह्वा मुख^{१२} च कर्णाक्षिपादादिस्तम्भ^{१३} भवेत् ।
 तेनैव म्रियते शत्रुर्मासान्मण्डलमात्रतः^{१४} ॥८॥
 आरनालेन^{१५} तद्भस्म रहस्येन विनिक्षिपेत्^{१६} ।
 तदन्नभक्षणेनैव बुद्धिभ्रंशोऽपि^{१७} जायते ॥९॥
 तद्भस्म तिलतैलेन शिरोभ्यङ्गं समाचरेत् ।
 तेनैव तत्क्षणात् पुन^{१८} चित्तचाञ्चल्यवान्^{१९} भवेत् ॥१०॥
 तद्भस्म चूर्णमिश्र^{२०} 'कृत्वा चूलं च वर्णकम्'^{२१} ।
 'तेन शत्रुस्तत्क्षणाच्च'^{२२} बुद्धिजाड्यो भवेद् ध्रुवम् ॥११॥
 विप्रचाण्डालयोः शतय^{२३} (सत्य) प्रेतवस्त्रेण वेष्टयेत् ।
 वगलाष्टाक्षरोमत्र^{२४} मत्रयित्वा सहस्रकम्^{२५} ॥१२॥

१. रा. मह्येत् । २. रा. सूक्ष्मतो मुखम् । ३. घ. मात्र । ४. रा. कण्टकान् ।
 ५. रा. निक्षिपेत् । ६. रा. प्रधोभागे । ७. '—' रा. मङ्गारवासरे सम्पूज्य । ८. रा.
 शत्रुस्तम्भो भवेद् ध्रुवम् । ९. रा. सगृह्य । १०. रा. मन्त्रयेत्सुत । ११. वैरिणा
 तथा । १२. रा. मतिः । १३. रा. वर्णादि० । १४. रा. शत्रुमण्डलं नाम सद्यः ।
 १५. रा. आरनाले च । १६. रा. च निक्षिपेत् । १७. रा. बुद्धिभ्रष्टोऽपि । १८. रा.
 शत्रुः । १९. रा. चित्तचाञ्चल्यवान् । २०. रा. मिश्रं तु । २१. रा. कृत्वा ताम्बूल-
 चूर्णम् । २२. रा. कृत्वा तत्क्षणाच्च । २३. रा. शतय । २४. रा. वगलाष्टाक्षर-
 मन्त्रः । २५. रा. महस्रकम् ।

रवौ राशौ शत्रुगेहे^१ ईशान्ये नंब(चंब) निक्षिपेत् ।
 मण्डलातद्गु(तर्गुं)हस्तोऽपि^२ म्रियते नात्र सशयः ॥१३॥
 कटक^३ पुरपक्षस्य^४ त्रिसहस्र तु मन्त्रयेत् ।
 निक्षिपेच्छत्रुसदने नित्य क[ल]हमाप्नुयात् ॥१४॥
 काकोलूकदल चंब 'भोमे वा रविवासरे'^५ ।
 सप्रहेत् प्रेतवस्त्रेण वेष्टयेद् रविवासरे ॥१५॥
 निक्षिपेद् रविवारे तु रिपु(पो)गेहे तु^६ बुद्धिमान् ।
 ग्र(गु)हविद्वेषण^७ सद्यो जायते नात्र सशयः ॥१६॥
 सर्प(पं) मण्डूकयोः शल्पं प्रेतरज्वा तु वेष्टयेत् ।
 निक्षिपेच्छत्रुसदने स श[त्रु]रवशिष्यति ॥१७॥
 मार्जारबालरोमाञ्च(णि)^८ रवौ राशौ च सप्रहेत् ।
 प्रेतवस्त्र रवौ ग्राह्य शिवनिर्माल्यमेव च ॥१८॥
 रवौ राशौ च सग्राह्य नरास्थि च सम समम् ।
 चूर्णं(णी) कृत^९ तु तत्सर्वं मन्त्रयेदयुत तथा ॥१९॥
 धूपयेच्छत्रुसदने तस्य सचारयो(ण)-स्थले ।
 'तद्धूपवासने शत्रुमूको'^{१०} भवति तत्क्षणात् ॥२०॥
 तच्चूर्णं देवतागारे भृगुवारे च धूपयेत् ।
 'पलायते च तन्मत्री'^{११} शिवस्य वचन यथा ॥२१॥
 गजाश्ववृषभोलूकमहिषोरगकुक्कुटम्^{१२} ।
 तच्चूर्णं धूपयोगेन सर्वं तूणजलादिकम् ॥२२॥
 म्रियते सप्तराश्रेण स्वेदजाण्डजपिज(ड)जा^{१३} ।
 एतच्चूर्णं वृक्षमूले धूपयेच्च^{१४} कुमारक ॥२२॥
 फलितं पुष्पित वाथ स्थूलवृक्षमयापि वा ।
 'सप्ताहात् शुक्लता'^{१५} याति सिद्धियोगः कुमारकः ॥२४॥

१. रा. गृहे । २. रा. मण्डल तु ग्रहस्तोपि । ३. रा कटक । ४. रा. पर-
 पुष्टिपक्ष । ५. रा. भोमवारस्य वासरे । ६. रा. सु । ७. रा. ऽगुह० । ८. रा. मार्जारी-
 रोमबालं च । ९. रा. चूर्णं कृत्वा । १०. रा. धूपवासने शत्रुश्च मूको । ११. रा.
 पलायती वर्णं मूर्ति । १२. रा. ऽकुक्कुटाः । १३. रा. श्वेतजीवचाण्डजापि च । १४.
 रा. ऽत्तु । १५. रा. समाह्वान्युक्कति ।

मृगाणा^१ चैव शत्रूणां खाने पाने प्रयत्नत ।
 बुद्धिनाशो भवेच्छत्रु(त्रो)स्त्रिदिन भक्षणात्^२ सुत ॥२५॥
 प्रजा^३ बुद्धि श्रिय चैव ऐश्वर्यं हरते^४ नृणाम् ।
 एतच्चूर्णप्रयोग^५ च ऋषीणामपि दुर्लभम्^६ ॥२६॥
 चिताभस्म रवौ रात्रौ सग्रहेच्च^७ तदर्भक ।
 अयुत मन्त्रयित्वा तु रिपुमूर्ध्नि विनिक्षिपेत् ॥२७॥
 काकवद् भ्रमते शत्रुर्महि(ही)मामरणान्तिकम् ।
 'शिलामामलक प्रस्थ'^८ सहस्र सग्रहेद् बुध. ॥२८॥
 'अर्कंद्वारे तु सध्याया'^९ मन्त्रेणैकेन मन्त्रय[त्]^{१०} ।
 मजित 'निक्षिपेद् द्वारे(द्वारे)'^{११} दक्षिणाभिमुखेन च ॥२९॥
 नित्य चैव सहस्र तु निक्षिपेद् दशवासरे^{१२} ।
 उच्चाटन भवेच्छत्रोर्नान्यथा शिवभाषणम् ॥३०॥
 धत्तूरपत्रमादाय सहस्र मन्त्रयन्निदि ।
 प्रेतवस्त्रेण सवेष्टय भीमे दातृनिकेतने ॥३१॥
 निक्षिपेद् द्वारदेशे तु मूको भवति तद्रिपु ।
 तन्मार्गं सचरेद् यस्तु तत्सर्वेऽप्यरिमन्दरे^{१३} ॥३२॥
 'खरबाल च रोम च'^{१४} प्रतरञ्जुस्तथैव च ।
 मन्त्रयदयुत^{१५} मन्त्र^{१६} निक्षिपेच्छत्रुमन्दरे ॥३३॥
 पक्षाद वा भासयोगेन् 'स शत्रुर्वाधवे सदा'^{१७} ।
 म्रियते नात्र^{१८} सन्देहो नात्र कार्या विचारणा ॥३४॥
 एतच्च बगलामन्त्रप्रयोग^{१९} भुवि दुर्लभम्^{२०} ।
 गुरुपुत्राय दातव्य^{२१} न दद्याद्^{२२} यस्य कस्यचित् ॥३५॥
 इति श्री^{२३} साख्यायनतन्त्रे घण्टाक्षरीप्रयोग नाम ^{२४} एकत्रिंशत्तल ।

१ रा वितृणा । २ रा भक्षयत् । ३ रा प्रजा । ४ रा हरते । ५ रा प्र-
 योग । ६ दुर्लभः । ७ रा सग्रहेत् । ८ रा घटाग्नूलकेप्रस्थ । ९ रा प्रव-
 काशपित्तस्थायी । १० रा सौ वदेत् । ११ रा. विनिक्षिपे । १२ रा. वासरम् ।
 १३ रा अप्यतिम दधी । १४ रा. खरबालकरोमाणि । १५ १६ रा न्दयुतमंत्र ।
 १७ रा बुद्धिनाशनपूर्वकम् । १८ रा. न च । १९ रा प्रयोग । २० रा.
 दुर्लभ । २१ रा दातव्यो । २२ रा देवो । २३ रा धीवद्विद्यागमे । २४
 रा नास्ति ।

॥ अथ द्वात्रिंशत्पटलः ॥

मन्त्रादौ तव बीजपूर्वकमथ क्लीं ब्लूं म्लूं^१ सौं^२ ग्लौं जप[न्]३,
ताव[द्]ध्यानपराय[णः]^४ प्रतिदिन पीत्ता (ता)क्षमालाघरः ।
साध्याकर्षणवश्यमाशु बगले साध्यस्य शीघ्र भवेत्,
प्रेताढ्यासनपूर्विके^५ विवसने तत्प्रेमभूमौ निशि ॥१॥

श्रीऋषभेदेन उवाच —

नम. पापविद्वुराय नमस्ते चन्द्रशेखर ।
बगला^६ चोपसहारविद्या वद सुपावनी[म्] ॥२॥

ईश्वर उवाच —

ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनो कालो विद्या चास्त्रसुपावनी^७ ।
तस्यास्त्रस्मरणादेव^८ बगला शान्तिमाप्नुयात् ॥३॥
तद्विद्या च प्रवक्ष्यामि शान्ती^९ तच्छृणु^{१०} वप्सुख ।
उच्चरेच्छक्तिवाराह वाराह^{११} तदनन्तरम् ॥४॥
षाण्डीज च ततो(यो)च्चार्य भुवनेशो^{१२} ततः परम् ।
महामाया^{१३} ततो(यो)च्चार्य धोवीज तदनन्तरम् ॥५॥
कालीशब्दद्वय^{१४} चोक्त्वा (क्त्वा) महाकालोपद^{१५} वदेत् ।
एहि शब्दद्वय चोक्त्वा कालरात्रो(न्नि)पद वदेत् ॥६॥
स्फुरद्वय समुच्चार्यं प्रस्फुरद्वितय^{१६} लिखेत्^{१७} ॥७॥
स्तभनास्त्रपद चोक्त्वा क्षमनीपदमुच्चरेत् ।
हुं फट् स्वाहा-समायुक्त मन्त्रमेव समुद्धरेत्^{१८} ॥८॥
पचाशद्दूध्व मन्त्रस्य^{१९} वर्णत्रयविभूषितम्^{२०} ।
ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनोकालीमन्त्रमेतन्न सद्यः ॥९॥
पलाशमूलमाश्रित्य लक्षमेक जपे[त्]स्मयः^{२१} ।
तर्पयेत्तद्दशाशेन^{२२} कर्पूरमिश्रित जलैः^{२३} ॥१०॥

१. रा. नास्ति । २ रा. सौ । ३ रा. जपे । ४. रा. परायण । ५ रा. प्रेताढ्यासन० । ६. रा. बगला । ७ रा. चास्त्रे सु । ८. तस्य स्मरणमात्रेण । ९ क. सा-जं । १०. रा. च शृणु । ११. रा. हुद्धार । १२. रा. भुवनेश । १३. रा. मम माया । १४. रा. कालि० । १५ रा. महाकालि० । १६ रा महाशोहद्वय । १७. रा. वदेत् । १८. रा. समुच्चरेत् । १९. रा मन्त्रसु । २०. रा. नवकेन विभूषित. । २१. रा. जपेन्नरः । २२. षट्दशांशय च । २३. रा. जलम् ।

पलाशपुष्पैर्जुहुयाच्चतुरस्रे च कुण्डले(के) ।
 ब्राह्मणान् भोजयेत् पुत्र^१ सहस्र शतमेव वा ॥११॥
 मन्त्रसिद्धिमवाप्नोति देवता च प्रसीदति ।
 ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोऽथ(स्य) गायत्री समुदाहृतम्^२ ॥१२॥
 देवता कालिका नाम^३ स्तम्भनास्त्रविभेदिनी^४ ।
 ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ॥१३॥
 काली करालवदना कलाधरधरा^५ शिवाम् ।
 स्तम्भनास्त्रैकसहारी ज्ञानमुद्रासमन्विताम्^६ ॥१४॥
 वीणापुस्तकसयुक्ता कालरात्रि नमाम्यहम् ।
 बगलास्त्रोपसहारीदेवता^७ विश्वतोमुखीम्^८ ॥१५॥
 भजेऽहं कालिका देवी जगद्वशकरा^९ शिवाम् ।
 एव ध्यात्वा तु मन्त्रज्ञः प्रजपेच्छुद्धि (द्ध)^{१०} मानसः ॥१६॥
 वक्ष्येऽहं चोपसहारक्रमं लोकोपकारकम्^{११} ।
 जम्बीरफलमादाय मन्त्रयेच्छतमादरात् ॥१७॥
 भक्षयेत् प्रातरुत्थाय निद्रान्ते च कुमारक ।
 एव चार्कदिनं कृत्वा जिह्वास्तम्भादिकृत्त्रिमम् ॥१७॥
 सद्यो नर्मा(मं)ल्यमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा ।
 रथी द्येतेवचा^{१२} ग्राह्य मन्त्रयेच्छतमादरात् ॥१८॥
 प्रातःकाले भक्षयित्वा त्रिसहस्रं मनं जपेत् ।
 वाच^{१३} मुखं पदं चैव 'जिह्वा बुद्धीन्द्रियाणि च'^{१४} ॥२०॥
 स्तम्भित मन्त्रयोगेन तत्सर्वं शान्तिमाप्नुयात् ।
 ताम्रपात्रे समादाय नदीजलमकल्मषम्^{१५} ॥२१॥
 शतवारं मन्त्रयित्वा प्राशयेच्छान्तिमाप्नुयात्^{१६} ।
 गोमूत्रं चैव सगृह्य मन्त्रयेच्छतमादरात् ॥२२॥

१. रा. पक्ष्मात् । २. रा. समुदाहृतः । ३. रा. नाम्नी । ४. रा. स्तम्भना-
स्त्रविभेदिनी । ५. रा. कलाधारधरी ।

६. रा. स्तम्भनास्त्रैकसहारी वंदेह भद्रकालिकाम् ॥१४॥

स्तम्भनास्त्रोपसहारि ज्ञानमुद्रासमन्वितम्(ताम्) ।

७. रा. बगलास्त्रोपसहारी विश्वतो । ८. रा. देवतामुखी । ९. रा. जाह्नववदनी ।
 १०. रा. शिष्टि । ११. रा. लोकोपकारकम् । १२. रा. द्येतेवचा । १३. रा. वाचा ।
 १४. रा. जिह्वाबुद्ध्यादिकान्यपि । १५. रा. दलोवाङ्मिदं नास्ति । १६. रा. तु पश्चात् ।

एवं कृत्वा जपेन्मन्त्रं^१ उन्माद^२ शान्तिमाप्नुयात् ।
 मन्त्रयेदारनालं च प्रातः प्रातः पिवेन्नरः ॥२३॥
 मण्डलज्वररोगं च नाशमाप्नोति निश्चितम् ।
 'घण्टोत्तरं मन्त्रयित्वा धारोलंब'^३ पिवेन्नरः ॥२४॥
 गर्भस्तभनदोषं च मण्डलाच्छान्तिमाप्नुयात्^४ ।
 मस्म च मन्त्रयेत्^५ प्रातः त्रिसप्त त्रिशतेन^६ वा ॥२५॥
 तत्रेण^७ सहितं पीत्वा त्रिसहस्रं दिने दिने ।
 वगलामन्त्रयोगेन एतत्प्राणसमुद्भवः^८ ॥२६॥
 नाशयेदाशु तत्सर्वं तुलराशिमिवानलः ।
 यक्षधूप^९ समानीता^{१०} मन्त्रयेच्छतमादरात् ॥२७॥
 धूपयेत्तेन सर्वाङ्गं दशरात्र कुमारक ।
 यक्षधूपोद्भव^{११} चैव प्रयोग चैव^{१२} कृत्विमम् ॥२८॥
 तत्क्षयान्नाशमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ।
 रवौ ब्राह्मी समाशय छायाशुष्क समाचरेत्^{१३} ॥२९॥
 मन्त्रयेत् त्रिसहस्रं तु मक्षयेत् प्रातरेव च ।
 एतद्विद्या जपेन्नित्यं त्रिसहस्रं कुमारक ॥३०॥
 वगलास्त्रकृत^{१४} यद्यत् प्रयोग दुर्लभम् भुवि ।
 तत्सर्वं नाशमाप्नोति मास मण्डलमात्रतः ॥३१॥
 ब्राह्मीरस समादाय मन्त्रयेच्छतधा पुनः ।
 शंकरासहित पीत्वा सहस्रं जपमाचरेत् ॥३२॥
 नानाकृत्विमदोषं च वगलामन्त्रतः^{१५} कृतम् ।
 भ्रमद्भ्रत्यो [६] भव नाथ^{१६} भूतले यदि^{१७} दुर्लभम् ॥३३॥

१. रा. तु पन्नासं । २. रा. उन्मादः । ३. रा. घण्टोत्तराद्यत मन्त्र धारोप्यु च ।
 ४. रा. मण्डलान्नाशमा० । ५. रा. मन्त्रयन् । ६. रा. सप्तमेव । ७. रा. मन्त्रेण ।
 ८. रा. यद्यद्गणसमुद्भवम् । ९. रा. यक्षधूपं । १०. रा. समानीय । ११. रा. वृक्षधु-
 पोद्भव । १२. रा. नाथ । १३. रा. समाहरेत् । १४. रा. वगलाविकृत । १५.
 रा. गर्भे वा मन्त्रित । १६. रा. नाथ । १७. रा. यत् ।

मण्डलान्नाशमाप्नोति तम सूर्योदये यथा ।
 एतद्विद्या साम्प्रदाय^१ गुरुन्तान्^२ लब्धमन्त्रवान् ॥३४॥
 लक्षमेक जपेन्मन्त्री^३ प्रयोग नाशमाप्नुयात् ।
 अशक्तश्च स्वय पुत्र 'कुर्वते ब्राह्मणामपि'^४ ॥३५॥
 द्विगुणा जपमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा ।
 एतद्विद्या सम्प्रदाय वद्वये ब्राह्मणानपि ॥३६॥^५
 द्विगुण जपमानेण सर्वशान्तिमवाप्नुयात् ।
 एतद्विद्या विना पुत्र कलौ च बगलामुखि (खी) ॥३७॥
 प्रयोगशान्तिन^६ भवे[न्] मन्त्रमन्त्रीपधादिभि ।
 सप्तकोटिमहामन्त्रप्रयोगेषु च पुत्रक ॥३८॥
 एतद्विद्यापुरश्चर्या नाशयेदाशु^७ निश्चयम्^८ ॥
 नम श्रीक्षुलिकादेव्यै कालरा ये नमो नम ॥३९॥^९
 उपसहाररूपिण्यै देव्यै नित्य नमो नम^{१०} ॥४०॥

इति षोडशविद्यागमे साख्यायनतन्त्रे 'प्रयोगसहार नाम'^{११} द्वात्रिंशत्पटल ॥

॥ अथ त्रयस्त्रिंशत्पटल ॥

पीनोत्तुङ्गजटाकलापविलसद्भू लेन्दुसञ्छेखराम्,^{१२}
 विभ्राणा शितशास्तकुम्भमुकुटा^{१३} (ट)नेत्रत्रयालङ्कृताम् ।
 शब्दब्रह्ममयी त्रिलोकजननीं शक्तिं परां साम्भवोम,
 देवीश्रीबगला सुरासुरवरैरभ्यर्चिता भावयेत्^{१४} ॥१॥

कोञ्चभेदन उवाच—

नम शिवाय साम्बाय ब्रह्मणेऽनन्तमूत्तये ।
 वद मे चोपसहार यत्र लोकोपकारकम् ॥२॥

१. रा समादाय । २ रा गुरुतो । ३ रा मन्त्र । ४ रा प्राययेदब्राह्मणानपि । ५ रा पद्यमिदं नास्ति । ६ षोडशान्ति न । ७ ष नागयेदणु । ८ ष निश्चय । ९ रा पद्यादमिदं नास्ति । १० रा पद्यादमिदं नास्ति । ११ रा नास्त्ययमशः । १२ रा 'द्वाले'दुः । १३ रा सितः । १४ ष श्रीबगला ब्रह्मास्त्रवीसुरनरीरभ्यर्चितामाश्रये ।

ईश्वर उवाच—

कपिलानवनीतं च कदलीपत्रमध्यतः^१ ।
 लिप्त्वा^२ मंत्रं^३ लिखेत्तत्र 'कृत्वा पूजा'^४ च सायकः ॥३॥
 षट्कोणं चाष्टकोणं च वृत्तं भूपुरमेव च ।
 षट्कोणकर्णिकायां व(च)पट् बीजानि मनोर्लिखेत् ॥४॥
 शिष्टाक्षराणि कोणेषु ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनीमनुः ।
 षष्टपत्रे लिखेन्मंत्रं ताक्ष्यंमालामनुस्तथा ॥५॥ A
 कोऽयंस्ताक्ष्यंमनुश्चेति वक्ष्येऽहं मन्त्रनायकम् ।
 B आद्यवर्णं समुच्चार्यं ताक्ष्यंबीजं ततः परम् ॥६॥
 ॐ नमो पदमुच्चार्यं पश्चाद् भगवते पदम् ।
 ताक्ष्यंबीजं पक्षिराजायोक्त्वा ताक्ष्यं ततः परम् ॥७॥
 सर्वेशब्दं ततो (थो) च्चार्यं अभिचारपदं वदेत् ।
 ध्वसकाय पदं क्षीमो ह्ये पट् स्वाहा-समन्वितम् ॥८॥ B
 ताक्ष्यस्य मालामन्त्रश्च द्वात्रिंशद्वर्णसंयुतम् ।
 षष्टपत्रे वेदवेदवर्णान् पूर्वादितो लिखेत् ॥९॥^२

१. रा. कदलीपत्राङ्के तथा । २-३. घ. लिप्य मत्र । ४. रा. पत्रमध्ये ।

A-A चिह्नान्तर्गतं शेष्याने रा० पुस्तके निम्नांश एवोपलभ्यते—

षट्कोणमध्ये बिलिखेद्ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनीमनुः ।
 षष्टपत्रे लिखेन्मन्त्रं ताक्ष्यंमालामनुस्तथा ॥

B-B चिह्नान्तर्गतं शेष्याने रा० पुस्तके निम्नाद्धृतः पाठभेदो दृश्यते—

अन्त्यवर्णं समुच्चार्यं चतुर्थंस्वरपूर्वकम् ॥४॥
 बिन्दुना भूयित् पुत्रं ताक्ष्यं एकाक्षरी तथा ॥
 ॐकारबीजमुच्चार्यं ताक्ष्यंबीजं ततः परम् ॥
 ॐ नमो पदमुच्चार्यं ततो भगवते पदम् ।
 पक्षिराजा उच्चार्यं अभिचारपदं वदेत् ॥
 ध्वसकाय पदं चोक्त्वा ह्ये पट् स्वाहासमन्वितम् ॥६॥

मन्त्रः—ॐ क्षीं नमो भगवते पक्षिराजाय अभिचारादिसकलकुरितमन्त्रस्वसकाय ह्ये पट् स्वाहा ॥

५. दलोकशेषस्य रा० पुस्तके निम्नांश पाठभेदः—

मालामन्त्रं ताक्ष्यंविद्यां पट्बिलिखेत्संयुता ॥
 षष्टपत्रे लिखेत्तत्र प्रादक्षिण्यक्रमेण तु ॥७॥

प्राणप्रतिष्ठा यत्रस्य^१ घ्राद्यवृत्ते लिखेत् सुत ।
 तदुपरि लिखेद् वणान्^२ पञ्चाशत्लिखितयुतान्^३ ॥१०॥
 पाशाङ्कुशं च विलिखेद् भूपुरेषु यथाक्रमम् ।
 अष्टकोणे लिखेद् वर्णान्^४ वज्रान्ते वर्मं फट् तथा ॥११॥
 एवं लिखित्वा यत्रं च पूजयेन्मानसेन तु ।
 एव कृत्वा तु तत्सर्वं नवनीत कुमारक ॥१२॥^५
 भक्षयेद् बदरीमात्र साय प्रातस्तु बुद्धिमान् ।
 देवतावेशमतुल मन्त्रयन्त्रादिकृत्त्रिमैः^६ ॥१३॥
 शल्यदारुमय 'तत्र प्रयोगं बगलाश्च यत्'^७ ।
 नाशयेन्मण्डलादेव शि [व] स्य वचन यथा ॥१४॥
 एतद्यत्र हृदि ध्यायेद् दुःखकाले सुबुद्धिमान् ।
 दशरात्राद् व्यपोहत्तु(ति) दारुणैरपि^८ कृत्त्रिमैः^९ ॥१५॥
 रोप्ये वा स्वर्णपट्टे वा लिखेद् यत्रमिम बुधः^{१०} ।
 पूजयेद् रक्तपुष्पेण^{११} षोडशंरूपचारकैः ॥१६॥
 कण्ठे वा वाहूमूले वा शिखाया वा कुमारक ।
 बधयित्वा चार्वाभचार नाशमाप्नोति निश्चतम्^{१२} ॥१७॥
 नागवल्लीदलेनेव^{१३} एतद्यत्र कुमारक ।
 चूर्णेन विलिखेत् सम्यक् पूर्वं ताम्बूलचर्वणम् ॥१८॥
 एव कुर्यात् प्रातरेव तद्वत् साय समाचरेत् ।
 मासत्रय^{१४} चरेदेव कृत्त्रिम हरते नृणाम् ॥१९॥^{१५}
 कुर्यात् कृत्त्रिमरोगेण पीडिताय कुमारक ।
 तत्कार्द्वंगोरव चैव लाघव चावलोकयेत् ॥२०॥^{१६}
 पक्ष वाय त्रिसप्ताह^{१७} मास वा मण्डल तथा ।
 यथा 'याधित्रियुक्त'^{१८} च तावत्काल कुमारक ॥२१॥

१. रा. मन्त्र तु । २. रा. वणं । ३. रा. षट्षण्णयुतम् । ४. रा. वज्र । ५.
 श्लोकोय रा. पुस्तके नास्ति । ६. रा. कृत्त्रिमः । ७. '—' रा. यत्र बगलायोग-
 मात्रतः । ८. रा. दारुणानपि । ९. रा. कृत्त्रिमान् । १०. रा. बुधैः । ११.
 रा. रक्तपुष्पेस्तु । १२. रा. निश्चयात् । १३. रा. चैव । १४. रा. मासमात्रं ।
 १५. रा. पुस्तकेऽतः परं विशेषोऽयं श्लोको हृषयते—

स्तम्भनाशत्रोपसहार मन्त्रेण च कुमारक ।

माजंनं बिल्वपत्रेण घ्राशोहादवरोहकम् ॥१७॥

१६. रा. लोकरयन् । १७. रा. त्रिसप्ताय । १८. रा. ध्याधिविमुक्त ।

अनेन(नया)विद्यया पुत्र मार्जनेन मुनिसमतम्^१ ।
 अथवा मन्त्रित तोय^२ सद्यः कृत्स्नमनाशनम् ॥२२॥
 भूपुर वृत्तयुग्म च तन्मध्ये च कुमारक ।
 पञ्चकोण लिखेत् सम्यक् तन्मध्ये चन्द्रमण्डलम् ॥२३॥
 इन्द्रमध्ये^३ लिखेद् विद्या कृत्स्नमघ्नी^४ च कालिकाम् ।
 मनुरेव लिखेत् सम्यक् स्पष्टवर्णन^५ सयुतम् ॥२४॥
 पञ्चकोणे^६ लिखेन्मन्त्र^७ पञ्च ब्रह्माख्यमेव च ।
 द्वाद्यपत्रे लिखेन्मन्त्र^८ प्राणस्थापनक तथा ॥२५॥
 द्वितीये विलिखेत् सम्यक् पञ्चाशद्वर्णमादरात् ।
 पाशाङ्कु शक्ति लिखेद् भूपुरेषु चपथाक्रमम् ॥२६॥
 एतद्यन्त्र लिखेद् भूये कसूयी(स्तूयी) क्रौञ्चभेदन ।
 यन्त्रे^९ प्राणान्^{१०} प्रतिष्ठाप्य पञ्च ब्रह्ममनुं जपेत् ॥२७॥
 त्रिसहस्रं सहस्रं वा त्रिशत शतमेव च ।
 ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चाद् वित्ताशाठघ न कारयेत् ॥२८॥
 तद्यत्रधारणादेव कृत्स्नमादिरनेकशः^{११} ।
 तत्क्षणात्प्राशमाप्नोति जेवेद्^{१२} वर्षशत तथा ॥२९॥
 एतद्यन्त्र^{१३} हृदि ध्यात्वा मानसेनैव पूजयेत् ।
 त्रिसप्तदिनमात्रेण नानाकृत्स्नमनाशनम् ॥३०॥
 ताम्रपात्रे जल ग्राह्य श्रीसूक्तेनैव मन्त्रयेत् ।
 शत वादशत वाथ त्रिसप्तमय पुत्रक ॥३१॥
 तुलसीमञ्जरोभिश्च नार्जयेद् रोगपीडितः^{१४} ।
 भारोहादवरोहेण ऋचान्ते मार्जनेन तथा ॥३२॥
 त्रिकालभेककाल वा मार्जयेद् ध्यानपूर्वकम् ।
 त्रिमोष^{१५} च यद्रोग नाशमाप्नोति निश्चितम् ॥३३॥
 श्रीसूक्तेनैव जिह्वायां मार्जयेत् तुलसीदलैः ।
 त्रिसप्त^{१६} प्रातहत्याय जिह्वास्त[भ]नशान्तिकृत् ॥३४॥

१. रा. मुनिसदृशम् । २. रा तोयं । ३. रा चन्द्रमध्ये । ४. रा. कृत्स्नमघ्ने ।
 ५. रा. स्पष्टवर्णेण । ६. रा. पञ्चवर्णेण । ७-८. रा. मन्त्रैः । ९. रा. वर्णैः ।
 १०. प्राण । ११. अनेकशः । १२. प. जपेद् । १३. रा. एवं यत्र । १४. रा. रोग-
 पीडिते । १५. कृत्स्नमोष (य) । १६. रा. त्रिसहस्रं ।

गोक्षीर प्रातरुत्थाय श्रीसूक्तनेव मत्रयत् ।
 दशवार' ध्यानपूर्वं तत्क्षीर प्राशयन्नर.'^१ ॥३५॥
 कौटिल्यस्थापन चंघ माजयन्मूलविद्यया ।
 पुत्तल्यादिप्रयोग च नाशमाप्नोति निश्चितम् ॥३६॥
 ताम्रपान जल शुद्ध मत्रयदकसूयया ।
 तज्जलप्राशनादेव बुद्धिभ्रंशो^२ विनश्यति ॥३७॥
 उष्णोदक ताम्रपात्र त्रिसप्तमभिमत्रयत ।
 नानागूल च हृद्रोग नाशमाप्नोति पुत्रक ॥३८॥
 इति धीपद्मविद्यागमे^३ स्तभनास्त्रोपसहार^४ नाम त्रयस्त्रिंशत्पटल ।

॥ अथ चतुस्त्रिंश पटल ॥

विश्वेश्वरी विश्ववन्द्या विश्वानन्द स्वरूपिणी ।
 पीतवस्त्रादिसन्तुष्टा^५ पीतद्रुमनिवासिनी ॥१॥^६

श्रीऋभेदेन उवाच

विश्वाराध्य भवानोश विश्वोत्पत्तिविधायक^७ ।
 ब्रूहि मे कृपया तात सकलागमकोविद'^८ ॥२॥

ईश्वर उवाच—

समस्तकम्मणा^९ ध्वसे सर्वोपद्रवनाशने ।
 जातिस्तम्भे मन स्तम्भे क्रूरकमनिवारणे^{१०} ॥३॥
 अष्टवेतालशमने सबभरवनाशने^{११} ।
 मातृणा शान्तिजनक स्तम्भन जलरक्षसाम् ॥४॥
 'देवदानवर्दत्पारोन्'(रि)शमने भ्रमनाशने^{१२} ।
 समस्तोपद्रवध्वसे पूतनादिविनाशने^{१३} ॥५॥

१ रा पूर्ववत्क्षीर प्राशयन्नर तत्पर । २ रा बुद्धिभ्रंशो । ३ रा पुस्तके
 'सांख्यायनतत्र' इत्यधिक पाठ । ४ रा उपसहारप्रयोग । ५ रा पीतवस्त्राय० ।
 ६ स पुस्तके—

ईश्वरी विश्ववद्या च विश्वान तररूपिणी ।
 पीतवस्तुदय तुष्टा पीत हृदयनिवागिनीम् ॥

७ स ०गुणाकर । रा ०कुमारक । ८ स रा पद्याद्ध मिद नास्ति । ९ स समस्ते० ।
 १० स परकृत्यानिवारणे । ११ रा सबभयविनाशिनी । १२ स देवदानवदत्या-
 दिशमनोऽत्र विनाशने । १३ स पूतनादिविचारणे ।

कपटादिविनाशार्थे^१ प्राप्ते प्राणस्य सङ्कटे ।
 विशम्भनुविनाशार्थे^२ षट्त्रिंशद्भोगनाशने^३ ॥६॥
 सूत्रिप्रयोगविध्वसे महाशस्त्रास्त्रपातने ।
 गतिस्तम्भे^४ मतिस्तम्भे^५ सूर्याग्निस्तम्भनेषु^६ च ॥७॥
 नानारोगविनाशार्थं नानाक्लेशनिवारणे ।
 रणे राजकुले शान्ती^७ प्रयोगनाशनेऽपि च ॥८॥
 परप्रयोगविध्वसे परकृत्यानिवारणे ।
 कृत्यावेशस्तम्भनेऽप्य^८ प्रयोग पण्मुखाचरे^९ ॥९॥
 अनेन योगव्येण सर्वदोषनिवारणम् ।
 शृणु पण्मुख तद्योग सर्वयोगोत्तमोत्तमम् ॥१०॥
 'पीताचरणभूपी च पीतवस्त्रद्वयान्वितः'^{१०} ।
 पीतयज्ञोपवीतरतु महापीताश (स)ने^{११} स्थितः^{१२} ॥११॥
 'ज्वालामुख्यभिध बाण त्रिशतं प्रजपेत् सुत'^{१३} ।
 'हरिद्राक्षर्मणि पीत'^{१४} सर्वकार्यं जपादिकम् ॥१२॥
 वडवानलनामानं बाणमादौ जपेच्छतम् ।
 उल्कामुख्यभिध^{१५} बाण द्विशतं प्रजपेत् सुत ॥१३॥
 ज्वालामुख्यभिधं बाण त्रिशतं प्रजपेत् नरः^{१६} ।
 जातवेदमुखीबाण 'वेदसख्याशत'^{१७} सुत ॥१४॥
 वृहद्भानुमुखीबाणं जपेत् पञ्चशतं सुत ।
 'य एकादि'^{१८} महाविद्या कुल्लुकादिसमन्विताम्^{१९} ॥१५॥
 नेत्रलक्ष जपेन्मन्त्र क्रूरकर्मादिनाशने^{२०} ।
 हरिद्रायां^{२१} चरेद्भौ (ढो)म काम्य गौरवमिच्छति ॥१६॥

- १ छ. कुरपहविनाशार्थे । २. छ. विघ्ननिष्ठ विनाशार्थे । ३. छ. षट्त्रिंशद्वाण० ।
 ४. छ. मणिस्तम्भे । ५. छ. रतिस्तम्भे । ६. छ. ०स्तम्भनेऽपि । ७. छ. शान्ती ।
 ८. छ. कृत्याविष० । ९. छ. पण्मुखाचरः । १०. पण्मुखाचरेत् ।
 ११. छ. '—' छ. पीताभासभूप इया पीतवस्त्रद्वयान्वितः ।
 १२. छ. महापीतासुनि । १३. छ. सुत । १४. '—' मयमशो घ. रा. पुस्तकयो नस्ति ।
 १५. छ. हरिद्राक्षेण मणिना । १६. प. उल्कामुखाभिधं । १७. छ. सुत । रा. ततः ।
 १८. छ. सप्तवे सप्तमेत् । १९. छ. एकादशो । २०. प. क्रूरकर्मादि० । २१. छ. क्रूरकर्मादि० । रा. क्रूरकर्मादि० । २२. छ. हरिद्रया ।

उत्कामुखीद्वितीयास्त्रं 'स्तम्भनं भुवनत्रये' १ ।
 ज्वालामुखीतृतीयास्त्रं स्तम्भनं ऋषिदेवतं ॥२८॥
 जातवेदमुखीवाणो ब्रह्मविष्णवादिरक्षणे २ ।
 'सर्वकर्मस्तम्भने च' ३ चतुर्थं प्रजपेत् सुत ॥२९॥
 बृहद्भ्रानुमुखीवाणं ४ पञ्चमं ५ परिकीर्तितम् ६ ।
 पटपञ्चकोटिचामुण्डा कालीकोटिशतं सुत ॥३०॥
 सपादकोटिप्रपुरा पञ्चाशत्कोटिभैरवाः ।
 नारसिंहा यातुधानाः पूतनाः कोटिचेटकाः ७ ॥३१॥
 समस्तस्तम्भनं पुत्र पञ्चमेन प्रजायते ।
 हस्ते सम्पाद्य ८ 'पञ्चास्त्रं शासनास्त्रं' ९ स्मरेन्मुखे ॥३२॥
 स कल्पमुखभागी १० स्यान्नात्र कार्या विचारणा ।
 श्रैलोक्यविजयाख्यं च स्मरेदस्त्रेन्द्रमुत्तमम् ॥३३॥
 यथोक्तकुण्डेषु हुनेद् वेदिकायां विशेषतः ।
 चुल्त्यां शकट्या प्रेताग्नी पञ्चस्थाने हुनेदपि ॥३४॥
 चत्वरे सर्वकार्याथं होमयेदुक्तमार्गतः ।
 'सकृच्चं स्रुक्स्रुचो चैव तद्वशिव (वि)श्च इति क्रमात्' ११ ॥३५॥
 प्रणि (णी)ता प्रोक्षणीपात्रमाज्यस्थाली च पण्मुख १२ ।
 सकलं १३ पूर्णपात्र च 'ब्रह्मचर्येण योगतः' १४ ॥३६॥
 क्रमात् सर्वं तु सम्पाद्य होमं कुर्यात् प्रयत्नतः १५ ।
 'क्रूरकर्माणि नश्यन्ति' १६ तालकेन हुनेत् सुत ॥३७॥
 पीतपुष्पंश्च जुहुयात् क्रूरकर्मविनाशने १७ ।
 'क्रूरतर्पणयोगेन क्रूरविघ्ननिवारणम्' १८ ॥३८॥

१. '-' स. त्रितेकीस्तम्भने जपेत् । २. ब्रह्मविद्या० । ३. स. सर्वकर्मणस्तम्भने ।
 रा. सर्वकर्माणि स्तम्भने च । ४. स. ०वाणः । ५. स. पञ्चमः । ६. स. परि-
 कीर्तितः । ७. स. षट्पूतनाः । रा. ०पूतनाः । ८. स. सधायं । ९. '-' स. चापास्त्रं
 प्रसिशास्त्रं । १०. स. कल्पमुखभागी । रा. संकल्पमुखिभोगः । ११. '-' स. -
 समिस्कुवा स्रुक्स्रुचो च त्विष्मावर्हीति च त्रमात् । १२. स. सम्पुखाः । १३. स. कलयं ।
 १४. स. ब्रह्मचर्यो तु जापकः । रा. ब्रह्माचार्येण योगकः । १५. स. प्रयोगवित् । १६. स. रा.
 क्रूरकर्माणिनिरासि । १७. स. क्रूरकृत्स्ननाशने । १८. '-' स. -पीठेन तर्पयेदेव क्रूर-
 ग्रहनिवारणम् । रा. क्रूरे तर्पणया देवी० ।

इति सक्षेत्रतः पूर्वं^१ किमन्य^२ श्रातुमिच्छसि ।

इति श्रौषड्विद्यागमे साह्यायनतन्त्रे चतुस्त्रिंशत्पटल^३ ॥३४॥

॥ अथ पञ्चत्रिंशः पटलः ॥

योषिदाकर्षणासत्ता^४ फुलचम्पकसन्निभाम्^५ ।

दुष्टस्नम्भनमासवना^६ वगला स्तम्भिनी भजे ॥१॥

क्रोञ्चनेदन उवाच—

नमस्ते सर्गसर्वेश कर्पूरद्युतिसन्निभ^७ ।

योगिन्^८ सर्वादिसर्वज्ञ बीजभेद वद प्रभो ॥२॥

ईश्वर उवाच—

अथात सम्प्रवक्ष्यामि वगलामन्त्रनिर्णयम् ।

पट्टिप्रसदन्नरो विद्या त्रिपुरे चैव तिष्ठति^९ ॥३॥

साह्यायनमते देव्या^{१०} नारायण^{११} ऋषि स्मृत^{१२} ।

'गायत्रीछन्द उद्दिष्ट देवता वगलाह्वया'^{१३} ॥४॥

साह्यायनमते देवि वामाचारविधिमेत ।

ब्रह्मयामत्रसम्भत्या ब्रह्मा चास्य ऋषि स्मृत ॥५॥^{१४}

'गायत्री छन्द आदिष्ट देवता सैव कीर्तिता'^{१५} ।

'जयद्रथाह्वयामले तु'^{१६} ऋषिर्नारद एव हि ॥६॥

छन्दादिक्र पूरवत् स्यादिति सक्षपती मतम् ।

हारिद्रसहिताया तु ऋषिर्नारायणो मत ॥७॥

अनुष्टुप्छन्द आह्वयात्^{१७} देवता वगलामुखी ।

साह्यायनमत देवी(वि)कली जागति^{१८} केवलम् ॥८॥

मृत्युञ्जयजप कृत्वा ततो विद्या जपेन् सुत^{१९} ।

मृत्युञ्जय विना देवो 'वगला महि सिद्धयति'^{२०} ॥९॥

१ छ. प्रोक्त । २ छ किमन्य । ३ छ द्वात्रिंशत्(एकत्रिंशत्)पटल ॥३२॥

४ घ ०सवती । ५ छ लम्-चम्पक० । ६ छ ०स्तम्भनासवती । ७ रा कर्पूर-

शवल ० । ८ छ योगी । ९ '—' छ त्रिधा च परि तिष्ठता । रा ०पैत्र तिष्ठि ।

१० छ देवी । ११ छ नारदोऽप्य । १२ छ मत । १३ '—' त —अनुष्टुप्छन्द

आह्वयात् देवता वगलाह्वया । रा ०देवता सैव कीर्तिता । १४ पद्यमिद प पुस्तके नास्ति ।

१५ घ पुस्तके नास्ति पद्यादभिदम् । १६ छ जयद्रथाह्वयामले । रा जयद्रथामले

तु । १७ छ त्रिष्टुप् छन्द समाह्वयात् । १८ छ जागति । १९ छ सुतो । २०

'—' घ पुस्तके नास्ति ।

ऋषिच्छन्दत्रितयक मतभेदात् प्रदर्शितम् ।
 बीजसज्ञा प्रवक्ष्यामि^१ साख्यायनमुखोद्भवा^२ ॥१०॥
 शिवबीज^३ वह्नियुक्तं रतिबिन्दुसमन्वितम् ।
 'वह्निशिवान्तराले तु'^४ भूबीजं योजयेत्(पेत्) सुत^५ ॥११॥
 स्थिरमाया इति^६ प्रोक्ता विद्या त्वेकाक्षरी शुभा ।
 घनया विद्यया देवि किञ्च सिद्धयति भूतले ॥१२॥
 पीतवासामते पुन^७ स्थिरमाया शृणु प्रिये ।
 'स्थिरमायासमायुक्तं स्थिर बीजमितोरितम्'^८ ॥१३॥
 तदुद्धार शृणु प्राज्ञ^९ गगनार्द्ध^{१०} समुद्धरेत् ।
 स्थिरबीजं समुद्धृत्य रतिबिन्दुसमन्वितम्^{११} ॥१४॥
 स्थिरमाया 'द्वितीया तु इन्द्रस्त चन्द्रभूपितम्'^{१२} ।
 'इयं शप्ता'^{१३} महाविद्या कीलिता^{१४} स्तम्भिता शिवे^{१५} ॥१५॥
 रेफयोगान्महेशानि^{१६} निश्शप्ता^{१७} फलदायिनो ।
 रेफयुक्ता जपेद्विद्या 'फलसिद्धिर्न सशयः'^{१८} ॥१६॥
 रेफहीना जपेद्विद्या कोटिजाप्य^{१९} न सिद्धयति ।
 'तस्माद्देफेण समुक्त'^{२०} स्थिरदा^{२१} परमेश्वरि ॥१७॥
 सजपेच्च 'च ततः पुत्र'^{२२} तस्य सिद्धिर्भविष्यति ।
 लघुषोढा महाषोढा पञ्जर न्यासमेव हि ॥१८॥
 वगलामातृकान्यास^{२३} 'कुल्लुका च विचिन्त्य वै'^{२४} ।
 सेत्वादिकाभराजान्त^{२५} न्यासमृग्युञ्जय^{२६} जपेत् ॥१९॥

१. '—' चिह्नस्पोड्यो प. पुस्तके नास्ति । २. प. रा समुद्भवात् । ३. ख. जीव-
 बीजं । ४. ख. वह्निर्नसंवा० । रा. वह्निः नः शि० । ५. ख. शिवे । ६. ख. त्विय । ७.
 ख. देवि । ८. ख.—स्थिररूपा तु या माया स्थिरमाया तु सा मता ।

रा. स्थिररूपा तु मायाया स्थिरमाया समायतु ।

९. ख. प्राज्ञे । १०. ख. रा. गगनार्धं । ११. ख. •विभूपितम् । १२. ख. शिव्यं
 देवि बिगुद्धं चन्द्रभूपिता । १३. प. रा. इमं सभा । १४. ख. रा. कलिता । १५. प.
 रा. सुत । १६. प. रा. महा संब । १७. प. रा. निश्चमाक् । १८. ख. रेफहीनां
 न सजपेत् । १९. ख. •जाप्ये । २०. ख. तस्माद्देफ तु संयोग्य । रा. तस्माद्देफस्तु
 समुक्तं । २१. ख. स्थिराया । २२. ख. प्रयतो देवि । रा. स जपे शतः पुत्र । २३.
 ख. •मातृका न्यस्य । २४. प. रा. सद्दाचरितं तदा । २५. प. सत्वादि० । २६.
 प. रा. न्यस्य ।

ततो वै प्रजपेद्विद्या सदा जाग्रत्स्वरूपिणीम् ।
 पीतवासामते देवि^३ पञ्चप्रेतगता^४ स्मरेत् ॥२०॥
 चतुर्भुजा वा द्विभुजा पीतार्णवनिवासिनीम् ।
 सुधाणवसमासीना मणिमण्डपमध्यगाम् ॥२१॥
 साध्यायनमते देवि^५ संमरेद् यत्नतः शिवे^६ ।
 सुन्दर्याः पश्चिमान्नाये बगला परितिष्ठति^७ ॥२२॥
 श्रीकाल्यामु(उ)त्तराम्नाये बगला पूज्यता सुत ।

इति षड्विद्यायमे साध्यायनतन्त्रे पञ्चत्रिंशत्पटल * ॥३५॥

॥ अथ षट् त्रशः पटलः ॥

योगिनीकोटिसहिता पीताहारोपचञ्चलाम्^८ ।
 बगला परमा वन्दे^९ परब्रह्मस्वरूपिणीम् ॥१॥

ब्रौह्मभेदन उवाच-

चिदानन्दघनावास^{१०} 'वरमन्य च मा वद'^{११} ।
 सर्वतीत परेशान 'सर्वभूतहिते रत'^{१२} ॥२॥

ईश्वर उवाच-

अथ 'स्कन्द प्रवक्ष्यामि'^{१३} 'सर्वकर्माणि नाशनम्'^{१४} ।
 किं केन 'तामस प्राप्त'^{१५} किं केन शान्तिकारणम्^{१६} ॥३॥

कारण तत्र केन स्यात् तत्सर्वं कथ्यते शृणु ।
 घ्रादो मन्त्र जपेत् पुत्र त्रिसहस्रमर्तिस्रतः ॥४॥

ततः कवचमालम्ब्य^{१७} पुनर्मन्त्र जपेत् तथा^{१८} ।
 षट्त्रिंशद्द्वारमावर्त्य^{१९} पुरश्चरणमुक्ष्यते ॥५॥

सर्वकर्माणि निर्नासे^{२०} योगोऽथ परिकीर्तितः ।
 अनुलोमविलोमेन द्वितीयो योग ईरितः ॥६॥

१. घ. रा. पुत्र । २. घ. मती । ३. घ. रा. इचरेत् । ४. घ. रा. पुत्र । ५. घ. रा. सुत । ६. ख. परिनिष्ठिता । रा. परितिष्ठताम् । ७. ख. त्रिंशत् (द्वान्त्रिंशत्) पटलः । ८. घ. पीताहारोपि० । रा. पीतहारो० । ९. घ. रा. देवी । १०. ख. भवनस्वामिन् । ११. ख. सारमन्य-महेश्वर । रा. सारमन्य च मा वद । १२. ख. सर्वभूतहिताम्बर । १३. ख. दण्डमुख मन्त्रामि । १४. ख. सर्वकर्माणानाशनम् । १५. ख. रा. नाम सम्प्राप्तं । १६. ख. कारकम् । १७. घ. रा. मारम्य । १८. घ. रा. तत । १९. घ. रा. षड्विंशद्द्वारमावृत्या । २०. ख. सर्वकर्माणनिर्नासे ।

त्रिंशत् च शतं चापि अष्टोत्तरसहस्रकम् ।
 अष्टोत्तरशतं वापि कवचं पूर्ववद् भजेत् ॥७॥
 क्षुद्रकर्माणि^१ निनाशि योगोऽयं परिकीर्तितः ।
 अनुलोमविलोमेन योगो वसुविधः स्मृतः ॥८॥
 पट्त्रिंशद्द्वारमावर्त्यं 'भवेदेवं विधिः सुत'^२ ।
 कवचं प्रपठेदादौ मध्ये स्तोत्रं 'तु उच्चरेत्'^३ ॥९॥
 शतावत्तंनमात्रेण 'क्रूरकर्मणनाशनम्'^४ ।
 अनुलोमविलोमेन द्वितीयो योग ईरितः ॥१०॥
 गायत्रौ कवचं पुत्र मन्त्रं स्तोत्रं पुनश्च सा ।
 पट्त्रिंशद्द्वारमावर्त्यं पट्त्रिंशावत्तंनं चरेत् ॥११॥
 धनेन क्रमयोगेन सर्वकर्मविनाशनम्^५ ।
 तारायां कालिकायां च 'द्विध्यायामेवमेव तु'^६ ॥१२॥
 मनुकमेण^७ सर्वत्र कुर्यादावत्तंनं बुधः ।
 मन्त्रमात्रकार्यमेतत्^८ सर्वदोषनिवारणम्^९ ॥१३॥
 कवचं प्रथमं^{१०} बाणः कवचं च द्वितीयकम्^{११} ।
 कवचं च तृतीयं^{१२} स्यात् कवचं च चतुर्थकम्^{१३} ॥१४॥
 कवचं पञ्चमं^{१४} बाणः कवचं प्रपठेत् कृती^{१५} ।
 अनुलोमविलोमेन द्वितीयो योग ईरितः ॥१५॥
 रणस्तम्भे 'सर्वकर्माघ्नाशने मृत्युस्तम्भने'^{१६} ।
 'प्राणरक्षादिभ्यरक्षादेभ्यो रक्षणकर्मणि'^{१७} ॥१६॥
 योगोऽयं कथितः पुत्र वगलामन्त्र ईरितः^{१८} ।
 शताक्षरीं जपेदादौ कवचं हृदयं तथा ॥१७॥

J. M. W. F. L. T. I. A.
 21, Shanti Niketan,
 Anushakti Nagar,
 Bombay-400 094

१. घ. रा. भवेत् । २. घ. रा. क्षुद्रकर्माणि । ३. ख. भवेदेकं पुनस्तया । रा. भवेदेकं ।
 ४. ख. पुनश्च तत् । ५. घ. रा. क्रूरकर्मणि० । ६. ख. सर्वकर्मणनाशनम् । ७.
 घ. रा. चिन्मयामेव एव च । ८. ख. मनुकमेण । ९. ख. मन्त्रगात्रो० । १०. ख.
 विनाशनम् । ११. ख. पञ्चमो । १२. ख. द्वितीयकः । १३. ख. तृतीयः । १४.
 ख. चतुर्थकः । १५. ख. रा. पञ्चमो । १६. घ. रा. ततः । १७. ख. मनस्तम्भे
 सर्वकर्मणनाशने । १८. '—'ख.—

मृत्युस्तम्भे प्राणरक्षादिभ्यरक्षणकर्मणि ।

१९. ख. काल्यादी मन्त्रवोपतः । रा. कल्यादो० ।

कवच वेदवर्णं च कवच चन्द्रवर्णकम्^१ ।
 अनेन क्रमयोगेन योग कमणनाशन^२ ॥१८॥
 'एकाक्षरी जपदादो'^३ कवच प्रपठद् यतः^४ ।
 वेदाक्षरी जपदादो कवच प्रपठेत्तथा ॥१९॥
 वेदाक्षरी^५ ततो जाप्य कवच तदनन्तरम् ।
 पट्त्रिंशदक्षरी जाप्य कवच तदनन्तरम् ॥२०॥
 वेदाक्षरीमनुपुर^६ कवच प्रथम तथा ।
 'कवच च द्वितीय स्यात् कवच च तृतीयक'^७ ॥२१॥
 'कवच च चतुर्थं स्यात् कवच पञ्चमस्तथा'^८ ।
 कवच हृदय^९ वाच कवच शतवणकम् ॥२२॥
 'कवचात् कीलन योग त्रिलोच्यरक्षणाकर'^{१०} ।
 अनेन क्रमयोगेन त्रैलोक्यस्तम्भन भवेत्^{११} ॥२३॥
 इन्द्रादिपदसस्तम्भ समुद्रस्तम्भनेऽपि^{१२} च ।
 'महाविद्यास्तम्भन च सत्य ब्रह्मास्त्रस्तम्भनम'^{१३} ॥२४॥
 'महापाशुपतादीनां स्तम्भने'^{१४} मृत्युपातने ।
 महाब्रह्मास्त्रयोगो हि^{१५} गोपनीय प्रयत्नत ॥२५॥

इति षड्विंशतः सांख्यायनतः ३ ईश्वरपञ्चसुखसंवादे महाविषयप्रयोग
 कथन नाम^{१६} पट्त्रिंशत्पटल^{१७} ।

॥ अथ पञ्चत्रिंशत् पटलः ॥

पोतवणसमासीना पोतगन्तानुलेपनाम् ।
 पोतोपहाररसिका भजे पीताम्बरा पराम् ॥१॥

श्लोचभवन उवाच-

स्वामिन् सिद्धगु(ग)णाध्यक्ष समस्तगणपारग ।
 रहस्य सूचित पूर्वं किन्न मह्य प्रदर्शितम् ॥२॥

१ ख षडवणक । २ घ रा योगकर्माणि नाशन । ३ घ जपेदादो कवच
 ४ ख तथा । ५ घ वेदाक्षरी । ६ ख पञ्चवचत्वारिंशत्मनु । रा चत्वारिंशत् मनुपुर
 ७ घ '—' चिह्न नस्याद्यद्वयो घ. पुस्तके नास्ति । ८ ख हृदया । ९ ख —

कवचात्कीलन मनु प्राणत्रैलोक्यरक्षणा ।

११ ख क्षणात् १२ घ ०स्तम्भनेति । १३ अयमशो नास्ति ख पुस्तके । १४
 ख महापाशुपतास्त्रादिपातने । १५ घ रा पि । १६ घ रा नास्त्ययमश । १७
 ख चतुस्त्रिंशत् (त्रिंशत्) पटल

ईश्वर उवाच—

तत्त्व वद महादेव यदि पुत्रोऽस्मि ते वद ।
 रहस्यातिरहस्यं च कथ्यते शृणु पुत्रक ॥३॥
 अमात्याना च दुष्टाना दूषकाना दुरात्मनाम् ।
 क्षुद्रप्रहादिज्जातीना संन्यानामपि पुत्रक ॥४॥
 क्रूरप्रह्विनाशाय सर्वशान्त्यर्थमेव च ।
 पराभिवारशान्त्यर्थं रक्षार्थं च विशेषतः ॥५॥
 अथमृष्ट्युविनाशार्थं रोगशान्त्यर्थमेव च ।
 परसेनाविनाशाय स्वसेनारक्षणाय च ॥६॥
 घातार्थं च परार्थं च विजयार्थं च यणमुक्त ।
 वेतालाश्च विनाशार्थं भैरवादिप्रशान्तये ॥७॥
 सप्तस्तविपनिर्नाशे मुष्टिकुक्षिविधावपि ।
 शस्त्रास्त्रबाणसंधाने सहारास्त्रादिनाशने ॥८॥
 शस्त्रास्त्रस्तम्भने पुत्र तद्वच्छिवि(व)विधावपि ।
 स्तब्धीकरणनिर्नाशे(र्णाशे) मृतकोत्थापनेऽपि च ॥९॥
 देशोपद्रवनाशार्थं राष्ट्रमङ्गलं समागते ।
 कोटिकृत्याविनाशार्थं स्वेष्टरक्षणकर्मणि ॥१०॥
 हृतनष्टप्रणष्टादिवाहगानेयजातिषु ।
 पत्रपुष्पफलं शाखाजटास्वक्सीरनीरके ॥११॥
 महाविषे तंजसे तु विष्णुशिविजरकृते ।
 उद्भ्रान्तधूलिनाशार्थं घटकृत्याविनाशने ॥१२॥
 जलकृत्याविनाशार्थं स्थलकृत्याविनाशने ।
 वृक्षकृत्यानाशार्थं गन्धकृत्याविधावपी(वि) ॥१३॥
 महेश्वरपदनिर्नाशे विरूडानाशनेऽपि च
 भेरूडनाशार्थं च रिक्तधावेद्यभैरवे ॥१४॥
 सप्तस्तम्भे दाहनाशे मन्त्रमण्डलरोगहृत् ।
 सप्तब्रह्मास्त्रयोगोऽयं सर्वथा चलति ध्रुवम् ॥१५॥
 अथोषमृष्ट्युनाशाय समश्चयंकमाय (प)दि ।
 त प्रयोगमहायोग शृणु सावहितो भव ॥१६॥

कुण्डे वा स्थण्डिले वेद्या चत्वरे पितृकानने ।
 चुल्या सकटया(शकट्या)वा देवि होतव्य सर्वकर्मणि ॥१७॥
 शुभ्रऋक्षादियोगे तु प्रयोगमादरे(त्)सुत ।
 स्वस्तिवाचनमासाद्य द्विजाना वरण चरेत् ॥१८॥
 वगलास्त्र मध्यमागे करे निष्ठुरवधनम् ।
 पञ्चास्त्र दक्ष(क्षि)णाशे च मूलास्त्रं होमकर्मणि ॥१९॥
 त्रैलोक्यविजयास्त्रं च स्मरेदस्त्रेन्द्रमुत्तमम् ।
 निष्ठुराश्चालयेदेव दीपकास्त्रं प्रयोजयेत् ॥२०॥
 पूर्वभागे तु पञ्चास्त्रमुत्तरे मुण्डमुत्तमम् ।
 महोग्रविजय दक्षे विजयास्त्र प्रयोजितम् ॥२१॥
 हेलावर्क चदला तूर्या तथा पञ्चाङ्गुली प्रिया ।
 पश्चिमे कीर्त्तिता विद्या वधद्वयपुरस्सरम् ॥२२॥
 आदौ गणपति पूज्य द्वारपूजादिस्युतम् ।
 विप्राणा वरण कृत्वा वगलादीपमाचरेत् ॥२३॥
 मण्डले वगलादीपो(प) कवचे मूलदीपकः ।
 पीताशा(शी) पीतवस्त्राढ्या(ढ्यः) पीतयज्ञोपवीतवान् ॥२४॥
 पीताशनो पीतभक्षो पीतशय्यापरायणः ।
 हरिद्राक्षेण मणिना सर्वं कार्यं जपादिकम् ॥२५॥
 हरिद्राभिः सुरक्षाभिः रोचनापूतमिश्रितैः ।
 बिल्वप्रसूनैर्जुं हुयात् सर्वोत्पातनिवारणम् ॥२६॥
 अथवा पीतपुष्पैस्तु हरिद्रामधुयोजनम् ।
 हरिद्रया दरिद्राणि नश्यन्त्येव न शशयः ॥२७॥
 अनेन योगच(व)र्षेण सर्वोत्पातनिवारणम् ।
 पीताभरणभूषाढ्य (ढ्य) पीतशालानिवासकृत् ॥२८॥
 शतमटोत्तरशत त्रिंशत च सहस्रकम् ।
 त्रिसहस्र पञ्च तथा दिग्बिंशत्यादिरेव च ॥२९॥
 पञ्चत्रिंशच्च पञ्चाशत् सहस्र लक्षमानकम् ।
 लक्षोपरि महेशानि न होमोर्गस्त महोत्तले ॥३०॥
 सुन्दर्या कालिकाया च वैदिके कोटिमात्रकम् ।
 होमस्य तु दशाशेन तर्पण माज्जन तथा ॥३१॥

सुरया तर्पणं पुत्र तेन माज्जर्जनमाचरेत् ।
 अभिषेको विप्रभोज्य साङ्गयोग प्रसिद्धघति ॥३२॥
 नात्. परत्तरो योगो विद्यते भुवि मण्डले ।
 सर्वकर्मविनाशार्थं विपनाशार्थमद्भुतम् ॥३३॥
 गोपनीय गोपनीय गोपनीय प्रयत्नतः ।
 रहस्यातिरहस्य च रहस्यातिरहस्यकम् ॥३४॥
 इति सक्षेपतः प्रोक्तं लोपयेद्दक्षिणादिना ।
 प्रयोगस्योपसंहार (र) कर्त्तव्यं सिद्धिमिच्छता ॥३५॥
 इति पञ्चत्रिंशत्पटले साहस्यपनतन्त्रे
 पञ्चत्रिंशत् (चतुस्त्रिंशत्) पटल ॥३५॥

ॐ

परिशिष्टम्—(क)

ऋष्यादि-पातध्यानाद्युताः

॥ सांख्यायनतन्त्रगता मन्त्राः ॥

१. एकाक्षरीवगलामन्त्रः— ह्री ।

ॐ अस्य श्रीवगलामुख्येकाक्षरीमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दः श्रीवगलामुखी देवता लं बीज, ह्री शक्ति, ई^१ कीलक श्रीवगलामुखीदेवताम्बा-प्रसादसिद्धार्थे जपे विनियोग ।

ऋष्यादिन्यासः— ब्रह्मर्षये नम शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, श्रीवगलामुखीदेवतायै नमो हृदि लं बीजाय नमो गुह्ये, ह्री शक्तये नमः पादयोः, रं कीलकाय नम सर्वाङ्गे ।

परन्यासः—ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट् ॐ ह्रूं अनामिकाभ्यां हुम्, ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वीषट्, ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयान्यासः—ॐ ह्रीं हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं गिरने स्वाहा, ॐ ह्रूं शिखायै वषट्, ॐ ह्रूं कवचाय हुम्, ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वीषट्, ॐ ह्रः भस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—वादी मूकति रङ्गति क्षितिपतिर्येऽगारः गीतति,
क्रोधी शान्तति दुर्जनं सुचनति क्षिप्रानुगः खड्गति ।
ग रीं खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रिणा यन्त्रितः,
श्रीनित्ये वगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥
[पञ्चमः पटल — पृष्ठ—१२, १३]

२. श्रीवगलाष्टत्रिंशदक्षरीविद्यामन्त्रः—ॐ ह्रौं वगलामुखि सर्वदुष्टानां धात्रे मुरा पद स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं चिनागय ह्री ॐ स्वाहा ।

ॐ अस्य श्रीवगलामुखीषट्त्रिंशदक्षरीविद्यामहामन्त्रस्य श्रीनारदऋषिः, बृहतीछन्दः,^२ श्रीवगलामुखीदेवता, लं बीज, ह्री शक्ति, ई^३ कीलक, श्रीवगलामुखीदेवताप्रसादसिद्धार्थे जपे विनियोगः ।

१. 'रं' इत्यम्यत्र । २. 'चतुःशुद्धम्' इत्यम्यत्र इत्यन्ते । ३. 'रं' इत्यम्यत्र ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीनारदपंथे नमः शिरसि, वृहतीछन्दसे नमो मुखे,
श्रीबगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, लं बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः,
इं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठान्यां नमः, ॐ ह्रीं वगलामुखि तर्जनीभ्यां
स्वाहा, ॐ ह्रीं सर्वदुष्टाना मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्रीं वाच मुख पद स्तम्भये
अनामिकाभ्यां हुं, ॐ ह्रीं जिह्वा कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वीषट्, ॐ ह्रीं बुद्धि
विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादिन्यासः—ॐ ह्रीं हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं वगलामुखि शिरसे
स्वाहा, ॐ ह्रीं सर्वदुष्टाना शिखायै वषट्, ॐ ह्रीं वाच मुख पदं स्तम्भय
कवचाय हुं, ॐ ह्रीं जिह्वा कीलय नेत्रत्रयाय वीषट्, ॐ ह्रीं बुद्धि विनाशय
ह्रीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—चतुर्भुजा त्रिनयना कमलासनसंस्थिताम् ।

त्रिशूल पानपात्र च गदा जिह्वा च विभ्रतीम् ॥

विम्बोष्ठौ कम्बुकण्ठी च समपीनपयोधराम् ।

पीताम्बरा मदाधूणी ध्यायेद् ब्रह्मास्त्रदेवताम् ॥

[सप्तम. पटलः—पृष्ठ-१६-१७]

३. श्रीबगलामुखीगायत्रीमन्त्रः—ॐ ह्रीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भन-
चाणाय धीमहि तन्नो वगला प्रचोदयात् ।

ॐ अस्य श्रीबगलागायत्रीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, ब्रह्मास्त्र-
बगलादेवता, ॐ बीज, ह्रीं^१ शक्तिः, विद्महे कीलक, श्रीबगलामुखीदेवताप्रसाद-
सिद्धये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीब्रह्मपंथे नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे,
श्रीब्रह्मास्त्रबगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, ॐ बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः
पादयोः, विद्महे कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ ह्रीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे अङ्गुष्ठान्यां नमः, स्तम्भनवाणाय
धीमहि तर्जनीभ्यां स्वाहा, तन्नो वगला प्रचोदयात् मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्रीं
ब्रह्मास्त्राय विद्महे अनामिकाभ्यां हुम्, स्तम्भनवाणाय धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां वीषट्,
तन्नो वगला प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादिन्यासः—ॐ ह्रीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे हृदयाय नमः, स्तम्भनवाणाय धीमहि शिरसे स्वाहा, तन्नो वगला प्रचोदयात् शिखायै वषट्, ॐ ह्रीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे कवचाय हुम्, स्तम्भनवाणाय धीमहि नेत्रत्रयाय वौषट्, तन्नो वगला प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ।

ध्यान पूर्ववत् ।

[द्वादश. पटल.—पृष्ठ-२६]

४ पञ्चपञ्चाक्षरौ वगलामुखीपञ्चाक्षमन्त्र.—ॐ ह्रीं हूँ ग्लौ वगला-
मुखि ह्रीं ह्रीं ह्लृ सर्वदुष्टानां हलं ह्रीं ह्रः वाच मुख पद स्तम्भय स्तम्भय
ह्रः ह्रीं हलं जिह्वा कीलय ह्रूं ह्रीं ह्रीं बुद्धि विनाशय ग्लौ है ह्रीं ॐ
स्वाहा ।^१

ॐ अस्य श्रीवगलामुखीपञ्चाक्षमहामन्त्रस्य वनिष्ठश्रुतिः, पङ्क्तिरुच्चन्द्र,
रणस्तम्भनकारिणी वगलामुखीदेवता, लं बीज, ह्रीं शक्ति, र कीलक श्रीवगला-
मुखीदेवताभ्याप्रसादसिद्धधर्मे जपे विनियोग ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीनारदश्रुतपदे नमः शिरसि श्रीवगलामुखीदेवतायै नमो
हृदये, लं बीजाय नमो गुह्ये, हं शक्तये नम पादयो ईं कीलकाय नम सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठान्या नम, ॐ ह्रीं वगलामुखि तर्जनीन्या
स्वाहा, ॐ ह्रीं सर्वदुष्टानां मध्यमान्या वषट्, ॐ ह्रीं वाच मुख पद स्तम्भय
ग्रनामिकान्या हुम्, ॐ ह्रीं जिह्वा कीलय वनिष्ठिकान्या वौषट्, ॐ ह्रीं बुद्धि
विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठान्या फट् । एव हृदयादिन्यासः ।

ध्यानम्—पीताम्बरधरा देवी द्विसहस्रभुजान्विताम् ।

सान्द्रजिह्वा गदा चास्य धारयन्ती शिवा भजेत् ॥

[पञ्चदश पटल—पृष्ठ ३८-३९]

५ अष्टपञ्चाक्षर उल्कामुख्यमन्त्र —ॐ ह्रीं ग्लौ वगलामुखि ॐ ह्रीं
ग्लौ सर्वदुष्टानां ॐ ह्रीं ग्लौ वाच मुख पद ॐ ह्रीं ग्लौ स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्रीं
ग्लौ जिह्वा कीलय ॐ ह्रीं ग्लौ बुद्धि विनाशय ॐ ह्रीं ग्लौ ह्रीं ॐ स्वाहा ।^१

१. "ॐ ह्रीं है ग्लौ वगलामुखि ह्रीं ह्रीं ह्रं सर्वदुष्टानां ह्रं ह्रीं ह्रं वाच मुख पद
स्तम्भय ह्रं ह्रं ह्रं जिह्वा कीलय ह्रं ह्रीं ह्रीं बुद्धि विनाशय ह्रीं ह्रीं ह्रं ग्लौ है
ह्रीं ॐ स्वाहा" इत्येकविधो मन्त्रोऽप्यन्यत्र दृश्यते ।

२ "ॐ ह्रीं ग्लौ वगलामुखि सर्वदुष्टानां ॐ ह्रीं ग्लौ वाच मुख पद ॐ ह्रीं ग्लौ स्तम्भय
स्तम्भय ॐ ह्रीं ग्लौ जिह्वा कीलय कीलय ॐ ह्रीं ग्लौ बुद्धि नाशय नाशय ॐ ह्रीं ग्लौ
स्वाहा" इत्यपि मन्त्रभेदे दृश्यतेऽन्यत्र ।

ॐ अस्य श्रीउल्कामुख्यस्त्रमन्त्रस्य श्रीअग्निवराह^१ ऋषिः, ककुप्^२ छन्दः,
श्रीउल्कामुखी देवता, ह्रीं बीज, स्वाहा शक्तिः, ग्लौं कीलक, जगत्स्तम्भनकारिणी
श्रीउल्कामुखीदेवताम्वाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीवराहर्षये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे,
श्रीउल्कामुखीदेवतायं नमो हृदि, ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये, स्वाहाशक्तये नमः
पादयोः, ग्लौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

मूलमन्त्रवत्करपङ्क्त्यासाः ।

ध्यानम्—विलयानलसकाशा वीरा वेदसमन्विताम् ।

विराग्मयी महादेवी स्तम्भनार्थं भजाम्यहम् ॥

[पञ्चदश. पटलः—पृष्ठ-३६]

६. षष्टिवर्णात्मक. श्रीजातवेदमुख्यस्त्रमन्त्र.—ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ वगला-
मुक्ति सर्वदुष्टानां ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ वाच मुख पद स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ॐ जिह्वा कीलय ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ बुद्धि नाशय नाशय ॐ ह्रीं ह्रीं
ॐ स्वाहा ।^३

ॐ अस्य श्रीजातवेदमुख्यस्त्रमन्त्रस्य श्रीकालाग्निरुद्र ऋषिः, पक्तिश्छन्दः,
श्रीजातवेदमुखी देवता, ॐ बीज, ह्रीं^४ शक्ति, ह्रीं कीलकम्, मम श्रीजातवेद-
मुखीदेवताम्वाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीकालाग्निरुद्रर्षये नमः शिरसि, पक्तिश्छन्दसे नमो
मुखे, श्रीजातवेदमुखीदेवतायं नमो हृदये, ॐ बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं^५ शक्तये
नमः पादयोः, ह्रीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

मूलमन्त्रवत्करपङ्क्त्यासाः—

ध्यानम्—जातवेदमुखी देवी देवता प्राणरूपिणीम् ।

भजेऽहं स्तम्भनार्थं च स्तम्भिनी^६ विदधरूपिणीम् ॥

[षोडशः पटलः—पृष्ठ-४०-४१]

१. 'यजवाराह' इत्यपि पाठः । २. 'अनुष्टुप्' इत्यप्यत्र ।

३. मन्त्रोऽयं सूत्रानुसारेण तु षष्टिवर्णात्मको जायते किमर्थमयं निम्नोद्धतरीत्या इत्यपे
षष्टिवर्णः—

“ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं वगलामुक्ति सर्वदुष्टानां ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय
स्तम्भय ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ जिह्वां कीलय ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ बुद्धिं नाशय नाशय ॐ ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ॐ स्वाहा ॥

४. 'ह्रीं' इत्यपि पाठः । ५. चिन्मयोमिति पाठः षडपि ।

ॐ अस्य श्रीवृहद्भानुमुख्यस्त्रमन्त्रस्य श्रीसविता ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीवृहद्भानुमुखी देवता, ह्रीं बीज, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलक, श्रीवृहद्भानुमुखी-देवताम्बाप्रसादसिद्धार्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्री सवित्युपये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, श्रीवृहद्भानुमुखीदेवतायै नमो हृदये, ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, ॐ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

मूलमन्त्रवरकरपङ्क्त्यासाः ।

ध्यानम्—कालानलनिभा देवी ज्वलत्पुञ्जशिरोरुहाम् ।

कोटिबाहुसमायुक्ता वैरिजिह्वासमन्विताम् ॥१॥

स्तम्भनास्त्रमयी देवी दृढपीनपयोधराम् ।

मदिरामदसयुक्ता बृहद्भानुमुखी भजे ॥२॥

[सप्तदशः पटलः- पृष्ठ-४२-४३]

६ श्रीवगलामुखीशताक्षरोमहामन्त्रः—ह्रीं ऐं ह्रीं वली श्री ग्लौं ह्रीं वगलामुखि स्फुर स्फुर सर्वदुष्टाना वाच मुख पद स्तम्भय स्तम्भय प्रस्फुर प्रस्फुर विकटाङ्गि घोररूपि जिह्वा कीलय महाभ्रमकारि बुद्धि नाशय विराण्मयि^१ सर्वप्रज्ञामयि प्रज्ञा नाशय उन्मादीकुरु^२ कुरु मनोपहारिणि ह्रीं ग्लौं श्रीं वली ह्रीं ऐं ह्रीं स्वाहा ॥

ॐ अस्य श्रीवगलामुखीशताक्षरोमहामन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, जगत्स्तम्भनकारिणी श्रीवगलामुखी देवता, ह्रीं बीज, ह्रीं शक्तिः, ऐं कीलकं, जगत्स्तम्भनकारिणी श्रीवगलामुखीदेवताम्बाप्रसादसिद्धार्थे जपे विनियोगः ।

मूलमन्त्रवरकरपङ्क्त्यासाः ।

ध्यानम्—पीताम्बरधरा सीम्या पीतभूषणभूषिताम् ।

स्वर्णसिंहासनस्था च मूले कल्पतरोरधः ॥१॥

वैरिजिह्वाभेदनायं छुरिकां^३ विभ्रती शिवाम् ।

पानपात्र गदा पाश धारयन्ती भजाम्यहम् ॥२॥

(सप्तदशः पटलः- पृष्ठ-४४-४५)

१. 'विराण्मय' इत्यपि पाठः . 'उन्मादं कुरु' इति पाठोऽपि दृश्यते । ३. 'छुरिकां' इति पाठोऽभ्यन्तः ।

१० अष्टाविंशत्युत्तरं कशताक्षर श्रीवगलामुखीपरिच्छाभेदनमन्त्रः^१—ॐ
 ह्री श्री ह्री 'ग्लो' एँ क्ली ह्रौ क्षी^२ वगलामुखि परप्रयोग ग्रस ग्रम ॐ
 ह्री श्री ह्री ग्लो एँ क्लो ह्रौ क्षी ब्रह्मास्त्ररूपिणि परिच्छाग्रसिनि भक्षय
 भक्षय ॐ ह्री श्री ह्री ग्लो एँ क्लो ह्रौ क्षी परप्रजाहारिणि प्रजा भ्रगय
 भ्रगय ॐ ह्री श्री ह्री ग्लो ए क्ली ह्रौ क्षी म्बभनास्त्ररूपिणि वुद्धि
 नाशय नाशय पञ्चेन्द्रिप्रज्ञान भक्ष भक्ष ॐ ह्री श्री ह्री ग्लो ए क्ली ह्रौ क्षी
 वगलामुखि ह्रौ फट् स्वाहा ।^३

ॐ अस्य श्रीपञ्चविद्याभेदिनीवगलामन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषि गायत्रीछन्दः,
 परविद्याभक्षिणी श्रीवगलामुखी देवता श्री वीज, ह्रा शक्ति या कीलक,
 श्रीवगलादेवीप्रसादसिद्धिद्वारा परविद्याभेदनार्थे जपे विनियोग ।

ऋष्यादिन्यास — श्रीवह्मण्यं नम गिरसि, गायत्रीछन्दमे नमो मुने,
 परविद्याभक्षिणीश्रीवगलामुखीदेवतायै नमा हृदये, श्री रीजाय नमा गुह्य, ह्री
 शक्तये नम पादयो, क्रो कीलकाय नम सर्वाङ्गे ।

करन्यास — श्री ह्री क्रो अङ्गुष्ठाम्या नम, वद वद तजनीम्या स्वाहा,
 वाम्बादिनि मध्यमाम्या वपट्, स्वाहा अनामिकाभ्या ह्रौ, ए क्ली सौ कनिष्ठिकाम्या
 वीपट्, ह्री करतलकरपृष्ठाम्या फट् ।

हृदयादिन्यास — श्री ह्री क्रो हृदयाय नम, वद वद गिरमे स्वाहा,
 वाम्बादिनि शिखायै वपट् स्वाहा कवचाय ह्रौ, ए क्ली सौ ननत्रयाय वीपट्, ह्री
 श्रुत्त्राय फट् ।

ध्यानम् — तन्मन्त्रमयी देवी सर्वाकर्षणकारिणीम् ।

सर्वविद्याभक्षिणी च भजऽह विधिपूर्वकम् ॥

[विद्य पटल — पृष्ठ-५४-५५]

११. त्रिचत्वारिंशदक्षरो वगलास्त्रमन्त्र — ॐ^३ ह्री ह्रौ ग्लौ ह्री
 वगलामुखि मम यन्तूम् ग्रस ग्रस खाहि खाहि भक्ष भक्ष शोणित पिव पिव
 वगलामुखि ह्री ग्लौ ह्रौ 'फट् स्वाहा'^४ ।

१ सूत्रानुसारेण वर्णद्वारादय मत्र सप्तविंशोत्तरशताक्षर एव भवति । २ 'ग्लौ ह्रौ ए
 क्ली क्षी' तथा 'यु ए म नीं ह्रौ क्षी' इति पाठनवो वर्णचिह्नदृश्येते ।

३ यद्यपि पुस्तके तु 'ह्रौ' शब्दस्वोरयोगो नावलोक्यते, न चंताहस एव स्याद्वा शब्दव्यवहारस्त-
 थापि शब्दद्वयी श्रुत्यावश्यकौ सभाष्या वणसहयानुपूरकत्वात् ४ ए व पुस्तके 'फट्-
 स्वाहा' स्थाने 'ह्रौ स्वाहा' इति दृश्यते । अत्र पुस्तकेऽप्यय म श्री द्विचत्वारिंशदक्षरात्म-
 क एव गृहीतः किन्त्वसौ ऋष्यादिन्यासे 'फट् कीलक' इति ग्रहणवसाधुरेव प्रतीयते ।

ॐ अस्य श्रीवगलास्त्रमन्त्रस्य श्रीदुर्वासा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, अस्त्र-
रूपिणीश्रीवगलामुखी देवता, ग्लौ बीज, ह्री शक्ति, फट् कीलक श्रीअस्त्र-
रूपिणीवगलाम्बाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीदुर्वाससे ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो
मुखे, अस्त्ररूपिण्यै श्रीवगलादेवतायै नमो हृदये, ग्लौ बीजाय नमो गुह्य, ह्री
शक्तये नमः पादयोः, फट् कीलकाय नमः सर्वाङ्गैः ।

करन्यासः—ॐ ह्री अङ्गुष्ठाम्या नमः, वगलामुखि तर्जनीम्या स्वाहा,
सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वपट्, वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां ह्रौं, जिह्वा
कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वीपट्, बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां
फट् ।

हृदयादिन्यासः—ॐ ह्री हृदयाय नमः, वगलामुखि शिरसे स्वाहा,
सर्वदुष्टानां शिखायै वपट् वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय ह्रौं, जिह्वा कीलय
नेत्रत्रयाय वीपट्, बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—चतुर्भुजा त्रिनयना पीनोत्तपयोधराम् ।

जिह्वा सङ्गं पानपानं 'गदा धारयन्ती पराम्' ॥१॥

पीताम्बरधरा देवी पीतपुष्परत्नङ्कृतान् ।

विम्बोष्ठी चारुवदना मदापूष्णितलोचनाम् ॥२॥

सर्वविद्याकर्षिणी च सर्वप्रज्ञापहारिणीम् ।

भजेऽहं चास्त्रवगला सर्वाकर्षणवर्भुम् ॥३॥

[द्वाविंश पटल — ५४-५६-६०]

१२. श्रीवगलाचतुरक्षरीमन्त्रः—ॐ ध्रीं ह्रीं क्रौं । ॐ अस्य श्रीवगला-
चतुरक्षरीमन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, श्रीवगला देवता, ह्री बीज,
ध्रीं शक्ति, क्रौं कीलक श्रीवगलामुखीदेवताभ्यां प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे,
श्रीवगलादेवतायै नमो हृदये, ह्रीं बीजाय नमो गुह्य या शक्तये नमः पादयोः,
श्री कीलकाय नमः सर्वाङ्गैः ।

करन्यासः—ॐ ह्री अङ्गुष्ठाम्या नमः, ॐ ह्री तर्जनीम्या स्वाहा,
ॐ ह्रौं मध्यमाभ्यां वपट्, ॐ ह्रौं अनामिकाभ्यां ह्रौं ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां
वीपट्, ॐ ह्रौं अस्त्राय फट् ।

हृदयादिन्यासः—ॐ हला हृदयाय नम, ॐ ह्ली शिरसे स्वाहा, ॐ ह्लू शिखायै वषट्, ॐ हलं कवचाय हूं, ॐ ह्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्लः अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—कुटिलाकसयुक्ता मदाधूर्णितलोचनाम् ।
मदिरामोदवदना प्रवालसदृशाधराम् ॥१॥
सुवर्णशैलसुप्रख्यकठिनस्तनमण्डलाम्^१ ।
दक्षिणावर्त्तसन्नाभिसूक्ष्ममध्यमसयुताम् ॥२॥
रम्भोरपादपद्मा ता पीतवस्त्रसमावृताम् ।

[पञ्चविंशः पटलः—पृष्ठ-६७-६८]

१३. अशीत्यक्षरात्मकः धीवगलाहृदयमन्त्र — ॐ^२ आ ह्ली क्रो ग्लौ^३ हूं ऐ वली श्री ह्री वगलामुखि आवेशय आवेशय आ ह्ली क्रो ब्रह्मास्वरूपिणि एहि एहि आ ह्ली क्रो मम हृदये आवाहय आवाहय सन्निधिं^४ कुरु कुरु आ ह्ली क्रो मम हृदये चिर तिष्ठ तिष्ठ आ ह्ली क्रो हूं फट् स्वाहा ।

अस्य मनस्य ऋष्यादिन्यास-ध्यानादयो नैवोल्लिखिताः पुस्तके ।

[अष्टाविंशः पटलः—पृष्ठ-७७-७८]

१४. धीवगलाष्टाक्षरात्मको मन्त्रः— ॐ आ ह्ली क्रो हूं फट् स्वाहा ।
ॐ अस्य धीवगलाष्टाक्षरात्मकमन्त्रस्य धीव्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, धीवगलामुखी देवता, ॐ बीज, ह्रीं शक्ति, क्रो वोलक धीवगलादेवता-म्वाप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—धीव्रह्मपंथे नम शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, धीवगलामुखीदेवतायै नमो हृदि, ॐ बीजाय नमो मुखे, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, क्रो कीलकाय नम सर्वाङ्गे ।

करन्यासः— ॐ हला अङ्गुष्ठाम्ब्या नम, ॐ हली तर्जनीम्ब्या स्वाहा, ॐ ह्लूं मध्यमाभ्या वषट्, ॐ हलं अनामिकाभ्या हूं, ॐ हली कनिष्ठाम्ब्या वौषट्, ॐ ह्ल करतलकरगुष्ठाम्ब्या फट् ।

हृदयादिन्यास — ॐ हला हृदयाय नम, ॐ हलो शिरसे स्वाहा, ॐ ह्लू शिखायै वषट्, ॐ हलं कवचाय हूं, ॐ ह्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ हलः अस्त्राय फट् ।

१. सुवर्णशैलवितसत्० इत्यपि प्वचित् । २. पृष्ठपौद सूत्रे नैव सूत्रित किन्तुनेन विनास्यं मत्र एकोनासोत्पक्षरात्मक स्यादत एवात्र सर्वं कृतम् ३ 'ग्लौ' इति शक्तिवाराहवी-
अस्वाने रा० पुस्तके नुबाराहोज 'ह्लू' इति वत्तने । ४. 'साद्रिष्ट्य'वपीति पाठोऽप्यत्र ।

ध्यानम्—युवती^१ च मदोद्रिक्ता^२ पीताम्बरधरा शिवाम् ।

पीतभूषणभूषाङ्गी समपीनपयोधराम् ॥१॥

मदिरामोदवदना प्रवालसदृशाधराम् ।

‘पानपात्र च शुद्धि च’^३ विभ्रती वगला स्मरेत् ॥२॥

[त्रिशः पटलः-पृष्ठ-८१]

१५. एकोनषष्टिवर्णात्मकः श्रीवगलोपसहारविद्यामन्त्रः—**ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं श्रीं कालि कालि महाकालि एहि एहि कालरात्रि आवेशय आवेशय महामोहे महामोहे स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर स्तम्भनास्त्रशमनि ह्रीं फट् स्वाहा ।**^४

ॐ अस्य श्रीवगलास्त्रोपसहारविद्यामन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, स्तम्भनास्त्रविभेदिनी श्रीकालिका देवता, श्री बीजं, फट् शक्ति, स्वाहा कीलक श्रीवगलाप्रसादसिद्धिद्वारा ब्रह्मास्त्रोपसहारार्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीब्रह्मपंथे नम शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुले, स्तम्भनास्त्रविभेदिनीश्रीकालिकादेवतायै नमो हृदये, श्री बीजाय नमो गुह्ये, फट्शक्तये नमः पादयोः, स्वाहा कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ त्रं अङ्गुष्ठान्या नमः, ॐ क्री तर्जनीन्या स्वाहा, ॐ कूं मध्यमान्यां वपट्, ॐ कें अनामिकान्या ह्रीं, ॐ कौं कनिष्ठिकान्या वीपट्, ॐ क्रः करतलकरपृष्ठान्या फट् ।

हृदयादिन्यासः—ॐ क्रीं हृदयाय नमः, ॐ क्री शिखसे स्वाहा, ॐ कू शिखायै वपट्, ॐ कें कवचाय ह्रीं, ॐ क्री नेत्रत्रयाय वीपट्, ॐ क्रः अक्षाय फट् ।

ध्यानम्—काली करालवदना कलाधरधरा शिवाम् ।

स्तम्भनास्त्रकसहारी ज्ञानमुद्रासमन्विताम् ॥१॥

बीणापुस्तकसयुक्ता कालरात्रि नमाम्यहम् ।

वगलास्त्रोपसहारीदेवता विश्वतोमुखीम् ॥२॥

भजेऽह कालिका देवी जगद्वशकरा शिवाम् ।

[द्वान्त्रिशः पटलः—पृष्ठ—८७-८८]

१. 'श्रीशना' मित्यन्यत्र । २. 'मदोभ्रक्ता' मित्यपि पाठः । ३. 'वंतित्रिह्वं पानपात्र' इति पाठोऽपि दृश्यते । ४. 'कौं' इत्यन्यत्र । ५. एष मन्त्रस्तु रा० पुस्तकपुस्तकशोद्धार-स्वरूपः । पुस्तकसूत्रात्तु निषद्यात्पुस्तकसूत्रात् एष मन्त्रो जायते 'कालरात्रि' पदान्ते आवेशय आवेशय' इति पदद्वयविरहात् ।

पीताम्बरा सहस्राक्षी ललाटे कामितार्थदा ।
 ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रोः [मे]पातु पीताम्बरमुधारिणी ॥५॥
 कर्णयोश्चैव युगपदतिरत्नप्रपूजिता ।
 ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला नासिकां मे गुणाकरा ॥६॥
 पीतपुष्पैः पीतवस्त्रैः पूजिता वेददायिनी ।
 ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला ब्रह्मविष्ण्वादिदेविता ॥७॥
 पीताम्बरा प्रसन्नास्या नेत्रयोर्गुणपद्भ्रुवोः ।
 ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला बलदा पीतवस्त्ररूक् ॥८॥
 अघरोष्ठौ तथा दन्तान् जिह्वा च मुखगा मम ।
 ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला पीताम्बरमुधारिणी ॥९॥
 गले हस्ते तथा बाहौ युगपद्द्विदा सताम् ।
 ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला पीतवस्त्रावृता घना ॥१०॥
 जङ्घाया च तथा चोरी गुल्फयोश्चातिवेगिनी ।
 अनुक्तमपि यत्स्थान त्वक्केशनसलोम मे ॥११॥
 असृग्मास तथास्थीनि सन्धयश्चाति मे परा ।

श्रीशिव उवाच—

इत्येतद्वरद गोप्य कलावपि विशेषतः ॥१२॥
 पञ्जर बगलादेव्या दीर्घदारिद्र्यचनाशनम् ।
 पञ्जर य पठेद्भक्त्या स विभ्रं नोभिभूयते ॥१३॥
 श्रव्याहतगतिश्चापि ब्रह्मविष्ण्वादिसत्पुरे ।
 स्वर्गे मर्त्ये च पाताले नारयस्त कदाचन ॥१४॥
 प्रवाधन्ते नर व्याघ्राः पञ्जरस्य कदाचन ।
 अतो भक्तैः कौलिकैश्च स्वरक्षार्थं सदैव हि ॥१५॥
 पठनीय प्रयत्नेन सर्वानर्थविनाशनम् ।
 महादारिद्र्यघनसर्वमाङ्गल्यवर्द्धनम् ॥१६॥
 विद्याविनयसत्सौख्य महासिद्धिकर परम् ।
 इदं ब्रह्मास्त्रविद्यायाः पञ्जर साधु गोपितम् ॥१७॥
 पठेत् स्मरेद् ध्यानसन्धः स जीयान्मरणं नरः ।
 य पञ्जरं प्रविश्यैव मन्य जपति चं भुवि ॥१८॥

कौलिको वा कौशिको वा व्यासच ३ विचरेद् भुवि ।
चन्द्रसूर्यप्रभुभूँत्त्रा वसेत् कल्पाद्भुत दिवि ॥१६॥

सूत उवाच—

इति वयितमशेष श्रेयसामादिबीज,
भद्रशतदुरितघ्नं ध्वस्तमोहान्धकारम् ।
स्मरणमतिशयेन प्रातरैवात्र मर्त्यो,
यदि विशति सदा य. पञ्जर पण्डित स्यात् ॥२०॥
इति श्रीपरमरहस्यातिरहस्ये श्रीपीताम्बरायः.

वज्रं सम्भूलं ॥

धोप्रसन्नास्तु ॥ श्रीवगलामुखी श्रीयता मिति पोष सुदि १३,
सवत् १६२२ लिखित कारणा दुर्गाबाई इव पुस्तकम् ॥



परिशिष्टम् (ग)

॥ अथ वगलामुखीत्रैलोक्यविजय नाम कवचम् ॥

श्रीभैरव उवाच—

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि स्वरहस्य च कामदम् ।
श्रुत्वा गुप्ततम गोप्य कुरु गुप्त सुरेश्वरि ॥१॥
कवच वगलामुख्या सकलेष्टप्रद कली ।
यत्सर्वं च पर गुह्य गुप्त च शरजन्मन ॥२॥
त्रैलोक्यविजय नाम कवचेश मनोरमम् ।
मन्त्रगर्भं मन्त्ररूपं सवमिद्विबिनायकम् ॥३॥
रहस्य परम ज्ञय साक्षादमृतरूपिणम् ।
ब्रह्मविद्यामयं वर्म दुर्लभं प्राणिना कलौ ॥४॥
पूर्णमेकोनपञ्चाशद्वर्णमन्त्रमयैर्युतम् ।
त्वद्भक्त्या वच्मि देवेशि गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥५॥

श्रीदेव्युवाच—

भगवत् करुणासागर विश्वनाथ सुरेश्वर ।
कर्मणा मनसा वाच्यं न वच्म्यग्निभुवोऽपि च ॥६॥

भैरव उवाच—

त्रैलोक्यविजयाख्यस्य कवचस्यास्य पार्वति ।

मन्त्रगर्भस्य मु(सू?) तस्य ऋषिदेवस्तु भैरव ॥७॥

उत्पिणक् छन्द समारयात्त दवी क्ली (च?) वगलामुखी ।

वीज क्ली श्रो च शक्तिः स्यात् स्वाहा कीलकमुच्यते ॥८॥

विनियोगः समाख्यातस्त्रिवगफलसाधने ।

देवी ध्यात्वा पठेद्गर्भं मन्त्रगर्भं सुरेश्वरि ॥९॥

विना ध्यानेन नो सिद्धिः सत्य जानीहि पार्वति ।

चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजा रिपुरसा मुण्डाक्षमालाकरा,

बाला पीतस्रग्ज्वला मधुमदारक्ता जटाजूटिनीम् ।

शत्रुस्तम्भनकारिणी शशिमुखी पीताम्बरोद्भासिता,

प्रेतस्या वगलामुखी भगवती कारुण्यरूपा भजे ॥१०॥

ॐ क्लीं मम गिरसि पातु देवो हलो वगलामुखी ।

ॐ क्ली पातु मे भाले देवी स्तम्भनकारिणी ॥११॥

ॐ श्रीं ईं ह ध्रुवी पातु वगला क्लेशहारिणी ।

ॐ ह क्ष पातु मे नेत्रे नारसिंही शुभङ्करी ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीं पातु मे जङ्घे श्रं श्रा इ मुखनेश्वरी ।

ॐ क्लीं स मे श्रुती पातु ईं उ ऊ ऋ मुखेश्वरी ॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं सदाव्याम्भे नासा ऋ लृ सरस्वती ।

ॐ ह्रीं ह्रीं मे मुख पातु लृ ए ए छिन्नमस्तका ॥१४॥

ॐ श्रीं मे श्रघरी पातु श्रीं श्रीं दक्षिणकालिका ।

ॐ ह्रीं ह्रूं मे दत्ता पातु श्रं श्रं मे चद्रकालिका ॥१५॥

ॐ श्रीं श्रीं रसना पातु क स ग घ चरात्मिका ।

ॐ ऐं सीं मे हनौ पातु ङ च छ ज च जानकी ॥१६॥

ॐ श्रीं श्रीं (बली) मे गल पातु ऋ अ ट ठ गणेश्वरी ।

ॐ ह्रीं स्कंधी सदाव्या मे ड ढ ण चं व तोतला ॥१७॥

ॐ ह्रीं मे भुजी पातु त थ द वरवर्णिनी ।

ॐ क्लीं सीं मे रतनी पातु ध न प परमेश्वरी ॥१८॥

- ॐ जू क्रो मे रक्ष वक्ष फ व भ भगवासिनी ।
 ॐ क्रां हा पातु मे कुक्षि म य र चक्रि वल्लभा ॥१६॥
 ॐ श्री ह्रू पातु मे पार्श्वो न व लम्प्रोदरप्रसू ।
 ॐ क्रो ह्रू पातु म नाभि श ग पम्मुखपालिनी ॥२०॥
 ॐ ऐ सौ पातु मे पृष्ठ स ह हाटकरूपिणी ।
 ॐ बली ए पातु मे शिश्न ङ क्ष ह तत्वरूपिणी ॥२१॥
 ॐ बली ह्रू मे कटि पातु पञ्चाशद्वर्णमातृका ।
 ॐ ए बली पातु मे गुह्य अ आ क गुह्यकेश्वरी ॥२२॥
 ॐ श्री ऊरु सदाव्यान्मे इ ई ख रगगामिनी ।
 ॐ जू स पातु मे जानू उ ऊ ग गणवल्लभा ॥२३ ।
 ॐ श्री ह्री पातु मे जङ्घ ऋ ऋ ष च महास्त्रिणी ।
 ॐ श्री स पातु मे गुल्फो लृ लृ ड च च कालिका ॥२४॥
 ॐ ए ह्री पातु मे सन्धी ए ए छ ज जगत्प्रिया ।
 ॐ श्री बली पातु मे पादौ ओ औ भू ज भगादरी ॥२५ ।
 ॐ ह्री मे सबवपु पातु अ अ ह्री त्रिपुरेश्वरी ।
 ॐ श्री पूर्वे सदाव्या मा अ आ ट ठ शिखामुखी ॥२६॥
 ॐ ह्री याम्या सदाव्या मा इ इ ढ ए च तारिणी ।
 ॐ ह्री मा पातु वारण्या ई त थ द च शैश्वरी ॥२७॥
 ॐ य मा पातु वीवेर्या उ ध न प पित्रपिला ।
 ॐ श्री पातु चेशान्या ऊ फ व वैन्दवेश्वरी ॥२८॥
 ॐ श्री मा पातु चाग्नेय्या ऋ भ म य च योगिनी ।
 ॐ ऐ मा पातु नंऋ त्या ऋ र राजेश्वरी सदा ॥२९॥
 ॐ श्री मा पातु वायव्या नृ ल लम्बितकेशिनी ।
 ॐ प्रभाते च मा पातु लृ व वागीश्वरी सदा ॥३०॥
 ॐ मध्याह्ने च मा पातु ए स शङ्करवल्लभा ।
 ॐ ह्री बली श्री पातु मा साय ऐ प सादरी सदा ॥३१॥
 ॐ ह्री निशादौ च मा पातु ओ स सागरसायिनी ।
 ॐ बली निशीथ च मा पातु औ ह हरिहरेश्वरी ॥३२॥

वली ब्राह्मे मा मुहूर्त्तञ्ज्याद ल' त्रिपुरसुन्दरी ।
 विस्मारित च यत्स्थान वज्रित कवचेन तु ॥३३॥
 ह्री तन्मे सकल पातु अ क्ष क्ली वगलामुखी ।
 इतीद कवच गुह्य मन्त्राक्षरमय परम् ॥३४॥
 त्रैलोक्यविजय नाम सर्ववर्णमय स्मृतम् ।
 अत्रकाश्यमदातव्य न श्रोतव्यमवाचकम् ॥३५॥
 दुर्जनायाकुलीनाय दीक्षाहीनाय पार्वति ।
 न दातव्य न दातव्यमित्याज्ञा परमेश्वरि ॥३६॥
 ऋक्षीक्षित उपाध्यायविहीन शक्तिभक्तिमान् ।
 कवचस्यास्य पठनात् साधको दीक्षितो भवेत् ॥३७॥
 कवचेनामिद गोप्य सिद्धविद्यामय परम् ।
 ब्रह्मविद्यामयमिद यथाभीष्टफलप्रदम् ॥३८॥
 न कस्य कथित चैतत् त्रैलोक्यविजयेश्वरी ।
 यस्य स्मरणमात्रेण देवी सद्यो वशीभवेत् ॥३९॥
 पठनाद्वारणाञ्चास्य कवचेनास्य साधक ।
 क्ली विचरते वीरो मया ह्री वगलामुखी ॥४०॥
 इम मन्त्र स्मरन्मन्त्री सन्नम प्रविशद् मया ।
 त्रि. पठेत् कवचेनान्तु युयुत्सु साधकोत्तम ॥४१॥
 शत्रून् कालसमानान् तु जित्वा स्वगृहमेप्सति ।
 भूमि धृत्वा तु कवच मन्त्रगर्भं तु साधक ॥४२॥
 ब्रह्माद्यानमरान् सर्वान् सहसा वशमानयेत् ।
 धृत्वा गले तु कवच साधकस्य महेश्वरि ॥४३॥
 वशमायान्ति सहसा रम्भाद्यप्सरसा गणा ।
 उत्पातेषु च घोरेषु भयेषु विविधेषु च ॥४४॥
 रोगेषु कवचेन च मन्त्रगर्भं पठेन्नर ।
 कर्मणा मनसा वाचा तद्रूप शान्तिमेप्सति ॥४५॥
 श्रोदेव्या वगलामुख्याः कवचेन मया स्मृतम् ।
 त्रैलोक्यविजय नाम पुत्रपौत्रपनप्रदम् ॥४६॥
 ऋणहर्त्तारमेतत्स्यात्लक्ष्मीभोगविवर्द्धनम् ।
 घन्ध्या धारयते कुक्षौ पुत्र पश्यति नान्यथा ॥४७॥

मृतवत्सा च विभृत्याथ कवच वगले सदा ।
 दीर्घायुर्व्याधिहीनस्तु तत्पुत्रस्तु भविष्यति ॥४८॥
 इतीद वगलामुस्या. कवचेश सुदुर्लभम् ।
 प्रैलोक्यविजय नाम न देय यस्य कस्यचित् ॥४९॥
 श्रुलीनाय मूढाय भक्तिहीनाय देहिने ।
 लोभयुक्ताय देवेशि न दातव्य कदाचन ॥५०॥
 शिष्याय भक्तियुक्ताय गुरुभक्तिपराय च ।
 लोभदन्तविहीनाय कवचेश प्रदीयताम् ॥५१॥
 श्रभक्तेभ्यो विपुत्रेभ्यो दत्त्वा कुप्यो भवेन्नरः ।
 फल गृह न चाप्नोति पर च नरक व्रजेत् ॥५२॥
 दीपमुज्ज्वात्य मूलेन पठेद्वर्मदमुत्तमम् ।
 प्राप्ते कन्याकंवारे च राजा तद्गृहमेप्यति ॥५३॥
 मण्डलेशो महेशानि सत्य सत्य न सशयः ।
 इद तु कवचेश तु मया दिव्य नगात्मने ॥५४॥
 पूजनात् पठनाच्चास्य चतुर्वर्गफलप्रदम् ।
 गोप्य गुप्ततर देवि गोपनीय स्वयोनिवत् ॥५५॥

इति हृदयाक्षरे उमामहेश्वरसवादे वगलामुखीप्रैलोक्यविजय नाम ऋचं सम्पूर्णं
 श्रीजगदम्बारणमस्तु । मिति भाषकृष्ण ५ सवत् १९२२ ईव बुर्गायाः ।

परिशिष्टम् (घ)

॥ अथ, श्रीपीताम्बरारत्नावलीस्तोत्रम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीपीताम्बरार्यं नमः ॥

श्रीङ्कारद्वयसम्पुटान्तरपुट मायास्थिराद्वन्दित,
 तन्मध्ये वगलामुखीति विमल सम्बोधन सर्वं च ।
 दुष्टानामथ वाचमानु च मुख^१ सस्तम्भयेत्यक्षर,
 जिह्वा कीलय कीलयेति च^२ लिखेद् बुद्धि तथा नाशय ॥१॥
 श्रद्धास्य सकलार्थसिद्धिजनक पटत्रिसदण्णत्मक-
 श्रोक्त पद्मभुवा हिताय जगता यन्नारदाग्रे पुरा ।

जीवन्मुक्तपदै विभान्ति सुधियो येषां मुखे भासते,
निर्द्वन्द्वामृतसागरेन्दुकिरणाहाराश्चकोरास्तु ते ॥२॥
घोमित्यादिस्वरूप^१ जपति तव शिवे घञ्दन्तन्मात्रगर्भा-^२
वाचो यस्मात् परार्थप्रकटितपटवो वर्णरूपा निरीयुः ।
ब्रह्माद्यैः पञ्चतत्त्वं; परिवृतमनघ चित्प्रबोधाधिगम्य,
दुर्ज्ञेयं योगयुक्तं कथमपि मनसा^३ योगिभिर्गृह्यमाणम् ॥३॥
ह्यो^४ बीज 'हृदि यस्य'^५ भाति विमल लक्ष्मीः स्थिर तद्गृहे,
धैर्यं तस्य कलेबरेऽपि विशते^६ दीर्घायुषो भूतले ।
कल्पान्तेऽपि वृद्धिमेति विमला तद्वशवल्ली परा,^७
शौर्यं स्वर्गंमुपैति तस्य पुरतस्त्वस्यन्ति वादीश्वराः ॥४॥
बद्धं वारिधिमुद्यतो जनकजानाद्योऽपि पीताम्बरे !
त्वा ध्यात्वाऽर्णवशोपणे कृतमतिः सेतुं प्रचक्रे द्रुतम् ।
जित्वा राबणमुग्रशत्रुमवलान् बन्दीन् विमुच्याऽमरान्,
कीर्त्तिं लोकसुखोदया व्यरचयत् कल्पस्थिरामम्बिके ॥५॥
गर्वो ऽवंति रङ्गति क्षितिपतिमू^८कायते वाक्यति-
र्वह्नि शीतति दुर्जनः सुजनते पुण्यायते वासुकि ।
श्रीनित्ये बगले तवाक्षरपदैर्यन्त्रीकृता^९ यन्त्रिणाः,
के के नो निपतन्ति^{१०} सस्तमुकुटाश्चन्द्राकंतुल्या अपि ॥६॥
सावण्यामृतपूरिते तव कृपापाङ्गे निमग्ना नरा
^{११}ब्रह्मेशादिदिगीशध्वन्दमपि ते जानन्ति गुञ्जोपमम् ।
येषां चेतसि सस्थिताऽसि बगले ! ते विश्वरक्षाक्षमाः,
प्रारब्ध दृढयन्ति सत्वरतर विश्वं रविम्रीकृताः ॥७॥
'मुख्यत्व समुपैति ससदि तवाऽपाङ्गावल्लोके नर',
किं तच्चित्रमहो स्वयं प्रभवते सृष्टिस्थितिध्वसने ।
यश्चित्ते तव 'भाति मामक इति'^{१२} त्वदर्शनं यस्य वा,
त सर्वा ह्यणिमादयोऽप्यतितरामाराधयन्ते ध्रुवम् ॥८॥
शीरणाना^{१३} बलदायिनी जलनिधौ 'पोतस्थितौ नाविका',^{१४}
तत्प्राण^{१५} घनकुञ्जगह्वरगिरिबन्धादिभीतेष्वपि^{१६} ।

१. घ. घोमित्याद्य । २. गर्भा । ३. तपसा । ४. नृ । ५. हृदये वि । ६. भजते ।
७. ततिः । ८. ० ये नित्यतो । ९. भद्रगुः । १०. ब्रह्मेशादिदिगीशोत्तमूतमपि ।
११. स. भक्तिपायु कुप्ले । १२. विमानां । १३. पोतस्थितानां गतिः । १४. स्व प्रार्थ ।
१५. ० सत्वेऽपि ।

(वा पीताम्बरधारिणी 'परशिवा चन्द्राद्वंचूडा गदा-'^१
 हस्ता वामकरे^२ प्रतीपरसनामुन्मीलयन्ती^३ भजे ॥६॥
 स्वेच्छ^४ ये प्रणमन्ति पादयुगल पीताम्बरे ! तावक,
 ते वाञ्छाधिकमथंमाप्य सकला सिद्धि भजन्ते पुन ।
 यद्यत्कतुं मुरीकरोति वगले^५ ! स्वत्साधकोऽत्राधुना,
 तत्सञ्जातमिवेक्षते तव कृपाऽशाङ्गावल्लोके क्षणात् ॥१०॥
 वाणी^६ सूक्तिसुधारसद्रवमयी सालङ्कृतिस्तन्मुखे,
 शापानुग्रहकारिणी कविजनानन्दैकसर्वद्विनी ।
 ध्याकतुं क्षमते विशालमतिमास्त्वत्सेवको वाङ्मय,^६
 किं चिन यदि सृष्टिमाणु रचते ब्रह्माण्डकोटघायते^७ ॥११॥
 देवि ! त्वद्भक्तदृष्ट्या तुहिनगिरिमुखा पर्वता पासुतुल्या
 ज्वालामालाश्च चन्द्रामृतकरसदृशा पुष्पना यान्ति नागा ।
 मूकत्व वावपतीन्द्रा सरसि समतुलामाश्रयन्ते समुद्रा
 राजानो रङ्गभाव रणभुवि रिपवो विद्रवन्ते विशखाः ॥१२॥
 लेख्य^८ तावकमन्त्रवीजममल दुष्ट्रौघसस्तम्भन,
 वश्याकर्पणमारणप्रमथनप्रक्षोभणोच्चाटने ।
 ध्यक्त वञ्चमिवापर यदि मुखे जागर्त्ति तस्याग्रत,
 पादान्त परिसञ्चरन्ति रिपवो ये सप्तद्वीपेदवरा ॥१३॥
 नानारत्नविभूषितामलमणिद्वीपे सुधासागरे,
 कल्पानोकहकाननान्तरगता या रत्नवेदी परा ।
 तत्राकारितपञ्चप्रेतकमये सिंहासने सस्थिता,
 ध्यायेऽह करुणाकरा हरिहराराध्यामशेषार्थदाम् ॥१४॥
 वाग्देवी वदने वसत्यविरत नेत्र च लक्ष्मी करे
 दान दीनकृपालुता च हृदये वीरत्वमाजौ सदा ।
 त्वद्भक्तस्य भवाधिपारतरणे तत्त्वोदयो जायते,
 तेनेद नलिनीदलोपरि जलाकार जगद् भासते ॥१५॥
 चञ्चत्काञ्चनतुल्यपीतवसना चन्द्रावतसोज्ज्वला,
 केयूराङ्गदहारकुण्डलधरा भक्तोदयायोद्यताम् ।

१. परचमूविद्रावणोद्यद्गदा । २. वामकरेण । ३. सशूरसना० । ४. स्पृष्ट ।
 ५. मुक्ति० । ६. श्राधुना । ७. षोडशालये । ८. दृष्ट ।

त्वा ध्यायामि चतुर्भुजा त्रिनयनामुग्रारिजिह्वां करे,

कर्पेन्तीमहमम्ब पाहि वगले ! त्राण त्वमेवासि मे ॥१६॥

मातस्ते महिमानमुग्रमधिक प्रोक्त स्वय मानवै—

वाक्य सन्धियते^१ श्रमेण यदि वा शक्त्या गुणाम्भोनिधेः ।
नो निश्शेषतया सुरैरविदितप्रान्तस्य पञ्चालये,

* तस्मात् सर्वगता त्वमेव सदसद्रूपा सदा गीयते ॥१७॥

खञ्ज ताड्यसमोद्यम^२ प्रकृष्टे ताड्यं च खञ्जाधिकं,

वान्त^३ स्तम्भयते जलाग्निशमने याऽप्यक्तशक्तिः शिवे ।

तद्वीज वगलेति मेऽस्तु रसनालग्न सदैवामल,

यद्ब्रह्मादिसुदुर्लभ भुवि नरैः सत्प्राक्तनैर्लभ्यते^४ ॥१८॥

स्तम्भत्व पवनोऽपि^५ याति भवती^६ भक्तस्य पीताम्बरे ।

किं चित्र यदि वारिधि स्थलपद मेरुस्तु मापोपमाम् ।

कल्पानोकहकामधेनुप्रमुखं रत्नैरलिन्दस्थितं^७—

वाञ्छार्थाधिकदानमाशु कृष्टे दीनेष्वदीनेष्वपि ॥१९॥

भाग्याद्यस्य मुखे विभाति विमला विद्या विशेषाधिका,

पट्त्रिंशद्भिरयोदिता बहुगुणैर्वीजैस्तु सर्वार्थदा ।

त सर्वे प्रणमन्ति मानवममी^८ सेन्द्रा सुरा भूसुराः,

^९क्रान्ताशेषमहोदय स्वकलनाक्रान्तत्रिलोकालयम्^{१०} ॥२०॥

यत्किञ्चिद्भुवने विभाति विमल रत्न महानन्दन.^{११}

या या वृत्तिरुदारता जनयते यद्यत्पर मुन्दरम् ।

यत्किञ्चिद्भुवनेऽथवा नु^{१२} महता शब्देन वा कीर्त्तयते,^{१३}

तत्सर्वं तव रूपमेव वगले ! ससारपारप्रदे ॥२१॥

जाग्रत्पूर्णकृपाभृतीषभरिते श्रीमत्कटाक्षेक्षणो,

सर्वार्थप्रतिपादकव्रतधरे ये ये निभग्ना नरा ।

तेषा भाग्यमतीन्द्रिय निगदितु ब्रह्मादयो न क्षमा

ये सङ्कल्पयिकल्पमात्ररचना प्राणात्यये हेतवः ॥२२॥

हस्ते सगृह्य चाप^{१४} शरधरनिकरैर्यत्किरान महाजौ,

पार्श्वौ ब्रह्मास्त्रविद्याभ्यसनपटुमतिद्वन्द्वयुद्धे तुतोप ।

१. ख. 'सन्धियते' इत्यपि पाठः । २. 'ताड्यं वयोघत' इति पाठः । ३. 'वानु' क्वचित् ।
४. 'सत्प्राक्तनैर्लभ्यते' इति पाठः । ५. परमोऽपि । ६. पवनो । ७. रत्नैरनेकं, स्थिते ।
८. मनु । ९. पान्ताशेषः । १०. स्वकलनाक्रान्त्याः । ११. महानन्दरम् । १२. इणु ।
१३. कीर्त्तते । १४. शरधरः ।

तत्सर्वं देववृन्दैरथ रिपुनिवहैर्वीक्षित सिद्धलोकै-
 र्धैर्यं^१ शौर्यं च सर्वं^२ तव वरजानत भाति पीताम्बरेऽत्र ॥२३॥
 पीता पीतजटाधरा त्रिनयना पीताशुकोल्लासिनी,
 हेमाभाङ्गरुचि शशाङ्कमुकुटा सच्चम्पकसम्पुताम् ।
 हस्तैर्मुद्गरवच्चर्वैरिरसना सविभ्रतीमादरात्,
 दीप्ताङ्गी वगलामुखी त्रिजगता मस्तम्भिर्नो चिन्तये ॥२४॥
 कर्णालम्बितलोलकुण्डलयुगा श्वेतेन्दुमौलि^३ करै,
 केयूराङ्गदपाशमुद्गरगदावज्रादिकान् विभ्रतीम् ।
 देवी पीतविभूषणामरिकुलध्वसोद्यता ये नरा
 ध्यायन्त्याशु लभन्ति सिद्धिमनुला ते वालिशा र्यु कथम् ॥२५॥
 लब्ध्वा मातरशेषकान्तिभरितानन्द^४ कृपाधीक्षण,
 वर्षीयानपि मोहितु प्रभवति स्त्रीवृन्दमुग्मीलितुम् ।
 किं तच्चित्रमनेकधा भ्रमयते दृष्ट्या त्रिलाकीमिमा,
 सूर्येन्दुस्तनधारिणीमपि बलात् कन्दर्पदर्पाधिक^५ ॥२६॥
 यन्त्र जंत्रमनकदु खशमन पीताम्बरे । तावक-
 मोङ्कारद्वयसम्पुटेन पुटित शिष्टैस्तथावेष्टितम् ।
 तद्वाह्ये स्थिरमाययाष्टपुटित पाशाङ्कुशाद्यावृत,
 येषां चेतसि 'भाग्यतो निवसत ते विश्वसर्गक्षमा'^६ ॥२७॥
 कर्पूरागुरुचन्दनैर्मृगमदैर्गौरोचनाकेशरै-
 स्त्वत्पादाम्बुजमर्चयन्ति वगले^७ ये प्रत्यह मानवा ।
 ते लब्ध्वा श्रियमभुतामपि चिर भोगाश्च भुक्त्वाऽवनौ,
 सामुज्यालषमाविशन्ति परमानन्दोऽस्ति यत्राधिक ॥२८॥
 लब्ध्वा पादयुगे रति तव शिवे धुद्रोऽपि देवेन्द्रता-
 मासाद्यामरसुन्दरीभिरमलंभोगैर्दिवि ऋडिति ।
 ये हित्वा तव भक्तिमन्वभजनानन्दाश्चिर ते नरा
 भ्रष्टा धर्मपराङ्मुखा भ्रमधियो भार वहन्ते भुवि ॥२९॥
 यामाराध्य हरो हरत्वमभजद् विष्णुस्तु विश्वात्मतां,
 चक्रे सृष्टिमजोऽप्यवोचदखिल वेदादिसद्वाङ्मयम् ।
 ध्यात्वा ध्वान्तमशेषमाशु हरते सूर्योऽपि पीताम्बरे ।
 तोत्र तापमपाकरोति रजनीनायोऽपि चूडाश्रितः ॥३०॥

१. ल स्पर्शं । २. समस्त । ३. पीतेन्दुः । ४. भरित दिव्य । ५. वर्षाधिकाम् ।
 ६. '—' सस्वित्ताऽति वगले ते विश्वरक्षाक्षमा । ७. सतत ।

बुद्धिनाशाय कीलयाशु^१ रसनामङ्घ्र्यघोर्गतिस्तम्भय,
 दुष्टान् द्रावय भारयारिनिवहान् दासाश्चिरपालय ।
 इत्येवैवगलामुखीपदगतिं लब्ध्वा पठिष्यन्ति ते,
 यन्नारूढमिवारिवृन्दमखिलकर्तुं समर्था सदा ॥३१॥
 ध्यात्वा त्वा वगले^२ पुरा गिरिसुता चक्रे शिवस्ववर,
 प्रोक्तं नापयितुं शिवेन गदिता सकल्पनाम्नो तदा ।
^३त्यक्ताग्निगंलितावलि गिरिसुतात् त्यक्त्वा गलस्तन्मुखात्,
 तस्मात् त्व वगलामुखी निगदिता नित्या परा योगिनी ॥३२॥
^४नागेन्द्रैर्देवसिद्धैर्मुनिवरनिवहैर्दानवै राक्षसेन्द्रै-
 दिवपालैर्दिवक्करीन्द्रैर्दिनकरप्रमुखै सद्ग्रहैस्तारकाद्यै ।
 ब्रह्माद्यै स्थूलसूक्ष्मैरविदितमुदिता त्व परा चोन्मनी त्व,
 नित्या पीताम्बरा त्व रिपुभयशमनी भक्तिचित्तासनस्या^५ ॥३३॥
^६शम्भुर्यद्गुणगानतोद्यतमतिनटिद्योत्सवैस्ताण्डवे,
 चक्रे चन्द्रमयूखकम्पनकरा^७ नीराजना^८ पादयो ।
^९हेमाम्भोजदलजंटाजलभरैरानन्दितैर्मौलिभि^६,
 पूजा प्रत्यहमातनोति नटयन् स्वहंस्ततालादिभि ॥३४॥
 या दध्रे चलुरानतोऽपि वदने चित्तारविन्दस्थिता,
 या वक्ष स्थलसस्थिता हरिरजामालिङ्गध पीताम्बराम् ।
 यद्देहार्धमुरीचकार पुरजित्^{१०} सौन्दर्यसाराधिका,
 पट्चक्राक्षररूपिणी भज सखे^{११} देवी जगत्पालिकाम्^{१२} ॥३५॥
 हस्ते भाति गदा सदात्तिशमनी रत्नावली त्वद्भुजे,
 पादे तूपुरमीशमौलिमण्डिभिर्नीराजित^{१३} राजते ।
 ताटङ्क श्वरणे कुचोपरि सदा^{१४} कस्तूरिकालेपन,
 काश्मीरद्रवमङ्गलरागसधिका पीतच्छर्वि^{१५} तन्वते ॥३६॥
 अकारद्वयसम्पुटन पुटिता 'विद्यागमे सस्थिता,'^{१६}
 पट्चक्राक्षरबीजसाररचिता पट्त्रिजगद्वर्णात्मिकाम्^{१७} ।

१. ल.कोलवारि । २. त्यक्त्वा । ३. नागेन्द्रैर्देवसिद्धैर्मुनिवै । ४. भक्त० ।
 ५. ०गुणगानतापरमतिनिद्योत्सवै । ६. ०कम्पनसिद्धाः, नीराजनाः । ७. हेमाम्भोजजलं ।
 ८. नन्दिता मौलिभिः । ९. पुत्रिभित् । १०. जगद्वर्णात्मिकाम् । ११. ०नीराजना ।
 १२. ससत् । १३. पीताम्बरा । १४. विद्यागमे सस्थिता । १५. सत्तत्त्ववर्णात्मिकाम् ।

'ये-जानन्ति जपन्ति सन्ततमभिध्यायन्ति गायन्ति वा,
ते वन्द्या विबुधैश्चरन्ति भुवने सिद्धाचिता. सिद्धये'^१ ॥३७॥

स्वाहाशक्तिरपासने तव ऋषिः श्रीनारदो देवता,
नित्या श्रीवगलामुखी निगदिता छन्दो भवेत् त्रिष्टुभम् ।
बीज तु स्थिरमायया विरचित नानाविधस्तम्भने,^२
प्रोक्त पद्मभुवाऽलिलासि विनियोगोऽप्यच्युताकारता^३ ॥३८॥

हृद्य सर्वसुरेश्वरैश्च ऋषिभिर्दुष्प्राप्यमेवादभुत,
स्तोत्र गोप्यतम स्वभाग्यवशत प्राप्त^४ पठिष्यन्ति ये ।
सूक्त्या^५ देवगुरु 'धनेन धनद'^६ जित्वा चिरञ्जीविता,
पन्मासात् सुखसागरे शिवसमाक्रीडा करिष्यन्ति ते ॥३९॥

देवी स्वप्नगता स्वयं व लिखित मह्य ददावद्भुत,
दिव्यास्त्र पुरत पठस्व विमल सिन्दूरवर्ण करं ।
रोमाञ्चाङ्कितहर्षमाप्य लुलितं रङ्गं^७ पठन्त नर-
प्राप्तोऽह परमोदयप्रदमिद ज्ञान कवीन्द्रादिदम्^८ ॥४०॥

प्राप्ता श्रीवगलामुखीवदनन स्वप्ने सुविद्या मया,
पट्त्रिंशद्भिरिमै. सुवर्णनिचयं सद्बीजरत्नावली ।
येषा कण्ठगता विभाति जगतीपीठे प्रयोगक्षमा,
वश्याकर्पणमोहमारणविधौ स्तम्भे तथोच्चाटने ॥४१॥

चलत्कनककुण्डलोल्लसितचारुगण्डस्थलाम्,
लसत्कनकचम्पकद्युतिविराजिचन्द्राननाम् ।
गदाहतविपक्षका कलितलोलजिह्वाञ्चला,
स्मरामि वगलामुखी विमुखवाङ्मुखस्तम्भिनीम्^९ ॥४२॥

॥ धीपीताम्बरात्नाडलीस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥^{१०}

सबत् १८६० शके १७५५ ध्यापादमासे शुक्लपक्षे ५ मङ्गलातरे लिखित ब्रह्मचारि-
काशिनानयेन ॥ श्रीगङ्गाविश्वेश्वराभ्या नम ॥

ॐ ॐ ॐ

१. ख पादद्वय एकचत्वारिंशच्छ्लोकानन्तर विद्यते । २. नानाविधि० । ३. ०प्यसत्कारकः ।
४. निरय । ५. शस्त्या । ६. धनेधनपति । ७. ललिते० । ८. कवीन्द्राचितम् ।
९. ख. श्लोकोऽय नास्ति । १०. इति श्रीनारदोक्त पीताम्बरादेवोस्तम्बराजस्तोत्रम् ।

प्र

अग्निबीजादिनामर्षो ३०-२०
 अङ्कुरोर्नख मुद्रायाम् ६-७
 अङ्गुष्ठ कोवमुक्चार्यं ७७-१५
 अङ्गुष्ठमेण समुपत ६६-२४
 अङ्गुष्ठमात्रो वृत्वा ८५-५
 अर्धोराश्व पानुपती ६६-२६
 अत्यर्तवर्ष्यसमुक्तो ५७-६
 अथवा पीतपुष्पस्तु १०५-२७
 अथवा पीतमास्थी वा ३६-१७
 अथवा वगलामन्त्र ६७-१०
 अथ एकद प्रवदयामि १००-३
 अथातः सप्रवक्ष्यामि ६८-३
 अथम च शिलापूजा ३३-१६
 अथुना स्तम्भपर्यतत ५१-१५
 अनाथस्य चित्तो रात्रो १६-६
 अनुश्रमेण सर्वत्र १०१-१३
 अनुश्रुपद्य द प्राश्नात् ६८-८
 अनेन क्रमयोगेन १०१-१२
 अनेन (नया) विद्यया पुत्र ६३-२२
 अनेन योगवर्षेण १०५-२८
 अनेन योगवर्षेण ६५-१०
 अन्त्यपत्रे चाष्टवर्णान् १०-१२
 अन्त्यवर्णं समुक्चार्यं ६१-६
 अन्नद्वेषो जायते च ७२-१५
 अन्नेन अन्वहो हुत्वा ५८-२०
 अन्त्ययोगसमारम्भ ६६-२५
 अपमृत्युविनाशार्थं १०३-६
 अपामागस्य बीज तु ७५-२१
 अपाह्वयानां च कुशानां १०३-५
 अपोषमृत्युनाशाय १०३-१६
 अप्सां पीताम्बरादपो वरणे ६५-१

अमृताच्चिन्तित कार्यं ७३-३०
 अमृताच्छत्रसहारी ७५-५
 अमृताश्वररोगी च ७३-२६
 अमृताशास्य शत्रोश्च ७३-२८
 अमृतादरिगर्वं तु ७३-२५
 अमृतात्तलमते भोग ८३-१६
 अमृत च दिवाराम्नी ५१-६
 अमृत जुहुया-मन्त्रो ७५-६
 अमृत जुहुया-मन्त्रो ७५-१७
 अमृत तप्रेणात्पुत्र ७२-१६, २०
 अमृत तप्रेणेनेव ७२-१५
 अमृत तस्य मन्त्रस्तु ५५-२२
 अमृत मन्त्रमित्वा तु ८६-२७
 अरित्तर्हस्तमात्रं च १५-१५
 अर्कपञ्चकवर्णैः ५०-८
 अर्कपत्रद्वेषेण ५६-२८
 अर्कपत्रे लिखे-नाम ५१-६
 अर्कवारे तु सध्यायां ८६-२६
 अर्चन कलशे च ७१-५
 अर्चन गौडदेशीयं ६६-३१
 अर्चन गौडदेशे च ३५-५
 अर्चयेत् पञ्चमीं कुर्याद् ७७-५०
 अर्चयेत्पूर्ववस्तुत्र ७-१७
 अर्चयेत्पूर्ववस्तुत्र २२-१५
 अर्चयेत् पट्टसोपेतां ३६-२७
 अर्चयेदपुत्र मन्त्रो ८०-२१
 अर्चयेद् विधिमार्गेण ३०-२६
 अर्द्धजिह्वा मदी चार्द्धं ३८-१६
 अलोकेन शुद्धमति ५७-१५
 असोतिवर्णसमुत्तो ७८-२१
 असोक्तमूले निवसन् ८१-१०
 असमयं दिपोरङ्गे ५२-३५

धश्रुतानां च घास्त्राणां ८२-१५
 धश्वत्सुनमाश्रित्य ७४-६
 धश्वत्सुन प्रजपेद् ६२-५
 धश्वत्सरि घनरेय ६५-७
 घष्टकोष्ठेषु विलिखेद २१-६
 घष्टदिकपात्रकोशाष्ट १-३
 घष्टपत्रे ऽयसेत्पुत्र ७-१२
 घृष्टपाण्डसमामुवत् ५-१६
 घृष्टमूर्त्तौ नमस्तुभ्य ७८-२
 घृष्टमूर्त्तौ महामूर्त्तौ २३-२
 घृष्टम कठवल्गवा च ८-२३
 घृष्टम्या च चतुदश्या ७६-टि०
 घृष्टवेतालघमने ६४-४
 घृष्टायुत तपण च ८२-११
 घृष्टोत्तरशत सम्यक् ५८-२०
 घृष्टशस्त्रमय म त्र ५७-७

घ्रा

घ्राकपणु भवच्छीघ्र ४८-२५
 घ्रागच्छेत्पाशया तस्य ४०-३३
 घ्राज्यन मिश्रित च ६८-२०
 घ्रात्मार्यं च पराघ च १०३-७
 घ्रादो गणपति पूज्य १०४-२३
 घ्रादो भास्वररूपिणी कुरु तदा ६८-२२
 घ्राद्यबीज पुनश्चोक्त्वा ४१-२६
 घ्राद्यबीज मनी सत्या ४२-८८
 घ्राद्यास्त्र बगलानाम्नी ३७-३
 घ्रादनालस्य भाण्डे तु ८४-५
 घ्रादनालन तद्भूम ८४-६
 घ्रावाहिनी स्य पनी च ६-८
 घ्रादधमद महाम त्र ४२-२५
 घ्रादिवने कार्तिके च ६-३

इ

इच्छया वसते सर्वे ४०-३२
 इति सक्षेपत प्रोक्त १०५-३५
 इ द्रमस्य लिखेद् विद्या ६३-२४

इ द्रादिपदसस्तम्भ १०२-२४
 इष्टुमिष्टिमवेत्तस्य ७६-१०

उ

उच्चाटनायं जपत्पुत्र ३०-टि०
 उत्तम कृष्णहोमत्र १४-३
 उत्पाटघ कण्टका यादो ५३-३६
 उद्वरत्तारमात्रो तु ५४-४
 उन्मादो च भवेच्छत्रु ७३-२३
 उपचार पोऽगमि ७१-७
 उपस्थान चैवमेतत् ११-टि०
 उपस्थान त्रिकालस्य १०-१७
 उत्कृत्काकयो पत्र १६-७५
 उत्कामुखी द्वितीयास्य ६-२८
 उत्लघ्य बगलामत्र ३३-टि०
 उत्प्लोदक साम्नात्रे ६४-३८

ऊ

ऊर्ध्वं रक्षामहादेवी १३-१४

ऋ

ऋषिच्छ दत्रिनयक ६६-१०
 ऋषिश्चाप्यग्निवाराह ३६-२५
 ऋषिसिद्धामरश्चैव ३-२७

ए

एकाक्षरोमहाम त्रै ६५-१२
 एका तरोविद्यया च ५२-टि०
 एकाक्षरो च बगला ५८-१५
 एकाक्षरो जपेदादो १०२-१६
 एकाणां बगलां देवीं ५०-४
 एतन्नूयप्रयोग च ८६-१६
 एतत्पूजा विना पुत्र ३६-१८
 एतदर्चाविवर्तिम ६६-२६
 एतदर्चाविविधैश्चैव ७०-४१
 एतदष्टाक्षरीमत्र ८३ टि०-२५
 एतद्यत्र लिखेद् भूय ६३-२७

एतद्यन्त्रं हृदि व्यात्वा ६३-३०
 एतद्यन्त्रं हृदि व्यापेद् ६२-१५
 एतद्वायुं स मासेन ५६-३४
 एतद्विद्यापुरश्चर्या ६०-३६
 एतन्मन्त्रवर पुत्र ५६-२२
 एतन्मन्त्रस्य माहात्म्यं ८२-३
 एता मुद्राश्च ततो ६-६
 एरण्डतैलन जुहुयाद् ४८-२४
 एवमेव विधिः पुत्र ७०-४२
 एव कुर्यात् प्रातरेव ६२-१६
 एवं कृत्वा जपेन्मन्त्रं ८६-२३
 एव कृते सप्तरात्र ५२-२४
 एवं च पूजयेद्यन्त्रं २३-२७
 एव च पूजयेत् सम्यक् ३३-१७
 एव च मार्जनं कृत्वा १०-१५
 एवं च मार्जनं कृत्वा ८-२४
 एव च मालिकां कुर्यात् ६५-१३
 एव त्रिविधपूजा च ६६-६
 एव व्यात्वा जपेत् पुत्र ८१-६
 एवं व्यात्वा जपेन्मन्त्रं ५५-१६
 एव व्यात्वा जपेन्मन्त्रं १३-२०
 एव व्यात्वा जपेन्मन्त्रं ४३-३६
 एवं व्यात्वा जपेन्मन्त्रं ४५-१६
 एव व्यात्वा तु देवशीं १०-२१
 एवं न्यासविधिं कृत्वा १३-१५
 एव भूतसहस्रं च २२-१२
 एव मध्यदिनोपास्थि ११-२३
 एव मन्त्राभिदेकज्ज्व ८-२८
 एवं मासत्रयं कृत्वा ८४-६
 एवं मासप्रयोगेण २४-१४
 एव यः कुरुते पुत्र ७६-६
 एवं रोगसमायुक्तो २०-२७
 एवं लिखित्वा यत्र च ६२-१२
 एव द्वाकृदिने सम्यक् ६-६
 एव होमप्रयोगं च ७६-२६
 एहि-शब्दद्वयं चोक्त्वा ८७-६

श्री

ॐ नमो पदमुच्चार्यं ६१-७, टि०

क

कण्ठक पुरपक्षस्य ८५-१४
 कण्ठकान्तोपयेदकं ५२-६
 कण्ठे वा बाहुमूले वा ६२-१७
 कदलीमूलमाश्रित्य ६२-६
 कर्मकां चायवा पुत्र ३३-१५
 कर्म्या चैव न्यसेदेव ३५-१४
 कपटादिविनाशार्थं ६५-६
 कपित्थवृक्षमूले तु ६२-७
 कविलानवनीतं च ६१-६
 कर्षामिश्रितं तोयं २७-१२
 कम्बुकण्ठी सुताम्रोष्ठी २३-१
 करञ्जमूलमाश्रित्यां ६२-१०
 करोति यस्य सन्तोष ७७-१२
 कर्पासपत्रजद्रावः ४६-६
 कल्पते चित्तसंशोभ ३६-६
 कवचात् कोलनं घोषः १०२-२३
 कवचं च चतुर्थं स्यात् १०२-२२
 कवचं पञ्चमं बाणः १०१-१५
 कवचं प्रथमं बाणः १०१-१४
 कवचं वेदवर्णं च १०२-१८
 कवोद्वरोऽपि चो-मादी ७६-८
 कस्तूरीमिश्रितं तोयं २७-१४
 कस्तूरीलेपनं कुर्यात् २४-५
 काकपत्रेण सपुष्पत ७२-१०
 काकवद्भ्रमते शत्रुः ७२-११
 काकवद्भ्रमते शत्रुः ८६-२८
 काकोलूकदनं चैव ८५-१५
 कामराजं च हृत्लेखां ४४-१०
 कामरूपाख्यदेशं तु ७०-३४
 कामुकं काञ्चनासर्वतं ५-६
 कारणं तत्र केन स्यात् १००-४
 कालानलनिर्भादेवी ४३-३४

कालीतन्दद्वय चोक्त्वा ८७-६
 कालीं करासवदनां ८८-१४
 किं तस्य जपयुवतानां ४० टि०
 कुटिलालकसयुक्ता ६८-१२
 कुण्डे वा स्थण्डिले वेद्यां १०४-१७
 कुबेरसदृशः श्रीमान् २०-२०
 कुबेरसदृशः श्रीमान् ८२-१८
 कुबेरसदृश श्रीमान् २७-१५
 कुबेरसदृशो नूत्वा ८०-१५
 कुमारक प्रवर्तिते ३६-३१
 कुहपाञ्चालदेशार्घ्या ७०-४३
 कुर्यात् कृत्विमरोगेण ६२-२०
 कुर्यात् सौभाग्यसम्पुजां ३६-१४
 कुलाचारसमानुवत् ३-२४
 कुर्येन जुहुयात्तस्य ४६-८
 कुरुमेवचम्बकंरघ्य २३-२५
 कुरुप्रहविनाशाय १०३-५
 कृत्वा एकाग्रोमन्त्रं ६६-२५
 कृत्वाधमण्डल ध्वज २४-१२
 कृत्वा पवित्रघण्टि च ७८-१२
 कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां ३५-८
 केतकीदलहोमन ४७-११
 केलादाशिखरासोन १-२
 केसपत द्यमनुचरित ६१-६
 कामस तापत्र सम्पक ७४-११
 कीटिल्यरदापन धव ६४-३६
 कीलसारपर नाम ७०-३६
 कीलमार च १ नाम ६६-३३
 क्रमात् सर्वं तु सम्पाद ६७-३७
 कीलागमकसवदां १६-१
 कीलाचनविधानन ७६-६
 क्षाणुच्छाटन कुर्याद् ४ -२७
 क्षयराशौ भवत्सङ्घ २८-२७
 क्षयराशौ भव मर्यादा ७३-२७
 क्षीरेण भमनापदव ४८-२१
 क्षुद्रकमलि विनाश १०१-८

क्षुद्रप्रयोजनः पुत्र २०-१८

ल

लरस्य रक्तमादाय १६-७
 लरवाल च रोम च ८६-३३
 लज्जूरजेन द्रव्येण ४८-२३
 लाने पाने च तद्भ्रम १६-१६

ग

गङ्गाधर नमस्तेऽस्तु ६-२
 गजाद्ववपभोजक ८५-२२
 गतिगर्भं च वाक्पानि २६-७
 गत्वा तु रिपव सर्वं ५६-२३
 गम्भीरीं च मदोमत्तां १०-१८
 गर च तिलतैलं च ४६-३०
 गभकीलागमासवत् ४-८
 गर्भस्तभनदीप च ८६-२५
 गायत्री छ द घादिष्ट ६८-६
 गायत्री बगलानाम्नी २६-६
 गायत्री बगलानाम्नी ३१-२६
 गायत्री कवचं पुत्र १०१-११
 गुहोदकेतवर्षेण च २६-४
 गुण्यच चरती पुर्षा ७७-१०
 गुण्यहात कोटिहोमे १५-१३
 गुप्त बीजागम नाम ३४-५
 गुप्तियागानुभी मोहाष्ट ५-२२
 गुप्तुभुपया विद्या ५-१२
 घटत कृत्वा पेरिनाम २०-१६
 गोधीर प्रातररथाय ६४-३५
 गोपनीय गोपनीय १०५-३४
 गोपयत् सर्वदा पुत्र ४३-४०
 गोपयत्वा हरिदां च ६५-८
 गोमये देवन दावा २६-१७
 गोमूत्रेण हृन्मन्त्रो ४८-२२
 गोहीद्वयपत्रगणेन १७ टि०
 गोहीद्वयेण तृहृत्वा ४७-१७

गौडी माध्वी च पंष्टी च ३३-१८
 प्रसनीति पदं चोक्त्वा ५४-७
 ग्राममध्ये हुनेःमन्त्री ७४-६
 ग्रामं वा नगरं वाथ ५८-११
 ग्राम वा नगर वाथ ७४-१२
 ग्लौ बीजं ह्रीं च पवितश्च ६०-१०

च

चक्रपूजासमायुक्त (वतो) ४-११
 चतुरक्षरी च बगला ६७-७
 चतुर्यंकोणे सम्पूज्य ३२-६
 चतुर्भुजा च द्विभुजा ३२-४
 चतुर्भुजा त्रिनयना १७-११
 चतुर्भुजा त्रिनयना ४६-१
 चतुर्भुजा वा द्विभुजा १००-२१
 चतुर्लक्ष पुरश्चर्या २६-८
 चतुर्ध्वंशान्तिके मन्त्रे ६७-६
 चत्वरं सर्वकार्यं ६७-३५
 चन्द्रचूड नमस्तेऽस्तु ४३-२
 चन्द्रोपेन्द्रमहेन्द्रादि ८३-२
 चमण्णवसनी भूत्वा ४१-१२
 चलत्वनककुण्डलोललसितं ६-१
 चापचर्यास्तुनिपुण्यं १-५
 चिताभस्म चिताङ्गार ५१-१६
 चिताभस्म रवौ रात्रौ ८६-२७
 चितिवस्त्र रवौ ग्राह्यं २०-२१
 चित्रपीताम्बरधरा ६६-२३
 चिदानन्दघनावास १००-२
 चिन्मयी स्तभनी देवी ४२-२२
 चुह्युपोपरि च तद्गण्ड ६४-६

छ

छन्दादिक पूर्ववत् स्याद् ६८-७
 छागमासेन जुहुयान् ५५-१७

ज

जपसख्या यत्र नोक्ता ३१-२५

जपेच्च वायुबीजादि ३०-१६
 जपेत्तत्र सहस्रं कं ५०-१०
 जपेदमृतबीजानि ३०-१८
 जम्बीरतरुमूले तु ६३-१८
 जलकृत्याविनाशार्थं १०३-१३
 जातवेदमये देवि ७१-१
 जातवेदमुखीबाणो ६७-२६
 जातवेदमुखी मन्त्रं ४१-६
 जातिपञ्चसमिधं ४५-१७
 जातिभ्रष्टो भवेच्छत्रुः २८-२४
 जात्याभिमानिनो ये च ५६-२६
 जिह्वाप्रमादाय करेण देवीं ३-१
 जिह्वाप्रमादाय करेण देवीं ४३-१
 जिह्वा मुख च कर्णाक्षि ८६-८
 जिह्वास्तम्भतमप्लोति ६१-२०
 जिह्वास्तम्भो भवत्येव ७२-१८
 जिह्वास्तम्भ भवेच्छत्रो. ५०-८
 जिह्वा कीलय उच्चार्यं ३८-११
 जिह्वा कीलय उच्चार्यं ३६-२३
 जिह्वा कीलय उच्चार्यं ४०-६
 जिह्वा कीलय उच्चार्यं ४४-७
 जिह्वा खड्ग पानपात्र ६०-१२
 जिह्वा बाणी च बुद्धि च ६४-२५
 जीवन्मुक्तः स एवात्र ७०-४४
 जुहुयात्तक्षणात् पुत्र ७५-२०
 जुहुयात् पूवयच्छत्रु ४६-३२
 जुहुयात् पट्टसहस्रं तु ४६-२६
 जुहुयाद्द्विता ह्यात्वा ४६-२८
 ज्वालामुखी तृतीयास्त्र ३७-४
 ज्वालामुखी देवता च ४१-२०
 ज्वालामुख्यभिध बाण ६५-१४

त

तक्षणे तपंण चंद २-१७
 तक्षणे सहित पीत्वा ८६-२६
 तक्षुण्यं देवतागारे ८५-२१

तज्जल च समानीय ७१-६
 तज्जल वामबुलुके ६-१०
 ततो नागोद्वरी तद्वच् ५५-टि०
 ततोपरि लिखेत्सम्पक् २१-५
 ततो पलाशमूलं तु ६३-टि०
 ततो वै प्रजपेद्विद्या १००-२०
 ततः कवचमालम्ब्य १००-५
 ततः शिष्य समानीय ६-७
 तत्कारिपत्रजद्रावं. ४६-टि०
 तत्क्षणाग्नात्समाप्नोति ८६-२६
 तत्तादेकाक्षरीबीज १२-३
 तत्रविश्रेण समुक्त ७१-६
 तत्रयोग तत्र उक्त्वा ८ टि०
 तत्रफलेन हुनद रात्रौ ७४-८
 तत्रस्याः सप्तभाषादिच ७५-२२
 तत्रसप्तधप्रमारोच ६६-२८
 तत्र वद महादव १०३-३
 तदुद्धारं शृणु प्राज्ञ ६६-१४
 तदुपरि च सवेष्टप ७६ टि०
 तदुपरि समम्बध्व ३२-१९, ११, टि०
 तद्गुरुम पूर्णमिध ८४-११
 तद्गुरुम तिस्रंजन ८४-१०
 तद्बीजोद्धारमनप १२-५
 तदप्रधारणादेव ६३-२६
 तद्वश गुलिकीटय १०-५
 तद्विद्या च प्रवक्ष्यामि २-८
 तद्विद्या च प्रवक्ष्यामि ८७-४
 तन्मन्त्रसंघा वक्ष्यामि ६-४
 तन्मालिका रथौ वारे १५-१०
 तन्पत्नीतानुनेत्र ७३-२६
 तन्पत्न्य च गयी क्षीरे ४२-२३
 तन्पत्न्य च दिवा कुर्वाद् ६८-१६
 तन्पत्न्य च दिवा ट्वा ६३-१५
 तन्पत्न्य मन्त्रकारं ७१-४
 तन्पत्नेहाहास च ६०-१५
 तन्पत्नेहाहास च १७-१६

तलतलेन समुक्तं १८-२५
 तस्मात्सर्वप्रयत्नेन ४-६
 तस्मात् सर्वप्रयत्नेना० ३७-३१
 तस्मिन्मन्त्र मन्त्रेण स.ध्यां ५३-४०
 तस्य दशनमात्रेण ८०-१७, २२
 तस्य प्रज्ञा पलानीय ३३-२०
 तस्योपरि च पट्कीलो ७६-टि०
 तस्योपरि च सवेष्टप ७६-६
 तस्योपरि तत्सतीयं ३५-१०
 तस्योपाय च तद्विद्या १-६
 तस्योत्पन्नमात्रेण ७७-११
 ताडयेद हृदये मन्त्रो १६-११
 तम्बूलचवलाच्छु ६२-२२
 ताम्रवात्रे जल घाह्यं ६३-३१
 ताम्रवात्रे जल गुह्यं ६४-३७
 तार च वगलाबीज १६-४
 तारञ्च मातृवाच्यं १३-१७
 तार च विलिखेत् पूर्वं ३८-८
 तार च स्तोत्रमाया प ४०-३
 तारादि प्रजपे.मन्त्र ३०-१०
 ताश्चबीजादिमन्त्रं ३०-१६
 ताश्चस्य मालामन्त्रदय ६१-६
 तालकेन हुनेत्तस्य ४३-३७
 तस्यैव हुनेत्पुत्र ४५-२२
 तालकेन हुनेत्तस्य ३८-१७
 तालकेन हुनेत्तस्य ५०-६
 तिस्रंजनमात्रेण १६-२६
 तिस्रंजन मन्त्रेण ७५-२५
 तिस्रंजन मन्त्रेण २५-१६
 तुवलीमन्त्रमिदं २१-२३
 तुवलीमन्त्रमिदं ६९-३२
 तुवलीमन्त्रमिदं ८० टि०
 तुवलीमन्त्रमिदं ६७ २८-टि०
 तुवलीमन्त्रमिदं १२-८
 तुवलीमन्त्रमिदं १६-२२

सेन कुर्यान्मालिका च ६५-६
 तेन देवीकटाक्षेण २-१६
 तेन पूजा प्रकृतं व्या २२-१५
 सेन मूलेन सम्माज्यं १०-१३
 तेन शत्रुस्तत्क्षणाच्च ८४-११
 तेनायुत तपंशेन ७२-१६
 तेनोक्तमाञ्जनेयाय ५६-४
 तेनोक्तविधिना सम्यक् ७१-८
 स्ववत्त्वा पञ्चेन्द्रियासवित ३६-२०
 स्ववत्त्वा तन्मन्त्रगामयत्री ३१-२४
 त्रिकाल तु समासीनो ६२-३
 त्रिकाल पूजयेद्देवी ३३-१६
 त्रिकालं लेपन कुर्यात् २५-१६, २४, २५, २६
 त्रिकालमयुत जपत्वा ६१-२६
 त्रिकालमाचरेत्संघ्या ११-२७
 त्रिकालमेककालं वा ६३-३३
 त्रिकोणकुण्डे जुहुयात् १३-२१
 त्रिकोणे पूजयेत् पुन ३२-५
 त्रिदिन चापवा पञ्च ५३-४१
 त्रिषा मूर्द्धन्त्रिदिषा बाह्यो १०-१४
 त्रिपुरारे त्रिलोकजः ५६-२
 त्रिमन्त्रवचनं पायसेन ४५-१८
 त्रिमन्त्रवचनं स्वैतदूर्वा ४६-५
 त्रिशत च शत चापि १०१-७
 त्रिसप्तमन्त्रित तोय ७८-२४
 त्रिसहस्रं ध्यानयुक्त ५७-८
 त्रिसहस्रं सहस्रं वा ६३-२८
 त्रैलोक्य वशमाप्नोति ८०-१६
 त्रैलोक्यविजय नाम ८६-२१
 त्रैलोक्यविजयास च १०४-२०

द

दक्षिणामूर्तिमन्त्रेण ५६-२५
 दक्षिमिथ गुह्यधीभिः ४६-६
 दशधावनकाष्ठे च ६३-२४
 दक्षिद्रोऽपि भवेच्छ्रीमान् ७६-७

दशेन्द्रियस्तंभने तु १४-७
 दहयुग्म लिखेद् बाहो १६-१०
 दिने दिने सहस्रं कं ६३-१३
 दीक्षामार्गं विना मन्त्रं ४-४
 दीक्षाविधिं विना मन्त्रं ४-५
 दुरालापसमायुक्तं ५-१८
 दुर्वासा ऋषिरेवान ६०-६
 दुष्टस्तम्भनमुपविघ्नशमनं ११-२२
 दुष्टानां पदमुच्चार्य १६-५
 दूर्वाहोम त्रिमन्त्रं १५-२१
 देवता कालिका नाम ८८-१३
 देवता बगलानाम्नी २६-७
 देवता बगलानाम्नी ८१-५
 देवता बगलानाम्नी ४४-१२
 देवता शान्तिमाप्नोति ५३-६
 देवदानवदैत्यारीन् ६४-५
 देवस्थेशानभागे तु ६-८
 देवी भूत्वा जपेद्देवीं ६५-१५
 देवीं सम्पूजयेत्सम्यक् ६६-२६
 देवो भूत्वा स्वयं पुन ७०-३८
 देशोपद्रवनाशार्थं १०३-१०
 दीर्घान्घनेन समायुक्तः ५६-२६
 द्रवेण तर्पणं कुर्यात् २६-५
 द्रव्याभिमानी पुरुषो ५६-६
 द्रव्यलाभ भवेत्तास्य ८०-१८
 द्विगुणां जपमात्रेण ६०-३७
 द्विगुणं जपमाप्नोति ६०-३६
 द्वितीयकोणं संपूज्य ३२-७
 द्वितीये विलिखेत् सम्यक् ६३-२६
 द्विपञ्चसप्तविंशति ६६-१८
 द्विशत मन्त्रित चं व ६३-२०

घ

घनजयपुर चं व ३५-६
 धोमहोति पद चोक्त्वा २६-५
 धूपयेच्छत्रुसदने ८५-२०

घूपयेतोन सर्वाङ्ग ८६-२८
 घौतवस्त्रपरोषाय ६-६
 घत्तूरकुमुमेर्नव २२-१८
 घत्तूरक च तम्बूधिन ५२-२७
 घत्तूरद्रवसमुक्त २५-२२
 घत्तूरपत्रमादाय ८६-३१
 घत्तूर तिम्बुक बीज २५-१३
 ध्यानभेद प्रवक्ष्यामि ६०-११
 ध्यानेन म प्रसिद्धिः स्याद १३-१८
 ध्यान यत्नात्प्रवक्ष्यामि १७-१०
 ध्यान यत्नात् प्रवक्ष्यामि ३८-१५
 ध्यान यत्नात् प्रवक्ष्यामि ३६-२७
 ध्यान विना भवेत्सुक ५३-२१
 ध्रुवाद्यैरिति मन्त्रण ३५-१२

न

न कर्त्तव्य मुमुक्षुश्च २१-२६
 नगरे वायु ग्रामे वा ५६ टि०
 नग्न प्रतमुत्ते भीमे १६-२७
 न चाभिपेक न च मन्त्रदीक्षा ७६-५
 नद्या समुद्रगामिन्यां ६२-१२
 न ध्यान न च होम च ७६-४
 नन्द्यावर्त्तन सम्पूज्य २३-२४
 नमः कैलाशनाथाय ६७-२
 नम कौलागमाचाय १८-२
 नम पापविह्वराय ८७-२
 नम शिवाय साम्बाय ६०-२
 नमस्ते गिरिजानाथ ४०-२
 नमस्ते जगतां देवी ४६-१
 नमस्ताण्डवसूत्राय ६२-२
 नमस्ते देवदेवेशि ७८-१
 नमस्ते देवदेवेशि ८१-१
 नमस्ते देवदेवेशी ५६-१
 नमस्ते पावतीनाथ ५४-२
 नमस्ते पावतीनाथ ४-२
 नमस्ते मौलिनसेव्य २६-२

नमस्ते योगिससेव्य ५७-टि०
 नमस्ते योगिससेव्य १४-२
 नमस्ते योगिससेव्य ५०-२
 नमस्ते शोकजननी ८३-टि०
 नमस्ते वगलादेवी २६-१
 नमस्ते वृषभारूढ ६४-२
 नमस्ते सर्वसर्वेश २६-२
 नमस्ते सर्वसर्वेश ८१-२
 नमस्ते सर्वसर्वेश ६८-२
 नमस्ते सिद्धससेव्य ७१-२
 नमस्तेऽस्तु जगन्नाथ ११-२
 नमामि वगलां देवीं ६७-१
 नमोऽस्तु मन्नागमकोषिदाय २१-२
 नागवह्नीदलेर्नव ६२-१८
 नागवह्नीदल चैव ६३-२१
 नात् परतरो योगी १०५-३३
 नानाकृत्त्रिमदोष च ८६-३३
 नानादेहजरोगाश्च ४५-१६
 नानामन्त्रेषु मन्त्र वा १२-३
 नानारोगविनाशार्थं ६५-८
 नानारोगहर चैव १६-४
 नानारोगे कृत्त्रिमैश्च १५-१७
 नानालङ्कारदीभादृष्यां ७३-१
 नारदो ऋषिरेवात्र १७-१३
 नारी दृष्टवा मानसेन ७०-४५
 नाशयदासु तत्सर्वं ८६-२७
 नि क्षिपेत्सप्तरात्र तु १६-१४
 नि क्षिपेन्नवमाण्डेषु ७-१४
 नि क्षिपे मन्त्रपूर्वं च ५३-३७
 निक्षिपेद् द्वारदेशे तु ८६-३२
 निक्षिपेद् रविवारे तु ८५-१६
 निक्षेप लभते पुत्र ८३-टि०-२०
 नित्य च शिमहस्त तु ६२-४
 नित्य चैव सहस्र तु ८६-१०
 निधान लभते तस्य ८०-२०
 निषाय पाद हृदि वामपाणिना ३१-१

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

पाशाङ्कुशांतरितशक्ति०	६७	८
पाशाङ्कुशेनांतरित	५५	१३
पिचुमदतरोर्मूल	६२	८
पित्तरोगी भवेच्छत्रु	२६	२८
पीतपुष्पैश्च जुहुयात्	६७	२८
पीतपत्रोपवीतस्तु	६५	११
पीतवर्णसमासीना	१०२	१
पीतवर्णा मदाघूर्णा	३७	१
पीतवर्णा मदापूष्णा	११	१
पीतवासामते पुत्र	६६	१३
पीताम्बरधरा देवो	१६	१
पीताम्बरधरा सोम्या	४४	१४
पीताम्बरा दक्षिणे च	१२	१२
पीताम्बरालङ्कृतपीतवर्णा	२१	१
पीतावरणभूषी च	६५	११
पीतावनी पीतभक्षी	१०४	२५
पीताशी पीतवाणी च	६६	२२
पीनोत्प्लजटाकलापविलसद्०	६०	१
पीयोदविमण्यचारविलसद्०	६	१
पुत्तर्णा प्र तवस्प्रण	५२	३३
पुत्रवान् जायते मर्त्यो	१७	१६
पुत्रवान् जायते लोके	८३	२४
पुत्रो देय शिरो देय	७८	८०
पुन पूजा प्रवत्स्या	६	१६
पुनर्भो मनिशाका ले	१६	१२
पुनश्च मन्त्रयत्नाम्न०	६३	२३
पुरश्चरणक ल तु	३१	२३
पुरश्चरणकृत्सिद्ध०	४	६
पुरश्चर्या विना मन्त्र	१७	१६
पुराणम्बरमत्युग्र	२७	१३
पुलिष्टकन्यका चव	३७	२८
पुण्यवाटघा जपेन्मन्त्र	८३	टि०-२२
पुस्तके लिङ्गिता मन्त्र न्	४	३
पूजयेद्यन्मन्त्राज च	२६	३
पूजा त्रैकालिकी नित्यं	१७	१८

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

पूजाधारण्य-प्रज्ञ	६	२
पूजायत्र त्रमेणव	३३	१४
पूजायत्रमिद पुत्र	२२	६
पूति चाढपल नित्य	२४	७
पूर्वभागे तु पचास्त्र	१०४	२१
पूर्ववत्पूजयत्तत्र	२३	२२
पूर्ववत्प्रवर्ज च	५४	६ १०
पूर्ववत्प्रासविद्या च	४३	३३
पूर्ववत्प्रासविद्या च	४१	१०
पूर्ववत्प्रास चव	२५	२१
पूर्ववत्प्रासविद्या च	१७	२८
पूर्ववत्प्रासमालिख्य	२३	३
पूर्ववत्प्रासविद्या च	४४	१३
पूर्ववत्प्रास जुहुयात्	४८	१६
पूर्ववत्प्रास सूत्रेण	८	२१
प्रजपेद् बगलायाश्च	७६	टि०
प्रजा बुद्धि श्रिय चव	८६	२६
प्रणव बह्नुजायां च	६६	२४
प्रणीता प्रोक्षणीयात्र	६७	३६
प्रतिवादि भवेत्स्तम्भो	३३	२२
प्रत्येक त्रिसहस्र च	४५	२४
प्रथम बगलाबीज	५६	५
प्रदिक्षणाप्रय कृत्वा	५८	१०, १४
प्रपञ्चस्तम्भन कृत्वा	६	२६
प्रयोगदातिर्न भवेत्	६०	३८
प्रयोगादीनि सर्वाणि	८३	१६, ८०
प्रयोग चैव न भवेद्	३४	२६
प्रयोग चोपसहार	२	१७
प्रयोग तपण चव	७१	३
प्रथ चव चतुर्विदा	७	११
प्रस्थानज्ञानपारीणा	४	१०
प्रस्फुरद्विषय चव	४१	१५
प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा तु	५१	२३
प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा तु	६४	टि०
प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा तु	६६	२४

	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
प्राणप्रतिष्ठा यत्रस्य	६२	१०
प्राणिनां प्राणहरण	१५	२०
प्रातः काले भक्षयिष्या	८८	२०
प्रादेश घटहोमे च	१५	१२
प्राप्नुवाच्छत्रमुद्दिश्य	५६	टि०
प्रियङ्गुशालिगोधूम	७	१०
प्रेतमस्य रवौ ग्राह्य	१६	१५
प्रेतभ षडे लिखेन्नाम	५०	११
प्रत्यवस्य रवौ ग्राह्य	६४	२६
प्रेत र-हो प्रतकाष्ठे	५१	१६
प्रतामो प्रेतकाष्ठ तु	५०	१२
प्रतामो प्रेतकाष्ठ च	१६	८
प्रतामो रजकागी च	७५	२४
प्रताङ्गारमर्षी(यी)कृत्वा	५०	३
प्रताम प्रतभस्य च	१७	१०
प्रताम प्रतभस्य च	२४	१५
फ		
फलित पुष्पित चं	५८	१३
फलित पुष्पित वाय	८५	२४
ब		
बगलाबीजमध्यस्य	५१	२२
बगलामत्रविद्धिस्तु	३४	२४
बगलामुखिपद चोवत्वा	५९	६
बगलामुखिपद चोवत्वा	४०	४
बगलामुखीपद चोवत्वा	३६	२१
बगलाया विना म-त्र	१४	१७
बदरीकण्टक चं	८४	४
बदरीमूलतो गत्वा	५२	२८
ब-वन त्रिपुरस्चं	६६	२०
बन्धुककुमुभाभासा	४०	१
बाणायुत ज्वेदीमान्	२४	४
बातमानुपतीकाया	७६	१
बिन्दु त्रिकोण दृष्ट च	२१	४

	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
बिन्दुत्रिकोणपटकोण	७८	३
बिन्दुना भूपित पुत्र	६१	टि०
बिन्दुपात्रयुता पुजा	६६	२७
बिन्दुमध्ये च सम्पूज्य	३२	३
बिन्दुमध्ये लिखेदबीज	२१	टि०
बिन्दुमात्र गृहीत्वा तु	७०	३५
बिभीतकसमिद्धिर्वा	१५	२३
बिभीतकोद्भव पुष्प	२२	१६
बिम्बोष्ठी कम्बुकण्ठी च	१७	१२
बिम्बोष्ठी चाश्वदनां	१८	१
बिम्बोष्ठी चाश्वदनी	६०	१३
बीज च बगलाबीज	३६	२६
बीज च बगलाबीज	४३	३२
बीजरञ्जकमुचचार्यं	४०	५
बुद्धिभ्र घो भवेत् सद्यो	६१	२१
बुद्धिशब्द ततोच्चार्य	१६	६
बुद्धि विनाशयोच्चार्यं	४२	३०
बुद्धि विनाशय चोवत्वा	४१	१८
बृहद्भानुमुखीबाण	६५	१५
बृहद्भानुमुखीबाण	६७	३०
ब्रह्मविष्णुमहेशानां	३७	५
ब्रह्मस्त्वाने तानुदेश	५२	३०
ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोय(न्दोऽस्य)	१२	७
ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोय	६७	११
ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनो क ली	८७	३
ब्रह्मा स्त्रस्तम्भिनो विद्या	२	६
ब्रह्मास्त्रायपद चोवत्वा	२६	४
ब्रह्मणान् भोजयेत्पश्च त	६०	१७
ब्रह्मणान् भोजयेत्पश्चात्	१३	२२
ब्रह्मणान् भोजयेत्पश्चात्	१७	१७
ब्रह्मो रस समादाय	८६	३२
भ		
भक्षयन् ततोच्चार्य	६०	७
भक्षयेत् प्रातस्त्वाय	८८	१८

	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
मानो लघुतरश्चैव	७७	६
मायादि प्रजयेत् पुत्र	३१	२१
मारख्ये चाष्टकोख्ये तु	१४	६
मारख्ये भ्रात्रिणश्चैव	२	१३
मारख्ये मण्डलाच्छत्रो	४६	३४
मारख्ये स्तम्भवाणं च	४२	२६
मार्जारबालरोमाञ्च	८५	१८
मालामन्त्र ताक्षर्यविद्या	६१	टि०
मासा-मृत्युवसो भूत्वा	५१	१४
मासेन दाश्रुमरण	२६	२८
मांस सपुटसमुत्सर्ग	४७	१५
मुदपर दक्षिण्ये पात्र	१०	१६
मूवाहच कुक्षते प्राज्ञान्	२८	२२
मूलमन्त्रेण चाम्यच्यं	३५	१५
मूलमन्त्रेण सम्पूज्य	२२	१०
मूलेन मन्त्रित तोय	१०	१६
मृगशर्णा चैव दाश्रुणां	८६	२५
मृत्युञ्जयजप कृत्वा	६८	६
मैत्रेय कलहोत्पत्ति	१५	१६
मोक्षार्थं च गुरु यत्नात्	५	१६
मोहिनीद्रवसमिधं	२६	६
म्रियते न च सन्देहो	७४	१३
म्रियते नात्र सन्देहः	४६	टि०
म्रियते सप्तरात्रण	८५	२३
य		
यत् परस्मै न वनतस्य	६६	२७
यत्र कुत्रापि रिपव	५५	२१
यत्र गत्वा समासीनः	५६	३२
यद्योत्कुण्डपु हुनेद्	६७	३४
यदा दाश्रुभयोत्पन्नं	६७	४
यन्मन्त्रागं यमशास्त्रे कलो	२१	३
युवती च मदीन्द्रिक्तो	८१	७
ये (य इ) च्छ-स्याकर्षणशर्यादि	३	२२
ये वा विजयमिच्छन्ति	३	२१

	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
योगिनीकोटिनहिता	१००	१
योगिनीं पूजयेत् पश्चात्	६८	२१
योगिनीं पूजयेत् पश्चाद्	८२	१२
योगिनी वीरपूजा च	५५	१८
योगोऽय कवितः पुत्र	१०१	१७
योपिच्छुद्धिर्द्व्यपूजा	६६	२६, टि०
योपिदाकरपंणामना	६८	१
यः करोत्यचंन चंन	३६	२६
र		
रजते स्वर्णपट्टे वा	२२	८
रणक्षत्रभे सवकर्मा	१०१	१६
रत्नसिंहासना षडे	१०	टि०
रत्नायुत सख्येण	२७	१६
रत्नोत्पदात्पद्या तां	६८	१४
रवो गुरो भृगावन्व	४	४
रवो रात्रौ च नि क्षिप्य	२०	२५
रवो रात्रौ च सप्राह्य	८५	१६
रवो रात्रौ च सलित्ख्य	२०	२२
रवो रात्रौ दाश्रुमेहे	८५	१३
राजराजः स वै श्रीमान्	३७	२
राजलाभो भवेत्सख्य	८३	टि० २३
राजस चंन तद्विद्या	५	१५
राजा चंन ययो भूत्वा	८३	टि० २१
राजा वा राजपुत्रो वा	३१	टि०
राजोत्पत्त्यामादाय	१८	३
राजोत्पत्त्यासपुत्रत	१८	२४
रात्रौ पूजासमापुत्रतो	६१	२८
रात्रौहोम च कर्त्तव्य	६८	१७
रिपु-यो भवेन् पुत्र	७२	२१
रूपवीचनवाञ्छन्तु०	६१	२४
रूपाभिमानिनो ये च	५५	२३
रूपिणीपदमुच्यते	५४	६
रेफयोगान्महेसानि	६६	१६
रेफदीना जपेद्विद्यां	६६	१७

	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क		पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
रोगी च जायते मासाच्च	४८	२६	बडवानसनामानं	६५	१३
रोपयेन् पादपुरमे तु	५२	३२	वनेचरास्तामसजन्तवश्च	५८	२१
रोहिणीश्रवणं चैव	६	५	वन्दे पादुपताप्यक्ष	७३	२
रोष्ये वा स्वर्णपट्टे वा	६२	१६	वन्ध्या पुत्रवती चैव	७८	२२
ल			वन्धैश्च मल्लिकापुष्पैः	२३	२६
लक्षं जप्त्वा मनोरेवं	५८	१६	वस्त्रोपलासमूले तु	६३	१४
लक्षमेक जपे-मन्त्रो	६०	३५	वशीकर तु सम्मोह	२४	८
लक्ष्मीवान् जायते पुत्र	८२	१४	वशीकरणनायैषु	१७	२१
लक्ष्मीः शान्तिस्तथा पुष्टिः	१४	५	वशीकरणसम्मोहे	१४	६
लघुपोडा च विन्यस्य	५५	१४	वशीकरणसम्मोहो	८२	१७
लाटाचंन चावलम्ब्य	३५	६	वश्य जनानां सर्वेषां	१५	१८
लिखित्वा शुभलग्ने तु	७६	७	वह्निजायासमायुक्त	४०	७
लोकिके चैव गुप्तात्र	६६	२३	वह्निजाया समुच्चार्यं	१७	७
लं बीज चंद्र हं शक्तिः	१७	१४	वह्निबीजेन सवेष्टय	२०	२३
लं बीज ह्रीं च शक्तिदत्त	१२	८	वह्नी यद्गत् प्रविशति	३३	२१
व			वाक्पाणिवदनाक्षणां च	५८	१६
वकुलं पूजयेद्यन्त्रं	८०	१३	वाग्बीजं च सतो	८७	५
वक्ष्ये होमविधिं सम्यक्	७४	३	वाग्मवादि जपे-मन्त्र	३०	१३
वक्ष्येऽहं चोपसहार	५३	३५	वाङ्मय चैव वैचिश्य	५७	३
वक्ष्येऽहं चोपसहारं	८८	१७	वाच मुख पद चोक्त्वा	३६	२२
वक्ष्येह तत्र सवञ्च	७७	१४	वाग्नी चैव रमा गौरी	७	१६
वक्ष्येह पञ्जरं स्यात्	१२	११	वादी मूर्कति रङ्गुति क्षितिपतिः	१३	१६
वक्ष्येऽहं विधिवत्पुत्र	६६	२८	वाममार्गं न मेरुं च	१३	२३
वक्ष्येऽहं स्पण्डिलहोम	१४	२०	वामोरूपरि विन्यस्य	८	२५
वगलामातृका-न्यास	६६	१६	वायुये च मदो-मत्ता	१२	१३
वगलाष्टाक्षरीमन्त्र	८४	७	वाराह शक्तिवाराह	३०	१२
वगलास्त्रवृत्त यद्गत्	८६	३१	वाराह वगलाबीज	३८	१२
वालास्त्र मध्यभागे	१०४	१६	वाराहीबीजमध्यस्था	३०	१४
वगलास्त्रमिदं पुत्र	५६	३	विड्वराहमजारोमः	७२	१३
वगलाहृदयेनैव	७६	११, १२	विघ्नराज समग्रचर्म	६१	२६
वगलाहृदय मन्त्र	७६	३, ६	विदार विद्यतो भावाद	४८	टि०
वज्राकंशरीरमिधं च	२७	६	विद्यामाहर्षं पार्थं च	३३	२३
वज्रीक्षीरं त्रिकालं तु	२५	२०	विद्यारूपे भवेत् पुत्र	८	टि०
			विद्यासिद्धिर्भवेत् पुत्र	८०	१४
			विद्वेषु च जूहुयात्	१८	२३

	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
विद्वेषणे तु जुहुषाद्	१४	८
विद्वेषणे स्तम्भने च	१४	११
विना च स्तम्भनीविद्या	२	१४
विप्रचाण्डालयोः शर्यं	८४	१२
विभीतकतरोर्मूले	६२	६
विराट्स्वर्षिणीं देवी	८३	१
विरामय पदं चोक्त्वा	४४	८
विल्लेखताड्यंवीजं च	५४	५
विशद्भिः स्तम्भन च	६५	टि०
विश्वनाथ नमस्तेऽस्तु	७६	२
विश्वमेतद्भूतितमय	५७	२
विश्वाराध्य भवानीश	६४	२
विश्वेश्वरी विश्ववद्या	६४	१
विपतिन्दुकपुष्पेण	२२	१६
विपतिन्दुकमूलं च	६२	१८
वीणापुस्तकसपुष्पां	८८	१५
वीर विद्रूप विश्वेश	३४	२
वीरान्नायमहादेव	३६	२८
वृक्षमूले जपेन्मन्त्र	५०	६
वृत्तपु विल्लेखेत्पुत्र	२१	७
वेतालडाकिनोप्रेत	४१	१३
वेदलक्ष जप कुर्यात्	६८	१५
वेदवेदाङ्गपारल	४	७
वेदवेदांगपारीण०	७	१६
वेदाक्षरी ततो जाप्यः	१०२	२०
वेदाक्षरीमनुपुर	१०२	२१
वेदादि विल्लेखेत् पूर्वं	८१	३
वेदादि विल्लेखेत् पूर्वं	६७	६
वेदायुत तर्पणेन	२८	२३
वैदिक च परित्यज्य	५६	२७
वैरिजिह्वाभेदानार्थं	४५	१५
ध्यातव्याघ्रादयश्चैव	५८	१८
दण्डेन म्रियते शत्रु	२८	२५
दण्डित वाराहपुत्रव्यायं	९०	८

	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
शतमष्टोत्तर चं व	५१	१५
शतमष्टोत्तराक्षत	१०४	२६
शतवार मन्त्रवित्वा	८८	२२
शतवार मन्त्रित च	६३	१६
शताक्षरीमहामन्त्र	४४	११
शतावर्त्तनमात्रेण	१०१	१०
शतोत्तर भवेद्विंशद्	४१	१६
शतोत्तर मन्त्रवीज	५४	११
शत त्रिशतक पुत्र	६६	१७
शत वाऽथ सहस्रं वा	३५	१६
शत सहस्रमयुत	२०	२८
शत्रवश्च पुरश्चर्षा	५५	२०
शत्रुघ्नय भवेत् सद्यो	६१	१६
शत्रूणां मारण पुत्र	७३	२५
शमभक्तकुसुमनेत्र	२३	२०
शमोमूले हुनेःपुत्र	७५	१६
शमोमूल समाश्रित्य	७५	२३
शयनीकृत्य कन्यां च	६६	३२
शत्यदाहमय तत्र	६२	१४
शस्त्रास्त्रस्तम्भे पुत्र	१०३	६
शाकुनादिषु मन्त्रेषु	७	२०
शाग्निवश्यस्तम्भनानि	१५	१६
शास्ताद्य (स्यर्षं) जुहुयाच्छ्रद्धाति	१७	२०
शान्तिसकतं घृतोपेत	४७	६
शिववीजं वह्निपुत्र	६६	११
शिष्टाश्राणि कोणेषु	६१	५
शिव्यस्य हृदय चं व	८	२७
शीतोप्ये समता कृत्वा	३६	११
शुभश्लादियोगे तु	१०४	२८
शुश्रूषया गुरु सम्यक्	५	१३
शुश्रूषागारे जपेदेव	६३	१७
शेषभाषापतिप्रहयः	७५	७
शेषभाषापतिः साक्षात्	६४	२७
शमसाधे प्रजपेन्मन्त्र	६३	१६
श्रद्धामन्त्रिसमापेत	५	२६

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

श्रीकण्ठ श्रीगराधार	३१	२
श्रीलण्डरोचनाग्रह	६६	२१
श्रीबीज भुवनेशी च	७७	१६
श्रीबीजादि उपेत पुत्र	३०	१५
श्रीमायामातृका चं व	१७	६
श्रीसूत्रनेर्नव जिह्वावां	६३	३४
श्रेष्ठराज्य भवेत्पुत्र	८०	१६
श्रीनालीगण्डध्रूमध्ये	५२	२६
श्वानवज्ज्वलते शत्रु	२८	२६

प

पट्कोणकुण्डे जुहुयान	४५	२६
पट्कोणमध्ये विलिखेद्	६१	टि०
पट्कोण चाष्टकोणञ्च	१४	४
पट्कोण चाष्टकोण च	६१	४
पट्कोणे वा लिखे-मन्त्र	७६	५
पटत्रिसङ्कारमावर्त्यं	१०१	६
पट्पञ्चकोटिचामुण्डा	३७	६
पटप्रयोगस्त्रयो विद्या	२	११
पट्सहस्र देवकुमुद	४७	१३
पट्सहस्र हुनेत पुत्र	४५	२१
पट्सहस्र हुनेत पुत्र	४६	३
पट्सहस्र हुनेत्पुत्र	४७	८
पोडशाडगुलमान तु	७	६
पोडशोरुपचारंश्च	७	१३

स

स कल्पमुखभागी स्यात्	६७	३३
सङ्कल्पपूर्वक मन्त्र	१७	१५
सप्रहेक्ष लघत सम्पक	२२	११
स जीवभ्रैव चाण्डाल	५३	४३
सचारवान् भवत पञ्च	७६	टि०
स तु भापापतिः साक्षाद्	५७	६
सत्सम्प्रदायविधिना	३	२३
सद्यो नादानमाद्याभिः	४५	२०

पृष्ठाङ्क पद्याङ्क

सद्यो नैर्माल्यमाप्नोति	८८	१६
सद्यो यौवनहीन तु	५६	२५
सद्यः स्तम्भनमाप्नोति	६१	२३
सन्तदेदीयसिखया	२५	१६
सतपेद् पतिखया	५१	टि०
सतोप जनयेततस्य	७७	१३
सध्यामन्त्रेषु सर्वेषु	११	२६
स पतितो भवत पुमा	३६	२२
सपर्णा धालयेत क्षीरं:	५२	२६
सपादकोटिप्रियुरा	६७	३१
सप्तकोटिमहामन्त्रं	६७	३
सम सम रिपून्निच्छेत्	५१	१७
समस्तकर्म्मणा ध्वसे	६४	३
समस्तविपनिर्नाशि	१०३	८
सनस्तस्तम्भन पुत्र	६७	३२
सम्पूजयेत् पञ्चमी चं व	७०	३६
सम्भोहनार्थं प्रजपेत्	३०	११
सम्यग्ज्ञान महेशान	४६	२
सर्पमण्डकयो घृत्य	८५	१७
सर्वकर्माणि निनाशि	१००	६
सर्वत्रैवोदत पुत्र	१५	१५
सर्वं न्यासविधिं वृत्वा	१३	१६
सर्वमन्त्रमयी दवी	५५	१५
सर्वसन्ध ततोच्चार्यं	६१	८
सर्वसन्ध ततोच्चार्यं	४१	१६
सर्वसन्ध ततोच्चार्य	४२	२५
सर्वाङ्गमुदरी स्वामा	३५	७
सर्वाङ्ग वायुना शत्रु	६१	२७
सर्वाङ्गे लेपन कुर्यान्	३५	११
सर्वाविपवनीभाङ्गयां	५४	१
सर्वे स्व देहज मह्यं	५६	१०
सर्पवासिर्बुधैश्च	२४	११
सर्प लवण चैव	८४	३
सर्प लवणोपेत	४७	७
सविता च ऋषिः स्यातो	४२	३१

पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क		
सविषं जलसंयुक्तं	६४	५	सहरेच्छं त्रिमाप्नोति	५३	४२
स शत्रुः सस्वराश्रेण	१९	१३	सहाराचा कामरूपे	६९	३०
सस्यस्तमे दाहनाशे	१०३	१५	स्तम्भमायां च वाग्बीज	४४	४
सस्यादिभिविनश्यन्ति	५८	१२	स्तम्भमायां ततोच्चार्यं	७७	१७
सहस्रं ध्यानपूर्वं तु	५१	१३	स्तम्भमाया तारक च	४२	टि०
सहस्रं प्रजये-मन्त्रं	७९	८	स्तम्भीकरणनिर्वाद्यं	१०३	९
सहस्रं द्वितय चैव	४२	२४	स्तम्भद्वयमुच्चार्यं	४४	६
सहस्रवारं विधिवन्	५३	३८	स्तम्भद्वितय चोक्त्वा	४१	१७
सहिरष्योदके पूर्वं	८	२६	स्तम्भनार्यं जपेत्पुत्र	३०	टि०
साक्ष्यायनमते देवि	९८	५	स्तम्भनास्त्रपद चोक्त्वा	८७	८
साक्ष्यायनमते देवि	१००	२२	स्तम्भनास्त्रमयीं दवीं	४३	३५
साक्ष्यायनमते देव्या	९८	४	स्तम्भनेन विना शान्ति	१	१२
साधयेत्कुलमार्गेण	३	२५	स्तम्भनेषु हुनेद्धीमान्	१७	२२
साधु साधु महाप्राज्ञ	१	७	स्तम्भन च भवेत् पुत्र	४५	२३
सान्त रान्तसमायुक्त	१२	६	स्तमन च भवेच्छीघ्रं	१९	१७
सायमौपासिष कसंभ्य	११	२५	स्तम्भयेत् नदीवग	५८	१७
सिद्धिदो जायते बत्स	६१	२२	स्तम्भित मन्त्रयोगेन	८८	२१
सुखापेक्षेण यत् क्रुर्वाद्	३६	२५	स्यापयेच्च कपाल तु	२०	२४
सुगन्धधनपुष्पादीन	७	१८	स्यापयेच्चुह्वयधीभागे	५१	२१
सुवाग्धो रत्नपर्याङ्कु	३४	१	स्यापयेत् तेन मन्त्रेण	५३	३९
सुन्दर्या कालिकाया च	१०४	३१	स्थिरमाया इति प्रोक्त्वा	९९	१२
सुमन्तकुसुमैराज्य	१५	२२	स्थिरमाया द्वितीया तु	९९	१५
सुरया तर्पणं पुत्र	१२५	४२	स्तुह्या धीरेण सयुक्त	५१	२०
सुवर्णशैलसुप्रस्थ	६८	१३	स्फुरद्वय तथा चोक्त्वा	४४	५
सुवासिन च तैलेन	२५	९	स्फुरद्वय समुच्चार्यं	८७	७
सुवासिनी ब्राह्मण्याश्च	९६	१९	स्फोटकरणसमुत्पत्तो	७४	१०
सूचिप्रयोगविधिवसे	९५	७	स्फोटव्रण्याश्च जायन्ते	४९	३१
सृष्टि स्थिति च सहार	६४	३	स्वप्रिया त्रिमुपात्र च	७१	४६
सौभाग्यचर्यासमायुक्त	३	२६	स्वमन्त्राक्षरणी विद्या	२	१८
सौभाग्यार्चनकृत् णा	३६	२३	स्वर्णसिद्धासनासीना	६२	१
सौभाग्यार्चाविधिदर्चव	६९	२५	स्वल्प वा बहुल चाप	५	१४
सौभाग्यार्चा विना पुत्र	३६	१९	स्वामिन् सिद्धगुणाध्वज	१०२	२
संक्षेपेन मया प्रोक्तु	८३	टि०			
सजपेच् च ततः पुत्र	९९	१८			
सकारेण विना मन्त्र	३८	१९			
			हरिद्रापक्व वस्तु	६६	टि०

	पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क		पृष्ठाङ्क	पद्याङ्क
हरिद्राममपुष्पं च	६५	१४	दुनेच पूयवत् कुण्डे	७५	१८
हरिद्रो चोक्षमालां च	६८	१८	दुनत् त्रिफोणकुण्डे तु	७५	५
हरिद्राक्षमणि पीठ	६५	१२	दुनदुग्धानसमायुक्तः	४५	२५
हरिद्रासहोम तु	४७	१०	'दु पट् स्वाहा'-समायुक्त	८१	४
हरिद्रासहोमेन	१६	५	दुननटप्रण्टादि	१०१	११
हरिद्रातालक चंद	२४	६	दुदये तु समुच्चार्यं	७८	१६
हरिद्राभिः मुख्यताभिः	१०४	२६	दुदि तप्राम चालिष्य	५१	१८
हरिद्राभस्तपणेन	६७	१८	हेमकृण्डनभूप इर्णी	१०	२०
हरिद्राहोममात्रेण	६६	१८	हेलाकर्का चदला तूर्पा	१०४	२२
दुगीतकीदच होमेन	४६	१०	दुलस्तपाप्युचरेत् पुत्र	४२	२७
दुस्तमात्रं भगाकारं	७५	१४	दुही ही लू च ततोच्चार्य	१८	६
दुारिणोति पदं चोक्षया	५४	८	दुही लू च ततोच्चार्य	२८	१०
दुिक्वारोगो भवेत्तस्य	७२	१७			

